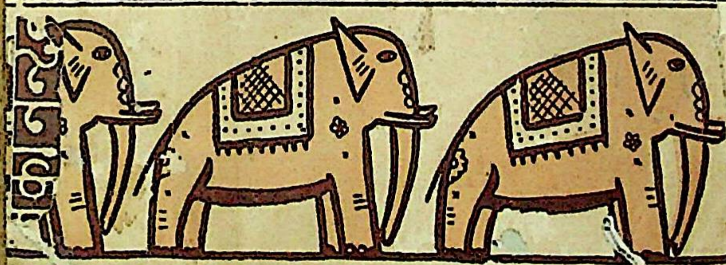




…न्द्रकान्ता सन्तति



॥श्री:॥

[illegible]

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित



लहरी बुक डिपो

वाराणसी

१९८१

प्रकाशक—
श्री कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी।

मूल्य :—

सजिल्द—१३/००　　　　　अजिल्द—९/००

मुद्रक—
भारतजीवन प्रेस,
वाराणसी।

॥ श्रीः ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

इक्कीसवाँ भाग

पहिला बयान

भूतनाथ अपना हाल कहते कहते कुछ देर के लिए रुक गया और इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर पुनः यों कहने लगा :—

भूत० । मैं अपने को कैदियों की तरह और अपने सामने अपनी ही स्त्री को सरदारी के ढंग पर बैठे हुए देख कर एक दफे घबड़ा गया और सोचने लगा कि यह क्या मामला है ? मेरी स्त्री मुझे सामने ऐसी अवस्था में देखे और सिवाय मुस्कुराने के कुछ न बोले !! अगर वह चाहती तो मुझे अपने पास गद्दी पर बैठा लेती क्योंकि इस कमरे में जितने दिखाई दे रहे हैं उन सभों की वह सर्दार मालूम पड़ती है, इत्यादि बातों को सोचते सोचते मुझे क्रोध चढ़ आया और मैंने लाल आँखों से उसकी तरफ देख कर कहा, "क्या तू मेरी स्त्री वही रामदेई है जिसके लिए मैंने तरह तरह के कष्ट उठाये और जो इस समय मुझे कैदियों की अवस्था में अपने सामने देख रही है ?"

इसके जवाब में मेरी स्त्री ने कहा, "हाँ मैं वही रामदेई हूँ जिसके लड़के को तुम किसी जमाने में अपना होनहार लड़का समझ कर चाहते और प्यार करते थे मगर आज उसे दुश्मनी की निगाह से देख रहे हो, मैं वही रामदेई हूँ जो तुम्हारे असली भेदों को न जान कर और तुम्हें नेक ईमानदार तथा सच्चा ऐयार समझ कर तुम्हारे फंदे में फँस गई थी मगर आज तुम्हारे असली भेदों का पता लग जाने के कारण डरती हुई तुमसे अलग हुआ चाहती है, मैं वही रामदेई

जिसे तुमने नकाबपोशों के मकान में देखा था, और मैं वही रामदेई हूँ जिसने उस दिन तुम्हें जंगल में धोखा देकर बैरंग वापस होने पर मजबूर किया था, मगर मैं वह रामदेई नहीं हूँ जिसे तुम 'लामाघाटी' में छोड़ आए हो।"

मुझे उस औरत की बातों ने ताज्जुब में डाल दिया और मैं हैरानी के साथ उसका मुँह देखने लगा। अनूठी बात तो यह थी कि वह अपनी बातों में शुरू से तो रामदेई अथवा मेरी स्त्री बनती चली आयी मगर आखीर में बोल बैठी कि 'मगर मैं वह रामदेई नहीं हूँ जिसे तुम लामाघाटी में छोड़ आए हो'। आखिर बहुत सोच विचार कर मैंने पुनः उससे कहा, "अगर तू वह रामदेई नहीं है जिसे मैं लामाघाटी में छोड़ आया था दो तू मेरी स्त्री भी नहीं है।"

स्त्री०। तो यह कौन कहता है कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ।

मैं०। अभी इसके पहिले तू ने क्या कहा था?

स्त्री०। (हँस कर) मालूम होता है कि तुम अपने होश में नहीं हो।

इतना सुनते ही मुझे क्रोध चढ़ आया और मैं अपनी हथकड़ी बेड़ी तोड़ने का उद्योग करने लगा। यह हाल देख कर उस औरत को भी क्रोध आ गया और उसने अपनी एक सखी या लौंडी की तरफ देख कर कुछ इशारा किया। वह लौंडी इशारा पाते ही उठी और उसी जगह आले पर से एक बोतल उठा लाई जिसमें किसी प्रकार का अर्क था। उस अर्क से चुल्लू भर उसने दो तीन छींटे मेरे मुँह पर दिये जिसके सबब से मैं बेहोश हो गया और मुझे तनोबदन की सुध न रही। मैं यह नहीं बता सकता कि इसके बाद कै घण्टे तक मैं उसके कब्जे में रहा परन्तु जब होश में आया तो मैंने अपने को जंगल में एक पेड़ के नीचे पाया। घण्टों तक ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखता रहा, इसके बाद एक चश्मे के किनारे जाकर हाथ मुँह धोने के बाद इस तरफ रवाना हुआ। बस यही सबब था कि मुझे हाजिर होने मे देर हो गई।

भूतनाथ की बातें सुन कर सभों को ताज्जुब हुआ मगर वे दोनों नकाबपोश एक दम खिलखिला कर हँस पड़े और उनमें से एक ने भूतनाथ की तरफ देख कर कहा—

नकाब०। भूतनाथ, निःसन्देह तुम धोखे में पड़ गये। उस औरत ने जो कुछ तुमसे कहा उसमें शायद ही दो तीन बातें सच हों।

भूत०। (ताज्जुब से) सो क्या! उसने कौन सी बातें सच कही थीं कौन सी झूठ?

नकाब०। सो मैं नहीं कह सकता मगर आशा है कि शीघ्र ही तुम्हें सच झूठ का पता लग जायगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ चाहा मगर नकाबपोश ने उसके मतलब की कोई बात न कही। थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें करके नकाबपोश विदा हुए और जाती समय एक सवाल के जवाब में कह गये कि 'आप लोग दो दिन और सब्र करें, इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के सामने ही सब भेदों का खुलना अच्छा होगा क्योंकि उन्हें इन बातों के जानने का बड़ा शौक था'।

दूसरा बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिंह अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए जीतसिंह से धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं जो चारपाई के नीचे उनके पास ही बैठे हैं। केवल जीतसिंह ही नहीं बल्कि उनके पास वे दोनों नकाबपोश भी बैठे हुए हैं जो दर्बार में आकर लोगों को ताज्जुब में डाला करते हैं और जिनका नाम रामसिंह और लक्ष्मणसिंह है। हम नहीं कह सकते कि ये लोग कब से इस कमरे में बैठे हुए हैं या इसके पहिले इन लोगों में क्या क्या बातें हो चुकी हैं, मगर इस समय तो ये लोग कई ऐसे मामलों पर बातचीत कर रहे हैं जिनका पूरा होना बहुत जरूरी समझा जाता है।

बात करते करते एक दफे कुछ रुक कर महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जीतसिंह से कहा, "इस राय में गोपालसिंह का भी शरीक होना उचित जान पड़ता है, किसी को भेज कर उन्हें बुलाना चाहिए।"

"जो आज्ञा" कह कर जीतसिंह उठे और कमरे के बाहर जाकर राजा गोपालसिंह को बुलाने के लिए चोबदार को हुक्म देने बाद पुनः अपने ठिकाने पर बैठ कर बातचीत करने लगे।

जीतसिंह०। इसमें तो कोई शक नहीं कि भूतनाथ आदमी चालाक और पूरे दर्जे का ऐयार है मगर उसके दुश्मन लोग उस पर बेतरह टूट पड़े हैं और चाहते हैं कि जिस तरह बने उसे बर्बाद कर दें और इसीलिए उसके पुराने ऐबों को उधेड़ कर उसे तरह तरह की तकलीफें दे रहे हैं।

सुरेन्द्र०। ठीक है, मगर हमारे साथ भूतनाथ ने सिवाय एक दफे चोरी करने के और कौन सी बुराई की है जिसके लिए उसे हम सजा दें या बुरा कहें?

जीत०। कुछ भी नहीं, और वह चोरी भी उसने किसी बुरी नीयत से नहीं की थी, इस विषय में नानक ने जो कुछ कहा था महाराज सुन ही चुके हैं।

सुरेन्द्र०। हाँ मुझे याद है, और उसने हम लोगों पर अहसान भी बहुत

किये हैं बल्कि यों कहना चाहिए कि उसी की बदौलत कमलिनी किशोरी लक्ष्मीदेवी और इन्दिरा वगैरह की जानें बचीं और गोपालसिंह को भी उसकी मदद से बहुत फायदा पहुँचा है। इन्हीं सब बातों को सोच के तो देवीसिंह ने उसे अपना दोस्त बना लिया था मगर साथ ही इसके इस बात को भी समझ रखना चाहिए कि जब तक भूतनाथ का मामला तै नहीं हो जायगा तब तक लोग उसके ऐबों को खोद खोद कर निकाला ही करेंगे और तरह तरह की बातें गढ़ते रहेंगे।

एक नकाबपोश०। सो तो ठीक ही है, मगर सच पूछिए तो भूतनाथ का मुकदमा ही कैसा और मामला ही क्या? मुकदमा तो असल में नकली बलभद्रसिंह का है जिसने इतना बड़ा कसूर करने पर भी भूतनाथ पर इल्जाम लगाया है। उस पीतल वाली सन्दूकड़ी से तो हम लोगों को कोई मतलब ही नहीं, हाँ बाकी रह गया चीठियों वाला मुट्ठा जिसके पढ़ने से भूतनाथ लक्ष्मीदेवी का कसूरवार मालूम होता है सो उसका जवाब भूतनाथ काफी तौर पर दे देगा और साबित कर देगा कि वे चीठियाँ उसके हाथ की लिखी हुई होने पर भी वह कसूरवार नहीं है और वास्तव में वह बलभद्रसिंह का दोस्त है दुश्मन नहीं।

सुरेन्द्र०। (लम्बी साँस लेकर) ओफ ओह, इस थोड़े से जमाने में कैसे कैसे उलटफेर हो गए! बेचारे गोपालसिंह के साथ कैसी धोखेबाजियाँ की गयीं! इन बातों पर जब हमारा ध्यान जाता है तो मारे क्रोध के बुरा हाल हो जाता है।

जीत०। ठीक है, मगर खैर अब इन बातों पर क्रोध करने की जगह नहीं रही क्योंकि जो कुछ होना था हो गया। ईश्वर की कृपा से गोपालसिंह भी मौत की तकलीफ उठा कर बच गए और अब हर तरह से प्रसन्न हैं, इसके अतिरिक्त उनके दुश्मन लोग भी गिरफ्तार होकर अपने पंजे में आये हुए हैं।

सुरेन्द्र०। बेशक ऐसा ही है मगर हमें कोई ऐसी सजा नहीं सूझती जो उनके दुश्मनों को देकर कलेजा ठण्ढा किया जाय और समझा जाय कि अब गोपालसिंह के साथ बुराई करने का बदला ले लिया गया।

महाराज सुरेन्द्रसिंह इतना कह ही रहे थे कि राजा गोपालसिंह कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पड़े क्योंकि उनका डेरा इस कमरे से बहुत दूर न था।

राजा गोपालसिंह सलाम करके पलंग के पास बैठ गए और इसके बाद दोनों नकाबपोशों से भी साहब सलामत करके मुस्कुराते हुए बोले—

"आप लोग कब से बैठे हैं?"

एक नकाबपोश०। हम लोगों को आये बहुत देर हो गई।

सुरेन्द्र० । ये बेचारे कई घण्टे से बैठे हुए हमारी तबीयत बहला रहे हैं और कई जरूरी बातों पर विचार कर रहे हैं ।

गोपाल० । वे कौन सी बातें हैं ?

सुरेन्द्र० । यही लड़कों की शादी, भूतनाथ का फैसला, कैदियों का मुकदमा, कमलिनी और लाडिली के साथ उचित वर्ताव इत्यादि विषयों पर बातचीत हो रही है और सोच रहे हैं कि किस तरह क्या किया जाय तथा पहिले क्या काम हो ?

गोपाल० । इस समय मैं भी इसी उलझन में पड़ा हुआ था । मैं सोया नहीं था बल्कि जागता हुआ इन्हीं बातों को सोच रहा था कि आपका सन्देशा पहुँचा और तुरत उठ कर इस तरफ चला आया । (नकाबपोशों की तरफ बता कर) आप लोग तो अब हमारे घर के व्यक्ति हो रहे हैं अस्तु ऐसे विचारों में आप लोगों को शरीक होना ही चाहिए ।

सुरेन्द्र० । जीतसिंह कहते हैं कि कैदियों का मुकदमा होने और उनको सजा देने के पहिले ही दोनों लड़कों की शादी हो जानी चाहिए जिसमें कैदी लोग भी इस उत्सव को देख कर अपना जी जला लें और समझ लें कि उनकी बेईमानी हरामजदगी और दुश्मनी का नतीजा क्या निकला । साथ ही इसके एक बात का फायदा और भी होगा, अर्थात् कैदियों के पक्षपाती लोग भी, जो ताज्जुब नहीं कि इस समय भी कहीं इधर उधर छिपे मन के लड्डू बना रहे हों, समझ जायेंगे कि अब उन्हें दुश्मनी करने की कोई जरूरत नहीं रही और न ऐसा करने से कोई फायदा ही है ।

गोपाल० । ठीक है, जब तक दोनों कुमारों की शादी न हो जायगी तब तक तरह तरह के खुटके बने ही रहेंगे । शादी हो जाने के बाद मेहमानों के सामने ही कैदियों को जहन्नुम में पहुँचा कर दुनिया को दिखा दिया जायगा कि बुरे कर्मों का नतीजा यह होता है ।

सुरेन्द्र० । खैर तो आपकी भी यही राय होती है ?

गोपाल० । बेशक !

सुरेन्द्र० । (जीतसिंह की तरफ देख कर) तो अब हमें और किसी से राय मिलाने की जरूरत नहीं रही, आप हर तरह का बन्दोबस्त शुरू कर दें और जहाँ जहाँ न्योता भेजना हो भेजवा दें ।

जीत० । जो आज्ञा । अच्छा अब भूतनाथ के विषय में कुछ ते हो जाना चाहिए ।

गोपाल० । हम लोगों में से कौन सा आदमी ऐसा है जो भूतनाथ के अहसान के बोझ से दबा हुआ न हो ? बाकी रही यह बात कि जैपाल ने भूतनाथ के

की चीठियाँ कमलिनी और लक्ष्मीदेवी को दिखा कर भूतनाथ को दोषी ठहराया है, सो वास्तव में भूतनाथ दोषी नहीं है और इस बात का सबूत भी वह दे देगा।

सुरेन्द्र०। हाँ तुमको तो इन सब बातों का सच्चा हाल जरूर ही मालूम होगा क्योंकि तुम्हीं ने कृष्णाजिन्न बन कर उसकी सहायता की थी, अगर वास्तव में वह दोषी होता तो तुम ऐसा करते ही क्यों ?

गोपाल०। बेशक यही बात है, इन्दिरा का किस्सा आपको मालूम ही है क्योंकि मैंने आपको लिख भेजा था और आशा है कि आपको वे बातें याद होंगी ?

सुरेन्द्र०। हाँ मुझे बखूबी याद है, बेशक उस जमाने में भूतनाथ ने तुम लोगों की बड़ी सहायता की थी बल्कि इसी सबब से उससे और दरोगा से दुश्मनी हो गई थी, अस्तु कब हो सकता है कि भूतनाथ लक्ष्मीदेवी के साथ दगा करता जो कि दारोगा से दोस्ती और बलभद्रसिंह से दुश्मनी किए बिना हो ही नहीं सकता था ! लेकिन आखिर यह बात क्या है, वे चीठियाँ भूतनाथ की लिखी हैं या नहीं ? फिर, इस जगह एक बात का और भी खयाल होता है जो यह कि उस मुट्ठे में दोनों तरफ की चीठियाँ मिली हुई हैं, अर्थात् जो रघुबरसिंह ने भेजीं वे भी हैं और जो रघुबर के नाम आई थीं वे भी हैं।

गोपाल०। जी हाँ और यह बात भी बहुत से शकों को दूर करती है। असल यह है कि वे सब चीठियाँ भूतनाथ के हाथ की नकल की हुई हैं ! वह रघुबरसिंह जो दारोगा का दोस्त था और जमानिया में रहता था उसी की यह सब कार्रवाई है और यह सब विष उसी के बोये हुए हैं, वह बहुत जगह इशारे के तौर पर अपना नाम 'भूत' लिखा करता था। आपने इन्दिरा के हाल में पढ़ा होगा कि भूतनाथ बेनीसिंह बन कर बहुत दिनों तक रघुबरसिंह के यहाँ रह चुका है और उन दिनों यही भूतनाथ हेलासिंह के यहाँ रघुबरसिंह का खत लेकर आया जाया करता था....

सुरेन्द्र०। ठीक है, मुझे याद है।

गोपाल०। बस ये सब चीठियाँ उन्हीं चीठियों की नकलें हैं। भूतनाथ ने मौके पर दुश्मनों को कायल करने के लिए उन चीठियों की नकल कर ली थी और कुछ उनके घर से भी चुराई थी। बस भूतनाथ की गलती या बेईमानी जो कुछ समझिये यही हुई कि उस समय कुछ नगदी फायदे के लिए उसने इस मामले को दबा रक्खा और उसी वक्त मुझ पर प्रकट न कर दिया। रिश्वत लेकर दारोगा को छोड़ देना और कलमदान के भेद को छिपा रखना भी भूतनाथ के कुछ घब्बा लगाता है क्योंकि अगर ऐसा न होता तो मुझे यह बुरा दिन देखना नसीब न

होता और इन्हीं भूलों पर आज भूतनाथ पछताता और अफसोस करता है। मगर आखीर में भूतनाथ ने इन बातों का बदला भी ऐसा अदा किया कि वे सब कसूर माफ कर देने के लायक हो गए।

सुरेन्द्र०। उस कमलदान में क्या चीज थी ?

गोपाल०। उस कमलदान को दारोगा की उस गुप्त सभा का दफ्तर समझिए। सब सभासदों के नाम और सभा के मुख्य मुख्य भेद उसी में बन्द रहते थे, इसके अतिरिक्त दामोदरसिंह ने जो वसीयतनामा इन्दिरा के नाम लिखा था वह भी उसी में बन्द था।

सुरेन्द्र०। ठीक है ठीक है, इन्दिरा के किस्से में यह बात भी तुमने लिखी थी, हमें याद आया। मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि उन दिनों लालच में पड़ कर भूतनाथ ने बहुत बुरा किया और उसी सबब से तुम लोगों को तकलीफ उठानी पड़ी।

एक नकाबपोश०। शायद भूतनाथ को इस बात की खबर न थी कि इस लालच का नतीजा कहाँ तक बुरा निकलेगा।

सुरेन्द्र०। जो हो मगर उस समय की बातों पर ध्यान देने से यह भी कहना पड़ता है कि उन दिनों भूतनाथ एक हाथ से भलाई कर रहा था और दूसरे हाथ से बुराई।

गोपाल०। ठीक है, बेशक ऐसी ही बात थी।

सुरेन्द्र०। (जीतसिंह की तरफ देख के) भूतनाथ और इन्द्रदेव को भी इसी समय यहाँ बुला कर इस मामले को तै ही कर देना चाहिये।

"जो आज्ञा" कह कर जीतसिंह उठे और कमरे के बाहर जा कर चोबदार को हुक्म देने के बाद लौट आये, इसके बाद कुछ देर तक सन्नाटा रहा तब फिर गोपालसिंह ने कहा—

गोपाल०। अपने खयाल में तो भूतनाथ ने कोई बुराई नहीं की थी क्योंकि बीस हजार अशर्फी दारोगा से वसूल करके उसे छोड़ देने पर भी उसने एक इकरारनामा लिखा लिया था कि 'वह (दारोगा) ऐसे किसी काम में शरीक न होगा और न खुद ऐसा कोई काम करेगा जिसमें इन्द्रदेव सर्यू इन्दिरा और मुझे (गोपालसिंह) को किसी तरह का नुकसान पहुँचे'* मगर दारोगा फिर भी बेईमानी कर ही गया और भूतनाथ एकरारनामे के भरोसे बैठा रह गया। इससे खयाल होता है कि शायद भूतनाथ को भी इन मामलों की ठीक खबर न हो अथवा

* इन्दिरा का किस्सा, चन्द्रकान्ता सन्तति पन्द्रहवाँ भाग पहिला बयान

मुन्दर का हाल मालूम न हुआ हो, और वह लक्ष्मीदेवी के बारे में धोखा खा गया हो तो भी ताज्जुब नहीं।

सुरेन्द्र०। हो सकता है। (कुछ देर तक चुप रहने के बाद) मगर यह तो बताओ कि इन सब मामलों की खबर तुम्हें कब और क्योंकर लगी ?

गोपाल०। इन सब बातों का पता मुझे भूतनाथ के गुरुभाई शेरसिंह की जुबानी लगा जो भूतनाथ को भाई की तरह प्यार करता है मगर उसकी इन सब लालच भरी कार्रवाइयों के बुरे नतीजे को सोच और उसे पूरा कसूरवार समझ कर उससे डरता और नफरत करता है। जिन दिनों रोहतासगढ़ का राजा दिग्विजयसिंह किशोरी को अपने किले में ले गया था और इस सबब से शेरसिंह ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी उन दिनों भूतनाथ छिपा छिपा फिरता था। मगर जब शेरसिंह ने उस तिलिस्मी तहखाने में जाकर डेरा डाला* और छिपे छिपे कमला और कामिनी की मदद करने लगा तो उन्हीं दिनों उस तिलिस्मी तहखाने में जाकर भूतनाथ ने शेरसिंह से एक तौर पर (बहुत दिनों तक गायब रहने के बाद) नई मुलाकात की, मगर धर्मात्मा शेरसिंह को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई....

गोपालसिंह इतना कह ही रहे थे कि भूतनाथ और इन्द्रदेव कमरे के अन्दर आ पहुँचे और सलाम करके आज्ञानुसार जीतसिंह के पास बैठ गये।

जीत०। (भूतनाथ और इन्द्रदेव से) आप लोग बहुत जल्द आ गये।

इन्द्रदेव०। हम दोनों इसी जगह बारामदे के नीचे बाग में टहल रहे थे इसलिए चोबदार नीचे उतरने के साथ ही हम लोगों से जा मिला।

जीत०। खैर (गोपालसिंह से) हाँ तब ?

गोपाल०। अपनी नेकनामी में धब्बा लगने और बदनाम होने के डर से भूतनाथ की सूरत देखना भी शेरसिंह पसन्द नहीं करता था बल्कि उसका तो यही बयान है कि 'मुझे भूतनाथ से मिलने की आशा ही न थी और मैं समझे हुए था कि अपने दोषों से लज्जित होकर भूतनाथ ने जान दे दी'। मगर जिस दिन उसने उस तहखाने में भूतनाथ की सूरत देखा काँप उठा। उसने भूतनाथ की बहुत लानत सलामत करने के बाद कहा कि 'अब तुम हम लोगों को अपना मुँह मत दिखाओ और हमारी जान और आबरू पर दया करके किसी दूसरे देश में चले जाओ'। मगर भूतनाथ ने इस बात को मंजूर न किया और यह कह कर अपने [illegible] से बिदा हुआ कि 'भूतनाथ बैठे देखते रहो कि मैं किस तरह अपने पुराने

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग, तेरहवाँ बयान।

परिचितों में प्रकट होकर खास राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार बनता हूँ'। बस इसके बाद भूतनाथ कमलिनी से जा मिला और जी जान से उसकी मदद करने लगा। मगर शेरसिंह को यह बात पसन्द न आई। यद्यपि कुछ दिनों तक शेरसिंह ने कमलिनी तथा हम लोगों का साथ दिया, मगर डरते डरते। आखिर एक दिन शेरसिंह ने एकान्त में मुझसे मुलाकात की और अपने दिल का हाल तथा मेरे विषय में जो कुछ जानता था कहने बाद बोला, "यह सब हाल कुछ तो मुझे अपने भाई भूतनाथ की जुबानी मालूम हुआ और कुछ रोहतासगढ़ को इस्तीफा देने के बाद तहकीकात करने से मालूम हुआ मगर इस बात की खबर हम दोनों भाइयों में से किसी को भी न थी कि आपको मायारानी ने कैद कर रक्खा है। खैर अब ईश्वर की कृपा से आप छूट गये हैं इसलिए आपके सम्बन्ध में जो कुछ मुझे मालूम है आपसे कह दिया, जिसमें आप दुश्मनों से अच्छी तरह बदला ले सकें। अब मैं अपना मुँह किसी को दिखाना नहीं चाहता क्योंकि मेरा भाई भूतनाथ जिसे मैं मरा हुआ समझता था प्रकट हो गया और न मालूम क्या क्या किया चाहता है। कहीं ऐसा न हो कि गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाय, अस्तु अब मैं जहाँ भागते बनेगा भाग जाऊँगा। हाँ अगर भूतनाथ जो कि बड़ा जिद्दी और उत्साही है किसी तरह नेकनामी के साथ राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार बन गया तो पुनः प्रकट हो जाऊँगा।" इतना कह कर शेरसिंह न मालूम कहाँ चला गया, मैंने बहुत कुछ समझाया मगर उसने एक न मानी। (कुछ रुक कर) यही सबब है कि मुझे इन सब बातों से आगाही हो गई और भूतनाथ के भी बहुत से भेदों को जान गया।

जीत०। ठीक है। (भूतनाथ की तरफ देख के) भूतनाथ, इस समय तुम्हारा ही मामला पेश है! इस जगह जितने आदमी हैं सभी कोई तुमसे हमदर्दी रखते हैं, महाराज भी तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। ताज्जुब नहीं कि वह दिन आज ही हो कि तुम्हारे कसूर माफ किए जायँ और तुम महाराज के ऐयार बन जाओ, मगर तुम्हें अपना हाल या जो कुछ तुमसे पूछा जाय उसका जवाब सच सच कहना और देना चाहिए। इस समय तुम्हारा ही किस्सा हो रहा है।

भूतनाथ०। (खड़े हो कर सलाम करने बाद) आज्ञा के विरुद्ध कदापि न करूँगा और कोई बात छिपा न रक्खूँगा।

जीत०। तुम्हें यह तो मालूम हो गया कि सूर्य और इन्दिरा भी यहाँ आ गई हैं जो जमानिया के तिलिस्म में फँस गई थीं और उन्होंने अपना अनूठा किस्सा बड़े दर्द के साथ बयान किया था।

भूतनाथ० । (हाथ जोड़ के) जी हाँ, मुझ कम्बख्त की बदौलत उन्हें उस कैद की तकलीफ भोगनी पड़ी । उन दिनों बदकिस्मती ने मुझे हद से ज्यादे लालची बना दिया था । अगर मैं लालच में पड़ कर दारोगा को न छोड़ देता तो यह बात न होती । आपने सुना ही होगा कि उन दिनों हथेली पर जान लेकर मैंने कैसे कैसे काम किये थे, मगर दौलत की लालच ने मेरे सब कामों पर मिट्टी डाल दी । अफसोस, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न हुई कि दारोगा ने अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध काम किया, अगर खबर लग जाती तो उससे समझ लेता ।

जीत० । अच्छा यह बताओ कि तुम्हारा भाई शेरसिंह कहाँ है ?

भूत० । मेरे यहाँ होने के सबब से न मालूम वह कहाँ जाकर छिपा बैठा है । उसे विश्वास है कि 'भूतनाथ जिसने बड़े बड़े कसूर किए हैं कभी निर्दोष छूट नहीं सकता बल्कि ताज्जुब नहीं कि उसके सबब से मुझ पर भी किसी तरह का इलजाम लगे' ! हाँ अगर वह मुझे बेकसूर छूटा हुआ देखेगा या सुनेगा तो तुरत प्रकट हो जायगा ।

जीत० । वह चीठियों वाला मुट्ठा तुम्हारे ही हाथ का लिखा हुआ है या नहीं ?

भूत० । जी वे सब चीठियाँ हैं तो मेरे ही हाथ की लिखी हुई मगर वे असल नहीं बल्कि असली चीठियों की नकल हैं जो कि मैंने जैपाल (रघुबरसिंह) के यहाँ से चोरी की थीं । असल में इन चीठियों का लिखने वाला मैं नहीं बल्कि जैपाल है ।

जीत० । खैर तो जब तुमने जैपाल के यहाँ से असल चीठियों की नकल की थी तो तुम्हें उसी समय मालूम हुआ होगा कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह पर क्या आफत आने वाली है ?

भूत० । क्यों न मालूम होता! परन्तु रुपयें की लालच में पड़ कर अर्थात् कुछ लेकर मैंने जैपाल को छोड़ दिया । मगर बलभद्रसिंह से मैंने इस होनहार के बारे में इशारा जरूर कर दिया था, हाँ जैपाल का नाम नहीं बताया था क्योंकि उससे रुपया वसूल कर चुका था । हाँ और यह कहना तो मैं भूल ही गया कि रुपये वसूल करने के साथ ही मैंने जैपाल से इस बात की कसम भी खिला ली थी कि अब वह लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह से किसी तरह की बुराई न करेगा ! मगर अफसोस, उसने (जैपाल ने) मेरे साथ दगा करके मुझे धोखे में डाल दिया और वह काम कर गुजरा जो किया चाहता था । इसी तरह मुझे बलभद्रसिंह के बारे में धोखा हुआ । दुश्मनों ने उन्हें कैद कर लिया और मुझे हर तरह से विश्वास दिला दिया कि बलभद्रसिंह मर गए । लक्ष्मीदेवी के बारे में जो कुछ चालाकी

दारोगा ने की उसका मुझे कुछ भी पता न लगा और न मैं कई वर्षों तक लक्ष्मीदेवी की सूरत ही देख सका कि पहिचान लेता। बहुत दिनों के बाद जब मैंने नकली लक्ष्मीदेवी को देखा भी तो मुझे किसी तरह का शक न हुआ क्योंकि लड़कपन की सूरत में और अधेड़पन की सूरत में बहुत बड़ा फर्क पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त जिन दिनों मैंने नकली लक्ष्मीदेवी को देखा था उस समय उसकी दोनों बहिनें अर्थात् श्यामा (कमलिनी) और लाडिली भी उसके साथ रहती थीं, जब वे ही दोनों उसकी बहिन होकर धोखे में पड़ गईं तो मेरी कौन गिनती है?

बहुत दिनों के बाद जब यह कागज का मुट्ठा मेरे यहाँ से चोरी हो गया तब मैं घबड़ाया और डरा कि समय पर वह चोरी गया हुआ मुट्ठा मुझी को मुजरिम बना देगा, और आखिर ऐसा ही हुआ। दुष्टों ने यही कागजों का मुट्ठा कैदखाने में बलभद्रसिंह को दिखा कर मेरी तरफ से उनका दिल फेर दिया और तमाम दोष मेरे ही सर पर थोपा। इसके बाद और भी कई वर्ष बीत जाने पर जब राजा गोपालसिंह के मरने की खबर उड़ी और किसी को किसी तरह का शक न रहा तब धीरे धीरे मुझे दारोगा और जैपाल की शैतानी का कुछ पता लगा, मगर फिर मैंने जान बूझ कर तरह दे दिया और सोचा कि अब उन बातों को खोदने से फायदा ही क्या, जब कि खुद राजा गोपालसिंह ही इस दुनिया से उठ गये तो मैं किसके लिए इन बखेड़ों को उठाऊँ? (हाथ जोड़ कर) बेशक यही मेरा कसूर है और इसलिए मेरा भाई भी रंज है। हाँ इधर जब कि मैंने देखा कि अब श्रीमान् राजा वीरेन्द्रसिंह का दौरदौरा है और कमलिनी भी उस घर से निकल खड़ी हुई तब मैंने भी सर उठाया और अबकी दफे नेकनामी के साथ नाम पैदा करने का इरादा कर लिया। इस बीच में मुझ पर बड़ी आफतें आईं, मेरे मालिक रणधीरसिंह भी मुझसे बिगड़ गये और मैं अपना काला मुँह लेकर दुनिया से किनारे हो बैठा तथा अपने को मरा हुआ मशहूर कर दिया इत्यादि कहाँ तक बयान करूँ, बात तो यह है कि मैं सर से पैर तक अपने को कसूरवार समझ कर भी महाराज की शरण में आया हूँ।

जीत०। तुम्हारी पिछली कारवाई का बहुत सा हाल महाराज को मालूम हो चुका है, उस जमाने में इन्दिरा को बचाने के लिए जो कार्रवाइयाँ तुमने की थीं उनसे महाराज प्रसन्न हैं, खास करके इसलिए कि तुम्हारे हर एक काम में दबंगता का हिस्सा ज्यादे था और तुम सच्चे दिल से इन्द्रदेव के साथ दोस्ती का हक अदा कर रहे थे, मगर इस जगह एक बात का बड़ा ताज्जुब है।

भूत०। वह क्या?

जीत० । इन्दिरा के बारे में जो जो काम तुमने किये थे वे इन्द्रदेव से तो तुमने जरूर ही कहे होंगे ?

भूत० । बेशक जो कुछ काम मैं करता था वह इन्द्रदेव से पूरा पूरा कह देता था ।

जीत० । तो फिर इन्द्रदेव ने दारोगा को क्यों छोड़ दिया ? सजा देना तो दूर रहा इन्होंने गुरुभाई का नाता तक नहीं तोड़ा ।

भूत० । (एक लम्बी साँस लेकर और उँगली से इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इनके ऐसा भी बहादुर और मुरौवत का आदमी मैंने दुनिया में नहीं देखा । इनके साथ जो कुछ सलूक मैंने किया था उसका बदला एक ही काम में इन्होंने ऐसा अदा किया कि जो इनके सिवाय दूसरा कर ही नहीं सकता था और जिससे मैं जन्म भर इनके सामने सर उठाने लायक न रहा, अर्थात् जब मैंने रिश्वत लेकर दारोगा को छोड़ देने और कमलदान दे देने का हाल इनसे कहा तो सुनते ही इनकी आँखों में आँसू भर आये और एक लम्बी साँस लेकर इन्होंने मुझसे कहा, "भूतनाथ, तुमने यह काम बहुत ही बुरा किया । किसी दिन इसका नतीजा बहुत ही खराब निकलेगा! खैर, अब तो जो कुछ होना था हो गया, तुम मेरे दोस्त हो अस्तु जो कुछ तुम कर आये उसे मैं भी मंजूर करता हूँ और दारोगा को एक दम भूल जाता हूँ । अब मेरी लड़की और स्त्री पर भी चाहे कैसी आफत क्यों न आये और मुझे भी चाहे कितना ही कष्ट क्यों न भोगना पड़े मगर आज से दारोगा का नाम भी न लूँगा और न अपनी स्त्री के विषय में ही किसी से कुछ जिक्र करूँगा, जो कुछ तुम्हें करना हो करो और उस कम्बख्त दारोगा से भले ही कह दो कि 'इन बातों की खबर इन्द्रदेव को नहीं दी गई' । मैं भी अपने को ऐसा ही बनाऊँगा कि दारोगा को किसी तरह का खुटका न होगा और वह मुझे निरा उल्लू ही समझता रहेगा ।" इन्द्रदेव की यह बात मेरे कलेजे में तीर की तरह लगी और मैं यह कह कर उठ खड़ा हुआ कि 'दोस्त, मुझे माफ करो, बेशक मुझसे बड़ी भूल हुई । अब मैं दारोगा को कभी न छोड़ूँगा और जो कुछ उससे लिया है उसे वापस कर दूँगा' । मगर इतना कहते ही इन्द्रदेव ने मेरी कलाई पकड़ ली और जोर के साथ मुझे बैठा कर कहा, "भूतनाथ, मैंने यह बात तुमसे ताने के ढंग पर नहीं कही थी कि सुनने के साथ ही तुम उठ खड़े हुए । नहीं नहीं, ऐसा कभी न होने पायेगा, हमने और तुमने जो कुछ किया सो किया और जो कहा सो कहा अब उसके विपरीत हम दोनों में से कोई भी न जा सकेगा !"

सुरेन्द्र० । शाबाश !!

इतना कह कर सुरेन्द्रसिंह ने मुहब्बत की निगाह से इन्द्रदेव की तरफ देखा और भूतनाथ ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

भूत० । मैंने बहुत कुछ कहा मगर इन्द्रदेव ने एक न माना और बहुत बड़ी कसम देकर मेरा मुँह बन्द कर दिया, मगर इस बात का नतीजा यह निकला कि उसी दिन से हम दोनों दोस्त दुनिया से उदासीन हो गये, मेरी उदासीनता में तो कुछ कसर रह गई मगर इन्द्रदेव की उदासीनता में किसी तरह की कसर न रही । यही सबब था कि इन्द्रदेव के हाथ से दारोगा बच गया और दारोगा इन्द्रदेव की तरफ से (मेरे कहे मुताबिक) बेफिक्र रहा ।

सुरेन्द्र० । बेशक इन्द्रदेव ने यह बड़े हौसले और सब्र का काम किया ।

गोपाल० । दोस्ती का हक अदा करना इसे कहते हैं, जितने एहसान भूतनाथ ने इन पर किये थे सभों का बदला एक ही बात से चुका दिया !!

भूत० । (गोपालसिंह की तरफ देख के) कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह से इन्दिरा ने अपना हाल किस तरह पर बयान किया था सो मुझे मालूम न हुआ । अगर यह मालूम हो जाता तो अच्छा होता कि इन्दिरा ने जो कुछ बयान किया था वह ठीक है अथवा उसने जो कुछ सुना था वह सच था ?

गोपाल० । जहाँ तक मेरा खयाल है मैं कह सकता हूँ कि इन्दिरा ने अपने विषय में कोई बात ज्यादे नहीं कही, बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह कई बातें मालूम न होने के कारण छोड़ गई हो । मैंने उसका पूरा पूरा किस्सा महाराज को लिख भेजा था । (जीतसिंह की तरफ देख कर) अगर मेरी वह चीठी यहाँ मौजूद हो तो भूतनाथ को दे दीजिये, उसमें से इन्दिरा का किस्सा पढ़ कर ये अपना शक मिटा लें।

"हाँ वह चीठी मौजूद है" इतना कह कर जीतसिंह उठे और आलमारी से वह किताबनुमा चीठी निकाल कर और इन्दिरा का किस्सा बता कर भूतनाथ को दे दी । भूतनाथ उसे तेजी के साथ पढ़ गया और अन्त में बोला, "हाँ ठीक है, करीब करीब सभी बातें उसे मालूम हो गई थीं और आज मुझे भी एक बात नई मालूम हुई अर्थात् आखिरी मर्तबे जब मैं इन्दिरा को दारोगा के कब्जे से निकाल कर ले गया था और अपने एक अड्डे पर हिफाजत के साथ रख गया था तो वहाँ से एकाएक उसका गायब हो जाना मुझे बड़ा ही दुःखदाई हुआ । मैं ताज्जुब करता था कि इन्दिरा वहाँ से क्योंकर चली गई । जब मैंने अपने आदमियों से पूछा तो उन्होंने कहा कि 'हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि वह कब निकल कर भाग गई, क्योंकि हम लोग कैदियों की तरह उस पर निगाह नहीं रखते थे

बल्कि घर का आदमी समझ कर कुछ बेफिक्र थे'। परन्तु मुझे अपने आदमियों की बात पसन्द न आई और मैंने उन लोगों को सख्त सजा दी। आज मालूम हुआ कि वह काँटा मायाप्रसाद का बोया हुआ था। मैं उसे अपना दोस्त समझता था मगर अफसोस, उसने मेरे साथ बड़ी दगा की !"

गोपाल०। इन्दिरा की जुबानी यह किस्सा सुन कर मुझे भी निश्चय हो गया कि मायाप्रसाद दारोगा का हिती है अस्तु मैंने उसे तिलिस्म में कैद कर दिया है। अच्छा यह तो बताओ कि उस समय जब तुम आखिरी मर्तबे इन्दिरा को दारोगा के यहाँ से निकाल कर अपने अड्डे पर रख आये और लौट कर पुनः जमानिया गये तो फिर क्या हुआ, दारोगा से कैसी निपटी, और सर्यू का पता क्यों न लगा सके ?

भूत०। इन्दिरा को उस ठिकाने रख कर जब मैं लौटा तो पुनः जमानिया गया परन्तु अपनी हिफाजत के लिए पाँच आदमियों को अपने साथ लेता गया और उन्हें (अपने आदमियों को) क्या करना चाहिए इस बात को भी अच्छी तरह समझा दिया क्योंकि वे पाँचों आदमी मेरे शागिर्द थे और कुछ ऐयारी भी जानते थे। मुझे सर्यू के लिए दारोगा से फिर मुलाकात करने की जरूरत थी मगर उसके घर में जा कर मुलाकात करने का इरादा न था क्योंकि मैं खूब समझता था कि यह 'दूध का जला छाछ फूँक के पीता होगा' और मेरे लिये अपने घर में कुछ न कुछ बन्दोबस्त जरूर कर रखा होगा ! अगर अबकी दिलेरी के साथ उसके घर में आऊँगा तो बेशक फँस जाऊँगा, इसलिये बाहर ही उससे मुलाकात करने का बन्दोबस्त करने लगा। खैर इस फेर में दस बारह दिन बीत गए और इस बीच में मुलाकात करने का कोई अच्छा मौका न मिला। पता लगाने से मालूम हुआ कि वह बीमार है और घर से बाहर नहीं निकलता। यह बात मुझे मायाप्रसाद ने कही थी मगर मैंने मायाप्रसाद से इन्दिरा के बारे में कुछ भी नहीं कहा और न राजा साहब (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) ही से कुछ कहा क्योंकि दारोगा को बेदाग छोड़ देने के लिए मेरे दोस्त इन्द्रदेव ने पहिले ही से तै कर लिया था, अब अगर राजा साहब से मैं कुछ कहता तो दारोगा जरूर सजा पा जाता। लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि मायाप्रसाद और दारोगा को इस बात का पता क्योंकर लग गया कि इन्दिरा फलानी जगह है। खैर मुख्तसर यह है कि एक दिन स्वयम् मायाप्रसाद ने मुझसे कहा कि 'गदाधरसिंह, मैं तुम्हें इसकी इत्तिला देता हूँ कि सर्यू निःसन्देह दारोगा की कैद में है मगर बीमार है, अगर तुम किसी तरह दारोगा के मकान में चले जाओ तो

उसे जरूर अपनी आँखों से देख सकोगे। मेरी इस बात में तुम किसी तरह शक न करो, मैं बहुत पक्की बात तुमसे कह रहा हूँ'। मायाप्रसाद की बात सुन कर मुझे एक दफे जोश चढ़ आया और मैं दारोगा के मकान में जाने के लिए तैयार हो गया। मैं क्या जानता था कि मायाप्रसाद दारोगा से मिला हुआ है। खैर मैं अपनी हिफाजत के लिए कई तरह का बन्दोबस्त करके आधी रात के समय कमन्द के जरिये दारोगा के लम्बे चौड़े और शैतान की आँत की सूरत वाले मकान में घुस गया और चोरों की तरह टोह लगाता हुआ उस कमरे में जा पहूँचा जिसमें दारोगा एक गद्दी के ऊपर उदास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उस समय उसके बदन पर कई जगह पट्टी बँधी हुई थी जिससे वह चुटीला मालूम पड़ता था और उसके सर का भी यही हाल था। दारोगा मुझे देखते ही चौंक उठा और आँखें चार होने के साथ ही मैंने उससे कहा, "दारोगा साहब, मैं आपके मकान में कैद होने के लिए नहीं आया हूँ बल्कि सर्यू को देखने के लिए आया हूँ जिसके इस मकान में होने का पता मुझे लग चुका है। अस्तु इस समय मुझसे किसी तरह की बुराई करने की उम्मीद न रखिए क्योंकि मैं अगर आधे घंटे के अन्दर इस मकान के बाहर होकर अपने साथियों के पास न चला जाऊँगा तो उन्हें विश्वास हो जायगा कि गदाधरसिंह फँस गया और तब वे लोग आपको हर तरह से बर्बाद कर डालेंगे जिसका कि मैं पूरा पूरा बन्दोबस्त कर आया हूँ।"

इतना सुनते ही दारोगा खड़ा हो गया और उसने हँस कर जवाब दिया, "मेरे लिए आपको इस कड़े प्रबन्ध की कोई आवश्यकता न थी और न मुझमें इतनी सामर्थ्य ही है कि आप ऐसे ऐयार का मुकाबला करूँ, मैं तो खुद आपकी तलाश में था कि किसी तरह आपको पाऊँ और अपना कसूर माफ कराऊँ। मुझे विश्वास है कि जब आप मेरा एक बड़ा कसूर माफ कर चुके हैं तो इसको भी माफ कर देंगे। गुस्से को दूर कीजिए, मैं फिर भी आपके लिए हाजिर हूँ।"

मैं०। (बैठ कर और दारोगा को बैठा कर) कसूर माफ कर देने के लिए तो कोई हर्ज नहीं है मगर आइन्दे के लिए कसूर न करने का वादा करके भी आपने मेरे साथ दगा की इसका मुझे जरूर बड़ा रंज है!

दारोगा०। (हाथ जोड़ कर) खैर जो हो गया सो हो गया, अब अगर फिर कोई कसूर मुझसे हो तो जो चाहे सजा दीजियेगा, मैं ओफ भी न करूँगा।

मैं०। खैर एक दफे और सही, मगर इस कसूर के लिए आपको कुछ जुर्माना जरूर देना पड़ेगा।

दारोगा० । यद्यपि आप मुझे पहिले ही कंगाल कर चुके हैं मगर फिर भी मैं आपकी आज्ञा पालन के लिए हाजिर हूँ ।

मैं० । दो हजार अशर्फी ।

दारोगा० । (आलमारी में से एक थैली निकाल कर और मेरे सामने रख कर) बस एक हजार अशर्फी को कबूल कीजिए और ....

मैं० । (मुस्कुरा कर) मैं कबूल करता हूँ और अपनी तरफ से यह थैली आपको देकर इसके बदले में सर्यू को माँगता हूँ जो इस समय आपके घर में है।

दारोगा० । बेशक सर्यू मेरे घर में है और मैं उसे आपके हवाले करूँगा मगर इस थैली को आप कबूल कर लीजिये नहीं तो मैं समझूँगा कि आपने मेरा कसूर माफ नहीं किया !

मैं० । नहीं नहीं, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने आपका कसूर माफ कर दिया और खुशी से यह थैली आपको वापस करता हूँ, अब मुझे सिवाय सर्यू के और कुछ नहीं चाहिए ।

हम दोनों में देर तक इसी तरह की बातें हुई और इसके बाद मेरी आखिरी बात सुन कर दारोगा उठ खड़ा हुआ और मेरा हाथ पकड़ कर दूसरे कमरे की तरफ यह कहता हुआ ले चला कि 'आओ मैं तुमको सर्यू के पास ले चलूँ, मगर अफसोस की बात है कि इस समय वह हद दर्जे की बीमार हो रही है' । खैर वह मुझे घुमाता फिराता एक दूसरे कमरे में ले गया और वहाँ मैंने एक पलंग पर सर्यू को बीमार पड़े देखा । एक मामूली चिराग उससे थोड़ी ही दूर पर जल रहा था । (लम्बी साँस लेकर) अफसोस, मैंने देखा कि बीमारी ने उसे आखिरी मंजिल के करीब पहुँचा दिया है और वह इतनी कमजोर हो रही है कि बात करना भी उसके लिए कठिन हो रहा है । मुझे देखते ही उसकी आँखें डबडबा गईं और मुझे भी रुलाई आने लगी । उस समय मैं उसके पास बैठ गया और अफसोस के साथ उसका मुँह देखने लगा। उस वक्त दो लौंडियाँ उसकी खिदमत के लिए हाजिर थीं जिनमें से एक ने आगे बढ़ कर रूमाल से उसके आँसू पोंछे और पीछे हट गई । मैंने अफसोस के साथ पूछा कि 'सर्यू यह तेरा क्या हाल है' ?

इसके जवाब में सर्यू ने बहुत बारीक आवाज में रुक कर कहा, "भैया, (क्योंकि यह प्रायः मुझे भैया कह कर ही पुकारा करती थी) मेरी बुरी अवस्था हो रही है। अब मेरे बचने की आशा न करनी चाहिए । यद्यपि दारोगा साहब ने मुझे कैद किया था मगर मैं इनका एहसान मानती हूँ कि इन्होंने मुझे किसी तरह की

तकलीफ नहीं दी बल्कि इस बीमारी में मेरी बड़ी हिफाजत की, दवा इत्यादि का भी पूरा प्रबन्ध रक्खा, मगर यह न बताया कि मुझे कैद क्यों किया था। खैर जो हो, इस समय तो मैं आखिरी दम का इन्तजार कर रही हूँ और सब तरफ से मोहमाया को छोड़ ईश्वर से लौ लगाने का उद्योग कर रही हूँ। मैं समझ गई हूँ कि तुम मुझे लेने के लिए आए हो मगर दया कर के मुझे इसी जगह रहने दो और इधर उधर कहीं मत ले जाओ, क्योंकि इस समय मैं किसी अपने को देख मायामोह में आत्मा को फँसाया नहीं चाहती और न गंगाजी का सम्बन्ध छोड़ कर दूसरी किसी जगह मरना ही पसन्द करती हूँ, यहाँ यों भी अगर गंगाजी में फेंक दी जाऊँगी तो मेरी सद्‌गति हो जायगी, बस यही आखिरी प्रार्थना है। एक बात और भी है कि मेरे लिए दारोगा साहब को किसी तरह की तकलीफ न देना और ऐसा करना जिसमें इनकी जरा भी बेइज्जती न हो, यह मेरी वसीयत है और यही मेरी आरजू। अब श्री गंगाजी को छुड़ा कर मुझे नर्क में मत डालो।" इतना कह सर्यू कुछ देर के लिए चुप हो गई और मुझे उसकी अवस्था पर रुलाई आने लगी। मैं और भी कुछ देर तक उसके पास बैठा रहा और धीरे धीरे बातें भी होती रहीं मगर जो कुछ उसने कहा उसका तत्व यही था कि मुझे यहाँ से मत हटाओ और दारोगा को कुछ तकलीफ मत दो। उस समय मेरे दिल में यही बात आई कि इन्द्रदेव को इस बात की इत्तिला दे देनी चाहिये, वह जैसी आज्ञा देंगे किया जायगा। मगर अपना यह विचार मैंने दारोगा से नहीं कहा क्योंकि उसे मैं इन्द्रदेव की तरफ से बेफिक्र कर चुका था और कह चुका था कि सर्यू और इन्दिरा के साथ जो कुछ बर्ताव तुमने किया है उसकी इत्तिला मैं इन्द्रदेव को न दूँगा, दूसरे को कसूरवार ठहरा कर तुम्हारा नाम बचा जाऊँगा। अस्तु मैं सर्यू से दूसरे दिन मिलने का वादा करके वहाँ से उठा और अपने डेरे पर चला आया। यद्यपि रात बहुत कम बाकी रह गई थी परन्तु मैंने उसी समय अपने एक आदमी को पत्र देकर इन्द्रदेव के पास रवाना कर दिया और ताकीद कर दी कि एक घोड़ा किराए का लेकर दौड़ादौड़ चला जाय और जहाँ तक जल्द हो सके पत्र का जवाब लेकर लौट आवे। दूसरे दिन आधी रात जाते जाते तक वह आदमी लौट आया और उसने इन्द्रदेव का पत्र मेरे हाथ में दिया। लिफाफा खोल कर मैंने पढ़ा, उसमें यह लिखा हुआ था:—

"तुम्हारा पत्र पढ़ने से कलेजा हिल गया। सच तो यह है कि दुनिया में मुझ सा बदनसीब भी कोई न होगा ? खैर परमेश्वर की मरजी ही ऐसी है तो मैं क्या कर सकता हूँ। दारोगा के बारे में मैंने जो प्रतिज्ञा तुमसे की है उसे झूठा न होने

दूँगा। मैं अपने कलेजे पर पत्थर रख कर सब कुछ सहूँगा मगर वहाँ जाकर बेचारी सर्यू को अपना मुँह न दिखाऊँगा और न दारोगा से मिल कर उसके दिल में किसी तरह का शक ही आने दूँगा। हाँ अगर सर्यू की जान बचती नजर आवे या इस बीमारी से बच जाय तो उसे जिस तरह मुनासिब समझना मेरे पास पहुँचा देना और अगर वह मर जाय तो मेरी जगह तुम बैठे ही हो, उसकी अन्त्येष्टि क्रिया अपनी हिम्मत के मुताबिक कर के मेरे पास आना। मेरी तबीयत अब दुनिया से हट गई, बस इससे ज्यादे मैं कुछ नहीं कहा चाहता, हाँ यदि कुछ कहना होगा तो तुमसे मुलाकात होने पर कहूँगा। आगे जो ईश्वर की मर्जी।

तुम्हारा वही—इन्द्रदेव !"

इस चीठी को पढ़ कर मैं बहुत देर तक रोता और अफसोस करता रहा, इसके बाद उठ कर दारोगा के मकान की तरफ रवाना हुआ मगर आज भी अपने बचाव का पूरा पूरा इन्तजाम करता गया। मुलाकात होने पर दारोगा ने कल से ज्यादा खातिरदारी के साथ मुझे बैठाया और देर तक बातचीत करता रहा, मगर जब मैं सर्यू के पास गया तो उसकी हालत कल से आज बहुत ज्यादे खराब देखने में आई, अर्थात् आज उसमें बोलने की भी ताकत न थी। मुख्तसर यह कि तीसरे दिन बेहोश और चौथे दिन आधी रात के समय मैंने सर्यू को मुर्दा पाया। उस समय मेरी क्या हालत थी सो मैं बयान नहीं कर सकता। अस्तु उस समय जो कुछ करना उचित था और मैं कर सकता था उसे सवेरा होने के पहिले ही करके छुट्टी किया, अपने खयाल से सर्यू के शरीर की दाह क्रिया इत्यादि करके पंचतत्व में मिला दिया और इस बात की इत्तिला इन्द्रदेव को दे दी। इसके बाद इन्दिरा के लिए अपने अड्डे पर गया और वहाँ उसे न पाकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ। पूछने पर मेरे आदमियों ने जवाब दिया कि 'हम लोगों को कुछ भी खबर नहीं कि वह कब और कहाँ भाग गई'। इस बात से मुझे सन्तोष न हुआ। मैंने अपने आदमियों को सख्त सजा दी और बराबर इन्दिरा का पता लगाता रहा। अब सर्यू के मिल जाने से मालूम हुआ कि उस दिन मेरी कम्बख्त आँखों ने मेरे साथ दगा की और दारोगा के मकान में बीमार सर्यू को मैं पहिचान न सका। मेरी आँखों के सामने सर्यू मर चुकी थी और मैंने खुद अपने हाथ से इन्द्रदेव को यह समाचार लिखा था इस लिये इन्हें किसी तरह का शक न हुआ और सर्यू तथा इन्दिरा के गम में ये दीवाने से हो गये, हर तरह के चैन और आराम को इन्होंने इस्तीफा दे दिया और उदासीन हो एक प्रकार के साधू ही बन बैठे। मुझसे भी

मुहब्बत कम कर दी और शहर का रहना छोड़ अपने तिलिस्म के अंदर चले गये और उसी में रहने लगे, मगर न मालूम क्या सोच कर इन्होंने मुझे वहाँ का रास्ता न बताया। मुझ पर भी इस मामले का बड़ा असर पड़ा क्योंकि ये सब बात मेरी ही नालायकी के सबब से हुई थी अतएव मैंने उदासीन हो रणधीरसिंहजी की नौकरी छोड़ दी और अपने बालबच्चों तथा स्त्री को भी उन्हीं के यहाँ छोड़, बिना किसी को कुछ कहे जंगल और पहाड़ का रास्ता लिया। उधर एक और स्त्री से मैंने शादी कर ली थी जिससे नानक पैदा हुआ है, उधर भी कई ऐसे मामले हो गए जिनसे मैं बहुत उदास और परेशान हो रहा था, उसका हाल नानक की जुबानी तेजसिंह को मालूम ही हो चुका है बल्कि आप लोगों ने भी तो सुना ही होगा। अस्तु हर तरह से अपने को नालायक समझ कर मैं निकल भागा और फिर मुद्दत तक अपना मुँह किसी को न दिखाया। इधर जब जमाने ने पलटा खाया तब मैं कमलिनीजी से जा मिला। उन दिनों मेरे दिल में विश्वास हो गया था कि इन्द्रदेव मुझसे रंज हैं अस्तु मैंने इनसे भी मिलना जुलना छोड़ दिया बल्कि यों कहना चाहिए कि हमारी इनकी पुरानी दोस्ती का उन दिनों अंत हो गया था।

इन्द्रदेव०। बेशक यही बात थी। स्त्री के मरने की खबर सुन कर मुझे बड़ा ही रंज हुआ। मुझे कुछ तो भूतनाथ की जुबानी और कुछ तहकीकात करने पर मालूम ही हो चुका था कि मेरी लड़की और स्त्री इसी की बदौलत जहन्नुम में मिल गईं, अस्तु मैंने भूतनाथ को दोस्ती को तिलांजली दे दी और मिलना जुलना बिल्कुल बन्द कर दिया मगर इससे कहा कुछ भी नहीं क्योंकि मैं अपनी जुबान से दारोगा को माफ कर चुका था, इसके अतिरिक्त इसने मुझ पर कुछ एहसान भी तो जरूर ही किये थे उनका भी खयाल था अस्तु मैंने कुछ कहा तो नहीं मगर इसकी तरफ से दिल हटा लिया और फिर अपना कोई भेद भी इसे नहीं बताया। कभी कभी इससे मुझसे इधर उधर मुलाकात हो जाती थी क्योंकि इसे मैंने अपने मकान का तिलिस्मी रास्ता नहीं दिखाया था। अगर यह कभी मेरे मकान पर आया भी तो अपनी आँखों में पट्टी बाँध कर। यही सबब था कि इसे लक्ष्मीदेवी का हाल मालूम न हुआ। लक्ष्मीदेवी के बारे में भी मैं इसे कसूरवार समझता था और मुझे यह भी विश्वास था कि यह अपना बहुत सा भेद मुझसे छिपाता है और वास्तव में छिपाता था भी।

भूत०। (इन्द्रदेव से) नहीं सो बात तो नहीं है मेरे कृपालु मित्र।

इन्द्र०। अगर यह बात नहीं है तो वह कलमदान जिसे तुम आखिरी मर्तबे

इन्दिरा के साथ दारोगा के यहाँ से उठा लाये और मुझे दे गये थे मेरे यहाँ से गायब क्यों हो गया ?

भूत० । (मुस्कुरा कर) आपके किस मकान में से वह कलमदान गायब हो गया था ?

इन्द्र० । काशीजी वाले मकान में से । उसी दिन तुम मुझसे मिलने के लिए वहाँ आये थे और उसी दिन वह कलमदान गायब हो गया ।

भूत० । ठीक है, तो उस कलमदान को चुराने वाला मैं नहीं हूँ बल्कि मेरा लड़का नानक है, मैं तो यों भी अगर जरूरत पड़ती तो तुमसे वह कलमदान माँग सकता था । दारोगा की आज्ञानुसार लाडिली ने रामभोली बन कर नानक को धोखा दिया और आपके यहाँ से कलमदान चुरवा मँगवाया ।*

गोपाल० । हाँ ठीक है, इस बात को तो मैं भी सकारूँगा क्योंकि मुझे इसका असल हाल मालूम है । बेशक इसी ढंग से वह कलमदान वहाँ पहुँचा था और अन्त में बड़ी मुश्किल से उस समय मेरे हाथ लगा जब मैं कृष्णाजिन्न बन कर रोहतासगढ़ पहुँचा था । नानक को विश्वास है कि लाडिली ने रामभोली बन कर उसे धोखा दिया था मगर वास्तव में ऐसा नहीं हुआ । वह एक दूसरी ही ऐयारा थी जो रामभोली बनी थी, लाडिली ने तो केवल एक ही दिन या दो दिन रामभोली का रूप धरा था ।

जीत० । (राजा गोपालसिंह से) वह कलमदान आपको कहाँ से मिल गया ? दारोगा ने तो उसे बड़ी हिफाजत से रक्खा होगा !

गोपाल० । बेशक ऐसा ही है मगर भूतनाथ की बदौलत वह मुझे सहज ही में मिल गया। ऐसी ऐसी चीजों को दारोगा बहुत गुप्त रीति से अपने अजायबघर में रखता था जिसकी ताली मायारानी से लेकर भूतनाथ ने मुझे दी थी । उस अजायबघर का भेद मेरे पिता और उस दारोगा के सिवाय कोई नहीं जानता था, मेरे पिता ही ने दारोगा को वहाँ का मालिक बना दिया था, जब भूतनाथ ने उसकी ताली मुझे ला दी तब मुझे भी वहाँ का पूरा पूरा हाल मालूम हुआ ।

जीत० । (भूतनाथ से) खैर यह बताओ कि मनोरमा और नागर से तुम्हें क्या सम्बन्ध था ?

यह सवाल सुन कर भूतनाथ सन्न हो गया और सिर झुका कर कुछ सोचने लगा । उस समय गोपालसिंह ने उसकी मदद की और जीतसिंह की तरफ

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति चौथा भाग, छठवाँ बयान ।

कर कहा, "इस सवाल को छोड़ दीजिए क्योंकि वह जमाना भूतनाथ का बहुत ही बुरा तथा ऐयाशी का था। इसके अतिरिक्त जिस तरह राजा वीरेन्द्रसिंहजी ने रोहतासगढ़ के तहखाने में भूतनाथ का कसूर माफ किया था उसी तरह कमलिनी ने भी इसका वह कसूर कसम खाकर माफ कर दिया और साथ ही इसके उन ऐबों को छिपाने का बन्दोबस्त कर दिया है।" इसके जवाब में जीतसिंह ने कहा, "खैर जाने दो, देखा जायगा।"

गोपाल०। जब से भूतनाथ ने कमलिनी का साथ किया है तब से इसने (भूतनाथ ने) जो जो काम किये हैं उस पर ध्यान देने से आश्चर्य होता है। वास्तव में इसने वह काम किये हैं जिनकी ऐसे समय में सख्त जरूरत थी, मगर इसका लड़का नानक तो बिल्कुल ही बोदा और खुदगर्ज निकला। न तो कमलिनी के साथ मिल कर उसने कोई तारीफ का काम किया और न अपने बाप ही को किसी तरह की मदद पहुँचाई!

भूत०। बेशक ऐसा ही है, मैंने कई दफा उसे समझाया मगर....

सुरेन्द्र०। (गोपाल से) अच्छा अजायबघर में क्या बात है जिससे ऐसा अनूठा नाम उसका रक्खा गया। अब तो तुम्हें उसका पूरा पूरा हाल मालूम हो ही गया होगा।

गोपाल०। जी हाँ। एक किताब है जिसे 'ताली' के नाम से सम्बोधन करते हैं, उसके पढ़ने से वहाँ का कुल हाल मालूम होता है। वह बड़े हिफाजत और तमाशे की जगह थी और कुछ है भी क्योंकि अब उसका काफी हिस्सा मायारानी की बदौलत बर्बाद हो गया।

जीत०। उस किताब (ताली) की बदौलत मायारानी को भी वहाँ का हाल मालूम हुआ होगा?

गोपाल०। कुछ कुछ, क्योंकि उस किताब की भाषा वह अच्छी तरह समझ नहीं सकती थी। इसके अतिरिक्त उस अजायबघर का जमानिया के तिलिस्म से भी सम्बन्ध है इसलिए कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को वहाँ का हाल मुझसे भी ज्यादे मालूम हुआ होगा।

जीत०। ठीक है, (सुरेन्द्रसिंह की तरफ देख के) आज यद्यपि बहुत सी नई बातें मालूम हुई हैं परन्तु फिर भी जब तक दोनों कुमार यहाँ न आ जायंगे तब तक बहुत सी बातों को पता न लगेगा।

सुरेन्द्र०। सो तो हई है, परन्तु इस समय हम केवल भूतनाथ के मामले को तय किया चाहते हैं। जहाँ तक मालूम हुआ है भूतनाथ ने हम लोगों के साथ

सिवाय भलाई के बुराई कुछ भी नहीं की। अगर उसने बुराई की तो इन्द्रदेव के साथ या कुछ गोपालसिंह के साथ, सो भी उस जमाने में जब इनसे और हमसे कुछ संबंध नहीं था। आज ईश्वर की कृपा से ये लोग हमारे साथ हैं बल्कि हमारे अंग हैं इससे कहा भी जा सकता है कि भूतनाथ हमारा ही कसूरवार है मगर फिर भी हम इसके कसूरों की माफी का अख्तियार इन्हीं दोनों अर्थात् गोपालसिंह और इन्द्रदेव को देते हैं। ये दोनों अगर भूतनाथ का कसूर माफ कर दें तो हम इस बात को खुशी से मंजूर कर लेंगे। हाँ, लोग यह कह सकते हैं कि इस माफी देने में बलभद्रसिंह को भी शरीक करना चाहिए था। मगर हम इस बात को जरूरी नहीं समझते क्योंकि इस समय बलभद्रसिंह को कैद से छुड़ा कर भूतनाथ ने उन पर बल्कि सच तो यों है कि हम लोगों पर भी बहुत बड़ा अहसान किया है, इसलिए अगर बलभद्रसिंह को इससे कुछ रंज हो तो भी माफी देने में वे कुछ उज्र नहीं कर सकते।

गोपाल०। इसी तरह हम दोनों को भी माफी देने में किसी तरह का उज्र न होना चाहिए। इस समय भूतनाथ ने मेरी बहुत बड़ी मदद की है और मेरे साथ मिल कर ऐसे अनूठे काम किये हैं कि जिनकी तारीफ सहज में नहीं हो सकती। इस हमदर्दी और मदद के सामने उन कसूरों की कुछ भी हकीकत नहीं अस्तु मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ और सच्चे दिल से इसे माफी देता हूँ।

इन्द्रदेव०। माफी देनी ही चाहिए और जब आप माफी दे चुके तो मैं भी दे चुका, ईश्वर भूतनाथ पर कृपा करे जिससे अपनी नेकनामी बढ़ाने का शौक इसके दिल में दिन दिन तरक्की करता रहे। सच बात तो यह है कि कमलिनी की बदौलत इस समय हम लोगों को यह शुभ दिन देखने में आया और जब कमलिनी ने इससे प्रसन्न हो इसके कसूर माफ कर दिए तो हम लोगों को बाल बराबर भी उज्र नहीं हो सकता।

जीत०। बेशक, बेशक!

सुरेन्द्र०। इसमें कुछ भी शक नहीं! (भूतनाथ की तरफ देख के) अच्छा भूतनाथ, तुम्हारा सब कसूर माफ किया जाता है और इन दिनों हम लोगों के साथ तुमने जो जो नेकियाँ की हैं उनके बदले में हम तुम पर भरोसा करके तुम्हें अपना ऐयार बनाते हैं।

इतना कह सुरेन्द्रसिंह उठ बैठे और अपने सिरहाने के नीचे से अपना खास बेशकीमत खंजर निकाल कर भूतनाथ की तरफ बढ़ाया। भूतनाथ खड़ा हो गया और झुक कर सलाम करने बाद खंजर ले लिया और इसके बाद जीतसिंह गोपालसिंह और इन्द्रदेव को भी सलाम किया। जीतसिंह ने अपना खास ऐयारी का

बटुआ भूतनाथ को दिया। गोपालसिंह ने वह तिलिस्मी तमंचा जिससे आखिरी वक्त मायारानी ने काम लिया था और जो इस समय उनके पास था, गोली बनाने की तर्कीब सहित भूतनाथ को दिया और इन्द्रदेव ने यह कह कर उसे गले से लगा लिया कि 'मुझ फकीर के पास इससे बढ़ कर और कोई चीज नहीं है कि मैं फिर तुम्हें अपना भाई बना कर ईश्वर से प्रार्थना करूँ कि अब इस नाते में किसी तरह का फर्क न पड़ने पावे।'

इसके बाद दोनों आदमी अपनी अपनी जगह पर बैठ गये और भूतनाथ ने हाथ जोड़ कर सुरेन्द्रसिंह से कहा, "आज मैं समझता हूँ कि मुझ सा खुशनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई भी नहीं है। बदनसीबी के चक्कर में पड़ कर मैं वर्षों परेशान रहा, तरह तरह की तकलीफें उठाईं, पहाड़ पहाड़ और जंगल जंगल मारा फिरा, साथ ही इसके पैदा भी बहुत किया, और बिगाड़ा भी बहुत परन्तु सच्चा सुख नाम मात्र के लिए एक दिन भी न मिला और न किसी को मुँह दिखाने की अभिलाषा ही रह गई। अन्त में न मालूम किस जन्म का० पुण्य सहायक हुआ जिसने मेरे रास्ते को बदल दिया और जिसकी बदौलत आज मैं इस दर्जे को पहुँचा। अब मुझे किसी बात की परवाह नहीं रही। आज तक जो मुझसे दुश्मनी रखते थे कल से वे मेरी खुशामद करेंगे, क्योंकि दुनिया का कायदा ही ऐसा है। महाराज इस बात का भी निश्चय रक्खें कि उस पीतल की सन्दूकड़ी से महाराज या महाराज के पक्षपातियों का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है जो नकली बलभद्रसिंह की गठरी में से निकली है और जिसके ब्यान ही से मेरे रोंगटे खड़े होते हैं। मैं उस भेद को भी महाराज से छिपाना नहीं चाहता, हाँ यह अच्छा है कि सर्व-साधारण में वह भेद फैलने न पावे। मैंने उसका कुछ हाल देवीसिंह से कह दिया है, आशा है कि वे महाराज से जरूर अर्ज करेंगे।

जीत०। खैर उसके लिए तुम चिन्ता न करो, जैसा होगा देखा जायगा। अब अपने डेरे पर जाकर आराम करो, महाराज भी आज रात भर जागते ही रहे हैं।

गोपाल०। जी हाँ, अब तो नाम मात्र को रात बच गई होगी।

इतना कह कर राजा गोपालसिंह उठ खड़े हुए और सभों को साथ लिए हुए कमरे के बाहर चले गए।

तीसरा बयान

इस समय रात बहुत कम बाकी थी और सुबह की सुफेदी आसमान पर फैला ही चाहती थी। और लोग तो अपने अपने ठिकाने चले गए और दोनों नकाबपोशों

ने भी अपने घर का रास्ता लिया, मगर भूतनाथ सीधे देवीसिंह के डेरे पर चला गया। दरवाजे ही पर पहरे वाले की जुबानी मालूम हुआ कि वे सोए हैं परन्तु देवीसिंह को न मालूम किस तरह भूतनाथ के आने की आहट मिल गई (शायद जागते हों) अस्तु वे तुरत बाहर निकल आए और भूतनाथ का हाथ पकड़ के कमरे के अन्दर ले गए। इस समय वहाँ केवल एक शमादान की मद्धिम रोशनी हो रही थी, दोनों आदमी फर्श पर बैठ गए और यों बातचीत होने लगी—

देवी०। कहो इस समय तुम्हारा आना कैसे हुआ? क्या कोई नई बात हुई?

भूत०। बेशक नई बात हुई और वह इतनी खुशी की हुई है जिसके योग्य मैं नहीं था।

देवी०। (ताज्जुब से) वह क्या?

भूत०। आज महाराज ने मुझे अपना ऐयार बना लिया और इस इज्जत के लिए मुझे यह खंजर दिया है।

इतना कह कर भूतनाथ ने महाराज का दिया हुआ खंजर और जीतसिंह तथा गोपालसिंह का दिया हुआ बटुआ और तमंचा देवीसिंह को दिखाया और कहा, "इसी बात की मुबारकबाद देने के लिए मैं आया हूँ कि तुम्हारा एक नालायक दोस्त इस दरजे को पहुँच गया।"

देवी०। (प्रसन्न होकर और भूतनाथ को गले से लगा कर) बेशक यह बड़ी खुशी की बात है, ऐसी अवस्था में तुम्हें अपने पुराने मालिक रणधीरसिंह को भी सलाम करने के लिए जाना चाहिए।

भूत०। जरूर जाऊँगा।

देवी०। यह कार्रवाई कब हुई?

भूत०। अभी थोड़ी ही देर हुई। मैं इस समय महाराज के पास से ही आ रहा हूँ।

इतना कह कर भूतनाथ ने आज रात का बिल्कुल हाल देवीसिंह से बयान किया। इसके बाद भूतनाथ और देवीसिंह में देर तक बातचीत होती रही और जब दिन अच्छी तरह निकल आया तब दोनों ऐयार वहाँ से उठे और स्नान सन्ध्या की फिक्र में लगे।

जरूरी कामों से निश्चिन्ती पा और स्नान पूजा से निवृत्त होकर भूतनाथ अपने पुराने मालिक रणधीरसिंह के पास चला गया। बेशक उसके दिल में इस बात का खुटका लगा हुआ था कि उसका पुराना मालिक उसे देख कर प्रसन्न न

होगा बल्कि सामना होने पर भी कुछ देर तक उसके दिल में इस बात का गुमान बना रहा, मगर जिस समय भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल बयान किया उस समय रणधीरसिंह को बहुत मेहरबान और प्रसन्न पाया। रणधीरसिंह ने उसको खिलअत और इनाम भी दिया और बहुत देर तक उससे तरह तरह की बातें करते रहे।

चौथा बयान

यह बात तो तै पा चुकी थी कि सब कामों के पहिले कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की शादी हो जानी चाहिए अस्तु इसी खयाल से जीतसिंह शादी के इन्तजाम में जी जान से कोशिश कर रहे हैं और इस बात की खबर पाकर सभी प्रसन्न हो रहे हैं कि आज दोनों कुमार यहाँ आ जायेंगे और शीघ्र ही उनकी शादी भी हो जायेगी। महाराज की आज्ञानुसार जीतसिंह मुलाकात करने के लिए रण-धीरसिंह के पास गये और हर तरह की जरूरी बातचीत करने के बाद इस बात का फैसला भी कर आये कि किशोरी के साथ ही साथ कामिनी का भी कन्यादान रणधीरसिंह ही करेंगे। साथ ही इसके रणधीरसिंह की यह बात भी जीतसिंह ने मंजूर कर ली कि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के आने के पहिले किशोरी और कामिनी उनके (रणधीरसिंह के) खेमे में पहुँचा दी जांयगी। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् किशोरी और कामिनी बड़ी हिफाजत के साथ रणधीरसिंह के खेमे में पहुँचा दी गईं और बहुत से फौजी सिपाहियों के साथ पन्नालाल रामनारायण चुन्नीलाल और पण्डित बद्रीनाथ ऐयार खास उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिए गए।

आज कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के आने की उम्मीद में लोग खुशी खुशी तरह तरह के चर्चे कर रहे हैं। आज ही के दिन आने के लिए दोनों कुमारों ने चीठी लिखी थी इस लिए आज उनके दादा दादी बाप माँ दोस्तों और मुहब्ब-तियों को उम्मीद हो रही है कि उनकी तरसती हुई आँखें ठंडी होंगी और जुदाई के सदमों से मुर्झाया हुआ दिल हरा होगा। अहलकार और खैरखाह लोग जरूरी कामों को भी छोड़ कर तिलिस्मी इमारत में इकट्ठे हो रहे हैं। इसी तरह हर एक अदना और आला दोनों कुमारों के आने की उम्मीद में खुश हो रहा है। गरीबों और मोहताजों की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं, उन्हें इस बात का पूरा विश्वास हो रहा है कि अब उनका दारिद्रय दूर हो जायगा!

दो पहर दिन ढलने के बाद दोनों नकाबपोश भी आकर हाजिर हो गए हैं, केवल वे ही नहीं बल्कि उनके साथ और भी कई नकाबपोश हैं, जिनके बारे में

लोग तरह तरह के चर्चे कर रहे हैं और साथ ही यह भी कह रहे हैं कि 'जिस समय ये नकाबपोश लोग अपने चेहरों से नकाबें हटावेंगे उस समय जरूर कोई न कोई अनूठी घटना देखने सुनने में आवेगी'।

नकाबपोशों की जुबानी यह तो मालूम हो ही चुका था कि दोनों कुमार उसी पत्थर वाले तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से प्रकट होंगे जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ है, इसलिए इस समय महाराज राजा साहब ऐयार और सलाहकार लोग उसी दालान में इकट्ठे हो रहे हैं और वह दालान भी सज सजा कर लोगों के बैठने लायक बना दिया गया है।

तीन पहर दिन बीत जाने पर तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से कुछ विचित्र ही ढंग के बाजे की आवाज आने लगी जो कि भारी मगर सुरीली थी और जिसके सबब से लोगों का ध्यान उसी तरफ खिंचा। महाराज सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह जीतसिंह तेजसिंह गोपालसिंह तथा दोनों नकाबपोश उठ कर उस चबूतरे के पास गये। ये लोग बड़े गौर से उस चबूतरे की अवस्था पर ध्यान दिये रहे क्योंकि इस बात का पूरा गुमान था कि पहिले की तरह आज भी उस चबूतरे का अगला हिस्सा किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग जायगा। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् जिस तरह बलभद्रसिंह के आने और जाने के वक्त उस चबूतरे का अगला हिस्सा खुल गया था उसी तरह इस समय भी वह किवाड़ के पल्ले की तरह धीरे धीरे खुल कर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर से कुँअर इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह बाहर निकल कर महाराज सुरेन्द्रसिंह के पैरों पर गिर पड़े। उन्होंने बड़े प्रेम से उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद दोनों कुमारों ने अपने पिता का चरण छुआ फिर जीतसिंह और तेजसिंह को प्रणाम करने बाद राजा गोपालसिंह से मिले। इसके बाद बारी बारी नकाबपोशों, ऐयारों, दोस्तों से भी मुलाकात की।

बन्दोबस्त पहिले से हो चुका था और इशारा भी बँधा हुआ था, अतएव जिस समय कुमार महाराज के चरणों पर गिरे हैं उसी समय फाटक पर से बाजे की आवाज आने लगी, जिससे बाहर वालों को भी मालूम हो गया कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आ गये।

इस समय की खुशी का हाल लिखना हमारी ताकत से बाहर है, हाँ इसका अन्दाज पाठकगण स्वयम् कर सकते हैं कि जब दोनों कुमार मिलने के लिए महल के अन्दर गए तो औरतों में खुशी का दरिया कितने जोश के साथ उमड़ा होगा।

महल के अन्दर दोनों कुमारों का इन्तजार बनिस्बत बाहर के ज्यादा होगा यह सोच कर महाराज ने दोनों कुमारों को ज्यादे देर तक बाहर रोकना मुनासिब न समझ कर शीघ्र ही महल में जाने की आज्ञा दी और दोनों कुमार भी खुशी खुशी महल के अन्दर जाकर सभों से मिले। उनकी माँ और दादी की बढ़ती हुई खुशी का तो आज अन्दाज करना बहुत ही कठिन है, जिन्होंने लड़कों की जुदाई तथा रंज और नाउम्मीदी के साथ ही साथ तरह तरह की खबरों से पहुँची हुई चोटों को अपने नाजुक कलेजों पर सम्हाल कर और देवताओं की मिन्नतें मानमान कर आज का दिन देखने के लिए अपनी नन्हीं सी जान को बचा रक्खा था। अगर उन्हें समय और नीति पर विशेष ध्यान न रहता तो आज घंटों तक अपने बच्चों को कलेजे से अलग करके बातचीत करने और महल के बाहर जाने का मौका न देतीं।

दोनों कुमार खुशी खुशी सभों से मिले। एक एक करके सभों से कुशल मंगल पूछा, कमलिनी और लाडिली से भी चार आँखें हुईं, मगर किशोर और कामिनी की सूरत दिखाई न पड़ी, जिनके बारे में सुन चुके थे कि महल के अन्दर पहुँच चुकी हैं। इस सबब से उनके दिल को जो कुछ तकलीफ थी उसका अन्दाज औरों को तो नहीं मगर कुछ कुछ कमलिनी और लाडिली को मिल गया और उन्होंने बात ही बात में इस भेद को खुलवा कर कुमारों को तसल्ली करवा दी।

थोड़ी देर तक दोनों भाई महल के अन्दर रहे और इस बीच में बाहर से कई दफे तलबी का सन्देश पहुँचा, अस्तु पुनः मिलने का वादा करके वहाँ से उठ कर वे बाहर की तरफ रवाना हुए और उस आलीशान कमरे में पहुँचे जिसमें कई खास खास आदमियों और आपुस वालों के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह उनका इन्तजार कर रहे थे। इस समय इस कमरे में यद्यपि राजा गोपालसिंह, नकाबपोश लोग, जीतसिंह, तेजसिंह, भूतनाथ और ऐयार लोग भी मौजूद थे मगर कोई आदमी ऐसा न था जिसके सामने भेद की बातें करने में किसी तरह का संकोच हो। दोनों कुमार इशारा पाकर अपने दादा साहब के बगल के बैठ गए और धीरे धीरे बातचीत होने लगी।

सुरेन्द्र०। (दोनों कुमारों की तरफ देख के) भैरोसिंह और तारासिंह तुम्हारे पास गये हुए थे, उन दोनों को कहाँ छोड़ा ?

इन्द्रजीत०। (मुस्कुराते हुए) जी वे दोनों तो हम लोगों के आने के पहिले ही से हजूर में हाजिर हैं!

सुरेन्द्र०। (ताज्जुब से चारो तरफ देख के) कहाँ ?

चेहरे से नकाब हटा दी और खड़े होकर अदब के साथ महाराज को सलाम किया। ये नकाबपोश गिनती में पाँच थे और इन्हीं पाँचों में इस समय वे दोनों सूरतें भी दिखाई पड़ीं जो यहाँ दर्बार में पहिले दिखाई पड़ चुकी थीं या जिन्हें देख कर दारोगा और बेगम के छक्के छूट गए थे।

अब सभों का ध्यान उन पाँचों नकाबपोशों की तरफ खिंच गया जिनका असल हाल जानने के लिए लोग पहिले ही से बेचैन हो रहे थे क्योंकि इन्होंने कैदियों के मामले में कुछ विचित्र ढंग की कैफियत और उलझन पैदा कर दी थी। यद्यपि कह सकते हैं कि यहाँ पर इन पाँचों को पहिचानने वाला कोई न था मगर भूतनाथ और राजा गोपालसिंह बड़े गौर से उनकी तरफ देख कर अपने हाफजे (स्मरण-शक्ति) पर जोर दे रहे थे और उम्मीद करते थे कि इन्हें हम पहिचान लेंगे।

सुरेन्द्र०। (गोपालसिंह की तरफ देख के) केवल हमी लोग नहीं वल्कि हजारों आदमी इनका हाल जानने के लिए बेताब हो रहे हैं, अस्तु ऐसा करना चाहिए कि एक साथ ही इनका हाल मालूम हो जाय।

गोपाल०। मेरी भी यही राय है।

एक नकाब०। कैदियों के सामने ही हम लोगों का किस्सा सुना जाय तो ठीक है क्योंकि ऐसा होने ही से महाराज का विचार पूरा होगा। इसके अतिरिक्त हम लोगों के किस्से में वही कैदी हामी भरेंगे और कई अधूरी बातों को पूरा करके महाराज का शक दूर करेंगे जिन्हें हम लोग नहीं जानते और जिनके लिए महाराज उत्सुक होंगे।

इन्द्र०। (सुरेन्द्रसिंह से) बेशक ऐसा ही है। यद्यपि हम दोनों भाई इन लोगों का किस्सा सुन चुके हैं मगर कई भेदों का पता नहीं लगा जिनके जाने बिना जी बेचैन हो रहा है और उनका मालूम होना कैदियों की इच्छा पर निर्भर है।

सुरेन्द्र०। (कुछ सोच कर) खैर ऐसा ही किया जाय।

इसके बाद उन लोगों में दूसरे तरह की बातचीत होने लगी जिसके लिखने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती। इसके घण्टे भर बाद दर्बार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने अपने स्थान पर चले गए।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह का दिल किशोरी को देखने के लिए बेताब हो रहा था। उन्हें विश्वास था कि यहाँ पहुँच कर उससे अच्छी तरह मुलाकात होगी और बहुत दिनों का अरमान भरा दिल उसकी सोहबत से तस्कीन पाकर पुनः उसके कब्जे में आ जायगा मगर ऐसा नहीं हुआ, अर्थात् कुमार के आने के पहिले ही वह अपने नाना के डेरे में भेज दी गई और उनका अरमान भरा दिल उसी तरह तड़पता रह

गया। यद्यपि उन्हें इस बात का भी विश्वास था कि अब उनकी शादी किशोरी के साथ बहुत जल्दी होने वाली है मगर फिर भी उनका मनचला दिल जिसे उनके कब्जे के बाहर भये मुद्दत हो चुकी थी इन चापलूनियों को कब मानता था! इसी तरह कमलिनी से भी मीठी मीठी बातें करने के लिए वे कम बेताब न थे मगर बड़ों का लेहाज उन्हें इस बात की इजाजत नहीं देता था कि उससे एकान्त में मुलाकात करें यद्यपि ऐसा करते तो कोई हर्ज की बात न थीं मगर इसीलिए कि उसके साथ भी शादी होने की उम्मीद थी शर्म और लेहाज के फेर में पड़े हुए थे। परन्तु कमलिनी को इस बात का सोच विचार कुछ भी न था। हम इसका सबब भी बयान नहीं कर सकते, हाँ इतना कहेंगे कि जिस कमरे में कुँअर इन्द्रजीतसिंह का डेरा था उसी के पीछे वाले कमरे में कमलिनी का डेरा था और उस कमरे से कुँअर इन्द्रजीतसिंह के कमरे में आने जाने के लिए एक छोटा सा दरवाजा भी था जो इस समय भीतर की तरफ से अर्थात् कमलिनी की तरफ से बन्द था और कुमार को इस बात की कुछ भी ख़बर न थी।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह अपने पलंग पर लेटे हुए किशोरी और कमलिनी के विषय में तरह तरह की बातें सोच रहे थे। उनके पास कोई दूसरा आदमी न था और एक तरह पर सन्नाटा छाया हुआ था जब एकाएक पीछे वाले कमरे का (जिसमें कमलिनी का डेरा था) दरवाजा खुला और अन्दर से एक लौंडी आती हुई दिखाई पड़ी।

कुमार ने चौंक कर उसको तरफ देखा और उसने हाथ जोड़कर अर्ज किया, "कमलिनीजी आपसे मिला चाहती हैं, आज्ञा हो तो स्वयं यहाँ आवें या आप ही वहाँ तक चलें।"

कुमार०। वे कहाँ हैं?

लौंडी०। (पिछले कमरे की तरफ बता कर) इसी कमरे में तो उनका डेरा है।

कुमार०। (ताज्जुब से) इसी कमरे में! मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी। अच्छा मैं स्वयं चलता हूँ, तू इस कमरे का दरवाजा बन्द कर दे।

आज्ञा पाते ही लौंडी ने कुमार के कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया जिसमें बाहर से कोई यकायक आ न जाय। इसके बाद इशारा पाकर लौंडी कमलिनी के कमरे की तरफ रवाना हुई और कुमार उसके पीछे पीछे चले। चौखट के अन्दर पैर रखते ही कुमार की निगाह कमलिनी पर पड़ी और वे भौंचक्के से होकर उसकी सूरत देखने लगे।

इस समय कमलिनी की सुन्दरता बनिस्बत पहिले के बहुत ही बढ़ी चढ़ी देखने में आई। पहिले जिन दिनों कुमार ने कमलिनी की सूरत देखी थी उन दिनों वह बिल्कुल उदासीन और मामूली ढंग पर रहा करती थी। मायारानी के झगड़े की बदौलत उनकी जान जोखिम में पड़ी हुई थी और इस कारण से उसके दिमाग को एक पल के लिए भी छुट्टी नहीं मिलती थी। इन्हीं सब कारणों से उसके शरीर और चेहरे की रौनक में भी बहुत बड़ा फर्क पड़ गया था तिस पर भी वह कुमार की सच्ची निगाह में एक ही दिखाई देती थी। फिर आज उसकी खुशी और खूबसूरती का क्या कहना है जब कि ईश्वर की कृपा से वह अपने तमाम दुश्मनों पर फतह पा चुकी है, तरद्दुदों के बोझ से हलकी हो चुकी है, और मनमानी उम्मीदों के साथ अपने को बनाने सँवारने का भी मुनासिब मौका उसे मिल गया है! यही सबब है कि इस समय वह रानियों की सी पोशाक और सजावट में दिखाई देती है।

कमलिनी की इस समय की खूबसूरती ने कुमार पर बहुत बड़ा असर किया और बनिस्बत पहिले के इस समय बहुत ज्यादे कुमार के दिल पर अपना अधिकार जमा लिया। कुमार को देखते ही कमलिनी ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कुमार ने आगे बढ़ कर बड़े प्रेम से उसका हाथ पकड़ कर पूछा, "कहो अच्छी तो हो?"

"अब भी अच्छी न होऊँगी!" कह कर मुस्कुराती हुई कमलिनी ने कुमार को ले जाकर एक ऊँची गद्दी पर बैठाया और आप भी उनके पास बैठ कर यों बातचीत करने लगी।

कम०। कहिए तिलिस्म के अंदर आपको किसी तरह की तकलीफ तो नहीं हुई!

इन्द्र०। ईश्वर की कृपा से हम लोग कुशल पूर्वक यहाँ तक चले आए और अब तुम्हें धन्यवाद देते हैं क्योंकि यह सब बातें तुम्हारी ही बदौलत नसीब हुई हैं। अगर तुम मदद करतीं तो न मालूम हम लोगों की क्या दशा हुई होती! हमारे साथ तुमने जो कुछ उपकार किया है उसका बदला चुकाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है, सिवाय इसके मैं क्या कह सकता हूँ कि (अपनी छाती पर हाथ रख के) यह जान और यह शरीर तुम्हारा है।

कम०। (मुस्कुरा कर) अब कृपा कर इन सब बातों को तो रहने दीजिए क्योंकि इस समय मैंने इसलिए आपको तकलीफ नहीं दी है कि अपनी बड़ाई सुनूँ या आप पर अपना अधिकार जमाऊँ।

इन्द्र०। अधिकार तो तुमने उसी दिन मुझ पर जमा लिया जिस दिन ऐयार

के हाथ से मेरी जान बचाई और मुझसे तलवार की लड़ाई लड़ कर यह दिखा दिया कि मैं तुमसे ताकत में कम नहीं हूँ।

कम०। (हँस कर) क्या खूब! मैं और आपका मुकाबला करूँ!! आपने मुझे भी क्या कोई पहलवान समझ लिया है?

इन्द्र०। आखिर बात क्या थी जो उस दिन मैं तुमसे हार गया था।

कम०। आपको उस बेहोशी की दवा ने कमजोर और खराब कर दिया था जो एक अनाड़ी ऐयार की बनाई हुई थी। उस समय केवल आपको चैतन्य करने के लिए मैं लड़ पड़ी थी नहीं तो कहाँ मैं और कहाँ आप!!

इन्द्र०। खैर ऐसा ही होगा मगर इसमें तो कोई शक नहीं कि तुमने मेरी जान बचाई, केवल उसी दफे नहीं बल्कि उसके बाद भी कई दफे।

कम०। भया भया, अब इन सब बातों को जाने दीजिए, मैं ऐसी बातें नहीं सुना चाहती। हाँ यह बतलाइए कि तिलिस्म के अन्दर आपने क्या क्या देखा और क्या क्या किया?

इन्द्र०। मैं सब हाल तुमसे कहूँगा बल्कि उन नकाबपोशों की कैफियत भी तुमसे बयान करूँगा जो मुझे तिलिस्म के अन्दर मिले हैं और जिनका हाल अभी तक मैंने किसी से बयान नहीं किया, मगर तुम यह सब हाल अपनी जुबान से किसी से न कहना।

कम०। बहुत खूब।

इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना कुल हाल कमलिनी से बयान किया और कमलिनी ने भी अपना पिछला किस्सा और उसी के साथ साथ भूतनाथ नानक तथा तारा वगैरह का हाल बयान किया जो कुमार को मालूम न था, इसके बाद पुनः उन दोनों में यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। आज तुम्हारी जुबानी बहुत सी ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिनके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता था।

कम०। इसी तरह आपकी जुबानी उन नकाबपोशों का हाल सुन कर मेरी अजीब हालत हो रही है, क्या करूँ आपने मना कर दिया है कि किसी से इस बात का जिक्र न करना नहीं तो अपने सुयोग्य पति से उनके विषय में....

इन्द्र० (चौंक कर) हैं? क्या तुम्हारी शादी हो गई?

कम०। (कुमार के चेहरे का रंग उड़ा हुआ देख मुस्कुरा कर) मैं आपसे उस तालाब वाले मकान में कह चुकी थी कि मेरी शादी बहुत जल्द होने वाली है।

इन्द्र०। (लम्बी साँस लेकर) हाँ मुझे याद है, मगर यह उम्मीद न थी कि

वह इतनी जल्दी हो जायगी।

कम०। तो क्या आप मुझे हमेशा कुँआरी ही देखना पसन्द करते थे ?

इन्द्र०। नहीं ऐसा तो नहीं है, मगर....

कम०। मगर क्या ? कहिए कहिए, रुके क्यों ?

इन्द्र०। यही कि मुझसे पूछ तो लिया होता।

कम०। क्या खूब ! आपने क्या मुझसे पूछ कर इन्द्रानी के साथ शादी की थी जो मैं आपसे पूछ लेती !

इतना कह कर कमलिनी हँस पड़ी और कुमार ने शर्मा कर सिर झुका लिया मगर इस समय कुमार के चेहरे से मालूम होता था कि उन्हें हद दर्जे का रंज है और कलेजे में बेहिसाब तकलीफ हो रही है।

कुमार०। (कमलिनी के पास से कुछ खिसक कर) मुझे विश्वास था कि जन्म भर तुमसे हँसने बोलने का मौका मिलेगा !

कम०। मेरे दिल में भी यही बात बैठी हुई थी और यही तै कर मैंने शादी भी की है कि आपसे कभी अलग होने की नौबत न आवे। मगर आप हट क्यों गये ? आइये आइये जिस जगह बैठे थे बैठिए।

कुमार०। नहीं नहीं, पराई स्त्री के साथ एकान्त में बैठना ही धर्म के विरुद्ध है न कि साथ सट कर, मगर आश्चर्य है कि तुम्हें इस बात का कुछ भी खयाल नहीं है। मुझे विश्वास था कि तुमसे कभी कोई काम धर्म के विरुद्ध न हो सकेगा।

कम०। मुझमें आपने कौन सी बात धर्म-विरुद्ध पाई ?

कुमार०। यही कि तुम इस तरह एकान्त में बैठ कर मुझसे बातें कर रही हो, इससे भी बढ़ कर वह बात जो अभी तुमने अपनी जुबान से कबूल की है कि 'तुमसे कभी अलग न होऊँगी'। क्या यह धर्म विरुद्ध नहीं है ? क्या तुम्हारा पति इस बात को जान कर भी तुम्हें पतिव्रता कहेगा ?

कम०। कहेगा और जरूर कहेगा, अगर न कहे तो इसमें उसकी भूल है। उसे निश्चय है और आप सच समझिए कि कमलिनी प्राण दे देना स्वीकार करेगी परन्तु धर्म-विरुद्ध पथ पर चलना कदापि नहीं, आपको मेरी नीयत पर ध्यान देना चाहिए दिल्लगी के कामों पर नहीं, क्योंकि मैं ऐयारा भी हूँ। यदि मेरा पति इस समय यहाँ आ जाय तो आपको मालूम हो जाय कि मुझ पर वह जरा भी शक नहीं करता और मेरा इस तरह बैठना उसे कुछ भी नहीं गड़ाता।

कुमार०। (कुछ सोच कर) ताज्जुब है !!

कम०। अभी क्या, आगे आपको और भी ताज्जुब होगा।

इतना कह कर कमलिनी ने कुमार की कलाई पकड़ ली और अपनी तरफ खींच कर कहा, "पहिले आप अपनी जगह पर आ कर बैठ जाइये तो मुझसे बात कीजिए।"

कुमार० । नहीं नहीं कमलिनी, तुम्हें ऐसा उचित नहीं है। दुनिया में धर्म से बढ़ कर और कोई वस्तु नहीं है अतएव तुम्हें भी धर्म पर ध्यान रखना चाहिए, अब तुम स्वतन्त्र नहीं हो पराये की स्त्री हो।

कम० । यह सच है परन्तु मैं आपसे पूछती हूँ कि यदि मेरी शादी आपके साथ होती तो क्या मैं आनन्दसिंह से हँसने बोलने या दिल्लगी करने लायक न रहती?

कुमार० । बेशक उस हालत में तुम आनन्द से हंस बोल और दिल्लगी भी कर सकती थीं क्योंकि यह बात हम लोगों में लौकिक व्यवहार के ढंग पर प्रचलित है।

कम० । बस तो मैं आपसे भी उसी तरह हँस बोल सकती हूँ और ऐसा करने के लिए मेरे पति ने मुझे आज्ञा भी दे दी है, मैं उनका पत्र आपको दिखा सकती हूँ इसलिए कि मेरा आपका नाता ही ऐसा है, एक नहीं बल्कि तीन तीन नाते हैं।

इन्द्र० । सो कैसे ?

कम० । सुनिए मैं कहती हूँ। एक तो मैं किशोरी को अपनी बहिन समझती हूँ अतएव आप मेरे बहनोई हुए, कहिए हाँ।

कुमार० । यह कोई बात नहीं है, क्योंकि अभी किशोरी की शादी मेरे साथ नहीं हुई है।

कम० । खैर जाने दीजिए मैं दूसरा और तीसरा नाता बताती हूँ। जिनके साथ मेरी शादी हुई है वे राजा गोपालसिंह के भाई हैं इसके अतिरिक्त लक्ष्मी-देवी की मैं छोटी बहिन हूँ, अतएव आपकी साली भी हुई।

कुमार० । (कुछ सोच कर) हाँ इस बात से तो मैं कायल हुआ मगर तुम्हारी नीयत में किसी तरह फर्क न आना चाहिए।

कम० । इससे आप बेफिक्र रहिए, मैं अपना धर्म किसी तरह नहीं बिगाड़ सकती और न दुनिया में कोई ऐसा पैदा हुआ है जो मेरी नीयत बिगाड़ सके। आइए अब अपने ठिकाने पर बैठ जाइए।

लाचार कुँअर इन्द्रजीतसिंह अपने ठिकाने पर जा बैठे और पुनः बातचीत करने लगे मगर उदास बहुत थे और यह बात उनके चेहरे से जाहिर होती थी।

यकायक कमलिनी ने मसखरेपन के साथ हँस दिया जिससे कुमार को खयाल हो गया कि इसने जो कुछ कहा सब झूठ और केवल दिल्लगी के लिए था मगर साथ ही इसके उनके दिल का खुटका साफ नहीं हुआ।

कम० । अच्छा आप यह बताइये कि तिलिस्म की कैफियत देखने के लिए राजा साहब तिलिस्म के अन्दर जायेंगे या नहीं ?

कुमार० । जरूर जायेंगे ।

कम० । कब ?

कुमार० । सो मैं ठीक नहीं कह सकता शायद कल या परसों ही जाँय, कहते थे कि 'तिलिस्म के अन्दर चल कर देखने का इरादा है' । इसके जवाब में भाई गोपालसिंह ने कहा कि 'जरूर और जल्द चल कर देखना चाहिए' ।

कम० । तो क्या हम लोगों को साथ ले जायेंगे ?

कुमार० । सो मैं कैसे कहूँ ? तुम गोपाल भाई से कहो वह इसका बंदोबस्त जरूर कर देंगे, मुझे तो कुछ कहते शर्म मालूम होगी ।

कम० । सो तो ठीक है, अच्छा मैं कल उनसे कहूँगी ।

कुमार० । मगर तुम लोगों के साथ किशोरी भी अगर तिलिस्म के अन्दर जाकर वहाँ की कैफियत न देखेगी तो मुझे इस बात का रंज जरूर होगा ।

कम० । बात तो वाजिब है मगर वह इस मकान में तभी आवेंगी जब उनकी शादी आपके साथ हो जायगी और इसीलिए वह अपने नाना के डेरे में भेज दी गई हैं । खैर तो आप इस मामले को तब तक के लिए टाल दीजिए जब तक आपकी शादी न हो जाय ।

कुमार० । मैं भी यही उचित समझता हूँ अगर महाराज मान जायँ तो ।

कम० । या आप हम लोगों को फिर दूसरी दफे ले जाइयेगा ।

कुमार० । हाँ यह भी हो सकता है । अबकी दफे का वहाँ जाना महाराज की इच्छा पर ही छोड़ देना चाहिए, वे जिसे चाहें ले जाँय ।

कम० । बेशक ऐसा ही ठीक होगा । अब तिलिस्म के अन्दर जाने में आपत्ति ही काहे की है, जब और जै दफे आप चाहेंगे हम लोगों को ले जायँगे ।

कुमार० । नहीं सो बात ठीक नहीं, बहुत सी जगहें ऐसी हैं जहाँ सैकड़ों दफे जाने में भी कोई हर्ज नहीं है मगर बहुत सी जगहें तिलिस्म टूट जाने पर भी नाजुक हालत में बनी हुई हैं और वहाँ बार बार जाना कठिन है तथापि मैं तुम लोगों को वहाँ की सैर जरूर कराऊँगा ।

कम० । मैं समझती हूँ कि मेरे उस तालाब वाले तिलिस्मी मकान के नीचे भी कोई तिलिस्म जरूर है । उस खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब का मजमून पूरी तरह से मेरी समझ में नहीं आता था तथापि इस ढंग की बातों पर कुछ शक जरूर होता था ।

कुमार०। तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है, हम दोनों भाइयों को खून से लिखी उस तिलिस्मी किताब के पढ़ने से बहुत ज्यादे हाल मालूम हुआ है, इसके अतिरिक्त मुझे तुम्हारा वह स्थान पसन्द भी ज्यादे है और पहिले भी मैं (जब तुम्हारे पास वहाँ था) यह विचार कर चुका था कि 'सब कामों से निश्चिन्त हो कर कुछ दिनों के लिये जरूर यहाँ डेरा जमाऊँगा' परन्तु अब मेरा वह विचार कुछ काम नहीं दे सकता।

कम०। सो क्यों ?

कुमार०। इसलिए कि अगर तुम्हारी बातें ठीक हैं तो अब वह स्थान तुम्हारे पति के अधिकार में होगा।

कम०। (मुस्कुरा कर) तो क्या हर्ज है, मैं उनसे कहकर आपको दिला दूँगी।

कुमार०। मैं किसी से भीख माँगना पसन्द नहीं करता और न उनसे लड़ कर वह स्थान छीन लेना ही मुझे मंजूर होगा। कमलिनी, सच तो यों है कि तुमने मुझे धोखा दिया और बहुत बड़ा धोखा दिया ! मुझे तुमसे यह उम्मीद न थी। (कुछ सोचकर) एक दफे तुम मुझसे फिर कह दो कि सचमुच तुम्हारी शादी हो गई।

इसके जवाब में कमलिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली, "हाँ हो गई।"

कुमार०। मेरे सिर पर हाथ रख कर कसम खाओ !

कम०। (कुमार के पैरों पर हाथ रख के) आपसे मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मेरी शादी हो गई।

हम लिख नहीं सकते कि इस समय कुमार के दिल को कैसी बुरी हालत थी, रंज और अफसोस से उनका दिल बैठा जाता था और कमलिनी हँस हँस कर चुटकियाँ लेती थी। बड़ी मुश्किल से कुमार थोड़ी देर तक और उसके पास बैठे और फिर उठ कर लम्बी साँसें लेते हुए अपने कमरे में चले गए। रात भर उन्हें नींद न आई।

पाँचवाँ बयान

महाराज की आज्ञानुसार कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के विवाह की तैयारी बड़ी धूमधाम से हो रही है। यहाँ से चुनार तक की सड़कें दोनों तरफ जाफरी वाली टट्टियों से सजाई गई हैं जिन पर रोशनी की जायगी और जिनके बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर बड़े फाटक बने हुए हैं और उन पर नौबतखाने का इन्तजाम किया गया है। टट्टियों के दोनों तरफ बाजार बसाया जायगा जिसकी तैयारी कारिन्दे लोग बड़ी खूबी और मुस्तैदी के साथ कर रहे हैं। इसी तरह और भी तरह तरह के तमाशों का इन्तजाम बीच बीच में हो रहा है जिसके सबब से

बहुत ज्यादे भीड़भाड़ होने की उम्मीद है और अभी से तमाशबीनों का जमावड़ा हो रहा है। रोशनी के साथ साथ आतिशबाजी के इन्तजाम में भी बड़ी सरगर्मी दिखाई जा रही है, कोशिश हो रही है कि उम्दो से उम्दी तथा अनूठी आतिशबाजी का तमाशा लोगों को दिखाया जाय। इसी तरह और भी कई तरह के खेल तमाशे और नाच इत्यादि का बन्दोबस्त हो रहा है मगर इस समय हमें इन सब बातों से कोई मतलब नहीं है क्योंकि हम अपने पाठकों को उस तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलना चाहते हैं जहाँ भूतनाथ और देवीसिंह ने नकाबपोशों के फेर में पड़ कर शर्मिन्दगी उठाई थी और जहाँ इस समय दोनों कुमार अपने दादा पिता तथा और सब आपुस वालों को तिलिस्मी तमाशा दिखाने के लिए ले जा रहे हैं।

सुबह का सुहावना समय है और ठण्ढी हवा चल रही है। जंगली फूलों की खुशबू से मस्त भई सुन्दर सुन्दर रंग बिरंगी खूबसूरत चिड़ियाएँ हमारे सर्वगुण सम्पन्न मुसाफिरों को मुबारकबाद दे रही हैं जो तिलिस्म की सैर करने की नीयत से मीठी मीठी बातें करते हुए जा रहे हैं।

घोड़े पर सवार महाराज सुरेन्द्रसिंह, राजा बीरेन्द्रसिंह, जीतसिंह, गोपालसिंह, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तथा पैदल तेजसिंह, देवीसिंह, भूतनाथ, पंडित बद्रीनाथ, रामनारायण, पन्नालाल वगैरह अपने ऐयार लोग जा रहे थे। तिलिस्म के अन्दर मिले हुए कैदी अर्थात् नकाबपोश लोग तथा भैरोसिंह और तारासिंह इस समय साथ न थे। इस समय देवीसिंह से ज्यादे भूतनाथ का कलेजा उछल रहा था और वह अपनी स्त्री का असली भेद जानने के लिए बेताब हो रहा था। जब से उसे इस बात का पता लगा कि वे दोनों सर्दार नकाबपोश यही दोनों कुमार हैं तथा उस विचित्र मकान के मालिक भी यही हैं तब से उसके दिल का खुटका कुछ कम तो हो गया मगर खुलासा हाल जानने और पूछने का मौका न मिलने के सबब उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। वह यह भी जानना चाहता था कि अब उसकी स्त्री तथा लड़का हरनामसिंह किस फिक्र में हैं। इस समय जब वह फिर उसी ठिकाने आ रहा था जहाँ अपनी स्त्री की बदौलत गिरफ्तार होकर अपने लड़के का विचित्र हाल देखा था तब उसका दिल और बेचैन हो उठा था, मगर साथ ही इसके उसे इस बात की भी उम्मीद हो रही थी कि अब उसे उसकी स्त्री का हाल मालूम हो जायगा या कुछ पूछने का मौका ही मिलेगा।

ये लोग धीरे धीरे बातचीत करते हुए उसी खोह या सुरंग की तरफ जा रहे थे। पहर भर दिन से ज्यादे न चढ़ा होगा जब ये लोग उस ठिकाने पहुँच गए। महाराज सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह वगैरह घोड़े पर से नीचे उतर पड़े,

साईसों ने घोड़े थाम लिए और इसके बाद उन सभों ने सुरंग के अन्दर पैर रक्खा। इस सुरंग वाले रास्ते का कुछ खुलासा हाल हम इस सन्तति के उन्नीसवें भाग में लिख आए हैं जब भूतनाथ वहाँ आया था, अब पुनः दोहराने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती, हाँ इतना लिख देना जरूरी जान पड़ता है कि दोनों कुमारों ने सभों को यह बात समझा दी कि यह रास्ता बन्द क्योंकर हो सकता है। बन्द होने का स्थान वही चबूतरा था जो सुरंग के बीच में पड़ता था।

जिस समय ये लोग सुरंग तै करके मैदान में पहुँचे, सामने वही छोटा बँगला दिखाई दिया जिसका हाल हम पहिले लिख चुके हैं। इस समय उस बँगले के आगे वाले दालान में दो नकाबपोश औरतें हाथ में तीर कमान लिए टहलती पहरा दे रही थीं जिन्हें देखते ही खास करके भूतनाथ और देवीसिंह को बड़ा ताज्जुब हुआ और उनके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। भूतनाथ का इशारा पाकर देवीसिंह ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से पूछा, "ये दोनों नकाबपोश औरतें कौन हैं जो पहरा दे रही हैं?" इसके जवाब में कुमार तो चुप रह गए मगर महाराज सुरेन्द्रसिंह ने कहा, "इसके जानने की तुम लोगों को क्या जल्दी पड़ी हुई है? जो कोई होंगी सब मालूम ही हो जायगा!"

इस जवाब ने देवीसिंह और भूतनाथ को देर तक के लिए चुप कर दिया और विश्वास दिला दिया कि महाराज को इनका हाल जरूर मालूम है।

जब उन औरतों ने इन सभों को पहिचाना और अपनी तरफ आते देखा तो बँगले के अन्दर घुस कर गायब हो गईं, तब तक ये लोग भी उस दालान में जा पहुँचे। इस समय भी यह बँगला उसी हालत में था जैसा कि भूतनाथ और देवीसिंह ने देखा था।

हम पहिले लिख चुके हैं और अब भी लिखते हैं कि यह बँगला जैसा बाहर से सादा और साधारण मालूम होता था वैसा अन्दर से न था और यह बात दालान में पहुँचने के साथ ही सभों को मालूम हो गई। दालान की दीवारों में निहायत खूबसूरत और आला दर्जे की कारीगरी का नमूना दिखाने वाली तस्वीरों को देख कर सब कोई दंग हो गए और मुसौवर के हाथों की तारीफ करने लगे। ये तस्वीरें एक निहायत आलीशान इमारत की थीं और उसके ऊपर बड़े बड़े हरफों में यह लिखा हुआ था :—

"यह तिलिस्म चुनारगढ़ के पास ही एक निहायत खूबसूरत जंगल में कायम किया गया है जिसे महाराज सुरेन्द्रसिंह के लड़के वीरेन्द्रसिंह तोड़ेंगे।"

इस तस्वीर को देखते ही सभों को विश्वास हो गया कि वह तिलिस्मी खंड-

हर जिसमें तिलिस्मी बगुला था और जिस पर इस समय निहायत आलीशान इमारत बनी हुई है पहिले इसी सूरत शक्ल में था, जिसे जमाने के हेर फेर ने अच्छी तरह बर्बाद करके उजाड़ और भयानक बना दिया। इमारत की उस बड़ी और पूरी तस्वीर के नीचे उसके भीतर वाले छोटे छोटे टुकड़े भी बना कर दिखलाए गए थे और उस बगुले की तस्वीर भी बनी हुई थी जिसे राजा बीरेन्द्रसिंह ने बखूबी पहिचान लिया और कहा, "बेशक अपने जमाने में यह बहुत अच्छी इमारत थी।"

सुरेन्द्र०। यद्यपि आजकल जो इमारत तिलिस्मी खण्डहर पर बनी है और जिसके बनवाने में जीतसिंह ने अपनी तबीयतदारी और कारीगरी का अच्छा नमूना दिखाया है बुरी नहीं है, मगर हमें इस पहिली इमारत का ढंग कुछ अनूठा और सुन्दर मालूम पड़ता है।

जीत०। बेशक ऐसा ही है। यदि इस तस्वीर को मैं पहिले देखे हुए होता तो जरूर इसी ढंग की इमारत बनवाता।

बीरेन्द्र०। और ऐसा होने से वह तिलिस्म एक दफे नया मालूम पड़ता।

इन्द्र०। यह चुनारगढ़ वाला तिलिस्म साधारण नहीं बल्कि बहुत बड़ा है। चुनारगढ़ नौगढ़ विजयगढ़ और जमानिया तक इसकी शाखा फैली हुई हैं। इस बँगले को इस बहुत बड़े और फैले हुए तिलिस्म का 'केन्द्र' समझना चाहिए, बल्कि ऐसा भी कह सकते हैं कि यह बँगला तिलिस्म का नमूना है।

थोड़ी देर तक दालान में खड़े इसी किस्म की बातें होती रहीं और इसके बाद सभों को साथ लिए हुए दोनों कुमार बँगले के अन्दर रवाना हुए।

सदर दरवाजे का पर्दा उठा कर अन्दर जाते ही ये लोग एक गोल कमरे में पहुँचे जो भूतनाथ और देवीसिंह का देखा हुआ था। इस गोल और गुम्बजदार खूबसूरत कमरे की दीवारों पर जंगल पहाड़ और रोहतासगढ़ की तस्वीरें बनी हुई थीं। घड़ी घड़ी तारीफ न करके एक ही दफे लिख देना ठीक होगा कि इस बँगले में जितनी तस्वीरें देखने में आईं सभी आला दर्जे की कारीगरी का नमूना थीं और यही मालूम होता था कि आज बन कर तैयार हुई हैं। इस रोहतासगढ़ की तस्वीर को देख कर सब कोई बड़े प्रसन्न हुए और राजा बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देख कर कहा, "रोहतासगढ़ किले और पहाड़ी की बहुत ठीक और साफ तस्वीर बनी हुई है।"

तेज०। जंगल भी उसी ढंग का बना हुआ है, कहीं कहीं से ही फर्क मालूम पड़ता है, नहीं तो बाज जगहें तो ऐसी बनी हुई हैं जैसी मैंने अपनी आँखों से देखी हैं। (उंगली का इशारा करके) देखिये यह वही कब्रिस्तान है जिस राह से

हम लोग रोहतासगढ़ के तहखाने में घुसे थे। हाँ यह देखिए बारीक हरफों में लिखा हुआ भी है—"तहखाने में जाने का बाहरी फाटक।"

इन्द्र०। इस तस्वीर को अगर गौर से देखेंगे तो वहाँ का बहुत ज्यादे हाल मालूम होगा। जिस जमाने में यह इमारत तैयार हुई थी उस जमाने में वहाँ की और उसके चारो तरफ की जैसी अवस्था थी वैसी ही इस तस्वीर में दिखाई है, आज चाहे कुछ फर्क पड़ गया हो।

तेज०। बेशक ऐसा ही है।

इन्द्र०। इसके अतिरिक्त एक और ताज्जुब की बात अर्ज करूँगा।

वीरेन्द्र०। वह क्या ?

इन्द्र०। इसी दीवार में से वहाँ (रोहतासगढ़) जाने का रास्ता भी है।

सुरेन्द्र०। वाह वाह ! क्या तुम इस रास्ते को खोल भी सकते हो ?

इन्द्र०। जी हाँ, हम लोग इसमें बहुत दूर तक जाकर घूम आये हैं।

सुरेन्द्र०। यह भेद तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ ?

इन्द्र०। उसी 'रिक्तगन्थ' की बदौलत हम दोनों भाइयों को इन सब जगहों का हाल और भेद पूरा पूरा मालूम हो चुका है। यदि आज्ञा हो तो दर्वाजा खोल कर मैं आपको रोहतासगढ़ के तहखाने में ले जा सकता हूँ। वहाँ के तहखाने में भी एक छोटा सा तिलिस्म है जो इसी बड़े तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और हम लोग उसे खोल या तोड़ भी सकते हैं परन्तु अभी तक ऐसा करने का इरादा नहीं किया।

सुरेन्द्र०। उस रोहतासगढ़ वाले तिलिस्म के अन्दर क्या चीज है ?

इन्द्र०। उसमें केवल अनूठे अद्भुत आश्चर्य गुण वाले हर्बे रक्खे हुए हैं, उन्हीं हरबों पैर वह तिलिस्म बँधा है। जैसा तिलिस्मी खंजर हम लोगों के पास है या जैसे तिलिस्मी जिरःबख्तर और हरबों की बदौलत राजा गोपालसिंह ने कृष्णाजिन्न का रूप धरा था वैसे हरबों और असबाबों का तो वहाँ ढेर लगा हुआ है, हाँ खजाना वहाँ कुछ भी नहीं है।

सुरेन्द्र०। ऐसे अनूठे हर्बे खजाने से क्या कम हैं ?

जीत०। बेशक ! (इन्द्रजीतसिंह से) जिस हिस्से को तुम दोनों भाइयों ने तोड़ा है उसमें भी तो ऐसे अनूठे हरबे होंगे ?

इन्द्र०। जी हाँ मगर बहुत कम हैं ?

वीरेन्द्र०। अच्छा यदि ईश्वर की कृपा हुई तो फिर किसी मौके पर इस रास्ते से रोहतासगढ़ जाने का इरादा करेंगे। (मकान की सजावट और पर्दों की तरफ देख कर के) क्या यह सब सामान कन्दील पर्दे और बिछावन वगैरह तुम लोग

तिलिस्म के अन्दर से लाए थे ?

इन्द्र० । जी नहीं, जब हम लोग यहाँ आए तो इस बँगले को इसी तरह सजा सजाया पाया और तीन चार आदमियों को भी देखा जो इस बँगले की हिफाजत और मेरे आने का इन्तजार कर रहे थे ।

सुरेन्द्र० । (ताज्जुब से) वे लोग कौन थे और अब कहाँ हैं ?

इन्द्र० । दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि वे लोग इन्द्रदेव के मुलाजिम थे जो इस समय अपने मालिक के पास चले गए हैं । इस तिलिस्म का दारोगा असल में इन्द्रदेव है, और आज के पहिले भी इसी के बुजुर्ग लोग दारोगा होते आए हैं।

सुरेन्द्र० । यह तुमने बड़ी खुशी की बात सुनाई, मगर अफसोस यह है कि इन्द्रदेव ने हमें इन बातों की कुछ भी खबर न की ।

आनन्द० । अगर इन्द्रदेव ने इन सब बातों को आपसे छिपाया तो यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है, तिलिस्मी कायदे के मुताबिक ऐसा होना ही चाहिए था।

सुरेन्द्र० । ठीक है, तो मालूम होता है कि यह सब सामान तुम्हारी खातिरदारी के लिए इन्द्रदेव की आज्ञानुसार किया गया है !

आनन्द० । जी हाँ, उसके आदमियों की जुबानी मैंने भी यही सुना है ।

इसके बाद बड़ी देर तक ये लोग इन तस्वीरों को देखते और ताज्जुब भरी बातें करते रहे और फिर आगे की तरफ बढ़े । जब पहिले भूतनाथ और देवीसिंह यहाँ आए थे तब हम लिख चुके हैं कि इस कमरे में सदर दर्वाजे के अतिरिक्त और भी तीन दर्वाजे थे—इत्यादि। अस्तु उन दोनों ऐयारों की तरह इस समय भी सभों को साथ लिए हुए दोनों कुमार दाहिने तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर गए और घूमते हुए उसी बहुत बड़े और आलीशान कमरे में पहुँचे जिसमें पहिले भूतनाथ और देवीसिंह ने पहुँच कर आश्चर्य भरा तमाशा देखा था ।

इस आलीशान कमरे की तस्वीरें खूबी और खूबसूरती में सब तस्वीरों से बढ़ी चढ़ी थीं तथा दीवारों पर जंगल मैदान पहाड़ खोह दर्रे झरने शिकारगाह तथा शहरपनाह किले मोर्चे और लड़ाई इत्यादि की तस्वीरें बनी हुई थीं जिन्हें सब कोई गौर और ताज्जुब के साथ देखने लगे ।

सुरेन्द्र० । (एक किले की तरफ इशारा करके) यह तो चुनारगढ़ की तस्वीर है।

इन्द्रजीत० । जी हाँ, (उँगली का इशारा करके) और यह जमानिया के किले तथा खास बाग की तस्वीर है । इसी दीवार में से वहाँ जाने का भी रास्ता है। महाराज सूर्यकान्त के जमाने में उनके शिकारगाह और जंगल की यह सूरत थी।

बीरेन्द्र० । और यह लड़ाई की तस्वीर कैसी है ? इसका क्या मतलब है ?

इन्द्रजीत०। इन तस्वीरों में बड़ी कारीगरी खर्च की गई है। महाराज सूर्यकान्त ने अपनी फौज को जिस तरह की कवायद और व्यूह रचना इत्यादि का ढंग सिखाया था वे सब बातें इन तस्वीरों में भरी हुई हैं। तर्कीब करने से ये सब तस्वीरें चलती फिरती और काम करती नजर आवेंगी और साथ ही इसके फौजी बाजा भी बजता हुआ सुनाई देगा अर्थात् इन तस्वीरों में जितने बाजे वाले हैं वे सब भी अपना अपना काम करते हुए मालूम पड़ेंगे। परन्तु इस तमाशे का आनन्द रात को मालूम पड़ेगा दिन को नहीं। इन्हीं तस्वीरों के कारण इस कमरे का नाम 'व्यूह-मंडल' रक्खा गया है, वह देखिए ऊपर की तरफ बड़े हरफों में लिखा हुआ है।

सुरेन्द्र०। यह बहुत अच्छी कारीगरी है। इस तमाशे को हम जरूर देखेंगे बल्कि और भी कई आदमियों को दिखावेंगे।

इन्द्र०। बहुत अच्छा, रात हो जाने पर मैं इसका बन्दोबस्त करूँगा, तब तक आप और चीजों को देखें।

ये लोग जिस दर्वाजे से इस कमरे में आये थे उसके अतिरिक्त एक दर्वाजा और भी था जिस राह से सभों को लिए दोनों कुमार दूसरे कमरे में पहुँचे। इस कमरे की दीवार बिल्कुल साफ थी अर्थात् उस पर किसी तरह की तस्वीर बनी हुई न थी। कमरे के बीचोबीच दो चबूतरे संगमर्मर के बने हुए थे जिसमें एक खाली था और दूसरे चबूतरे के ऊपर सुफेद पत्थर की एक खूबसूरत पुतली बैठी हुई थी। इस जगह पर ठहर कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने दादा और पिता की तरफ देखा और कहा, "नकाबपोशों की जुबानी हम लोगों का तिलिस्मी हाल जो कुछ आपने सुना है वह तो याद ही होगा, अस्तु हम लोग पहिली दफे तिलिस्म से बाहर निकल कर जिस सुहावनी घाटी में पहुँचे थे वह यही स्थान है*। इसी चबूतरे के अन्दर से हमलोग बाहर हुए थे। उस 'रिक्तगन्थ' की बदौलत हम दोनों भाई यहाँ तक तो पहुँच गए मगर उसके इस चबूतरे वाले तिलिस्म को खोल न सके, हाँ इतना जरूर है कि उस 'रिक्तगन्थ' की बदौलत इस चबूतरे में से (जिस पर एक पुतली बैठी हुई थी उसकी तरफ इशारा करके) एक दूसरी किताब हाथ लगी जिसकी बदौलत हम लोगों ने उस चबूतरे वाले तिलिस्म को खोला और उसी राह से आपकी सेवा में जा पहुँचे।

"आप सुन चुके हैं कि जब हम दोनों भाई राजा गोपालसिंह को मायारानी की कैद से छुड़ा कर जमानिया के खास बाग वाले देवमन्दिर में गये थे तब वहाँ पहले आनन्दसिंह तिलिस्म के फन्दे में फँस गये थे, उन्हें छुड़ाने के लिए जब मैं भी

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवाँ भाग, नौवाँ बयान।

उसी गड़हे या कूएँ में कूद पड़ा तो चलता चलता एक दूसरे बाग में पहुँचा जिसके बीचोबीच में एक मन्दिर था। उस मन्दिर वाले तिलिस्म को जब मैंने तोड़ा तो वहाँ एक पुतली के अन्दर कोई चमकती हुई चीज मुझे मिली* ।"

बीरेन्द्र० । हाँ हमें याद है, एक मूरत को तुमने उखाड़ कर किसी कोठरी के अन्दर फेंक दिया था और वह फूट कर चूने की कली की तरह हो गई थी। उसी के पेट में से....

इन्द्र० । जी हाँ ।

सुरेन्द्र० । तो वह चमकती हुई चीज क्या थी और अब वह कहाँ है ?

इन्द्र० । वह हीरे की बनी हुई एक चाभी थी जो अभी तक मेरे पास मौजूद है (जेब में से निकाल कर और महाराज को दिखा कर) देखिये यही ताली इस पुतली के पेट में लगती है ।

सभों ने उस चाभी को गौर से देखा और इन्द्रजीतसिंह ने सभों के देखते देखते उस चबूतरे पर बैठी हुई पुतली की नाभी में वह ताली लगाई । उसका पेट छोटी आलमारी के पल्ले की तरह खुल गया ।

इन्द्र० । बस इसी में से वह किताब मेरे हाथ लगी जिसकी बदौलत वह चबूतरे वाला तिलिस्म खोला ।

सुरेन्द्र० । अब वह किताब कहाँ है ?

इन्द्र० । आनन्दसिंह के पास मौजूद है ।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह की तरफ देखा और उन्होंने एक छोटी सी किताब जिसके अक्षर बहुत बारीक थे महाराज के हाथ में दे दी। यह किताब भोजपत्र की थी जिसे महाराज ने बड़े गौर से देखा और दो तीन जगहों से कुछ पढ़ कर आनन्दसिंह के हाथ में देते हुए कहा, "इसे निश्चिन्ती में एक दफे पढ़ेंगे।"

इन्द्र० । यह पुतली वाला चबूतरा उस तिलिस्म में घुसने का दर्वाजा है ।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने उस पुतली के पेट में (जो खुल गया था) हाथ डाल के कोई पेंच घुमाया जिससे चबूतरे के दाहिने तरफ वाली दीवार किवाड़ के पल्ले की तरह धीरे धीरे खुल कर जमीन के साथ सट गई और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई देने लगीं । इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर हाथ में लिया और उसका कब्जा दबा कर रोशनी करते हुए चबूतरे के अन्दर घुसे तथा सभों को अपने पीछे आने के लिए कहा । सभों के पीछे आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए चबूतरे के अन्दर घुसे । लगभग पन्द्रह

* देखिये दसवाँ भाग, पहिला बयान ।

बीस चक्करदार सीढ़ियों के नीचे उतरने बाद ये लोग एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचे जिसमें सोने चाँदी के सैकड़ों बड़े बड़े हण्डे अशर्फियों और जवाहिरात से भरे पड़े हुए थे जिसे सभों ने बड़े गौर और ताज्जुब के साथ देखा और महाराज ने कहा, "इस खजाने का अन्दाज करना भी मुश्किल है।"

इन्द्र०। जो कुछ खजाना इस तिलिस्म के अन्दर मैंने देखा और पाया है उसका यह पासंगा भी नहीं है। उसे बहुत जल्द ऐयार लोग आपके पास पहुँचावेंगे। उन्हीं के साथ साथ कई चीजें दिल्लगी की भी हैं जिसमें एक चीज वह भी है जिसकी बदौलत हम लोग एक दफे हँसते हँसते दीवार के अन्दर कूद पड़े थे और मायारानी के हाथ में गिरफ्तार हो गए थे।

जीत०। (ताज्जुब से) हाँ! अगर वह चीज शीघ्र बाहर निकाल ली जाय तो (सुरेन्द्रसिंह से) कुमारों की शादी में सर्वसाधारण को उसका तमाशा दिखाया जा सकता है।

सुरेन्द्र०। बहुत अच्छी बात है, ऐसा ही होगा।

इन्द्र०। इस तिलिस्म में घुसने के पहिले ही मैंने सभों का साथ छोड़ दिया अर्थात् नकाबपोशों को (कैदियों को) बाहर ही छोड़ कर केवल हम दोनों भाई इसके अन्दर घुसे और काम करते हुए धीरे धीरे आपकी सेवा में जा पहुँचे।

सुरेन्द्र०। तो शायद उसी तरह हम लोग भी सब तमाशा देखते हुए उसी चबूतरे की राह बाहर निकलेंगे?

जीत०। मगर क्या उन चलती फिरती तस्वीरों का तमाशा न देखिएगा?

सुरेन्द्र०। हाँ ठीक है, उस तमाशे को तो जरूर देखेंगे।

इन्द्र०। तो अब यहाँ से लौट चलना चाहिए क्योंकि इस कमरे के आगे बढ़ कर फिर आज ही लौट आना कठिन है, इसके अतिरिक्त अब दिन भी थोड़ा रह गया है, संध्यावन्दन और भोजन इत्यादि के लिए भी समय चाहिए और फिर उन तस्वीरों का तमाशा भी कम से कम चार पाँच घण्टे में पूरा होगा।

सुरेन्द्र०। क्या हर्ज है, लौट चलो।

महाराज की आज्ञानुसार सब कोई वहाँ से लौटे और घूमते हुए बँगले के बाहर निकल आये, देखा तो वास्तव में दिन बहुत कम रह गया था।

छठवाँ बयान

रात आधे घण्टे से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब सब कोई अपने जरूरी कामों से निश्चिन्त हो बँगले के अन्दर घुसे और घूमते फिरते उसी चलती फिरती

तस्वीरों वाले कमरे में पहुँचे। इस समय बँगले के अन्दर हर एक कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी जिसके विषय में भूतनाथ और देवीसिंह ने ताज्जुब के साथ खयाल किया कि यह काम बेशक उन्हीं लोगों का होगा जिन्हें यहाँ पहुँचने के साथ ही हम लोगों ने पहरा देते देखा था या जो हम लोगों को देखते ही बँगले के अन्दर घुस कर गायब हो गए थे। ताज्जुब है कि महाराज को तथा और लोगों को भी उनके विषय में कुछ खयाल नहीं है और न कोई पूछता ही है कि वे कौन थे और कहाँ गए मगर हमारा दिल उनका हाल जाने बिना बेचैन हो रहा है।

चलती फिरती तस्वीरों वाले कमरे में फर्श बिछा हुआ था और गद्दी लगी हुई थी जिस पर सब कोई कायदे से अपने अपने ठिकाने पर बैठ गए और इसके बाद इन्द्रजीतसिंह की आज्ञानुसार रोशनी गुल कर दी गई। बिल्कुल कमरे में अंधकार छा गया, यह नहीं मालूम होता था कि कौन क्या कर रहा है, खास करके इन्द्रजीतसिंह की तरफ लोगों का ध्यान था जो इस तमाशे को दिखाने वाले थे मगर कोई कह नहीं सकता था कि वह क्या कर रहे हैं।

थोड़ी ही देर बाद चारो तरफ की दीवारें चमकने लगीं और उन पर की कुल तस्वीरें बहुत साफ और बनिस्बत पहिले के अच्छी तरह पर दिखाई देने लगीं। पहिले तो वे तस्वीरें केवल चित्रकारी ही मालूम पड़ती थीं परन्तु अब सचमुच की बातें दिखाई देने लगीं। मालूम होता था कि जैसे हम बहुत दूर से सच्चे, किले पहाड़ जंगल मैदान आदमी जानवर और फौज इत्यादि को देख रहे हैं। सब कोई ताज्जुब के साथ इस कैफियत को देख रहे थे कि यकायक बाजे की आवाज कान में आई। उस समय सभों का ध्यान जमानिया के किले की तस्वीर पर जा पड़ा जिधर से बाजे की आवाज आ रही थी। देखा कि—

एक बहुत बड़े मैदान में बेहिसाब फौज खड़ी है जिसके आमने सामने दो हिस्से हैं मानों दो फौजें लड़ने के लिए तैयार खड़ी हैं। पैदल और सवार दोनों तरह की फौजें हैं तथा तोप इत्यादि और भी जो कुछ सामान फौज में होना चाहिए सब मौजूद है। इन दोनों फौजों में एक की पोशाक सुर्ख और दूसरे की आसमानी थी। बाजे की आवाज केवल सुर्ख वर्दी वाली फौज में से आ रही थी बल्कि बाजे वाले अपना काम करते हुए साफ दिखाई दे रहे थे। यकायक सुर्ख वर्दी वाली फौज हिलती हुई दिखाई पड़ी। गौर करने पर मालूम हुआ कि सिपाहियों का मुँह घूम गया है और वे दाहिनी तरफ वाली एक पहाड़ी की तरफ तेजी के साथ बाजे की गत पर पैर रखते हुए जा रहे हैं। जैसे जैसे फौज दूर होती जाती है वैसे ही बाजे की आवाज भी दूर होती जाती है। देखते ही देखते वह फौज मानों कोस

दूर निकल गई और एक पहाड़ी के पीछे की तरफ जाकर आँखों की ओट हो गई। अब यह मैदान ज्यादा खुलासा दिखाई देने लगा। जितनी जगह दोनों फौजों से भरी थी वह एक फौज के हिस्से में रह गई। अब दूसरी अर्थात् आसमानी वर्दी वाली फौज में से बाजे की आवाज आने लगी और सवार तथा पैदल भी चलते हुए दिखाई देने लगे। एक सवार हाथ में झंडा लिए तेजी के साथ घोड़ा दौड़ा कर मैदान में आ खड़ा हुआ और झंडे के इशारे से फौज को कवायद कराने लगा। यह कवायद घन्टे भर तक होती रही और इस बीच में आले दर्जे की होशियारी चालाकी मुस्तैदी सफाई और बहादुरी दिखाई दी जिससे सब कोई बहुत ही खुश हुए और महाराज बोले, "बेशक फौज को ऐसा ही तैयार करना चाहिए।"

कवायद खतम करने के बाद बाजा बन्द हुआ और वह फौज एक तरफ को रवाना हुई, मगर थोड़ी ही दूर गई होगी कि उस लाल वर्दी वाली फौज ने यकायक पहाड़ी के पीछे से निकल कर इस फौज पर धावा मारा। इस कैफियत को देखते ही आस्मानी वर्दी वाली फौज के अफसर होशियार हो गए, झंडे का इशारा पाते ही बाजा पुनः बजने लगा, और फौजी सिपाही लड़ने के लिए तैयार हो गये। इस बीच में वह फौज भी आ पहुँची और दोनों में घमासान लड़ाई होने लगी।

इस कैफियत को देख कर महाराज सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह, गोपालसिंह, जीतसिंह, तेजसिंह वगैरह तथा ऐयार लोग हैरान हो गए और हद्द से ज्यादे ताज्जुब करने लगे। लड़ाई के फन की ऐसी कोई बात नहीं बच गई थी जो इसमें न दिखाई पड़ी हो। कई तरह की घुसवन्दी और किलेबन्दी के साथ ही साथ घुड़सवारों की कारीगरी ने सभों को सकते में डाल दिया और सभों के मुँह से बार बार 'वाह वाह' की आवाज निकलती रही। यह तमाशा कई घण्टे में खतम हुआ और इसके बाद एकदम से अन्धकार हो गया, उस समय इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी की और देवीसिंह ने इशारा पाकर कमरे में रोशनी कर दी जो पहिले बुझा दी गई थी।

इस समय रात थोड़ी सी बच गई थी जो सभों ने सो कर बिता दी मगर स्वप्न में भी इसी तरह के खेल तमाशे देखते रहे। जब सभों की आँखें खुलीं तो दिन घंटे भर से ज्यादे चढ़ चुका था। घबड़ा कर सब कोई उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर निकल कर जरूरी कामों से छुट्टी पाने का बन्दोबस्त करने लगे। इस समय जिन चीजों की सभों को जरूरत पड़ी वे सब चीजें वहाँ मौजूद पाई गईं मगर उन दोनों स्त्रियों पर किसी की निगाह न पड़ी जिन्हें यहाँ आने के साथ ही सभों ने देखा था।

सातवाँ बयान

जरूरी कामों से छुट्टी पाकर ऐयारों ने रसोई बनाई क्योंकि इस बँगले में खाने पीने की सभी चीजें मौजूद थीं और सभों ने खुशी खुशी भोजन किया। इसके बाद सब कोई उसी कमरे में आकर बैठे जिसमें रात को चलती फिरती तस्वीरों का तमाशा देखा था। इस समय भी सभी की निगाहें ताज्जुब के साथ ही उन्हीं तस्वीरों पर पड़ रही थीं।

सुरेन्द्र०। मैं बहुत गौर कर चुका मगर अभी तक समझ में न आया कि इन तस्वीरों में किस तरह की कारीगरी खर्च की गई है जो ये ऐसा तमाशा दिखाती हैं। अगर मैं अपनी आँखों से इस तमाशे को देखे हुए न होता और कोई गैर आदमी मेरे सामने ऐसे तमाशे का जिक्र करता तो मैं उसे पागल समझता मगर स्वयं देख लेने पर भी विश्वास नहीं होता कि दीवार पर लिखी तस्वीरें इस तरह काम करेंगी।

जीत०। बेशक ऐसी ही बात है। इतना देख कर भी किसी के सामने यह कहने का हौसला न होगा कि मैंने ऐसा तमाशा देखा था और सुनने वाला भी कभी विश्वास न करेगा।

ज्योतिषी०। आखिर तिलिस्म ही है, इसमें सभी बातें आश्चर्य की दिखाई देती हैं।

जीत०। चाहे तिलिस्म हो मगर इसके बनाने वाले तो आदमी ही थे। जो बात मनुष्य के किये नहीं हो सकती वह तिलिस्म में भी नहीं दिखाई दे सकती।

गोपाल०। आपका कहना बहुत ठीक है, तिलिस्म की बातें चाहे कैसा ही ताज्जुब पैदा करने वाली क्यों न हों मगर गौर करने से उनकी कारीगरी का पता लग ही जायगा। यह आपने बहुत ठीक कहा कि आखिर तिलिस्म के बनाने वाले भी तो मनुष्य ही थे!

बीरेन्द्र०। जब तक समझ में न आवे तब तक उसे चाहे कोई जादू कहे या करामात कहे मगर हम लोग सिवाय कारीगरी के कुछ भी नहीं कह सकते और पता लगाने तथा भेद मालूम हो जाने पर यह बात सिद्ध हो ही जाती है। इन चित्रों की कारीगरी पर भी अगर गौर किया जायगा तो कुछ न कुछ पता लग ही जायगा। ताज्जुब नहीं कि इन्द्रजीतसिंह को इसका भेद मालूम हो।

सुरेन्द्र०। बेशक इन्द्रजीत को इसका भेद मालूम होगा। (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) तुमने किस तर्कीब से इन तस्वीरों को चलाया था?

इन्द्र०। (मुसकुराते हुए) मैं आपको बतलाऊँगा और यह भी बतलाऊँगा कि इसमें भेद क्या है। मालूम हो जाने पर आप इसे एक साधारण बात समझेंगे।

पहिली दफे जब मैंने इस तमाशे को देखा था तो मुझे भी बड़ा ही ताज्जुब हुआ था मगर तिलिस्मी किताब की मदद से जब मैं इस दीवार के अन्दर पहुँचा तो सब भेद खुल गया।

सुरेन्द्र०। (खुश होकर) तब तो हम लोग वेफायदे परेशान हो रहे हैं और इतना सोच विचार कर रहे हैं। तुम अब तक चुप क्यों थे ?

गोपाल०। ऐयारों की तबीयत देख रहे थे।

सुरेन्द्र०। खैर बताओ तो सही कि इसमें क्या करीगरी है ?

इतना सुनते ही इन्द्रजीतसिंह उठ कर उस दीवार के पास चले गये और सुरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर बोले, "आप जरा तकलीफ कीजिए तो मैं इस भेद को समझा दूँ !"

महाराज सुरेन्द्रसिंह उठ कर कुमार के पास चले गये और उनके पीछे पीछे और लोग भी वहाँ जाकर खड़े हो गये। इन्द्रजीतसिंह ने दीवार पर हाथ फेर कर सुरेन्द्रसिंह से कहा, "देखिये असल में इस दीवार पर किसी तरह की चित्र-कारी या तस्वीर नहीं है, दीवार साफ है और वास्तव में शीशे की है, तस्वीरें जो दिखाई देती हैं वे इसके अन्दर और दीवार से अलग हैं।"

कुमार की बात सुन कर सभों ने ताज्जुब के साथ दीवार पर हाथ फेरा और जीतसिंह ने खुश होकर कहा,—"ठीक है, अब हम इस कारीगरी को समझ गए ! ये तस्वीरें अलग अलग किसी धातु के टुकड़ों पर बनी हुई हैं और ताज्जुब नहीं कि तार या कमानी पर जड़ी हों, किसी तरह की शक्ति पाकर उस तार या कमानी की हरकत होती है और उस समय ये तस्वीरें चलती हुई दिखाई देती हैं।"

इन्द्र०। बेशक यही बात है, देखिये अब मैं इन्हें फिर चला कर आपको दिखाता हूँ और इसके बाद दीवार के अंदर ले चल कर सब भ्रम दूर कर दूँगा।

इस दीवार में जिस जगह जमानिया के किले की तस्वीर बनी थी उसी जगह किले के बुर्ज के ठिकाने पर कई सूराख भी दिखाये गये थे जिनमें से एक छेद (सूराख) वास्तव में सच्चा था पर वह केवल इतना ही लम्बा चौड़ा था कि एक मामूली खंजर का कुछ हिस्सा उसके अन्दर जा सकता था। इन्द्रजीतसिंह ने कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल कर उसके अन्दर डाल दिया और महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा जीतसिंह की तरफ देख कर कहा, "इस दीवार के अन्दर जो पुर्जे बने हैं वे बिजली का असर पहुँचने ही से चलने फिरने या हिलने लगते हैं। इस तिलिस्मी खंजर में आप जानते ही हैं कि पूरे तौर से बिजली भरी हुई है, परन्तु उन पुर्जों के साथ इनका संयोग होने ही से काम हो जाता है।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह चुपचाप खड़े हो गये और सभों ने बड़े गौर से उन तस्वीरों को देखना शुरू किया बल्कि महाराज सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह जीतसिंह तेजसिंह और राजा गोपालसिंह ने तो कई तस्वीरों के ऊपर हाथ भी रख दिया। इतने ही में दीवार चमकने लगी और इसके बाद तस्वीरों ने वही रंगत पैदा की जो हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं। महाराज और राजा गोपालसिंह वगैरह ने जो अपना हाथ तस्वीरों पर रख दिया था वह ज्यों का त्यों बना रहा और तस्वीरें उनके हाथों के नीचे से निकल कर इधर से उधर आने जाने लगीं जिसका असर उनके हाथों पर कुछ भी नहीं होता था, इस सबब से सभों को निश्चय हो गया कि उन तस्वीरों को इस दीवार से कोई सम्बन्ध नहीं। इस बीच में कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना तिलिस्मी खंजर दीवार के अंदर से खींच लिया। उसी समय दीवार का चमकना बंद हो गया और तस्वीरें जहाँ की तहाँ खड़ी हो गईं अर्थात् जो जितनी चल चुकी थीं उतनी ही चल कर रुक गईं। दीवार पर गौर करने से मालूम होता था कि तस्वीरें पहिले ढंग की नहीं बल्कि दूसरे ही ढंग की बनी हुई हैं।

जीत०। यह भी बड़े मजे की बात है, लोगों को तस्वीरों के विषय में धोखा देने और ताज्जुब में डालने के लिए इससे बढ़ कर कोई खेल हो नहीं सकता।

तेज०। जी हाँ, एक दिन में पचासों तरह की तस्वीरें इस दीवार पर लोगों को दिखा सकते हैं, पता लगना तो दूर रहे गुमान भी नहीं हो सकता कि यह क्या मामला है और ऐसी अनूठी तस्वीरें नित्य क्यों बन जाती हैं।

सुरेन्द्र०। बेशक यह खेल मुझे बहुत अच्छा मालूम हुआ, परन्तु अब इन तस्वीरों को ठीक अपने ठिकाने पर पहुँचा कर छोड़ देना चाहिए।

"बहुत अच्छा" कह कर इन्द्रजीतसिंह आगे बढ़ गये और पुनः तिलिस्मी खंजर उसी सूराख में डाल दिया जिससे उसी तरह दीवार चमकने और तस्वीरें चलने लगीं। ताज्जुब के साथ लोग उसका तमाशा देखते रहे। कई घण्टे के बाद जब तस्वीरों की लीला समाप्त हुई और एक विचित्र ढंग के खटके की आवाज आई तब इन्द्रजीतसिंह ने दीवार के अन्दर से तिलिस्मी खंजर निकाल लिया और दीवार का चमकना भी बन्द हो गया।

इस तमाशे से छुट्टी पाकर महाराज सुरेन्द्रसिंह ने इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कहा, "अब हम लोगों को इस दीवार के अन्दर ले चलो।"

इन्द्र०। जो आज्ञा, पहिले बाहर से जाँच कर आप अन्दाजा कर लें कि यह दीवार कितनी मोटी है।

सुरेन्द्र०। इसका अन्दाजा हमें मिल चुका है, दूसरे कमरे में जाने के लिए इसी

दीवार में जो दर्वाजा है उसकी मोटाई से पता लग जाता है जिस पर हमने गौर किया है।

इन्द्र०। अच्छा तो अब एक दफे आप पुनः उसी दूसरे कमरे में चलें क्योंकि इस दीवार के अन्दर जाने का रास्ता उधर ही से है।

इन्द्रजीतसिंह की बात सुन कर महाराज सुरेन्द्रसिंह तथा और सब कोई उठ खड़े हुए और कुमार के साथ साथ पुनः उसी कमरे में गए जिसमें दो चबूतरे बने हुए थे।

इस कमरे में तस्वीर वाले कमरे की तरफ जो दीवार थी उसमें एक आलमारी का निशान दिखाई दे रहा था और उसके बीचोबीच में लोहे की एक खूँटी गड़ी हुई थी जिसे इन्द्रजीतसिंह ने उमेठना शुरू किया। तीस पैंतीस दफे उमेठ कर अलग हो गए और दूर खड़े होकर उस निशान की तरफ देखने लगे। थोड़ी देर बाद वह आलमारी हिलती हुई मालूम पड़ी और फिर यकायक उसके दोनों पल्ले दर्वाजे की तरह खुल गए। साथ ही उसके अंदर से दो औरतें निकलती हुई दिखाई पड़ीं जिनमें एक तो भूतनाथ की स्त्री थी और दूसरी देवीसिंह की स्त्री चम्पा। दोनों औरतों पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ और देवीसिंह चमक उठे और उनके ताज्जुब का कोई हद न रहा, साथ ही इसके दोनों ऐयारों को क्रोध भी चढ़ आया और लाल लाल आँखें करके उन औरतों की तरफ देखने लगे। उन्हीं के साथ ही साथ और लोगों ने भी ताज्जुब के साथ उन औरतों को देखा।

इस समय उन दोनों औरतों का चेहरा नकाब से खाली था मगर भूतनाथ और देवीसिंह के चेहरे पर निगाह पड़ते ही उन दोनों ने आँचल से अपना चेहरा छिपा लिया और पलट कर पुनः उसी आलमारी के अंदर जा लोगों की निगाह से गायब हो गईं। उनकी इस करतूत ने भूतनाथ और देवीसिंह के क्रोध को और भी बढ़ा दिया।

आठवाँ बयान

अब हम पीछे की तरफ लौटते हैं और पुनः उस दिन का हाल लिखते हैं जिस दिन महाराज सुरेन्द्रसिंह और वीरेन्द्रसिंह वगैरह तिलिस्मी तमाशा देखने के लिए रवाना हुए हैं। हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं कि उस समय महाराज और कुमार लोगों के साथ भैरोसिंह और तारासिंह न थे, अर्थात् वे दोनों घर ही पर रह गए थे, अस्तु इस समय उन्हीं दोनों का हाल लिखना बहुत जरूरी हो गया है।

महाराज सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह वगैरह के चले जाने बाद भैरोसिंह अपनी माँ से मिलने के लिए तारासिंह को साथ लिए हुए महल में गये। उस समय चपला अपनी प्यारी सखी चम्पा के कमरे में

बैठी हुई धीरे धीरे कुछ बातें कर रही थी जो भैरोसिंह और तारासिंह को आते देख चुप हो गई और इन दोनों की तरफ देख कर बोली, "क्या महाराज तिलिस्मी तमाशा देखने के लिए गए ?"

भैरोसिंह० । हाँ अभी थोड़ी ही देर हुई है कि वे लोग उसी पहाड़ी की तरफ रवाना हो गए ।

चपला० । (चम्पा से) तो अब तुम्हें भी तैयार हो जाना पड़ेगा ।

चम्पा० । जरूर, मगर तुम भी क्यों नहीं चलतीं ?

चपला० । जी तो मेरा ऐसा ही चाहता है मगर मामा साहब की आज्ञा हो तब तो ।

चम्पा० । जहाँ तक मैं खयाल करती हूँ वे कभी इन्कार न करेंगे । वहिन जब से मुझे यह मालूम हुआ कि इन्द्रदेव तुम्हारे मामा होते हैं तब से मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।

चपला० । मगर मेरी खुशी का तुम अन्दाजा नहीं कर सकतीं, खैर इस समय असल काम की तरफ ध्यान देना चाहिए । (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) कहो तुम लोग इस समय यहाँ कैसे आये ?

तारा० । (चपला के हाथ में एक पुर्जा देकर) जो कुछ है इसी से मालूम हो जायगा ।

चपला ने तारासिंह के हाथ से पुर्जा लेकर पढ़ा और फिर चम्पा के हाथ में देकर कहा, "अच्छा जाओ कह दो कि हम लोगों के लिए किसी तरह का तरद्दुद न करें, मैं अभी जाकर कमलिनी और लक्ष्मीदेवी से मुलाकात करके सब बातें तै कर लेती हूँ ।"

"बहुत अच्छा" कह कर भैरोसिंह और तारासिंह वहाँ से रवाना हुए और इन्द्रदेव के डेरे की तरफ चले गये ।

जिस समय महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह तिलिस्मी कैफियत देखने के लिए रवाना हुए हैं उसके दो या तीन घड़ी बाद घोड़े पर सवार इन्द्रदेव भी अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए उसी पहाड़ी की तरफ रवाना हुए मगर ये अकेले न थे बल्कि और भी तीन नकाबपोश इनके साथ थे । जब ये चारो आदमी उस पहाड़ी के पास पहुँचे तो कुछ देर के लिए रुके और आपुस में यों बातचीत करने लगे—

इन्द्रदेव० । ताज्जुब है कि अभी तक हमारे आदमी लोग यहाँ नहीं पहुँचे ।

दूसरा० । और जब तक वे लोग न आवेंगे तब तक यहाँ अटकना पड़ेगा ।

इन्द्रदेव० । बेशक !

तीसरा० । व्यर्थ यहाँ अटके रहना तो अच्छा न होगा ।

इन्द्रदेव० । तब क्या किया जायगा ?

तीसरा०। आप लोग जल्दी से वहाँ पहुँच कर अपना काम कीजिये और मुझे अकेले इसी जगह छोड़ दीजिए, मैं आपके आदमियों का इन्तजार करूँगा और जब वे आ जायँगे तो सब चीजें लिए आपके पास पहुँच जाऊँगा।

इन्द्रदेव०। अच्छी बात है मगर उन सब चीजों को क्या तुम अकेले उठा लोगे?

तीसरा०। उन सब चीजों की क्या हकीकत है, कहिए तो आपके आदमियों को भी उन चीजों के साथ पीठ पर लाद कर लेता आऊँ।

इन्द्र०। शाबाश! अच्छा रास्ता तो न भूलोगे?

तीसरा०। कदापि नहीं, अगर मेरी आँखों पर पट्टी बाँध कर भी आप वहाँ तक ले गये होते तब भी मैं रास्ता न भूलता और टटोलता हुआ वहाँ तक पहुँच ही जाता।

इन्द्रदेव०। (हँस कर) बेशक तुम्हारी चालाकी के आगे यह कोई कठिन काम नहीं है, अच्छा हम लोग जाते हैं, तुम सब चीजें लेकर हमारे आदमियों को फौरन वापस कर देना।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने उस तीसरे नकाबपोश को उसी जगह छोड़ा और दो नकाबपोशों को साथ लिए हुए आगे की तरफ बढ़े।

जिस सुरंग की राह से राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह उस तिलिस्मी बंगले में गये थे उससे लगभग आध कोस उत्तर की तरफ हट कर और भी एक सुरंग का छोटा सा मुहाना था जिसका बाहरी हिस्सा जंगली लताओं और बेलों से बहुत ही छिपा हुआ था। इन्द्रदेव दोनों नकाबपोशों को साथ लिए तथा पेड़ों की आड़ देकर चलते हुए इसी दूसरी सुरंग के मुहाने पर पहुँचे और जंगली लताओं को हटा कर बड़ी होशियारी से इस सुरंग के अन्दर घुस गये।

नौवाँ बयान

देवीसिंह को चम्पा की सचाई पर भरोसा था और वह उसे बहुत ही नेक तथा पतिव्रता भी समझते थे, जिस पर चम्पा ने देवीसिंह के चरणों की कसम खा कर विश्वास दिला दिया था कि वह नकाबपोशों के घर में नहीं गई और कोई सबब न था कि देवीसिंह चम्पा की बात झूठ समझते। इस जगह यद्यपि देवीसिंह पुनः चम्पा को देख कर क्रोध में आ गये मगर तुरत ही नीचे लिखी बातें विचार कर ठण्डे हो गये और सोचने लगे—

'क्या मुझे पहिचानने में धोखा हुआ? नहीं नहीं, मेरी आँखें ऐसी गन्दी नहीं हैं। तो क्या वास्तव में वह चम्पा ही थी जिसे अभी मैंने देखा या पहिले मैं

देखा था। यह भी नहीं हो सकता! चम्पा ऐसी नेक औरत कसम खाकर मुझसे झूठ भी नहीं बोल सकती। हाँ उसने क्या कसम खाई थी? यही कि 'मैं आपके चरणों की कसम खाकर कहती हूँ कि मुझे कुछ भी याद नहीं कि आप कब की बात कर रहे हैं'। ये ही उसके शब्द हैं, मगर यह कसम तो ठीक नहीं, यहाँ आने के बारे में उसने कसम नहीं खाई बल्कि अपनी याद के बारे में कसम खाई है जिसे ठीक नहीं भी कह सकते। तो क्या उसने वास्तव में मुझे भूलभूलैये में डाल रक्खा है? खैर यदि ऐसा भी हो तो मुझे रंज न होना चाहिए क्योंकि वह नेक है, यदि ऐसा किया भी होगा तो किसी अच्छे ही मतलब से किया होगा या फिर कुमारों की आज्ञा से किया होगा।"

ऐसी बातों को सोच कर देवीसिंह ने अपने क्रोध को ठण्ढा किया मगर भूतनाथ की बेचैनी दूर नहीं हुई।

वे दोनों औरतें जब आलमारी के अंदर घुस कर गायब हो गईं तब हमारे दोनों कुमार तथा महाराज सुरेन्द्रसिंह और वीरेन्द्रसिंह ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा। दर्वाजे के साथ दाहिनी तरफ एक तहखाने के अन्दर जाने का रास्ता था जिसके बारे में दरियाफ्त करने पर इन्द्रजीतसिंह ने बयान किया कि 'जमानिया जाने का रास्ता है, तहखाने में उतर जाने के बाद एक सुरंग मिलेगी जो बराबर जमानिया तक चली गई है'। इन्द्रजीतसिंह की बात सुन कर देवीसिंह और भूतनाथ को विश्वास हो गया कि दोनों औरतें इसी तहखाने में उतर गई हैं जिससे उन्हें भागने के लिए काफी जगह मिल सकती है। भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देख कर इशारे से कहा कि 'इस तहखाने में चलना चाहिए' मगर जवाब में देवीसिंह ने इशारे से ही इनकार करके अपनी लापरवाही जाहिर कर दी।

उस दीवार के अन्दर इतनी जगह न थी कि सब कोई एक साथ ही जाकर वहाँ की कैफियत देख सकते, अतएव दो तीन दफे करके सब कोई उसके अन्दर गये और उन सब पुरजों को देख कर बहुत प्रसन्न हुए जिनके सहारे वे तस्वीरें चलती फिरती और काम करती थीं। जब सब कोई उस कैफियत को देख चुके तब उस दीवार का दर्वाजा बंद कर दिया गया।

इस काम से छुट्टी पाकर सब कोई इन्द्रजीतसिंह की इच्छानुसार उस चबूतरे के पास आए जिस पर सुफेद पत्थर की खूबसूरत पुतली बैठी हुई थी। इन्द्रजीतसिंह ने सुरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर कहा, "यदि आज्ञा हो तो मैं इस दर्वाजे को खोलूँ और आपको तिलिस्म के अन्दर ले चलूँ।"

सुरेन्द्र०। हम भी यही चाहते हैं कि अब तिलिस्म के अन्दर चल कर वहाँ

की कैफियत देखें, मगर यह तो बताओ कि जब इस चबूतरे के अन्दर जाने बाद हम यह तिलिस्म देखते हुए चुनारगढ़ वाले तिलिस्म की तरफ रवाना होंगे तो वहाँ पहुँचने में कितनी देर लगेगी ?

इन्द्र० । कम से कम बारह घण्टे । तमाशा देखने के सबब से यदि इससे ज्यादे देर हो जाय तो भी कोई ताज्जुब नहीं ।

सुरेन्द्र० । रात हो जाने के सबब किसी तरह का हर्ज तो न होगा ?

इन्द्र० । कुछ भी नहीं, रात भर बराबर तमाशा देखते हुए हम लोग चले जा सकते हैं ।

सुरेन्द्र० । खैर तब तो कोई हर्ज नहीं ।

इन्द्रजीतसिंह ने पुतली वाले चबूतरे का दर्वाजा उसी ढंग से खोला जैसे पहिले खोल चुके थे और सभों को साथ लिए हुए नीचे वाले तहखाने में पहुँचे जिसमें बड़े बड़े हण्डे अशर्फियों और जवाहिरात से भरे हुए पड़े थे ।

इस कमरे में दो दरवाजे भी थे जिसमें से एक तो खुला हुआ था और दूसरा बंद । खुले हुए दरवाजे के बारे में दरियाफ्त करने पर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने बयान किया कि यह रास्ता जमानिया को गया है और हम दोनों भाई तिलिस्म तोड़ते हुए इसी राह से आये हैं । यहाँ से बहुत दूर पर एक स्थान है जिसका नाम तिलिस्मी किताब में 'ब्रह्म-मण्डल' लिखा हुआ है, वहाँ से भी मुझे एक छोटी सी किताब मिली थी जिसमें इस विचित्र बंगले का पूरा हाल लिखा हुआ था कि तिलिस्म (चुनारगढ़ वाला) तोड़ने वाले के लिए क्या क्या जरूरी है। उस किताब को चुनारगढ़ तिलिस्म की चाभी कहें तो अनुचित न होगा । वह किताब इस समय मौजूद नहीं है क्योंकि पढ़ने के बाद वह तिलिस्म तोड़ने के काम में खर्च कर दी गई । उस स्थान (ब्रह्म-मण्डल) में बहुत सी तस्वीरें देखने योग्य हैं और वहाँ की सैर करके भी आप बहुत प्रसन्न होंगे ।"

सुरेन्द्र० । हम जरूर उस स्थान को देखेंगे मगर अभी नहीं । हाँ और यह दूसरा दर्वाजा जो बंद है कहाँ जाने के लिए है ?

इन्द्रजीत० । यही चुनारगढ़ वाले तिलिस्म में जाने का रास्ता है, इस समय यही दर्वाजा खोला जायगा और हम लोग इसी राह से जायेंगे ।

सुरेन्द्र० । खैर तो अब इसे खोलना चाहिए ।

पाठक, आपको इस सन्तति के पढ़ने से मालूम होता ही होगा कि अब यह उपन्यास समाप्ति की तरफ चला जा रहा है। हमारे लिखने के लिए अब सिर्फ दो बातें रह गई हैं, एक तो इस चुनारगढ़ वाले तिलिस्म की कैफियत और दूसरे दुष्ट

कैदियों का मुकदमा जिसके साथ बचे बचाये भेद भी खुल जायेंगे। हमारे पाठकों में से बहुत से ऐसे हैं जिनकी रुचि अब तिलिस्मी तमाशे की तरफ कम झुकती है परन्तु उन पाठकों की संख्या बहुत ज्यादे है जो तिलिस्म के तमाशे को पसंद करते हैं और उसकी अवस्था विस्तार के साथ दिखाने अथवा लिखने के लिए बराबर जोर दे रहे हैं। इस उपन्यास में जो कुछ तिलिस्मी बातें लिखी गई हैं यद्यपि वे असम्भव नहीं और विज्ञानवेत्ता अथवा साइंस जानने वाले जरूर कहेंगे कि 'हाँ ऐसी चीजें तैयार हो सकती हैं' तथापि बहुत से अनजान आदमी ऐसे भी हैं जो इसे बिल्कुल खेल ही समझते हैं और कई इसकी देखा देखी अपनी लिखी अनूठी किताबों में असम्भव बातें लिख कर तिलिस्म के नाम को बदनाम भी करने लग गये हैं, इसलिए हमारा ध्यान अब तिलिस्म लिखने की तरफ नहीं झुकता मगर क्या किया जाय लाचारी है, एक तो पाठकों की रुचि की तरफ ध्यान देना पड़ता है दूसरे चुनारगढ़ के चबूतरे वाले तिलिस्म की कैफियत लिखे बिना काम नहीं चलता जिसे इस उपन्यास की बुनियाद कहना चाहिये और जिसके लिए चन्द्रकान्ता उपन्यास में वादा कर चुके हैं। अस्तु अब इस जगह चुनारगढ़ के चबूतरे वाले तिलिस्म की कैफियत लिख कर इस पक्ष को पूरा करते हैं, तब उसके बाद दोनों कुमारों की शादी और कैदियों के मामले की तरफ ध्यान देकर इस उपन्यास को पूरा करेंगे।

महाराज की आज्ञानुसार कुँअर इन्द्रजीतसिंह दरवाजा खोलने के लिए तैयार हो गये। इस दरवाजे के ऊपर वाले महराब में किसी धातु के तीन मोर बने हुए थे जो हरदम हिला ही करते थे। कुमार ने उन तीनों मोरों की गर्दन घुमा कर एक में मिला दीं, उसी समय दर्वाजा भी खुल गया और कुमार ने सभों को अन्दर जाने के लिए कहा। जब सब उसके अन्दर चले गये तब कुमार ने भी उन मोरों को छोड़ दिया और दरवाजे के अन्दर जाकर महाराज से कहा, "यह दरवाजा इसी ढंग से खुलता है मगर इसके बन्द करने की कोई तरकीब नहीं है, थोड़ी देर में आप से आप बन्द हो जायगा। देखिए इस तरफ भी दर्वाजे के ऊपर वाले महराब में उसी तरह के मोर बने हुए हैं अतएव इधर से भी दरवाजा खोलने के समय वही तरकीब करनी होगी।"

दरवाजे के अन्दर जाने बाद तिलिस्मी खंजर से रोशनी करने की जरूरत न रही क्योंकि यहाँ की छत में कई सूराख ऐसे बने हुए थे जिनमें से रोशनी बखूबी आ रही थी और आगे की तरफ निगाह दौड़ाने से यह भी मालूम होता था कि थोड़ी दूर जाने बाद हम लोग मैदान में पहुँच जायेंगे जहाँ से खुला आसमान बखूबी

दिखाई देगा, अस्तु तिलिस्मी खंजर की रोशनी बन्द करदी गई और दोनों कुमारों के पीछे पीछे सब कोई आगे की तरफ बढ़े। लगभग डेढ़ सौ कदम चले जाने के बाद एक खुला हुआ दर्वाजा मिला जिसमें चौखट या किवाड़ कुछ भी न था। इस दर्वाजे के बाहर होने पर सभों ने अपने को संगमर्मर के छोटे से एक दालान में पाया और आगे की तरफ छोटा सा बाग देखा जिसकी रविशें निहायत खूबसूरत स्याह और सुफेद पत्थरों से बनी हुई थीं मगर पेड़ों की किस्म में से केवल कुछ जंगली पौधों और लताओं की हरियाली मात्र ही बाग का नाम चरितार्थ करने के लिए दिखाई दे रही थीं। इस बाग के चारो तरफ चार दालान चार ढंग के बने हुए थे और बीच में छोटे छोटे कई चबूतरे और नहर की तौर पर सुन्दर और पतली नालियां बनी हुई थीं जिनमें पहाड़ से गिरते हुए झरने का साफ जल बह कर वहां के पेड़ों को तरी पहुँचा रहा था और देखने में भी बहुत भला मालूम होता था। मैदान में से निकल कर और आंख उठा कर देखने पर बाग के चारो तरफ ऊँचे ऊँचे हरे भरे पहाड़ दिखाई दे रहे थे और वे इस बात की गवाही दें रहे थे कि यह बाग पहाड़ी की तराई अथवा घाटी में इस ढंग से बना हुआ है कि बाहर से किसी आदमी को इसके अन्दर आने की हिम्मत नहीं हो सकती और न कोई इसके अन्दर से निकल कर बाहर ही जा सकता है।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने महाराज सुरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर कहा, "उस चबूतरे वाले तिलिस्म के दो दर्जे हैं, एक तो यही बाग है और दूसरा उस चबूतरे के पास पहुँचने पर मिलेगा। इस बाग में आप जितने खूबसूरत चबूतरे देख रहे हैं सभों के अन्दर बेअन्दाज दौलत भरी पड़ी है। जिस समय हम दोनों भाई यहां आये थे, इन चबूतरों का छूना बल्कि इनके पास पहुँचना भी कठिन हो रहा था। (एक चबूतरे के पास ले जाकर) देखिये चबूतरे के बगल में नीचे को तरफ कड़ी लगी हुई है और इसके साथ नथी हुई जो बारीक जंजीर है वह (हाथ का इशारा करके) इस तरफ एक कूएँ में गिरी हुई है। इसी तरह हर एक चबूतरे में कड़ी और जंजीर लगी हुई है जो सब उसी कूएँ में जाकर इकट्ठी हुई हैं। मैं नहीं कह सकता कि उस कूएँ के अन्दर क्या है मगर उसकी तासीर यह था कि इन चबूतरों को कोई छू नहीं सकता था। इसके अतिरिक्त आपको यह सुन कर ताज्जुब होगा कि उस चुनार वाले तिलिस्मी चबूतरे में भी जिस पर पत्थर का (असल में किसी धातु का) आदमी सोया हुआ है एक जंजीर लगी हुई है और वह जंजीर भी भीतर ही भीतर यहां तक आकर उसी कूएँ में गिरी हुई है जिसमें वे सब जंजीरें इकट्ठी हुई हैं, बस यही और इतना ही यहां का तिलिस्म है। इसके

अतिरिक्त दर्वाजों को छिपाने के सिवाय और कुछ भी नहीं है। हम दोनों भाइयों को तिलिस्मी किताब की बदौलत यह सब हाल मालूम हो चुका था, अतएव जब हम दोनों भाई यहाँ आए थे तो इन चबूतरों से बिल्कुल हटे रहते थे। पहिला काम हम लोगों ने जो किया वह यही था कि ये नालियाँ जो पानी से भरी और बहती हुई आप देख रहे हैं जिस पहाड़ी झरने की बदौलत लबालब हो रही हैं उसमें से एक नई नाली खोद कर उसका पानी उसी कूएँ में गिरा दिया जिसमें सब जंजीरें इकट्ठी हुई हैं क्योंकि वह चश्मा भी उस कूएँ के पास ही है और अभी तक उसका पानी उस कूएँ में बराबर गिर रहा है। जब उस चश्मे का पानी (कई घण्टे तक) कूएँ के अन्दर गिरा तब इन चबूतरों का तिलिस्मी असर जाता रहा और ये छूने के लायक हुए मानों उस कूएँ में बिजली की आग भरी हुई थी जो पानी गिरने से ठंढी हो गई। हम दोनों भाइयों ने तिलिस्मी खंजर से सब जंजीरों को काट काट इन चबूतरों का और उस चुनारगढ़ वाले तिलिस्मी चबूतरे का भी सम्बन्ध उस कूएँ से छुड़ा दिया, इसके बाद इन चबूतरों को खोल कर देखा और मालूम किया कि इनके अन्दर क्या है। अब आपकी आज्ञा होगी तो ऐयार लोग इस दौलत को चुनारगढ़ या जहाँ आप कहेंगे पहुँचा देंगे।"

इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने महाराज की आज्ञानुसार उन चबूतरों का ऊपरी हिस्सा जो सन्दूक के पल्ले की तरह खुलता था खोल-खोल कर दिखाया। महाराज तथा और सब कोई यह देख कर बहुत प्रसन्न हुए कि उनमें बेहिसाब दौलत और जेवरों के अतिरिक्त बहुत सी अनमोल चीजें भी भरी हुई हैं जिनमें से दो चीजें महाराज ने बहुत पसन्द कीं। एक तो जड़ाऊ सिंहासन जिसमें अनमोल हीरे और माणिक विचित्र ढंग से जड़े हुए थे और दूसरा किसी धातु का बना हुआ एक चन्द्रमा था। इस चन्द्रमा में दो पल्ले थे, जब दोनों पल्ले एक साथ मिला दिये जाते तो उसमें से चन्द्रमा ही की तरफ साफ और निर्मल तथा बहुत दूर तक फैलने वाली रोशनी पैदा होती थी।

उन चबूतरों के अन्दर की चीजों को देखते ही देखते तमाम दिन बीत गया। उस समय कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने महाराज की तरफ देख कर कहा, "इस बागी में इन चबूतरों के सिवाय और कोई चीज देखने योग्य नहीं है और अब रात भी हो गई है, इसलिए यद्यपि आगे की तरफ जाने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर आज की रात इसी बाग में ठहर जाते तो अच्छा था।"

भूत०। क्या आज की रात भूखे प्यासे ही बितानी पड़ेगी।

इन्द्रजीत०। (मुस्कुराते हुए) प्यासे तो नहीं कह सकते क्योंकि पानी का चश्मा

वह रहा है जितना चाहो पी सकते हो मगर खाने के नाम पर तब तक कुछ नहीं मिल सकता जब तक कि हम चुनारगढ़ वाले तिलिस्मी चबूतरे से बाहर न हो जायें।

जीत० । खैर कोई चिन्ता नहीं, ऐयारों के बटुए खाली न होंगे, कुछ न कुछ खाने की चीजें उनमें जरूर होंगी ।

सुरेन्द्र० । अच्छा अब जरूरी कामों से छुट्टी पाकर किसी दालान में आराम करने का बन्दोबस्त करना चाहिए ।

महाराज की आज्ञानुसार सब कोई जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में लगे और इसके बाद एक दालान में आराम करने के लिए बैठ गये। खास खास लोगों के लिए ऐयारों ने अपने सामान में से बिस्तरे का इन्तजाम कर दिया ।

दसवाँ बयान

यह दालान जिसमें इस समय महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह आराम कर रहे हैं, बनिस्बत उस दालान के जिसमें ये लोग पहिले पहल पहुंचे थे बड़ा और खूबसूरत बना हुआ था । तीन तरफ दीवार थी और बाग की तरफ तेरह खम्भे और महराव लगे हुए थे जिससे इसे बारहदरी भी कह सकते हैं। इसकी कुर्सी लगभग ढाई हाथ के ऊँची थी और इसके ऊपर चढ़ने के लिए पाँच सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। बारहदरी के आगे की तरफ कुछ सहन छूटा हुआ था जिसकी जमीन (फर्श) संगमर्मर और संगमूसा के चौखूटे पत्थरों से बनी हुई थी। बारहदरी की छत में मीनाकारी का काम बना हुआ था और तीनों तरफ की दीवारों में कई आलमारियाँ भी थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी । इस बारहदरी में जिसमें सब कोई आराम कर रहे थे एक आलमारी की कार्निस के ऊपर मोमबत्ती जल रही थी जो देवीसिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से निकाल कर जलाई थी । किसी को नींद नहीं आयी थी बल्कि सब कोई बैठे हुए आपस में बातें कर रहे थे। महाराज सुरेन्द्रसिंह बाग की तरफ मुँह किये बैठे थे और उन्हें सामने की पहाड़ी का आधा हिस्सा भी जिस पर इस समय अन्धकार की बारीक चादर पड़ी हुई थी दिखाई दे रहा था । उस पहाड़ी पर यकायक मशाल की रोशनी देख कर महाराज चौंके और सभों को उस तरफ देखने का इशारा किया ।

सभों ने उस रोशनी की तरफ ध्यान दिया और दोनों कुमार ताज्जुब के साथ सोचने लगे कि यह क्या मामला है ? इस तिलिस्म में हमारे सिवाय किसी और आदमी का आना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है, तब फिर यह मशाल की रोशनी कैसी ! खाली रोशनी ही नहीं बल्कि उसके पास चार पाँच आदमी

भी दिखाई देते हैं, हाँ यह नहीं जान पड़ता कि वे सब औरत हैं या मर्द।

और लोगों के विचार भी दोनों कुमारों ही की तरह के थे और मशाल के साथ कई आदमियों को देख कर सभी ताज्जुब कर रहे थे। यकायक वह रोशनी गायब हो गई और आदमी दिखाई देने से रह गये मगर थोड़ी ही देर बाद वह रोशनी फिर दिखाई दी। अबकी दफे रोशनी और भी नीचे की तरफ थी और उसके साथ के आदमी साफ साफ दिखाई देते थे।

गोपाल०। (इन्द्रजीतसिंह से) मैं समझता था कि आप दोनों भाइयों के सिवाय कोई गैर आदमी इस तिलिस्म में नहीं आ सकता।

इन्द्रजीत०। मेरा भी यही खयाल था मगर क्या आप भी यहाँ तक नहीं आ सकते? आप तो तिलिस्म के राजा हैं।

गोपाल०। हाँ मैं आ तो सकता हूँ मगर सीधी राह से और अपने को बचाते हुए, वे काम मैं नहीं कर सकता जो आप कर सकते हैं, परन्तु आश्चर्य तो यह है कि ये लोग पहाड़ पर से आते हुए दिखाई दे रहे हैं जहाँ से आने का रास्ता ही नहीं है। तिलिस्म बनाने वालों ने इस बात को जरूर अच्छी तरह विचार लिया होगा।

इन्द्रजीत०। बेशक ऐसा ही है मगर यहाँ पर क्या समझा जाय? मेरा खयाल है कि थोड़ी ही देर में वे लोग इस बाग में आ पहुँचेंगे।

गोपाल०। बेशक ऐसा ही होगा, (रुक कर) देखिए रोशनी फिर गायब हो गई शायद वे लोग किसी गुफा में घुस गये।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और सब कोई बड़े गौर से उस तरफ देखते रहे। इसके बाद यकायक बाग के पश्चिम तरफ वाले दालान में रोशनी मालूम होने लगी जो उस दालान के ठीक सामने था जिसमें हमारे महाराज तथा ऐयार लोग टिके हुए थे, मगर पेड़ों के सबब से साफ नहीं दिखाई देता था कि दालान में कितने आदमी आए हैं और क्या कर रहे हैं।

जब सभों को निश्चय हो गया कि वे लोग धीरे धीरे पहाड़ी के नीचे उतर कर बाग के दालान या बारहदरी में आ गए हैं तब महाराज सुरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को हुक्म दिया कि जाकर देखो और पता लगाओ कि वे लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं।

गोपाल०। (महाराज से) तेजसिंहजी का वहाँ जाना उचित न होगा क्योंकि यह तिलिस्म का मामला है और यहाँ की बातों से ये बिल्कुल बेखबर हैं, आज्ञा हो तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह को साथ लेकर मैं जाऊँ।

महाराज०। ठीक है, अच्छा तुम्हीं दोनों आदमी जाकर देखो क्या मामला है।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और राजा गोपालसिंह वहाँ से उठे और धीरे धीरे

पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते हुए उस दालान की तरफ रवाना हुए जिसमें रोशनी दिखाई दे रही थी, यहां तक कि उस दालान अथवा बारहदरी के बहुत पास पहुँच गये और एक पेड़ की आड़ में खड़े होकर गौर से देखने लगे।

इस दालान में उन्हें पन्द्रह आदमी दिखाई दिये जिनके विषय में यह जानना कठिन था कि वे मर्द हैं या औरत, क्योंकि सभों की पोशाक एक ही रंग ढंग की तथा सभों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी। इन्हीं पन्द्रह आदमियों में से दो आदमी मशालची का काम दे रहे थे। जिस तरह उनकी पौशाक खूबसूरत और बेशकीमत थी उसी तरह मशाल भी सुनहरी तथा जड़ाऊ काम की दिखाई दे रही थी और उसके सिरे की तरफ बिजली की तरह रोशनी हो रही थी, इसके अतिरिक्त उनके हाथ में तेल की कुप्पी न थी और इस बात का कुछ पता नहीं लगता था कि इस मशाल की रोशनी का सबब क्या है।

राजा गोपालसिंह और इन्द्रजीतसिंह ने देखा कि वे लोग शीघ्रता के साथ उस दालान के सजाने और फर्श वगैरह के ठीक करने का इन्तज़ाम कर रहे हैं। बारहदरी के दाहिने तरफ एक खुला हुआ दर्वाजा है जिसके अन्दर वे लोग बार बार जाते हैं और जिस चीज की जरूरत समझते हैं ले आते हैं। यद्यपि उन सभों की पोशाक एक ही रंग ढंग की है और इसलिए बड़ाई छुटाई का पता लगाना कठिन है तथापि उन सभों में से एक आदमी ऐसा है जो स्वयं कोई काम नहीं करता और एक किनारे कुर्सी पर बैठा हुआ अपने साथियों से काम ले रहा है। उसके हाथ में एक विचित्र ढंग की छड़ी दिखाई दे रही है जिसके मुट्ठे पर नेहायत खूबसूरत और कुछ बड़ा हिरन बना हुआ है। देखते ही देखते थोड़ी देर में बारहदरी सज के तैयार हो गई और कन्दीलों की रोशनी से जगमगाने लगी। उस समय वह नकाबपोश जो कुर्सी पर बैठा हुआ था और जिसे हम उस मण्डली का सर्दार भी कह सकते हैं अपने साथियों से कुछ कह सुन कर बारहदरी के नीचे उतर आया और धीरे धीरे उस तरफ रवाना हुआ जिधर महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह टिके हुए थे।

यह कैफियत देख कर राजा गोपालसिंह और इन्द्रजीतसिंह जो छिपे छिपे सब तमाशा देख रहे थे वहां से लौटे और शीघ्र ही महाराज के पास पहुँच कर जो कुछ देखा था संक्षेप में बयान किया। उसी समय एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया। सभों का ध्यान उसी तरफ चला गया और इन्द्रजीतसिंह तथा राजा गोपालसिंह ने समझा कि यह वही नकाबपोशों का सर्दार होगा जिसे हम उस बारहदरी में देख आये हैं और जो हमारे देखते देखते वहां से रवाना हो गया था मगर जब पास आया तो सभों का भ्रम जाता रहा और एकाएक इन्द्रदेव पर निगाह पड़ते

ही सब कोई चौंक पड़े। राजा गोपालसिंह और इन्द्रजीतसिंह को इस बात का भी शक हुआ कि वह नक़ाबपोशों का सर्दार शायद इन्द्रदेव ही हो, मगर यह देख कर उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ कि इन्द्रदेव उस (नक़ाबपोशों की सी) पोशाक में न था जैसा कि उस बारहदरी में देखा था बल्कि वह अपनी मामूली दर्बारी पोशाक में था।

इन्द्रदेव ने वहाँ पहुँच कर महाराज सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह, जीतसिंह, तेजसिंह, राजा गोपालसिंह तथा दोनों कुमारों को अदब के साथ झुक कर सलाम किया और इसके बाद बाकी ऐयारों से भी "जै माया की" कहा।

सुरेन्द्र०। इन्द्रदेव, जब से हमने इन्द्रजीतसिंह की ज़ुबानी यह सुना है कि इस तिलिस्म के दारोगा तुम हो तब से हम बहुत ही खुश हैं, मगर ताज्जुब होता था कि तुमने इस बात की हमें कुछ भी खबर नहीं की और न हमारे साथ यहाँ आये ही। अब यकायक इस समय यहाँ पर तुम्हें देख कर हमारी खुशी और भी ज्यादे हो गई। आओ हमारे पास बैठ जाओ और यह कहो कि हम लोगों के साथ तुम यहाँ क्यों नहीं आये?

इन्द्रदेव०। (बैठ कर) आशा है कि महाराज मेरा वह कसूर माफ करेंगे। मुझे कई जरूरी काम करने थे जिनके लिए अपने ढंग पर अकेले आना पड़ा। बेशक मैं इस तिलिस्म का दारोगा हूँ और इसीलिए अपने को बड़ा ही खुशकिस्मत समझता हूँ कि ईश्वर ने इस तिलिस्म को आप ऐसे प्रतापी राजा के हाथ में सौंपा है। यद्यपि आपके फर्माबर्दार और होनहार पोतों ने इस तिलिस्म को फतह किया है और इस सबब से वे इसके मालिक हुए हैं तथापि इस तिलिस्म का सच्चा आनन्द और तमाशा दिखाना मेरा ही काम है, यह मेरे सिवाय किसी दूसरे के किए नहीं हो सकता। जो काम कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का था उसे ये कर चुके अर्थात् तिलिस्म तोड़ चुके और जो कुछ इन्हें मालूम होना था हो चुका, परन्तु कई बातों भेदों और स्थानों का पता इन्हें नहीं लग सकता जो मेरे हाथ में हैं और जिस सबब से मैं इस तिलिस्म का दारोगा कहलाता हूँ। तिलिस्म बनाने वालों ने तिलिस्म के सम्बन्ध में दो किताबें लिखी थीं जिनमें से एक तो दारोगा के सुपुर्द कर गये और दूसरी तिलिस्म तोड़ने वाले के लिए छिपा कर रख गये जो कि अब दोनों कुमारों के हाथ लगी, या कदाचित इनके अतिरिक्त और भी कोई किताब उन्होंने लिखी हो तो उसका हाल मैं नहीं जानता, हाँ जो किताब दारोगा के सुपुर्द कर गये थे वह वसीयतनामे के तौर पर पुश्तहापुश्त से हमारे कब्जे में चली आ रही है और आजकल मेरे पास मौजूद है। यह मैं जरूर कहूँगा कि तिलिस्म में बहुत से मुकाम ऐसे हैं जहाँ दोनों कुमारों का जाना तो असम्भव ही है परन्तु तिलिस्म टूटने के पहिले

भी नहीं जा सकता था, हाँ अब मैं वहाँ बखूबी जा सकता हूँ। आज मैं इसीलिए इस तिलिस्म के अन्दर आपके पास आया हूँ कि इस तिलिस्म का पूरा पूरा तमाशा आपको दिखाऊँ जिसे कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह नहीं दिखा सकते। परन्तु इन कामों के पहिले मैं महाराज से एक चीज माँगता हूँ जिसके विना काम नहीं चल सकता।

महाराज० । वह क्या ?

इन्द्रदेव० । जब तक इस तिलिस्म में आप लोगों के साथ हूँ तब तक अदब लेहाज और कायदे की पावन्दी से माफ रक्खा जाऊँ !

महाराज० । इन्द्रदेव, हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं । जब तक तिलिस्म में तुम लोगों के साथ हो तभी तक के लिए नहीं बल्कि हमेशा के लिए हमने इन बातों से तुम्हें छुट्टी दी, तुम विश्वास रक्खो कि हमारे बाल बच्चे और सच्चे साथी भी हमारी इस बात का पूरा पूरा लेहाज रक्खेंगे ।

यह सुनते ही इन्द्रदेव ने उठ कर महाराज को सलाम किया और फिर बैठ कर कहा, "अब आज्ञा हो तो खाने पीने का सामान जो आप लोगों के लिए लाया हूँ हाजिर करूँ ।"

महाराज० । अच्छी बात है लाओ, क्योंकि हमारे साथियों में से कई ऐसे हैं जो भूख के मारे बेताब हो रहे होंगे ।

तेज० । मगर इन्द्रदेव तुमने इस बात का परिचय तो दिया ही नहीं कि तुम वास्तव में इन्द्रदेव ही हो या कोई और ?

इन्द्रदेव० । (मुस्कुरा कर) मेरे सिवाय कोई गैर यहाँ आ नहीं सकता ।

तेज० । तथापि—'चिलेण्डोला' ।

इन्द्रदेव० । 'चक्रधर' ।

बीरेन्द्र० । मैं एक बात और पूछना चाहता हूँ ?

इन्द्रदेव० । आज्ञा ।

बीरेन्द्र० । वह स्थान कैसा है जहाँ तुम रहा करते हो और जहाँ मायारानी अपने दारोगा को लेकर तुम्हारे पास गई थी ?

इन्द्र० । वह स्थान तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और यहाँ से थोड़ी ही दूर पर है । मैं स्वयं आप लोगों को ले चल कर वहाँ की सैर कराऊँगा । इसके अतिरिक्त अभी मुझे बहुत सी बातें कहनी हैं । पहिले आप लोग भोजन इत्यादि से छुट्टी पा लें ।

तेज० । हम लोग मशाल की रोशनी में क्या आप ही लोगों को पहाड़ से उतरते देख रहे थे ?

इन्द्र० । जी हाँ, मैं एक निराले ही रास्ते से यहाँ आया हूँ। आप लोग बेशक ताज्जुब करते होंगे कि पहाड़ पर से कौन उतर रहा है परन्तु मैं अकेला ही नहीं आया हूँ बल्कि कई तमाशे भी अपने साथ लाया हूँ मगर उनका जिक्र करने का अभी मौका नहीं है।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ खड़ा हुआ और देखते देखते दूसरी तरफ चला गया, मगर अपनी इस बात से कि—'कई तमाशे भी अपने साथ लाया हूँ' कइयों को ताज्जुब और घबराहट में डाल गया।

ग्यारहवाँ बयान

थोड़ी ही देर बाद इन्द्रदेव फिर वहाँ आया। अबकी दफे उसके साथ कई नकाबपोश भी थे जो अपने हाथ में तरह तरह की खाने पीने की चीजें लिए हुए थे। एक के हाथ में जल था जिससे जमीन धोई गई और खाने पीने की चीजें वहाँ रख कर वे नकाबपोश लौट गये तथा पुनः कई जरूरी चीजें लेकर आ पहुँचे। इन्तजाम ठीक हो जाने पर इन्द्रदेव ने कायदे के साथ सभों को भोजन कराया और इस काम से छुट्टी मिलने पर उस बारहदरी में चलने के लिए अर्ज किया जिसे उसने यहाँ पहुँच कर सजाया था और जिसका हाल हम ऊपर के बयान में लिख चुके हैं।

वास्तव में यह बारहदरी बड़ी खूबी के साथ सजाई गई थी। यहाँ सभों के लिए कायदे के साथ बैठने और आराम करने का सामान मौजूद था जिसे देख कर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्रदेव की तरफ देख कर बोले, "क्या यह सब सामान इसी बाग में मौजूद था ?"

इन्द्र० । जी हाँ, केवल इतना ही नहीं बल्कि इस बाग में जितनी इमारतें हैं उन सभों को सजाने और दुरुस्त करने के लिए यहाँ काफी सामान है, इसके अतिरिक्त यहाँ से मेरा मकान बहुत नजदीक है, इसलिए जिस चीज की जरूरत हो मैं बहुत जल्द ला सकता हूँ। (कुछ देर सोच कर और हाथ जोड़ कर) मैं एक और भी जरूरी बात अर्ज किया चाहता हूँ।

महाराज० । वह क्या ?

इन्द्र० । यह तिलिस्म आप ही के बुजुर्गों की बदौलत बना है और उन्हीं की आज्ञानुसार जब से यह तिलिस्म तैयार हुआ है तब से मेरे बुजुर्ग लोग इसके दारोगा होते आये हैं। अब मेरे जमाने में इस तिलिस्म की किस्मत ने पलटा खाया है यद्यपि कुमार इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने इस तिलिस्म को तोड़ा या फतह किया है और इसमें की बेहिसाब दौलत के मालिक हुए हैं तथापि यह तिलिस्म

अभी दौलत से खाली नहीं हुआ है और न ऐसा खुल ही गया है कि ऐरे गैरे जिसका जी चाहे इसमें घुस आवे। हां यदि आज्ञा हो तो दोनों कुमारों के हाथ से मैं इसके बचे बचाये हिस्से को भी तोड़वा सकता हूं क्योंकि यह काम इस तिलिस्म के दारोगा का अर्थात् मेरा है, मगर मैं चाहता हूं कि बड़े लोगों की इस कीर्ति को एकदम से मटियामेट न करके भविष्य के लिए भी कुछ छोड़ देना चाहिए। आज्ञा पाने पर मैं इस तिलिस्म की पूरी सैर कराऊंगा और तब अर्ज करूंगा कि बुजुर्गों की आज्ञानुसार इस दास ने भी जहां तक हो सका इस तिलिस्म की खिदमत की, अब महाराज को अख्तियार है कि मुझसे हिसाब किताब समझ कर आइन्दे के लिए जिसे चाहें यहां का दारोगा मुकर्रर करें।

महाराज०। इन्द्रदेव, मैं तुमसे और तुम्हारे कामों से बहुत ही प्रसन्न हूं मगर मैं यह नहीं चाहता कि तुम मुझे बातों के जाल में फंसा कर बेवकूफ बनाओ और यह कहो कि 'भविष्य के लिए किसी दूसरे को यहां का दारोगा मुकर्रर कर लो'। जो कुछ तुमने राय दी है वह बहुत ठीक है अर्थात् इस तिलिस्म के बचे बचाए स्थानों को छोड़ देना चाहिए जिसमें बड़े लोगों का नाम निशान बना रहे मगर यहां के दारोगा की पदवी सिवाय तुम्हारे खान्दान के कोई दूसरा कब पा सकता है? बस दया करके इस ढंग की बातों को छोड़ दो और जो कुछ खुशी खुशी कर रहे हो करो।

इन्द्र०। (अदब के साथ सलाम करके) जो आज्ञा। मैं एक बात और भी निवेदन किया चाहता हूं।

महाराज०। वह क्या?

इन्द्रदेव०। वह यह कि इस जगह से आप कृपा करके पहिले मेरे स्थान को, जहां मैं रहता हूं, पवित्र कीजिये और तब तिलिस्म की सैर करते हुए अपने चुनारगढ़ वाले तिलिस्मी मकान में पहुंचिये। इसके अतिरिक्त इस तिलिस्म के अन्दर जो कुछ कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने पाया है अथवा वहां से जिन चीजों को निकाल कर चुनारगढ़ पहुंचाने की आवश्यकता है उनकी फिहरिस्त मुझे मिल जाय और ठीक तौर पर बता दिया जाय कि कौन चीज कहां पर है तो उन्हें वहां से बाहर करके आपके पास भेजने का बन्दोबस्त करूं। यद्यपि यह काम भैरोसिंह और तारासिंह भी कर सकते हैं परन्तु जिस काम को मैं एक दिन में करूंगा उसे ये चार दिन में भी पूरा न कर सकेंगे क्योंकि मुझे यहां के कई रास्ते मालूम हैं, जिस चीज को जिस राह से निकाल ले जाने में सुबीता देखूंगा निकाल ले जाऊंगा।

महाराज०। ठीक है, मैं भी इस बात को पसन्द करता हूं और यह भी चाहता हूं कि चुनार पहुंचने के पहिले ही तुम्हारे विचित्र स्थान की सैर कर लूं। चीजों

की फिहरिश्त और उनका पता इन्द्रजीतसिंह तुमको देंगे।

इतना कह के महाराज ने इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कुमार ने उन सब चीजों का पता इन्द्रदेव को बताया जिन्हें बाहर निकाल कर घर पहुंचाने की आवश्यकता थी और साथ ही साथ अपना तिलिस्मी किस्सा भी जिसके कहने की जरूरत थी इन्द्रदेव से बयान किया और बाद में दूसरी बातों का सिलसिला छिड़ा।

बीरेन्द्र०। (इन्द्रदेव से) आपने कहा था कि 'मैं कई तमाशे भी साथ लाया हूं', तो क्या वे तमाशे ढके ही रह जायेंगे।

इन्द्रदेव०। जी नहीं, आज्ञा हो तो अभी उन्हें पेश करूं, परन्तु यदि आप मेरे मकान पर चल कर उन तमाशों को देखेंगे तो कुछ विशेष आनन्द मिलेगा।

महाराज०। यही सही, हम लोग तो अभी तुम्हारे मकान पर चलने के लिए तैयार हैं।

इन्द्रदेव०। अब रात बहुत चली गई है, महाराज दो चार घण्टे आराम कर लें, दिन भर की हरारत मिट जाय, जब कुछ रात बाकी रह जायेगी तो मैं जगा दूंगा और अपने मकान की तरफ ले चलूंगा। तब तक मैं अपने साथियों को वहां रवाना कर देता हूं जिसमें आगे चल कर सभों को होशियार कर दें और महाराज के लिए हर एक तरह का सामान दुरुस्त हो जाय।

इन्द्रदेव की बात को महाराज ने पसंद करके सभों को आराम करने की आज्ञा दी और इन्द्रदेव भी वहां से विदा होकर किसी दूसरी जगह चला गया।

इधर उधर की बातचीत करते करते महाराज को नींद आ गई, बीरेन्द्रसिंह दोनों कुमार और राजा गोपालसिंह भी सो गये तथा और ऐयारों ने भी स्वप्न देखना आरम्भ किया मगर भूतनाथ की आंखों में नींद का नाम निशान भी न था और वह तमाम रात जागता ही रह गया।

जब रात घन्टे भर से कुछ ज्यादे बाकी रह गई और सुबह को अठखेलियों के साथ चल कर खुशदिलों तथा नौजवानों के दिलों में गुदगुदी पैदा करने वाली ठंढी ठंढी हवा ने खुशबूदार जंगली फूलों और लताओं से हाथापाही कर उनकी सम्पत्ति छीनना और अपने को खुशबूदार बनाना शुरू कर दिया तब इन्द्रदेव भी उस बारहदरी में आ पहुंचा और सभों को गहरी नींद में सोते देख जगाने का उद्योग करने लगा। इस बारहदरी के आगे की तरफ एक छोटा सा सहन था जिसकी जमीन संगमूसा के स्याह और चौखूटे पत्थरों से मढ़ी हुई थी। इस सहन के दाहिने और बाएं कोनों पर दो तीन आदमी बखूबी बैठ सकते थे। इन्द्रदेव

दाहिने तरफ वाले सिंहासन पर जा कर बैठ गया और उसके पावों को बारी बारी से किसी हिसाब से घुमाने या उमेठने लगा। उसी समय सिंहासन के अन्दर से सरस और मधुर बाजे की आवाज आने लगी और थोड़ी ही देर बाद गाने की आवाज भी पैदा हुई। मालूम होता था कि कई नौजवान औरतें बड़ी खूबी के साथ गा रही हैं और कई आदमी पखावज बीन वंशी मजीरा इत्यादि बजा कर उन्हें मदद पहुंचा रहे हैं। यह आवाज धीरे धीरे बढ़ने और फैलने लगी, यहां तक कि उस बारहदरी में सोने वाले सभी लोगों को जगा दिया अर्थात् सब कोई चौंक कर उठ बैठे और ताज्जुब के साथ इधर उधर देखने लगे। केवल इतनें ही से बेचैनी दूर न हुई और सब कोई बारहदरी से बाहर निकल कर सहन में चले आये, उस समय इन्द्रदेव ने सामने आ कर महाराज को सलाम किया।

महाराज०। यह तो मालूम हो गया कि यह सब तुम्हारी कारीगरी का नतीजा है मगर बताओ तो सही कि यह गाने बजाने की आवाज कहां से आ रही है?

इन्द्र०। आइये मैं बताता हूं। महाराज को जगाने ही के लिए यह तर्कीब की गई थी क्योंकि अब यहां से रवाना होने का समय हो हो गया है, और विलम्ब न करना चाहिये।

इतना कह कर इन्द्रदेव सभों को उस सिंहासन के पास ले गया जिसमें से गाने की आवाज आ रही थी और उसका असल भेद समझा कर बोला, "इसमें से मौके मौके पर हर एक राग रागिनी पैदा हो सकती है।"

इस अनूठे गाने बजाने से महाराज बहुत प्रसन्न हुए और इसके बाद सभों को लिए हुए इन्द्रदेव के मकान की तरफ रवाना हुए।

उस बारहदरी के बगल में ही एक कोठरी थी जिसमें सभों को साथ लिए हुए इन्द्रदेव चला गया। इस समय इन्द्रदेव के पास भी तिलिस्मी खंजर था जिससे उसने हल्की रोशनी पैदा की और उसी के सहारे सभों को लिए हुए आगे की तरफ बढ़ा।

उस कोठरी में जाने के बाद पहिले सभों को एक छोटे से तहखाने में उतरना पड़ा। वहां सभों ने लाल रंग की एक समाधि देखी जिसके बारे में दरियाफ्त करने पर इन्द्रदेव नें कहा कि यह समाधि नहीं है सुरंग का दर्वाजा है। इन्द्रदेव उस समाधि के पास बैठ गया और कोई ऐसी तर्कीब की कि जिससे वह बीचोबीच से खुल गई और नीचे उतरने के लिए चार पांच सीढ़ियां दिखाई दीं। इन्द्रदेव के कहे मुताबिक सब कोई नीचे उतर गये और इसके बाद सीधो सुरंग में चलने लगे। सुरंग की हालत और ऊंची नीची जमीन से साफ साफ मालूम होता था कि वह पहाड़ काट कर बनाई हुई है और सब लोग ऊंचे की तरफ बढ़ते जा रहे हैं। हमारे

मुसाफिरों को दो अढ़ाई घड़ी के लगभग चलना पड़ा और तब इन्द्रदेव ने ठहरने के लिये कहा क्योंकि यहां पर सुरंग खतम हो चुकी थी और सामने एक बन्द दर्वाजा दिखाई दे रहा था। इन्द्रदेव ने ताली लगा कर ताला खोला और सभों को साथ लिये हुए उसके अन्दर गया। सभों ने अपने को एक सुन्दर कमरे में पाया और जब इस कमरे के बाहर हुए तब मालूम हुआ कि सवेरा हो चुका है।

यह इन्द्रदेव का वही मकान है जिसमें बुड्ढे दारोगा के साथ मदद पाने की उम्मीद में मायारानी गई थी। इस सुन्दर और सुहावने स्थान का हाल हम पहिले लिख चुके हैं इसलिए अब पुनः बयान करने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती।

इन्द्रदेव सभों को लिए हुए अपने छोटे से बागीचे में गया जहां चारो तरफ की सुन्दर छटा दिखाई दे रही थी और खूशबूदार ठण्ढी ठण्ढी हवा दिल और दिमाग के साथ दोस्ती का हक अदा कर रही थी।

महाराज सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह तथा दोनों कुमारों को यह स्थान बहुत पसन्द आया और बार बार इसकी तारीफ करने लगे। यद्यपि इस बागीचे में सभों के लायक दर्जे बदर्जे कुर्सियां बिछी हुई थीं मगर किसी का जी बैठने को नहीं चाहता था। सब कोई घूम घूम कर यहां का आनन्द लेना चाहते थे और ले रहे थे मगर इस बीच में एक ऐसा मामला हो गया जिसने भूतनाथ और देवीसिंह दोनों ही को चौंका दिया। एक आदमी जल से भरा हुआ चांदी का घड़ा और सोने की झारी लेकर आया और संगमर्मर की चौकी पर जो बागीचे में पड़ी हुई थी रख कर लौट चला। इसी आदमी को देख कर भूतनाथ और देवीसिंह चौंके थे क्योंकि वह वही आदमी था जिसे ये दोनों ऐयार नकाबपोशों के मकान में देख चुके थे इसी आदमी ने नकाबपोशों के सामने एक तस्वीर पेश की थी और कहा था कि 'कृपानाथ, बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा'*।

केवल इतना ही नहीं, भूतनाथ ने वहां से थोड़ी दूर पर एक झाड़ी में अपनी स्त्री को भी फूल तोड़ते देखा और धीरे से देवीसिंह को छेड़ कर कहा, "वह देखिये मेरी स्त्री भी वहां मौजूद है, ताज्जुब नहीं कि आपकी चम्पा भी कहीं घूम रही हो।"

बारहवां बयान

यद्यपि भूतनाथ को तरद्दुदों से छुट्टी मिल चुकी थी, यद्यपि उसका कसूर माफ हो चुका था, और वह महाराज के खास ऐयारों में मिला लिया गया था

* देखिये बीसवां भाग, दूसरा बयान।

मगर इस जगह उस आदमी को जिसने नकाबपोशों के मकान में तस्वीर पेश करके उस पर दावा करना चाहा था देख कर उसकी अवस्था फिर बिगड़ गई और साथ ही इसके अपनी स्त्री को भी वहां काम करते हुए देख कर उसे क्रोध चढ़ आया।

जब वह आदमी पानी का घड़ा और झारी रख कर लौट चला तब इन्द्रदेव ने उसे पुकार कर कहा, "अर्जुन, जरा वह तस्वीर भी तो ले आओ जिसे बार बार तुम दिखाया करते हो और जो हमारे दोस्त भूतनाथ को डराने और धमकाने के लिए एक औजार की तरह पर तुम्हारे पास रक्खी हुई है !"

इस नाम ने भूतनाथ के कलेजे को और भी हिला दिया। वास्तव में उस आदमी का यही नाम था और इस खयाल ने तो उसे और भी बदहवास कर दिया कि अब वह तस्वीर लेकर आवेगा।

इस समय सब कोई बाग में टहल रहे थे और इसीलिए एक दूसरे से कुछ दूर हो रहे थे। भूतनाथ बढ़ कर देवीसिंह के पास चला गया और उसका हाथ पकड़ कर धीरे से बोला, "देखा इन्द्रदेव का रंग ढंग ?"

देवी०। (धीरे से) मैं सब कुछ देख और समझ रहा हूं, मगर तुम घबड़ाओ नहीं।

भूत०। मालूम होता है कि इन्द्रदेव का दिल अभी तक मेरी तरफ से साफ नहीं हुआ।

देवी०। शायद ऐसा ही हो मगर इन्द्रदेव से ऐसी उम्मीद हो नहीं सकती, मेरा दिल इसे कबूल नहीं करता। मगर भूतनाथ, तुम भी अजीब सिड़ी हो।

भूत०। सो क्या ?

देवी०। यही कि नकाबपोशों का पीछा करके तुमने कैसे कैसे तमाशे देखे और तुम्हें विश्वास भी हो गया कि इन नकाबपोशों से तुम्हारा कोई भेद छिपा नहीं है फिर अन्त में यह भी मालूम हो गया कि उन नकाबपोशों के सर्दार कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह थे अस्तु इन दोनोंसे भी अब कोई बात छिपी नहीं रही।

भूत०। बेशक ऐसा ही है।

देवी०। तो फिर अब क्यों तुम्हारा दम घुटा जाता है ? अब तुम्हें किसका डर रह गया ?

भूत०। कहते तो ठीक हो, खैर कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा।

देवी०। बल्कि तुम्हें यह जानने की कोशिश करना चाहिये कि दोनों कुमारों को तुम्हारे भेदों का पता क्योंकर लगा। ताज्जुब नहीं कि अब वे सब बातें खुला चाहती हों।

भूत०। शायद ऐसा ही हो,मगर मेरी स्त्री के बारे में तुम क्या खयाल करते हो?

देवीसिंह० । इस बारे में मेरा तुम्हारा मामला एक सा हो रहा है अस्तु इस विषय में मैं कुछ भी नहीं कह सकता । वह देखो इन्द्रदेव तेजसिंह के पास चला गया है और तुम्हारी स्त्री की तरफ इशारा करके कुछ कह रहा है। तेजसिंहअलग हों तो मैं उनसे कुछ पूछूं । यहां की छटा ने तो लोगों का दिल ऐसा लुभा लिया है कि सभों ने एक दूसरे का साथ ही छोड़ दिया । (चौंक कर) लो देखो तुम्हारा लड़का नानक भी तो आ पहुंचा, उसके हाथ में भी कोईतस्वीर मालूम पड़ती है, अर्जुन भी उसी के साथ है ।

भूत० । (ताज्जुब से) आश्चर्य की बात है ! नानक और अर्जुन का साथ कैसे हुआ ? और नानक यहां आया ही क्यों ? क्या अपनी मां के साथ आया है ? क्या कपूत छोकरे ने भी मेरी तरफ से आंखें फेर ली हैं ? ओफ, यह तिलिस्मी जमीन तो मेरे लिए भयानक सिद्ध हो रही है, अच्छा खासा तिलिस्म मुझे दिखाई दे रहा है । जिन पर मुझे विश्वास था, जिनका मुझे भरोसा था, जो मेरी इज्जत करते थे यहां उन्हीं को मैं अपना विपच्छी पाता हूं और वे मुझसे बात तक करना पसन्द नहीं करते ।

नानक और अर्जुन को भूतनाथ और देवीसिंह ताज्जुब के साथ देख रहे थे। नानक ने भी भूतनाथ को देखा मगर दूर ही से प्रणाम करके रह गया पास न आया और अर्जुन को लिए सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया जो तेजसिंह से बातें कर रहे थे । इस समय आज्ञानुसार अर्जुन अपने हाथ में तस्वीर लिए हुए था और नानक के हाथ में भी एक तस्वीर थी ।

नानक और अर्जुन को अपने पास आते देख इन्द्रदेव ने हाथ के इशारे से उन्हें दूर ही खड़े रहने के लिए कहा और उन्होंने भी ऐसा ही किया। कुछ देर तक और भी तेजसिंह के साथ इन्द्रदेव बातें करता रहा इसके बाद इशारे से अर्जुन और नानक को अपने पास बुलाया और जब वे दोनों पास आ गये तो कुछ कह सुन कर विदा किया ।

भूतनाथ यह सब तमाशा देख कर ताज्जुब कर रहा था । अर्जुन और नानक को विदा करने बाद तेजसिंह को साथ लिए हुए इन्द्रदेव महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गया जो एक सुन्दर चट्टान पर खड़े खड़े ढालवीं जमीन और पहाड़ों पर से नीचे की तरफ गिरते हुए सुन्दर झरने की शोभा देख रहे थे और वीरेन्द्रसिंह भी उन्हीं के पास खड़े थे । वहां भी कुछ देर तक इन्द्रदेव ने महाराज से बातचीत की

और इसके बाद चारो आदमी लौट कर बागीचे में चले आये। महाराज को बागीचे में आते देख और सब कोई भी जो इधर उधर फैले हुए तमाशा देख रहे थे बागीचे में आकर इकट्ठे हो गए और अब मानों महाराज का यह एक छोटा सा दर्बार बागीचे में लग गया।

बीरेन्द्र०। (इन्द्रदेव से) हां तो अब वे तमाशे कब देखने में आवेंगे जो आप अपने साथ तिलिस्म में लेते गये थे ?

इन्द्रदेव०। जब आज्ञा हो तभी दिखाये जांय।

बीरेन्द्र०। हम लोग तो देखने के लिए तैयार बैठे हैं।

जीत०। मगर पहिले यह मालूम हो जाना चाहिए कि उनके देखने में कितना समय लगेगा, अगर थोड़ी देर का काम हो तो अभी देख लिया जाय।

इन्द्र०। जी वह थोड़ो देर का काम तो नहीं है, इससे यही बेहतर होगा कि पहले जरूरी कामों से छुट्टी पाकर स्नान ध्यान तथा भोजन इत्यादि से निवृत्त हो लें।

महाराज०। हमारी भी यही राय है।

महाराज का मतलब समझ कर सब कोई उठ खड़े हुए और जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह तथा और भी सब कोई इन्द्रदेव के उचित प्रबन्ध को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। किसी को किसी तरह की तकलीफ न हुई और न कोई चीज मांगने की जरूरत ही पड़ी। इन्द्रदेव के ऐयार और कई खिदमतगार आ कर मौजूद हो गये और बात की बात में सब सामान ठीक हो गया।

स्नान तथा संध्या पूजा इत्यादि से छुट्टी पा कर सभों ने भोजन किया और इसके बाद इन्द्रदेव ने (बंगले के अन्दर) एक बहुत बड़े और सजे हुए कमरे में सभों को बैठाया जहां सभों के योग्य दर्जे ब दर्जे बैठने का इन्तजाम किया गया था। एक ऊंची गद्दी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह और उनके दाहिने तरफ बीरेन्द्रसिंह, गोपालसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, रामनारायण, पन्नालाल तथा भूतनाथ वगैरह बैठे।

कुछ देर तक इधर उधर की बातचीत होती रही, इसके बाद इन्द्रदेव ने हाथ जोड़ कर पूछा—"अब यदि आज्ञा हो तो तमाशों को...."

महाराज०। हां हां, अब तो हम लोग हर तरह से निश्चिन्त हैं।

सलाम करके इन्द्रदेव कमरे के बाहर चला गया और घड़ी भर तक लौट के नहीं आया, इसके बाद जब आया तो चुपचाप अपने स्थान पर जाकर बैठ गया।

सब कोई (भूतनाथ पन्नालाल वगैरह) ताज्जुब के साथ उसका मुंह देख रहे थे कि इतने में ही सामने वाले दर्वाजेका परदा हटा और नानक कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया। नानक ने बड़े अदब के साथ महाराज को सलाम किया और इन्द्रदेव का इशारा पाकर एक किनारे बैठ गया। इस समय नानक के हाथ में एक बहुत बड़ी मगर लपेटी हुई तस्वीर थी जो कि उसने अपने बगल में रख ली।

नानक के बाद हाथ में तस्वीर लिए अर्जुन भी आ पहुंचा और महाराज को सलाम कर नानक के पास बैठ गया, उसी समय कमला का भाई अथवा भूतनाथ का लड़का हरनामसिंह दिखाई दिया, वह भी महाराज को प्रणाम करके अर्जुन के बगल में बैठ गया। हरनामसिंह के हाथ में एक छोटी सी सन्दूकड़ी थी जिसे उसने अपने सामने रख लिया।

इसके बाद नकाब पहने हुई तीन औरतें कमरे के अन्दर आईं और अदब के साथ महाराज को सलाम करती हुई दूसरे दर्वाजे से कमरे के बाहर निकल गईं।

इस समय भूतनाथ और देवीसिंह के दिल की क्या हालत थी सो वे ही जानते होंगे। उन्हें इस बात का तो विश्वास ही था कि इन औरतों में एक तो भूतनाथ की स्त्री और दूसरी चम्पा जरूर है मगर तीसरी औरत के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते थे।

महाराज०। (इन्द्रदेव से) इन औरतों में भूतनाथ की स्त्री और चम्पा जरूर होंगी ?

इन्द्र०। (हाथ जोड़ कर) जी हां कृपानाथ।

महाराज०। और तीसरी औरत कौन है ?

इन्द्र०। तीसरी एक बहुत ही गरीब, नेक, सूधी और जमाने की सताई हुई औरत है जिसे देख कर और जिसका हाल सुन कर महाराज को बड़ी ही दया आवेगी। यह वह औरत है जिसे मरे हुए एक जमाना हो गया मगर अब अंद विचित्र ढंग से पैदा होते देख लोगों को बड़ा ही ताज्जुब होगा।

महाराज०। आखिर वह औरत है कौन ?

इन्द्र०। बेचारी दुःखिनी कमला की मां यानी भूतनाथ की पहली स्त्री।

यह सुनते ही भूतनाथ चिल्ला उठा और उसने बड़ी मुश्किल से अपने को बेहोश होने से रोका।

॥ इक्कीसवां भाग समाप्त ॥

३० वां संस्करण] १९७९ ई० [३२०० प्रति

॥ श्री ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

बाईसवां भाग

पहिला बयान

भूतनाथ की अवस्था ने सभों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इसके बाद इन्द्रदेव ने पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा—

"महाराज, ध्यान देने और विचार करने पर सभों को मालूम होगा कि आज कल आपका दर्बार 'नाट्यशाला' (थियेटर का घर) हो रहा है। नाटक खेल कर जो जो बातें दिखाई जा सकती हैं और जिनके देखने से लोगों को नसीहत मिल सकती है तथा मालूम हो सकता है कि दुनिया में किस दर्जे तक के नेक और बद, दुखिया और सुखिया, गंभीर और छिछोरे इत्यादि पाये जाते हैं, वे सब इस समय (आज कल) आपके यहां प्रत्यक्ष हो रहे हैं। ग्रह-दशा के फेर में जिन्हों ने दुःख भोगा वे भी मौजूद हैं और जिन्हों ने अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी वे भी दिखाई दे रहे हैं, जिन्हों ने अपने किये का फल ईश्वरेच्छा से पा लिया है वे भी आये हुए हैं और जिन्हें अब सजा दी जायगी वे भी गिरफ्तार किये गए हैं। बुद्धिमानों का यह कथन है कि 'जो बुरी राह चलेगा उसे बुरा फल अवश्य मिलेगा' ठीक है, परन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि अच्छी राह चलने वाले तथा नेक लोग भी दुःख के चेहले में फंस जाते हैं और दुर्जन तथा दुष्ट लोग आनन्द के साथ दिन काटते दिखाई देते हैं। इसे लोग ग्रह-दशा के कारण कहते हैं मगर नहीं, इसके सिवाय कोई और बात भी जरूर है। परमात्मा की दी हुई बुद्धि और विचारशक्ति का अनादर करने वाले ही प्रायः संकट में पड़ कर तरह तरह के दुःख भोगते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि इस समय अथवा आजकल आपके

यहां सब तरह के जीव दिखाई देते हैं, दृष्टान्त देने के वदले केवल इशारा करने से काम निकलता है। हां मैं यह कहना तो भूल ही गया कि इन्हीं में ऐसे भी जीव आए हुए हैं जो अपने किए का नहीं वल्कि अपने सम्वन्धियों के किये हुए पापों का फल भोग रहे हैं और इसी से नाते (रिश्ते) और सम्बन्ध का गूढ़ अर्थ भी निकलता है। वेचारी लक्ष्मीदेवी की तरफ देखिये जिसने किसी का कुछ भी नहीं विगाड़ा और फिर भी हद्द दर्जे की तकलीफ उठा कर ताज्जुव है कि जीती वच गई। ऐसा क्यों हुआ? इसके जवाव में मैं तो यही कहूंगा कि राजा गोपालसिंह की वदौलत जो वेईमान दारोगा के हाथ की कठपुतली हो रहे थे और इस बात की कुछ भी खवर नहीं रखते थे कि उनके घर में क्या हो रहा है या उनके कर्मचारियों ने उन्हें कैसे जाल में फंसा रक्खा है। जिस राजा को अपने घर की खवर न होगी वह प्रजा का क्या उपकार कर सकता है, और ऐसा राजा अगर संकट में पड़ जाय तो आश्चर्य ही क्या है! केवल इतना ही नहीं, इनके दुःख भोगने का एक सवव और भी है। बड़ों ने कहा है कि 'स्त्री के आगे अपने भेद की बात प्रकट करना वुद्धिमानों का काम नहीं है' परन्तु राजा गोपालसिंह ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और दुष्टा मायारानी की मुहव्वत में फंस कर तथा अपने भेदों को बता कर वर्वाद हो गये। सज्जन और सरल स्वभाव होने से ही दुनिया का काम नहीं चलता, कुछ नीति का भी अवलम्वन करना ही पड़ता है। इसी तरह महाराज शिवदत्त को देखिये जिसे खुशामदियों ने मिल जुल कर वर्वाद कर दिया। जो लोग खुशामद में पड़ कर अपने को सबसे वड़ा समझ वैठते हैं और दुश्मन को कोई चीज नहीं समझते हैं, उनकी वैसी ही गति होती है जैसी शिवदत्त की हुई। दुष्टों और दुर्जनों की बात जाने दीजिए, उनको तो उनके बुरे कामों का फल मिलना ही चाहिए मिला ही है और मिलेगा ही, उनका जिक्र तो मैं पीछे करूंगा, अभी तो मैं उन लोगों की तरफ इशारा करता हूं जो वास्तव में बुरे नहीं थे मगर नीति पर न चलने तथा बुरी सोहवत में पड़े रहने के कारण संकट में पड़ गये। मैं दावे के साथ कहता हूं कि भूतनाथ ऐसा नेक दयावान और चतुर ऐयार बहुत कम दिखाई देगा, मगर लालच और ऐयाशी के फेर में पड़ कर यह ऐसा वर्वाद हुआ कि दुनिया भर में मुंह छिपाने और अपने को मुर्दा मशहूर करने पर भी इसे सुख की नींद नसीव न हुई। अगर यह मेहनत करके ईमानदारी के साथ दौलत पैदा किया चाहता तो आज इसकी दौलत का अन्दाज करना कठिन होता और अगर ऐयाशी के फेर में न पड़ा होता तो आज नाती पोतों से इसका

घर दूसरों के लिए नजीर गिना जाता। इसने सोचा कि मैं मालदार हूं, होशियार हूं, चालाक हूं और ऐयार हूं, कुलटा स्त्रियों और रण्डियों की सोहबत का मजा लेकर सफाई के साथ अलग हो जाऊंगा, मगर इसे अब मालूम हुआ होगा कि रण्डियां ऐयारों के भी कान काटती हैं। नागर वगैरह के बर्ताव को जब यह याद करता होगा तब इसके कलेजे में चोट सी लगती होगी। मैं इस समय इसकी शिकायत करने पर उतारू नहीं हुआ हूं बल्कि इसके दिल पर से पहाड़ सा बोझ हटा कर उसे हलका किया चाहता हूं, क्योंकि इसे मैं अपना दोस्त समझता था और समझता हूं, हां इधर कई वर्षों से इसका विश्वास अवश्य उठ गया था और मैं इसकी सोहबत पसन्द नहीं करता था, मगर इसमें मेरा कोई कसूर नहीं, किसी की चालचलन जब खराब हो जाती है तब बुद्धिमान लोग उसका विश्वास नहीं करते और शास्त्र की भी ऐसी ही आज्ञा है, अतएव मुझे भी वैसा ही करना पड़ा। यद्यपि मैंने इसे किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचाई परन्तु इसकी दोस्ती को एक दम भूल गया, मुलाकात होने पर उसी तरह बर्ताव करता था जैसा लोग नए मुलाकाती के साथ किया करते हैं। हां अब जब कि यह अपनी चालचलन को सुधार कर आदमी बना है, अपनी भूलों को सोच समझ कर पछता चुका है, एक अच्छे ढंग से नेकी के साथ नामवरी पैदा करता हुआ दुनिया में फिर दिखाई देने लगा है और महाराज भी इसकी योग्यता से प्रसन्न होकर इसके अपराधों को (दुनिया के लिए) क्षमा कर चुके हैं, तब मैंने भी इसके अपराधों को दिल ही दिल में क्षमा कर इसे अपना मित्र समझ लिया है और फिर उसी निगाह से देखने लगा हूं जिस निगाह से पहिले देखता था। परन्तु इतना मैं जरूर कहूंगा कि भूतनाथ ही एक ऐसा आदमी है जो दुनिया में नेकचलनी और बदचलनी के नतीजे को दिखाने के लिए नमूना बन रहा है। आज यह अपने भेदों को प्रकट होते देख डरता है और चाहता है कि हमारे भेद छिपे के छिपे रह जायं मगर यह इसकी भूल है क्योंकि किसी के ऐब छिपे नहीं रहते। सब नहीं तो बहुत कुछ दोनों कुमारों को मालूम ही हो चुके हैं और महाराज भी जान गये हैं. ऐसी अवस्था में इसे अपना किस्सा पूरा पूरा बयान करके दुनिया में एक नजीर छोड़ देना चाहिए और साथ ही इसके (भूतनाथ की तरफ देखते हुए) अपने दिल के बोझ को भी हलका कर देना चाहिए। भूतनाथ, तुम्हारे दो चार भेद ऐसे हैं जिन्हें सुन कर लोगों की आखों खुल जायगी और लोग समझेंगे कि हां आदमी ऐसे ऐसे काम भी कर गुजरते हैं और उनका नतीजा ऐसा होता है, मगर यह तो कुछ तुम्हारे ही ऐसे बुद्धिमान और अनूठे

ऐयार का काम है कि इतना करने पर भी आज तुम भले चंगे ही नहीं दिखाई दे हो बल्कि नेकनामी के साथ महाराज के ऐयार कहलाने की इज्जत पा चुके हो मैं फिर कहता हूं कि किसी बुरी नियत से इन बातों का जिक्र मैं नहीं करता बल्कि तुम्हारे दिल का खुटका दूर करने के साथ ही साथ जिनके नाम से तुम डरते हो उन्हें तुम्हारा दोस्त बनाया चाहता हूं, अस्तु तुम्हें बेखौफ अपना हाल बयान कर देना चाहिये।"

भूत०। ठीक है, मगर क्या करूं, मेरी जुबान नहीं खुलती, मैंने ऐसे ऐसे बुरे काम किये हैं कि जिन्हें याद करके आज मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और आत्म हत्या करने की जी में इच्छा होती है, मगर नहीं, मैं बदनामी के साथ दुनिया से उठ जाना पसन्द नहीं करता अतएव जहां तक हो सकेगा एक दफे नेकनामी अवश्य पैदा करूंगा।

इन्द्र०। नेकनामी पैदा करने का ध्यान जहां तक बना रहे अच्छा ही है परन्तु मैं समझता हूं कि तुम नेकनामी उसी दिन पैदा कर चुके जिस दिन हमारे महाराज ने तुम्हें अपना ऐयार बनाया, इसलिये कि तुमने इधर बहुत ही अच्छे काम किये हैं और वे सब ऐसे थे कि जिन्हें अच्छे से अच्छा ऐयार भी कदाचित न कर सकता था। चाहे तुमने पहिले कैसी ही बुराई और कैसे ही खोटे काम क्यों न किये हों मगर आज हम लोग तुम्हारे देनदार हो रहे हैं, तुम्हारे एहसान के बोझ से दबे हुए हैं, और समझते हैं कि तुम अपने दुष्कर्मों का प्रायश्चित कर चुके हो।

भूत०। आप जो कुछ कहते हैं वह आपका बड़प्पन है परन्तु मैंने जो कुछ कुकर्म किये हैं, मैं समझता हूं कि उनका प्रायश्चित्त ही नहीं है, तथापि अब तो मैं महाराज की सरण में आ ही चुका हूं और महाराज ने भी मेरी बुराइयों पर ध्यान न देकर मुझे अपना दासानुदास स्वीकार कर लिया है इससे मेरी आत्मा सन्तुष्ट है और मैं अपने को दुनिया में मुंह दिखाने योग्य समझने लगा हूं। मैं यह भी समझता हूं कि आप जो कुछ आज्ञा कर रहे हैं यह वास्तव में महराज की आज्ञा है जिसे मैं कदापि उल्लंघन नहीं कर सकता अस्तु मैं अपनी अद्भुत जीवनी सुनाने के लिए तैयार हूं, परन्तु....

इतना कह कर भूतनाथ ने एक लम्बी सांस ली और महाराज सुरेन्द्रसिंह की तरफ देखा।

सुरेन्द्र०। भूतनाथ, यद्यपि हमलोग तुम्हारा कुछ कुछ हाल जान चुके हैं मगर फिर भी तुम्हारा पूरा पूरा हाल तुम्हारे ही मुंह से सुनने की इच्छा रखते

तुम बयान करने में किसी तरह का संकोच न करो। इससे तुम्हारा दिल भी हल्का हो जायगा और दिन रात जो तुम्हें खुटका बना रहता है वह भी जाता रहेगा।

भूत०। जो आज्ञा।

इतना कह कर भूतनाथ ने सलाम किया और अपनी जीवनी इस तरह बयान करने लगा :—

* भूतनाथ की जीवनी *

भूत०। सबके पहिले मैं वही बात कहूंगा जिसे आप लोग नहीं जानते अर्थात् मैं नौगढ़ के रहने वाले और देवीसिंह के सगे चाचा जीवनसिंह का लड़का हूं। मेरी सौतेली मां मुझे देखना पसन्द नहीं करती थी और मैं उसकी आंखों में कांटे की तरह गड़ा करता था। मेरे ही सबब से मेरी मां की इज्जत और कदर थी और उस बांझ को कोई पूछता भी न था अतएव वह मुझे दुनिया से ही उठा देने की फिक्र में लगी और यह बात मेरे पिता को भी मालूम हो गई इसलिए जब कि मैं आठ वर्ष का था मेरे पिता ने मुझे अपने मित्र देवदत्त ब्रह्मचारी के सुपुर्द कर दिया जो तेजसिंह के गुरु* थे और महात्माओं की तरह नौगढ़ की उसी तिलिस्मी खोह में रहा करते थे जिसे राजा बीरेन्द्रसिंहजी ने फतह किया। मैं नहीं जानता कि मेरे पिता ने मेरे विषय में उन्हें क्या समझाया और क्या कहा परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रह्मचारीजी मुझे अपने लड़के की तरह मानते पढ़ाते लिखाते और साथ साथ ऐयारी भी सिखाते थे परन्तु जड़ी बूटियों के प्रभाव से उन्होंने मेरी सूरत में बहुत बड़ा फर्क डाल दिया था जिसमें मुझे कोई पहिचान न ले। मेरे पिता मुझे देखने के लिए बराबर इनके पास आया करते थे।

इतना कह कर भूतनाथ कुछ देर के लिए चुप रह गया और सभों के मुंह की तरफ देखने लगा।

सुरेन्द्र०। (ताज्जुब के साथ) ओफ ओह ! क्या तुम जीवनसिंह के वही लड़के हो जिसके बारे में उन्होंने मशहूर कर दिया था कि उसे जंगल में शेर उठा ले गया !!

भूत०। (हाथ जोड़ कर) जी हां।

तेज०। और आप वही हैं जिसे गुरुजी 'फिरकी' कह के पुकारा करते थे क्योंकि आप एक जगह ज्यादा देर तक बैठते न थे !

भूत०। जी हां।

---

* चन्द्रकान्ता पहिले भाग के छठे बयान में तेजसिंह ने अपने गुरु के बारे में बीरेन्द्रसिंह से कुछ कहा था।

देवी० । यद्यपि मैं बहुत दिनों से आपको भाई की तरह मानने लग गया हूं परन्तु आज यह जान कर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा कि आप वास्तव में मेरे भाई हैं, मगर यह तो बताइए कि ऐसी अवस्था में शेरसिंह आपके भाई क्योंकर हुए ? वह कौन हैं ?

भूत० । वास्तव में शेरसिंह मेरा भाई नहीं है बल्कि गुरुभाई और उन्हीं ब्रह्मचारीजी का लड़का है, मगर हां लड़कपन ही से एक साथ रहने के कारण हम दोनों में भाई की सी मुहब्बत हो गई थी ।

तेज० । आजकल शेरसिंह कहां हैं ।

भूत० । मुझे उनकी कुछ भी खबर नहीं है मगर मेरा दिल गवाही देता है कि अब वे हम लोगों को दिखाई न देंगे ।

बीरेन्द्र० । सो क्यों ?

भूत० । इसीलिए कि वे भी अपने को छिपाये और हम लोगों में मिले जुले रहते और साथ ही इसके ऐबों से खाली न थे ।

सुरेन्द्र० । खैर कोई चिन्ता नहीं, अच्छा तब ?

भूत० । अस्तु मैं उन्हीं ब्रह्मचारीजी के पास रहने लगा । कई वर्ष बीत गये। पिताजी मुझसे मिलने के लिए कभी कभी आया करते थे और जब मैं बड़ा हुआ तो उन्होंने मुझे अपने से जुदा करने का सबब भी बयान किया और वे यह जान कर बहुत प्रसन्न हुए कि मैं ऐयारी के फन में बहुत तेज और होशियार हो गया हूं । उस समय उन्होंने ब्रह्मचारीजी से कहा कि इसे किसी रियासत में नौकर रख देना चाहिए तब इसकी ऐयारी खुलेगी । मुख्तसर यह कि ब्रह्मचारीजी की ही बदौलत मैं गदाधरसिंह के नाम से रणधीरसिंहजी के यहां और शेरसिंह महाराज दिग्विजयसिंह के यहां नौकर हो गये और यह जाहिर किया गया कि शेरसिंह और गदाधरसिंह दोनों भाई हैं, और हम दोनों आपुस में प्रेम भी ऐसा ही रखते थे ।

उन दिनों रणधीरसिंहजी की जमींदारी में तरह के उत्पात मचे हुए थे और बहुत से आदमी उनके जानी दुश्मन हो रहे थे । उनके आपुस वालों को तो इस बात का विश्वास हो गया था कि अब रणधीरसिंहजी की जान किसी तरह नहीं बच सकती क्योंकि उन्हीं दिनों उनका ऐयार श्रीसिंह दुश्मनों के हाथों से मारा जा चुका था और खूनी का कुछ पता नहीं लगता था । कोई दूसरा ऐयार भी उनके पास न था इसलिए वे बड़े ही तरद्दुद में पड़े हुए थे । यद्यपि उन दिनों

उनके यहां नौकरी करना अपनी जान खतरे में डालना था मगर मुझे इन बातों

की कुछ भी परवाह न हुई। रणधीरसिंहजी भी मुझे नौकर रख कर बहुत प्रसन्न हुए। वे मेरी खातिरदारी में कभी किसी तरह की कमी नहीं करते थे। इसका दो सबब था, एक तो उन दिनों उन्हें ऐयार की सख्त जरूरत थी, दूसरे मेरे पिता से और उनसे कुछ मित्रता भी थी जो कुछ दिन के बाद मुझे मालूम हुआ।

रणधीरसिंहजी नें मेरा व्याह भी शीघ्र ही करा दिया। सम्भव है कि इसे भी मैं उनकी कृपा और स्नेह के कारण समझूं, पर यह भी हो सकता है कि मेरे पैर में गृहस्थी की बेड़ी डालने और कहीं भाग जाने लायक न रखने के लिए उन्होंने ऐसा किया हो क्योंकि अकेला और बेफिक्र आदमी कहीं पर जन्म भर रहे और काम करे इसका विश्वास लोगों को कम रहता है। खैर जो कुछ हो मतलब यह है कि उन्होंने मुझे बड़ी इज्जत और प्यार के साथ अपने यहां रक्खा और मैंने भी थोड़े ही दिनों में ऐसे अनूठे काम कर दिखाए कि उन्हें ताज्जुब होता था। सच तो यों है कि उनके दुश्मनों की हिम्मत टूट गई और वे दुश्मनी की आग में आप ही जलने लगे।

कायदे की बात है कि जब आदमी के हाथ से दो चार काम अच्छे निकल जाते हैं और चारो तरफ उसकी तारीफ होने लगती है तब वह अपने काम की तरफ से बेफिक्र हो जाता है। वही हाल मेरा भी हुआ।

आप जानते ही होंगे कि रणधीरसिंहजी का दयाराम नामी एक भतीजा था जिसे वह बहुत प्यार करते थे और वही उनका वारिस होने वाला था। उसके मां बाप लड़कपन ही में मर चुके थे मगर चाचा की मुहब्बत के सबब उसे भी बाप के मरने का दुःख मालूम न हुआ। वह (दयाराम) उम्र में मुझसे कुछ छोटा था मगर मेरे और उसके बीच में हद दर्जे की दोस्ती और मुहब्बत हो गई थी। जब हम दोनों आदमी घर पर मौजूद रहते तो बिना मिले जी नहीं मानता था। दयाराम का उठना बैठना मेरे यहां ज्यादे होता था, अक्सर रात को मेरे यहां खा पीकर सो जाता था और उसके घर वाले भी इसमें किसी तरह का रंज नहीं मानते थे।

जो मकान मुझे रहने के लिए मिला था वह निहायत उम्दा और शानदार था। उसके पीछे की तरफ एक छोटा सा नजरबाग था जो दयाराम के शौक की बदौलत हरदम हरा भरा गुंजान और सुहावना बना रहता था। प्रायः संध्या को समय हम दोनों दोस्त उसी बाग में बैठ कर भंग बूटी छानते और संध्योपासन से निवृत्त हो बहुत रात गये तक गप शप किया करते।

जेठ का महीना था और गर्मी हद दर्जे की पड़ रही थी। पहर रात बीत जाने पर हम दोनों दोस्त उसी नजरबाग में दो चारपाई के ऊपर लेटे हुए आपुस

में धीरे धीरे बातें कर रहे थे। मेरा खूबसूरत और प्यारा कुत्ता मेरे पायताने की तरफ एक पत्थर की चौकी पर बैठा हुआ था। बात करते करते हम दोनों को नींद आ गई।

आधी रात से कुछ ज्यादे बीती होगी जब मेरी आंख कुत्ते के भौंकने की आवाज से खुल गई। मैंने उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और करवट बदल कर फिर आंखें बन्द कर लीं क्योंकि वह कुत्ता मुझसे बहुत दूर और नजरबाग के पिछले हिस्से की तरफ था, मगर कुछ ही देर बाद वह मेरी चारपाई के पास आकर भौंकने लगा और पुनः मेरी आंख खुल गई। मैंने कुत्ते को अपने सामने बेचैनी की हालत में देखा, उस समय वह जुबान निकालते हुए जोर जोर से हांफ रहा और दोनों अगले पैरों से जमीन खोद रहा था।

मैं अपने कुत्ते की आदतों को खूब जानता और समझता था, अस्तु उसकी ऐसी अवस्था देख कर मेरे दिल में खुटका हुआ और मैं घबड़ा कर उठ बैठा। अपने मित्र को भी उठा कर होशियार कर देने की नीयत से मैंने उसकी चारपाई की तरफ देखा मगर चारपाई खाली पाकर मैं बेचैनी के साथ चारो तरफ देखने लगा और उठ कर चारपाई के नीचे खड़े होने के साथ ही मैंने अपने सिरहाने के नीचे से खंजर निकाल लिया। उस समभ मेरा नमकहलाल कुत्ता मेरी धोती पकड़ कर बार बार खैंचने और बाग के पिछले हिस्से की तरफ चलने का इशारा करने लगा और जब मैं उसके इशारे के मुताबिक चला तो वह धोती छोड़ कर आगे आगे दौड़ने लगा। कदम बढ़ाता हुआ मैं उसके पीछे पीछे चला। उस समय मालूम हुआ कि मेरा कुत्ता जख्मी है, उसके पिछले पैर में चोट आई है इसलिये वह पैर उठा कर दौड़ता था। अस्तु कुत्ते के पीछे पीछे चल कर मैं पिछली दीवार के पास जा पहुंचा जहां मालती और मोमियाने की लताओं के सबब घना कुंज और पूरा अन्धकार हो रहा था। कुत्ता उस झुरमुट के पास जाकर रुक गया और मेरी तरफ देख कर दुम हिलाने लगा। उसी समय मैंने झाड़ी में से तीन आदमियों को निकलते हुए देखा जो बाग की दीवार के पास चले गए और फुर्ती से दीवार लांघ कर पर हो गये। उन तीनों में से एक आदमी के हाथ में एक छोटी सी गठरी थी जो दीवार लांघते समय उसके हाथ से छूट कर बाग के भीतर ही गिर पड़ी। निःसन्देह वह गठरी लेने के लिए वह भीतर लौटता मगर उसने मुझे और मेरे कुत्ते को देख लिया था इस लिए उसकी हिम्मत न पड़ी।

गठरी गिरने के साथ ही मैंने वकील बुलाई और खञ्जर हाथ में लिएहुए

उस आदमी का पीछा करना चाहा अर्थात् दीवार की तरफ बढ़ा, मगर कुत्ते ने मेरी धोती पकड़ ली और झाड़ी की तरफ हट कर खैंचने लगा जिससे मैं समझ गया कि इस झाड़ी में भी कोई छिपा हुआ है जिसकी तरफ कुत्ता इशारा कर रहा है। मैं सम्हल कर खड़ा हो गया और गौर के साथ उस झाड़ी को तरफ देखने लगा। उसी समय पत्तों की खड़खड़ाहट ने विश्वास दिला दिया कि इसमें कोई और भी है। मैं इस ख्याल से कि जिस तरह पहिले तीन आदमी दीवार लांघ कर भाग गये हैं उसी तरह इसको भी भाग जाने न दूंगा, घूम कर दीवार की तरफ चला गया। उस समय मैंने देखा कि एक चार डण्डे की सीढ़ी दीवार के साथ लगी हुई है जिसके सहारे वे तीनों निकल गये थे। मैंने वह सीढ़ी उठा कर उस गठरी के ऊपर फेंक दी जो उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ी थी क्योंकि मैं उस गठरी की हिफाजत का भी ख्याल कर रहा था।

सीढ़ी हटाने के साथ ही दो आदमी उस झाड़ी में से निकले और बड़ी बहादुरी के साथ मेरा मुकाबला किया, और मैं भी जी तोड़ कर उनके साथ लड़ने लगा। अन्दाज से मालूम हो गया कि गठरी उठा लेने की तरफ ही उन दोनों का ध्यान विशेष है। आप सुन चुके हैं कि मेरे हाथ में केवल खञ्जर था, मगर उन दोनों के हाथ में लम्बे लम्बे लट्ठ थे और मुकाबला करने में भी वे दोनों कमजोर न थे। अस्तु मुझे अपने बचाव का ज्यादा ख्याल था और मैं तब तक लड़ाई खतम करना नहीं चाहता था जब तक मेरे आदमी न आ जांय जिन्हें जफील देकर मैंने बुलाया था।

आधी घड़ी से ज्यादे देर तक मेरा उनका मुकाबला होता रहा। उसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मालूम हुआ कि मेरे आदमी चले आ रहे हैं। उनकी तरफ देख कर मेरा ध्यान कुछ बटा ही था कि एक आदमी के हाथ का लट्ठ मेरे सिर पर बैठा और मैं चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा।

दूसरा बयान

जब मेरी आंख खुली मैंने अपने को अपने आदमियों से घिरा हुआ पाया। मशालों की रोशनी बखूबी हो रही थी। जांच करने पर मालूम हुआ कि मैं आधी घड़ी से ज्यादे देर तक बेहोश नहीं रहा। जब मैंने दुश्मन के बारे में दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि वे दोनों भी भाग गये मगर मेरे आदमियों के सबब से उस गठरी को न ले जा सके। मैंने अपनी हिम्मत और ताकत पर ख्याल किया तो मालूम हुआ कि मैं उस समय उनका पीछा करने लायक नहीं हूं। आखिर

लाचार हो और पहरे का इन्तजाम करके मैं गठरी लिए हुए अपने कमरे में चला आया मगर अपने मित्र की तरफ से मेरा दिल बड़ा ही बेचैन रहा और तरह तरह के शक पैदा होते रहे।

मेरे कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी। दरवाजा बन्द करके मैंने गठरी खोली और उसके अन्दर की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा।

गठरी में दो जोड़ तो कपड़े निकले जिन्हें मैं पहिचानता न था मगर वे कपड़े पहिरे हुए और खूब मैले थे। कागजों का एक मुट्ठा निकला जिसे देखते ही मैं पहिचान गया कि यह रणधीरसिंहजी के खास सन्दूक के कागज हैं। मोम का एक सांचा कई कपड़ों की तह में लपेटा हुआ निकला जो खास रणधीरसिंहजी की मोहर पर से उठाया गया था। इन चीजों के अतिरिक्त मोतियों की एक माला एक कण्ठा और तीन जड़ाऊ अंगूठियां निकलीं। ये चीजें मेरे मित्र दयारामसिंह की थीं। इन सब चीजों को पहिरे हुए ही आज वे मेरे यहां से गायब हुए थे।

इन सब चीजों को देख कर मैं बड़ी देर तक सोच विचार में पड़ा रहा। उसी समय कमरे का वह दर्वाजा खुला जो जनाने मकान में जाने के लिए था और मेरी स्त्री कमला की मां आती हुई दिखाई पड़ी। उस समय वह एक बच्चे की मां हो चुकी थी और अपने बच्चे को भी गोद में लिए हुए थी। इसमें कोई शक नहीं कि मेरी स्त्री बुद्धिमान थी और छोटे मोटे कामों में मैं उसकी राय भी लिया करता था।

उसकी सूरत देखते ही मैं पहिचान गया कि तरद्दुद और घबराहट ने उसे अपना शिकार बना लिया है अस्तु मैंने उसे बुला कर अपने पास बैठाया और सब हाल कह सुनाया साथ ही इसके यह भी कहा कि मैं इसी समय अपने दोस्त का पता लगाने के लिए जाया चाहता हूं। मगर उसने इस आखिरी बात को कबूल न किया और कहा कि 'मेरी राय में पहिले रणधीरसिंहजी से मिल लेना चाहिये।'

कई बातों को सोच कर मैंने उसकी राय कबूल कर ली और उस गठरी को लेकर रणधीरसिंहजी से मिलने के लिए रवाना हुआ। मुझे इस बात का भी खौफ लगा हुआ था कि रास्ते में कहीं दुश्मनों से मुलाकात न हो जाय जो जरूर इस गठरी को छीन लेने की धुन में लगे हुए होंगे, इसलिये मैंने अपने दो शागिर्दों को भी साथ में ले लिया।

रणधीरसिंहजी बेफिक्र और आराम की नींद सो रहे थे जब मैंने पहुंच कर उन्हें उठाया। जागने के साथ ही वे मुझे देख कर चौंके और बोले, "क्यों

मामला है जो इस समय ऐसे ढंग से यहां आये हो ? दयाराम कुशल से तो है ?"

मेरी सूरत देखते ही उन्होंने दयाराम का कुशल पूछा इससे मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। खैर मैं उनके पास बैठ गया और जो कुछ मामला हुआ था साफ साफ कह सुनाया।

मैं इस किस्से को मुख्तसर ही में बयान करूंगा। रणधीरसिंहजी इस हाल को सुन कर बहुत ही दुःखी और उदास हुए। बहुत कुछ बातचीत करने के बाद अन्त में बोले, "दयाराम मेरा एक ही एक वारिस और तुम्हारा दिली दोस्त है, ऐसी अवस्था में उसके लिए क्या करना चाहिए सो तुम ही सोच लो मैं क्या कहूं। मैं तो समझ चुका था कि दुश्मनों की तरफ से अब निश्चिन्त हुआ मगर नहीं....।"

इतना कह कर वे कपड़े से अपना मुंह ढांप कर रोने लगे। मैं उन्हें बहुत समझा बुझा कर बिदा हुआ और अपने घर चला आया। अपनी स्त्री से मिल कर सब हाल कहने और समझाने बुझाने के बाद मैं अपने शागिर्दों को साथ लेकर घर से बाहर निकला। बस यहीं से मेरी बदकिस्मत का जमाना शुरू हुआ।

इतना कह कर भूतनाथ अटक गया और सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। सब कोई बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे और भूतनाथ की अवस्था से मालूम होता था कि वह इस बात को सोच रहा है कि मैं अपना किस्सा आगे बयान करूं या नहीं। उसी समय दो आदमी और कमरे के अन्दर चले आये और महाराज को सलाम करके खड़े हो गये। इनकी सूरत देखते ही भूतनाथ के चेहरे का रंग उड़ गया और वह डरे हुए ढंग से उन दोनों की तरफ देखने लगा।

दोनों आदमी जो अभी अभी कमरे में आये वे ही थे जिन्होंने भूतनाथ को अपना नाम 'दलीपशाह' बतलाया था। इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वे दोनों भूतनाथ के पास ही बैठ गये।

तीसरा बयान

प्रेमी पाठक भूले न होंगे कि दो आदमियों ने भूतनाथ से अपना नाम दलीपशाह बतलाया जिनमें से एक को पहिला दलीप और दूसरे को दूसरा दलीप समझना चाहिए।

भूतनाथ तो पहिले ही सोच में पड़ गया था कि अपना हाल आगे बयान करे या नहीं, अब दोनों दलीपशाह को देख कर वह और भी घबड़ा गया। ऐयार लोग समझ रहे थे कि अब उसमें बात करने की भी ताकत नहीं रही। उसी समय इन्द्रदेव ने भूतनाथ से कहा, "क्यों भूतनाथ, चुप क्यों हो गये? कहो, हां तब आगे क्या हुआ ?"

इसका जवाब भूतनाथ ने कुछ न दिया और सिर झुका कर जमीन की तरफ देखने लगा। उस समय पहिले दलीपशाह ने हाथ जोड़ कर महाराज की तरफ देखा और कहा, "कृपानाथ, भूतनाथ को अपना हाल बयान करने में बड़ा कष्ट हो रहा है, और वास्तव में बात भी ऐसी ही है। कोई भला आदमी अपनी उन बातों को जिन्हें वह ऐब समझता है अपनी जुबान से अच्छी तरह बयान नहीं कर सकता। अस्तु यदि आज्ञा हो तो मैं इसका हाल पूरा पूरा बयान कर जाऊं क्योंकि मैं भी भूतनाथ का हाल उतना ही जानता हूं जितना स्वयं भूतनाथ। भूतनाथ जहां तक बयान कर चुके हैं उसे मैं बाहर खड़ा खड़ा सुन भी चुका हूं। जब मैंने समझा कि अब भूतनाथ से अपना हाल नहीं कहा जाता तब मैं यह अर्ज करने के लिए हाजिर हुआ हूं। (भूतनाथ की तरफ देख के) मेरे इस कहने से आप यह न समझियेगा कि मैं आपके साथ दुश्मनी कर रहा हूं! नहीं, जो काम आपके सुपुर्द किया गया है उसे आपके बदले में मैं आसानी के साथ कर दिया चाहता हूं।"

इन दोनों आदमियों (दलीपशाह) को महाराज तथा और सभों ने भी ताज्जुब के साथ देखा था मगर यह समझ कर इन्द्रदेव से किसी ने कुछ भी न पूछा कि जो कुछ है थोड़ी देर में मालूम हो ही जायगा, मगर जब दलीपशाह ऊपर लिखी बात बोल कर चुप हो गया तब महाराज ने भेद भरी निगाहों से इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कुमार ने झुक कर धीरे से कुछ कह दिया जिसे वीरेन्द्रसिंह तथा तेजसिंह ने भी सुना तथा इनके जरिए से हमारे और साथियों को भी मालूम हो गया कि कुमार ने क्या कहा।

दलीपशाह की बात सुन कर इन्द्रदेव ने महाराज की तरफ देखा और हाथ जोड़ कर कहा, "इन्होंने (दलीपशाह ने) जो कुछ कहा वास्तव में ठीक है, मेरी समझ में अगर भूतनाथ का किस्सा इन्हीं की जुबानी सुन लिया जाय तो कोई हर्ज नहीं है।" इसके जवाब में महाराज ने मंजूरी के लिए सिर हिला दिया।

इन्द्र०। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों भूतनाथ इसमें तुम्हें किसी तरह का उज्र है?

भूत०। (महाराज की तरफ देख कर और हाथ जोड़ कर) जो महाराज की मर्जी, मुझमें 'नहीं' करने की सामर्थ्य नहीं है। मुझे क्या खबर थी कि कसूर माफ हो जाने पर भी यह दिन देखना नसीब होगा। यद्यपि यह मैं खूब जानता हूं कि मेरा भेद अब किसी से छिपा नहीं रहा परन्तु फिर भी अपनी भूल बार बार कहने या सुनने से लज्जा बढ़ती ही जाती है कम नहीं होती। खैर कोई चिन्ता नहीं,

जैसे होगा वैसे अपने कलेजे को मजबूत करूंगा और दलीपशाह की कही हुई बातें सुनूंगा तथा देखूंगा कि ये महाशय कुछ झूठ का भी प्रयोग करते हैं या नहीं ।

दलीप० । नहीं नहीं भूतनाथ, मैं झूठ कदापि न बोलूंगा इससे तुम बेफिक्र रहो ! (इन्द्रदेव की तरफ देख के) अच्छा तो अब मैं प्रारम्भ करता हूं ।

दलीपशाह ने इस तरह कहना शुरू किया :—

"महाराज, इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐयारी के फन्न में भूतनाथ परले सिरे का ओस्ताद और तेज आदमी है । अगर यह ऐयाशी के दरिया में गोते लगा कर अपने को बरबाद न कर दिए होता तो इसके मुकाबिले का ऐयार आज दुनिया में दिखाई न देता । मेरी सूरत देख के ये चौंकते और डरते हैं और इनका डरना वाजिब ही है मगर अब मैं इनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं कर सकता क्योंकि मैं ऐसा करने के लिए दोनों कुमारों से प्रतिज्ञा कर चुका हूं और इनकी आज्ञा मैं किसी तरह टाल नहीं सकता क्योंकि इन्हीं की बदौलत आज मैं दुनिया की हवा खा रहा हूं । (भूतनाथ की तरफ देख के) भूतनाथ, मैं वास्तव में दलीपशाह हूं, उस दिन तुमने मुझे नहीं पहचाना तो इसमें तुम्हारी आंखों का कोई कसूर नहीं है, कैद की सख्तियों के साथ साथ जमाने की चाल ने मेरी सूरत ही बदल दी है, तुम तो अपने हिसाब से मुझे मार ही चुके थे और तुम्हें मुझसे मिलने की कभी उम्मीद भी न थी मगर सुन लो और देख लो कि ईश्वर की कृपा से मैं अभी तक जीता जागता तुम्हारे सामने खड़ा हूं । यह कुंअर साहब के चरणों का प्रताप है । अगर मैं कैद न हो जाता तो तुमसे बदला लिए बिना कभी न रहता मगर तुम्हारी किस्मत अच्छी थी जो मैं कैद हो गया और छूटा भी तो कुंअर साहब के हाथ से जो तुम्हारे पक्षपाती हैं । तुम्हें इन्द्रदेव से बुरा न मानना चाहिए और यह न सोचना चाहिए कि तुम्हें दुख देने के लिए इन्द्रदेव तुम्हारा पुराना पचड़ा खुलवा रहे हैं ! तुम्हारा किस्सा तो सब को मालूम हो चुका है, इस समय ज्यों का त्यों चुपचाप रह जाने पर तुम्हारे चित्त को शान्ति नहीं मिल सकती और तुम हम लोगों की सूरत देख देख कर दिन रात तरद्दुद में पड़े रहोगे अस्तु तुम्हारे पिछले ऐबों को खोल कर इन्द्रदेव तुम्हारे चित्त को शान्ति दिया चाहते हैं और तुम्हारे दुश्मनों को, जिनके साथ तुम ही ने बुराई की है, तुम्हारा दोस्त बना रहे हैं ! ये यह भी चाहते हैं कि तुम्हारे साथ ही साथ हम लोगों का भेद भी खुल जाय और तुम जान जाओ कि हम लोगों ने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया है क्योंकि अगर ऐसा न होगा तो जरूर तुम हम लोगों को मार डालने की फिक्र में पड़े रहोगे

और हम लोग इस धोखे में रह जायेंगे कि हमने इनका कसूर तो माफ ही कर दिया अब ये हमारे साथ बुराई न करेंगे। (जीतसिंह की तरफ देख कर) अब मैं मतलब की तरफ झुकता हूं और भूतनाथ का किस्सा बयान करता हूं।

जिस जमाने का हाल भूतनाथ बयान कर रहा है अर्थात् जिन दिनों भूतनाथ के मकान से दयाराम गायब हो गए थे उन दिनों यही नागर काशी के बाजार में वेश्या बन कर बैठी हुई अमीरों के लड़कों को चौपट कर रही थी। उसकी बढ़ी चढ़ी खूबसूरती लोगों के लिए जहर हो रही थी और माल के साथ ही विशेष प्राप्ति के लिए यह लोगों की जान पर भी वार करती थी। यही दशा मनोरमा की भी थी परन्तु इसकी बनिस्बत यह बहुत ज्यादा रुपए वाले होने पर भी नागर की सी खूबसूरत न थी हां चालाक जरूर ज्यादे थी। और लोगों की तरह भूतनाथ और दयाराम भी नागर के प्रेमी हो रहे थे। भूतनाथ को अपनी ऐयारी का घमण्ड था और नागर को अपनी चालाकी का। भूतनाथ नागर के दिल पर कब्जा किया चाहता था और नागर इसकी तथा दयाराम की दौलत अपने खजाने में मिलाना चाहती थी।

दयाराम की खोज में घर से शागिर्दों को साथ लिए हुए बाहर निकलते ही भूतनाथ ने काशी का रास्ता लिया और तेजी के साथ सफर तय करता हुआ नागर के मकान पर पहुंचा। नागर ने भूतनाथ की बड़ी खातिरदारी और इज्जत की तथा कुशल मंगल पूछने के बाद यकायक यहां आने का सबब भी पूछा।

भूतनाथ ने अपने आने का ठीक ठीक सबब तो नहीं बताया मगर नागर समझ गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। इसी तरह भूतनाथ को भी इस बात शक पैदा हो गया कि दयाराम की चोरी में नागर का कुछ लगाव जरूर है अथवा यह उन आदमियों को जरूर जानती है जिन्होंने दयाराम के साथ ऐसी दुश्मनी की है।

भूतनाथ का शक काशी ही वालों पर था इसलिए काशी ही में अड्डा बना कर इधर उधर घूमना और दयाराम का पता लगाना आरम्भ किया। जैसे जैसे दिन बीतता था भूतनाथ ने शक भी नागर के ऊपर बढ़ता जाता था। सुनते हैं कि उसी जमाने में भूतनाथ का एक औरत के साथ काशीजी में ही शादी भी कर ली थी जिससे कि नानक पैदा हुआ है क्योंकि इस झमेले में भूतनाथ को बहुत दिनों तक काशी में रहना पड़ा था।

सच है कि कसबखत रण्डियां रुपये के सिवा और किसी की नहीं होतीं। औ

दयाराम कि नागर को चाहता मानता और दिल खोल कर रुपया देता था नागर

उसी के खून की प्यासी हो गई क्योंकि ऐसा करने से उसे विशेष प्राप्ति की आशा थी। भूतनाथ ने यद्यपि अपने दिल का हाल नागर से बयान नहीं किया मगर नागर को विश्वास हो गया कि भूतनाथ को उस पर शक है और यह दयाराम ही की खोज में काशी आया हुआ है, अस्तु नागर ने अपना उचित प्रबन्ध करके काशी छोड़ दी और गुप्त रीति से जमानिया में जा बसी। भूतनाथ भी मिट्टी सूंघता हुआ उसकी खोज में जमानिया जा पहुंचा और एक भाड़े का मकान लेकर वहां रहने लगा।

इस खोज ढूंढ़ में वर्षों वीत गये मगर दयाराम का पता न लगा। भूतनाथ ने अपने मित्र इन्द्रदेव से भी मदद मांगी और इन्द्रदेव ने मदद दी भी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। इन्द्रदेव ही के कहने से मैं उन दिनो भूतनाथ का मददगार बन गया था।

इस किस्से के सम्बन्ध में रणधीरसिंह के रिश्तेदारों की तथा जमानिया गयाजी और राजगृही इत्यादि की भी बहुत सी बातें कही जा सकती हैं परन्तु मैं उन सभों का बयान करना व्यर्थ समझता हूं और केवल भूतनाथ का ही किस्सा चुन चुन कर बयान करता हूं जिससे कि खास मतलब है।

मैं कह चुका हूं कि दयाराम का पता लगाने के काम में उन दिनों मैं भी भूतनाथ का मददगार था, मगर अफसोस! भूतनाथ की किस्मत तो कुछ और ही कराया चाहती थी इसलिए हम लोगों की मेहनत का कोई अच्छा नतीजा न निकला, बल्कि एक दिन जब मिलने के लिये मैं भूतनाथ के डेरे पर गया तो मुलाकात होने के साथ ही भूतनाथ ने आंखें बदल कर मुझसे कहा, "देखो दलीपशाह, मैं तो तुम्हें बहुत अच्छा और नेक समझता था मगर तुम बहुत ही बुरे और दगाबाज निकले। मुझे ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयाराम का भेद तुम्हारे दिल के अन्दर है और तुम हमारे दुश्मनों के मददगार और भेदिए हो तथा खूब जानते हो कि इस समय दयाराम कहां हैं। तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि सीधी तरह उनका (दयाराम का) पता बता दो नहीं तो मैं तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आऊंगा और तुम्हारी मिट्टी पलीद करके छोड़ूंगा।"

महाराज, मैं नहीं कह सकता कि उस समय भूतनाथ की इन वेतुकी बातों को सुन कर मुझे कितना क्रोध चढ़ आया। मैं उसके पास बैठा भी नहीं और न उसकी बात का कुछ जवाब ही दिया, बस चुपचाप पिछले पैर लौटा और मकान के बाहर निकल आया। मेरा घोड़ा बाहर खड़ा था, मैं उस पर सवार होकर सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया। (इन्द्रदेव की तरफ हाथ का इशारा करके)

दूसरे दिन इनके पास पहुंचा और जो कुछ बीती थी इनसे कह सुनाया। इन्हें भी भूतनाथ की बातें बहुत बुरी मालूम हुईं और एक लम्बी सांस लेकर ये मुझसे बोले, "मैं नहीं जानता कि इन दो चार दिनों में भूतनाथ को कौन सी नई बात मालूम हो गई और किस बुनियाद पर उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक किया। खैर कोई चिन्ता नहीं,भूतनाथ अपनी इस बेवकूफी पर अफसोस करेगा और पछतावेगा, तुम इस बात का खयाल न करो और भूतनाथ से मिलना जुलना छोड़ कर दया-राम की खोज में लगे रहो, तुम्हारा अहसान रणधीरसिंह पर और मेरे ऊपर होगा।"

इन्द्रदेव ने बहुत कुछ कह सुन कर मेरा क्रोध शान्त किया और दो दिन तक मुझे अपने यहां मेहमान रक्खा। तीसरे दिन मैं इन्द्रदेव से विदा होने वाला ही था कि इनके एक शागिर्द ने आ कर एक विचित्र खबर सुनाई। उसने कहा कि आज रात को बारह बजे के समय मिर्जापुर के एक जमींदार 'राजसिंह' के यहां दयाराम के होने का पता मुझे लगा है। खुद मेरे भाई ने यह खबर दी है। उसने यह भी कहा है कि आज कल नागर भी उन्हीं के यहां है।

इन्द्र०। (शागिर्द से) वह खुद मेरे पास क्यों नहीं आया ?

शागिर्द०। वह आप ही के पास आ रहा था, मुझसे रास्ते में मुलाकात हुई और उसके पूछने पर मैंने कहा कि दयारामजी का पता लगाने के लिये मैं तैनात किया गया हूं। उसने जवाब दिया कि अब तुम्हारे जाने की कोई जरूरत न रही, मुझे उनका पता लग गया और यही खुशखबरी सुनाने के लिये मैं सरकार के पास जा रहा हूं, मगर अब तुम मिल गये हो तो मेरे जाने की कोई जरूरत नहीं, जो कुछ मैं कहता हूं तुम जाकर उन्हें सुना दो और मदद लेकर बहुत जल्द मेरे पास आओ। मैं फिर उसी जगह जाता हूं, कहीं ऐसा न हो कि दयारामजी वहां से भी निकाल कर किसी दूसरी जगह पहुंचा दिये जांय और हम लोगों को पता न लगे, मैं जा कर इस बात का ध्यान रक्खूंगा। इसके बाद उसने सब कैफियत बयान की और अपने मिलने का पता बताया।

इन्द्र०। ठीक है उसने जो कुछ किया बहुत अच्छा किया, अब उसे मदद पहुंचाने का बन्दोबस्त करना चाहिये।

शागिर्द०। यदि आज्ञा हो तो भूतनाथ को भी इस बात की इत्तिला दे दी जाय।

इन्द्र०। कोई जरूरत नहीं, अब तुम जाकर कुछ आराम करो, तीन घण्टे बाद फिर तुम्हें सफर करना होगा।

इसके बाद इन्द्रदेव का शागिर्द जब अपने डेरे पर चला गया तब मुझसे और

इन्द्रदेव से बातचीत होने लगी। इन्द्रदेव ने मुझसे मदद मांगी और मुझे मिर्जापुर जाने के लिए कहा, मगर मैंने इनकार किया और कहा कि अब मैं न तो भूतनाथ का मुंह देखूंगा और न उसके किसी काम में शरीक होऊंगा। इसके जवाब में इन्द्रदेव ने मुझे पुनः समझाया और कहा कि यह काम भूतनाथ का नहीं है, मैं कह चुका हूं कि इसका अहसान मुझ पर और रणधीरसिहजी पर होगा।

इसी तरह की बहुत सी बातें हुईं, लाचार मुझे इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी और कई घण्टे के बाद इन्द्रदेव के उसी शागिर्द 'शम्भू' को साथ लिए हुए मैं मिर्जापुर की तरफ रवाना हुआ। दूसरे दिन हम लोग मिर्जापुर जा पहुंचे और बताये हुए ठिकाने पर पहुंच कर शम्भू के भाई से मुलाकात की। दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि दयाराम अभी तक मिर्जापुर की सरहद के बाहर नहीं गये हैं, अस्तु जो कुछ हम लोगों को करना था आपुस में तै करने के बाद सूरत बदल कर बाहर निकले।

दयाराम को ढूंढ़ निकालने के लिए हमने कैसी कैसी मेहनत की और हम लोगों को किस किस तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं इसका बयान करना किस्से को व्यर्थ तूल देना और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। महाराज के (आपके) नामी ऐयारों ने जैसे जैसे अनूठे काम किये हैं, उनके सामने हमारी ऐयारी कुछ भी नहीं है अतएव केवल इतना ही कहना काफी है कि हम लोगों ने अपनी हिम्मत से बढ़ कर काम किया और हद दर्जे की तकलीफ उठा कर दयारामजी को ढूंढ़ निकाला। केवल दयाराम को नहीं बल्कि उनके साथ ही साथ 'राजसिंह' को भी गिरफ्तार करके हम लोग अपने ठिकाने पर ले आये, मगर अफसोस! हम लोगों की सब मेहनत पर भूतनाथ ने पानी ही नहीं फेर दिया बल्कि जन्म भर के लिए अपने माथे पर कलंक का टीका भी लगाया।

कैद की सख्ती उठाने के कारण दयारामजी बहुत ही कमजोर और बीमार हो रहे थे, उनमें बात करने की भी ताकत न थी, इसलिये हम लोगों ने उसी समय उन्हें उठा कर इन्द्रदेव के पास ले जाना मुनासिब न समझा और दो तीन दिन तक आराम देने की नीयत से अपने गुप्त स्थान पर जहां हम लोग टिके हुए थे ले गये। जहां तक हो सका नरम बिछावन का इन्तजाम करके उस पर उन्हें लिटा दिया और उनके शरीर में ताकत लाने का बन्दोबस्त करने लगे। इस बात का निश्चय कर लिया कि जब तक इनकी तबीयत ठीक न हो जायगी इनसे कैद में जाने का सबब तक न पूछेंगे।

दयारामजी के आराम का इन्तजाम करने के बाद हम लोगों ने अपने अपने

हर्बे खोल कर उनकी चारपाई के नीचे रख दिये, कपड़े उतारे और बातचीत करने तथा दुश्मनी का सबब जानने के लिए राजसिंह को होश में लाये और उसकी मुश्कें खोल कर बातचीत करने लगे क्योंकि उस समय इस बात का डर हम लोगों को कुछ भी न था कि वह हम पर हमला करेगा या हमलोगों का कुछ बिगाड़ सकेगा।

जिस मकान में हम लोग टिके हुए थे वह बहुत ही एकान्त और उजाड़ मुहल्ले में था। रात का समय था और मकान की तीसरी मंजिल पर हम लोग बैठे हुए थे, एक मद्धिम चिराग आले पर जल रहा था। दयारामजी का पलंग हम लोगों के पीछे की तरफ था और राजसिंह सामने बैठे हुए ताज्जुब के साथ हम लोगों का मुंह देख रहा था। उसी समय यकायक कई दफे धम्माके की आवाज आई और उसके कुछ ही देर बाद भूतनाथ तथा उसके दो साथियों को हम लोगों ने अपने सामने खड़ा देखा। सामना होने के साथ ही भूतनाथ ने मुझसे कहा, "क्यों बे शैतान के बच्चे, आखिर मेरी बात ठीक निकली न! तू ही ने राजसिंह के साथ मेल करके हमारे साथ दुश्मनी पैदा की! खैर ले अपने किए का फल चख!!"

इतना कह कर भूतनाथ ने मेरे ऊपर खन्जर का वार किया जिसे बड़ी फुर्ती के साथ मेरे साथी को रोका। मैं भी उठ कर खड़ा हो गया और भूतनाथ के साथ लड़ाई होने लगी। भूतनाथ ने एक ही हाथ में राजसिंह का काम तमाम कर दिया और थोड़ी ही देर में मुझे भी खूब जख्मी किया यहां तक कि मैं जमीन पर गिर पड़ा और मेरे दोनों साथी भी बेकार हो गये। उस समय दयारामजी को जो पड़े सब तमाशा देख रहे थे जोश चढ़ आया और चारपाई पर से उठ कर खाली हाथ भूतनाथ के सामन आ खड़े हुए, कुछ बोला ही चाहते थे कि भूतनाथ के हाथ का खन्जर उनके कलेजे के पार हो गया और वे बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े।

चौथा बयान

मैं नहीं कह सकता कि भूतनाथ ने ऐसा क्यों किया। भूतनाथ का कौल यही है कि मैंने उनको पहिचाना नहीं, और धोखा हुआ। खैर जो हो, दयाराम के गिरते ही मेरे मुंह से 'हाय' की आवाज निकली और मैंने भूतनाथ से कहा, "कम्बख्त! तैंने बेचारे दयाराम को क्यों मार डाला जिन्हें बड़ी मुश्किल से हम लोगों ने खोज निकाला था!!"

मेरी बात सुनते ही भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। इसके बाद उसके साथी तो न मालूम क्या सोचकर एकदम भाग खड़े हुए, मगर भूतनाथ बड़ी बेचैनी से दयाराम के पास बैठ कर उनका मुंह देखने लगा। उस समय भूतनाथ के

ही देखते उन्होंने आखिरी हिचकी ली और दम तोड़ दिया। भूतनाथ उनकी लाश के साथ चिमट कर रोने लगा और बड़ी देर तक रोता रहा। तब तक हम तीनों आदमी पुनः मुकाबिला करने लायक हो गये और इस बात से हमलोगों का साहस और भी बढ़ गया कि भूतनाथ के दोनों साथी उसे अकेला छोड़कर भाग गये थे। मैंने मुश्किल से भूतनाथ को अलग किया और कहा, "अब रोने और नखरा करने से फायदा ही क्या होगा, उनके साथ ऐसी ही मुहब्बत थी तो उन पर वार न करना था, अब उन्हें मार कर औरतों की तरह नखरा करने बैठे हो?"

इतना सुन कर भूतनाथ ने अपनी आंखें पोछीं और मेरी तरफ देख के कहा, "क्या मैंने जान बूझ कर इन्हें मार डाला है?"

मैं०। बेशक! क्या यहां आने के साथ ही तुमने उन्हें चारपाई पर पड़े हुए नहीं देखा था?

भूत०। देखा था, मगर मैं नहीं जानता था कि ये दयाराम हैं। इतने मोटे ताजे आदमी को यकायक ऐसा दुबला पतला देख कर मैं कैसे पहिचान सकता था?

मैं०। क्या खूब, ऐसे ही तो तुम अन्धे थे? खैर इसका इन्साफ तो रणधीरसिंह के सामने ही होगा, इस समय तुम हमसे फैसला कर लो क्योंकि अभी तक तुम्हारे दिल में लड़ाई का हौसला जरूर बना होगा।

भूत०। (अपने को संभाल कर और मुंह पोछ कर) नहीं नहीं मुझे अब लड़ने का हौसला नहीं है, जिसके वास्ते मैं लड़ता था जब वही नहीं रहा तो अब क्या? मुझे ठीक पता लग चुका था कि दयाराम तुम्हारे फेर में पड़े हुए हैं, और सो अपनी आंखों से देख भी लिया, मगर अफसोस है कि मैंने पहिचाना नहीं और ये इस तरह धोखे में मार गये, लेकिन इसका कसूर भी तुम्हारे ही सिर लग सकता है।

मैं०। खैर अगर तुमहारे किए हो सके तो तुम बिल्कुल कसूर मेरे ही सिर थोप देना, मैं अपनी सफाई आप कर लूंगा, मगर इतना समझ रक्खो कि लाख कोशिश करने पर भी तुम अपने को बचा नहीं सकते क्योंकि मैंने इन्हें खोज निकालने में जो कुछ मेहनत की थी वह इन्द्रदेवजी के कहने से की थी, न तो मैं अपनी प्रशंसा कराना चाहता था और न मैं इनाम ही लेना चाहता था, जरूरत पड़ने पर मैं इन्द्रदेव की गवाही दिला सकता सकता हूं और तुम अपने को बेकसूर साबित करने के लिए नागर को पेश कर देना, जिसके कहने और सिखाने से तुमने मेरे साथ दुश्मनी पैदा कर ली।

इतना सुन कर भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। सिर झुका कर देर तक सोचता

रहा और इसके बाद लम्बी सांस लेकर उसने मेरीतरफ देखा और कहा, "बेश मुझे नागर कम्बख्त ने धोखा दिया ! अब मुझे भी इन्हीं के साथ मर मिटना चाहिए !" इतना कह कर भूतनाथ ने खंजर हाथ में ले लिया मगर कुछ कर न सका अर्थात् अपनी जान न दे सका ।

महाराज, जवांमर्दों का यह कहना बहुत ठीक है कि बहादुरों को अपनी जान प्यारी नहीं होती । वास्तव में जिसे अपनी जान प्यारी होती है वह को हौसले का काम नहीं कर सकता और जो अपनी जान हथेली पर लिए रहता और समझता है कि दुनियां में मरना एक बार ही है कोई बार बार नहीं मरता, वही सब कुछ कर सकता है । भूतनाथ के बहादुर होने में सन्देह नहीं पर इसे अपनी जान प्यारी जरूर थी और इस उल्टी बात का सबब यही था कि ऐयाशी के नशे में चूर था । जो आदमी ऐयाश होता है उसमें ऐयाशी के सबब कई तरह की बुराइयां आ जाती हैं और बुराइयों की बुनियाद जम जाने के कारण ही उसे अपनी जान प्यारी हो जाती है तथा वह कोई भारी काम नहीं कर सकता यही सबब था कि उस समय भूतनाथ जान न दे सका, बल्कि उसकी उसकी हिफाजत करने का ढंग जमाने लगा, नहीं तो उस समय मौका ऐसा ही था, इस जैसी भूल हो गई थी उसका बदला तभी पूरा होता जब यह भी उसी जगह अपनी जान दे देता और उस मकान से तीनों लाशें एक साथ ही निकाली जातीं ।

भूतनाथ ने कुछ देर तक सोचने के बाद मुझसे कहा—"मुझे इस समय अपनी जान भारी हो रही है और मैं मर जाने के लिए तैयार हूं मगर मैं देखता हूं ऐसा करने से भी किसी को फायदा नहीं पहुंचेगा । मैं जिसका नमक खा चुका और खाता हूं उसका और भी नुकसान होगा क्योंकि इस समय वह दुश्मनों से घिरा हुआ है । अगर मैं जीता रहूंगा तो उनके दुश्मनों का नामोनिशान मिटा उन्हें बेफिक्र कर सकूंगा, अतएव मैं मांफी मांगता हूं कि तुम मेहरबानी कर सिर्फ दो साल के लिए जीता छोड़ दो ।"

मैं० । दो वर्ष के लिए क्या जिन्दगी भर के लिए तुम्हें छोड़ देता हूं, तुम मुझसे लड़ना नहीं चाहते तो मैं क्यों तुम्हें मारने लगा ? बाकी रही यह कि तुमने खामखाह मुझसे दुश्मनी पैदा कर ली है सो उसका नतीजा तुम्हें से आप मिल जायगा जब लोगों को यह मालूम होगा कि भूतनाथ के हाथ बेचारा दयाराम मारा गया ।

भूत० । नहीं नहीं, मेरा मतलब तुम्हारी पहिली बात से नहीं है बल्कि

बात से है अर्थात् अगर तुम चाहोगे तो लोगों को इस बात का पता ही नहीं लगेगा कि दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारा गया।

मैं०। यह क्योंकर छिप सकता है?

भूत०। अगर तुम छिपाओ तो सब कुछ छिप जायगा।

मुख्तसर यह कि धीरे धीरे बातों को बढ़ाता हुआ भूतनाथ मेरे पैरों पर गिर पड़ा और बड़ी खुशामद के साथ कहने लगा कि तुम इस मामले को छिपा कर मेरी जान बचा लो। केवल इतना ही नहीं, इसने मुझे हर तरह के सब्जबाग दिखाए और कसमें दे देकर मेरी नाक में दम कर दिया। लालच में तो मैं नहीं पड़ा मगर पिछली मुरौवत के फेर में जरूर पड़ गया और भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर अपने साथियों को साथ लिए हुए मैं उस घर के बाहर निकल गया। भूतनाथ तथा दोनों लाशों को उसी तरह छोड़ दिया, फिर मुझे मालूम नहीं कि भूतनाथ ने उन लाशों के साथ क्या बर्ताव किया।

यहां तक भूतनाथ का हाल कह कर कुछ देर के लिए दलीपशाह चुप हो गया और उसने इस नीयत से भूतनाथ की तरफ देखा कि देखें यह कुछ बोलता है या नहीं। इस समय भूतनाथ की आंखों से आंसू की नदी बह रही थी और वह हिचकियां ले ले कर रो रहा था। बड़ी मुश्किल से भूतनाथ ने अपने दिल को सम्हाला और दुपट्टे से मुंह पोंछ कर कहा, "ठीक है, ठीक है, जो कुछ दलीपशाह ने कहा सब सच है, मगर यह बात मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि मैंने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा। वहां राजसिंह को खुले हुए देख कर मेरा शक यकीन के साथ बदल गया और चारपाई पर पड़े हुए देख कर भी मैंने दयाराम को नहीं पहिचाना, मैंने समझा कि यह भी कोई दलीपशाह का साथी होगा। बेशक दलीपशाह पर मेरा शक मजबूत हो गया था और मैं समझ बैठा था कि जिन लोगों ने दयाराम के साथ दुश्मनी की है दलीपशाह जरूर उनका साथी है। यह शक यहां तक मजबूत हो गया था कि दयाराम के मारे जाने पर भी दलीपशाह की तरफ से मेरा दिल साफ न हुआ बल्कि मैंने समझा कि इसी (दलीपशाह) ने दयाराम को वहां लाकर कैद किया था। जिस नागर पर मुझे शक हुआ था उसी कम्बख्त की जादू भरी बातों में मैं फंस गया और उसी ने मुझे विश्वास दिला दिया कि इसका कर्ता-धर्ता दलीपशाह है। यही सबब है कि इतना हो जाने पर भी मैं दलीपशाह का दुश्मन बना ही रहा। हां दलीपशाह ने एक बात नहीं कही, वह यह है कि इस भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर भी दलीपशाह ने मुझे सूखा नहीं

छोड़ा। इन्होंने कहा कि तुम कागज पर लिख कर माफी मांगो तब मैं तुम्हें मा करके यह भेद छिपाये रखने की कसम खा सकता हूं। लाचार होकर मुझे ऐ करना पड़ा और मैं माफी के लिए चीठी लिख हमेशा के लिए इनके हाथ में फंस गया

दलीप०। बेशक यही बात है,और मैं अगर ऐसा न करता तो थोड़े ही दि बाद भूतनाथ मुझे दोषी ठहरा कर आप सच्चा बन जाता। खैर अब मैं इसके आ का हाल बयान करता हूं जिसमें थोड़ा सा हाल तो ऐसा होगा जो मुझे खास भू नाथ से मालूम हुआ था।

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर बयान शुरू किया—

दलीप०। जैसा कि भूतनाथ कह चुका है बहुत मिन्नत और खुशामद से लाच हो कर मैंने कसूरवार होने और माफी मांगने की चीठी लिखा कर इसे छोड़ दि और इसका ऐब छिपा रखने का वादा करके अपने साथियों को साथ लिए हुए घर से बाहर निकल गया और भूतनाथ की इच्छानुसार दयाराम की लाश और भूतनाथ को उसी मकान में छोड़ दिया। फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हु और इसने दयाराम की लाश के साथ कैसा बर्ताव किया।

वहां से बाहर होकर मैं इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ मगर रास्ते भर सोच जाता था कि अब मुझे क्या करना चाहिए, दयाराम का सच्चा सच्चा हाल इ देव से बयान करना चाहिए या नहीं। आखिर हम लोगों ने निश्चय कर लि कि जब भूतनाथ से वादा कर ही चुके हैं तो इस भेद को इन्द्रदेव से भी छिपा रखना चाहिए।

जब हम लोग इन्द्रदेव के मकान में पहुंचे तो उन्होंने कुशल-मंगल पूछने बाद दयाराम का हाल दरियाफ्त किया जिसके जवाब में मैंने असल मामले तो छिपा रक्खा और बात बना कर यों कह दिया कि जो कुछ मैंने या आ सुना था वह ठीक ही निकला अर्थात् राजसिंह ही ने दयाराम के साथ वह दग़ किया और दयाराम राजसिंह के घर में मौजूद भी थे मगर अफसोस, बेचारे द राम को हम लोग छुड़ा न सके और वे जान से मारे गये!

इन्द्र०। (चौंक कर) हैं! जान से मारे गये!!

मैं०। जी हां और इस बात की खबर भूतनाथ को भी लग चुकी थी। पहिले ही भूतनाथ राजसिंह के उस मकान में जिसमें दयाराम को कैद कर र था पहुंच गया और उसने अपने सामने दयाराम की लाश देखी जिसे कुछ ही पहिले राजसिंह ने मार डाला था अस्तु भूतनाथ ने उसी समय राजसिंह का

काट डाला, सिवाय इसके वह और कर ही क्या सकता था! इसके थोड़ा देर बाद हम लोग भी उस घर में जा पहुंचे और दयाराम तथा राजसिंह की लाश और भूतनाथ को वहां मौजूद पाया। दरियाफ्त करने पर भूतनाथ ने सब हाल बयान किया और अफसोस करते हुए हम लोग वहां से रवाना हुए।

इन्द्र०। अफसोस! बहुत बुरा हुआ! खैर ईश्वर की मर्जी!

मैंने भूतनाथ के ऐब को छिपा कर जो कुछ इन्द्रदेव से कहा भूतनाथ की इच्छानुसार ही कहा था। भूतनाथ ने भी यही बात मशहूर की और इस तरह अपने ऐब को छिपा रक्खा।

यहां तक भूतनाथ का किस्सा कह कर जब दलीपशाह कुछ देर के लिए चुप हो गया तब तेजसिंह ने उससे पूछा, "तुमने तो भला भूतनाथ की बात मान कर उस मामले को छिपा रक्खा मगर शम्भू वगैरह इन्द्रदेव के शागिदों ने अपने मालिक से उस भेद को क्यों छिपाया?"

दलीप०। (एक लम्बी सांस लेकर) खुशामद और रुपया बड़ी चीज है, बस इसी से समझ जाइये और मैं क्या कहूं!

तेज०। ठीक है, अच्छा तब क्या हुआ? भूतनाथ की कथा इतनी ही है या और भी कुछ?

दलीप०। जी अभी भूतनाथ की कथा समाप्त नहीं हुई, अभी मुझे बहुत कुछ कहना बाकी है। और बातों के सिवाय भूतनाथ से एक कसूर ऐसा हुआ है जिसका रंज भूतनाथ को इससे भी ज्यादा होगा।

तेज०। सो क्या?

दलीप०। सो भी मैं अर्ज करता हूं।

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर कहना शुरू किया—

इस मामले को वर्षों बीत गये। मैं भूतनाथ की तरफ से कुछ दिनों तक बेफ़िक्र रहा मगर जब यह मालूम हुआ कि भूतनाथ मेरी तरफ से निश्चिन्त नहीं है बल्कि मुझे इस दुनिया से उठा बेफिक्र हुआ चाहता है तो मैं भी होशियार हो गया और दिन रात अपने बचाव की फिक्र में डूबा रहने लगा। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ, अब मैं वह हाल बयान करूंगा जिसकी तरफ उस दिन मैंने इशारा किया था जब तुम हमें गिरफ्तार करके एक विचित्र पहाड़ी स्थान* में ले गये थे और जिसके विषय में तुमने कहा था कि—'यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवां भाग, बारहवां बयान।

है' इत्यादि। मगर क्या तुम इस समय भी........

भूतनाथ०। (बात काट कर) भला मैं कैसे कह सकता हूं कि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है जिसके साथ ऐसे ऐसे मामले हो चुके हैं, मगर उस दिन मैं तुम्हें धोखा देने के लिए वे शब्द कहे थे क्योंकि मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं था। इस कहने से मेरा यही मतलब था कि अगर तुम दलीपशाह न होगे तो कुछ न कुछ जरूर बात बनाओगे। खैर जो कुछ हुआ सो हुआ मगर क्या तुम वास्तव में उस किस्से को बयान करने वाले हो ?

दलीप०। हां मैं उसे जरूर बयान करूंगा।

भूत०। मगर उसके सुनने से किसी को कुछ फायदा नहीं पहुंच सकता है और न किसी तरह की नसीहत ही हो सकती है। वह तो महज मेरी नादानी और पागलपने की बात थी। जहां तक मैं समझता हूं उसे छोड़ देने से कोई हर्ज नहीं होगा।

दलीप०। नहीं, उसका बयान ज़रूरी जान पड़ता है, क्या तुम नहीं जानते या भूल गये कि उसी किस्से को सुनने के लिए कमला की मां अर्थात् तुम्हारी स्त्री यहां आई हुई है ?

भूत०। ठीक है मगर हाय ! मैं सच्चा बदनसीब हूं जो इतना होने पर भी उन्हीं बातों को....

इन्द्र०। अच्छा अच्छा, जाने दो भूतनाथ ! अगर तुम्हें इस बात का शक है कि 'दलीपशाह बातें बनाकर कहेगा या उसके कहने का ढंग लोगों पर बुरा असर डालेगा' तो मैं दलीपशाह को वह हाल कहने से रोक दूंगा और तुम्हारे ही हाथ की लिखी हुई तुम्हारी अपनी जीवनी पढ़ने के लिए किसी को दूंगा जो इस सन्दूकड़ी में बन्द है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने वही सन्दूकड़ी निकाली जिसकी सूरत देखने ही से भूतनाथ का कलेजा कांपता था।

उस सन्दूकड़ी को देखते ही एक दफे तो भूतनाथ घबड़ाना सा होकर कांपा मगर तुरत ही उसने अपने को सम्हाल लिया और इन्द्रदेव की तरफ देख कर बोला, "हां हां, आप कृपा कर इस सन्दूकड़ी को मेरी तरफ बढ़ाइये क्योंकि यह मेरी चीज है और मैं इसे लेने का हक रखता हूं। यद्यपि कई ऐसे कारण हो गये हैं जिनसे आप कहेंगे कि यह सन्दूकड़ी तुम्हें नहीं दी जायगी मगर फिर भी मैं इसी समय इस पर कब्जा कर सकता हूं क्योंकि देवीसिंहजी मुझसे प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि सन्दूकड़ी बन्द की बन्द तुम्हें दिला दूंगा, अस्तु देवीसिंहजी की प्रति

झूठी नहीं हो सकती।" इतना कह कर भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखा।

देवी०। (महाराज से) निःसन्देह मैं ऐसी प्रतिज्ञा कर चुका हूं।

महा०। अगर ऐसा है तो तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी नहीं हो सकती, मैं आज्ञा देता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खड़े हुए। उन्होंने इन्द्रदेव के सामने से वह सन्दूकड़ी उठा ली और यह कहते हुए भूतनाथ के हाथ में दे दी, "लो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हूं, तुम महाराज को सलाम करो जिन्होंने मेरी और तुम्हारी इज्जत रख ली।"

भूत०। (महाराज को सलाम करके) महाराज की कृपा से अब मैं जी उठा।

तेज०। भूतनाथ, तुम यह निश्चय जानो कि यह सन्दूकड़ी अभी तक खोली नहीं गई है, अगर सहज में खुलने लायक होती तो शायद खुल गई होती।

भूत०। (सन्दूकड़ी अच्छी तरह देख भाल कर) बेशक यह अभी तक खुली नहीं है! मेरे सिवाय कोई दूसरा आदमी इसे विना तोड़े खोल भी नहीं सकता। यह सन्दूकड़ी मेरी बुराइयों से भरी हुई है, या यों कहिये कि यह मेरे भेदों का खजाना है, यद्यपि इसमें के कई भेद खुल चुके हैं खुल रहे हैं और खुलते जायेंगे, तथापि इस समय इसे ज्यों का त्यों बन्द पा कर मैं बराबर महाराज को दुआ देता हुआ यही कहूंगा कि मैं जी उठा, जी उठा, जी उठा। अब मैं खुशी से अपनी जीवनी कहने और सुनने के लिए तैयार हूं और साथ ही इसके यह भी कह देता हूं कि अपनी जीवनी के सम्बन्ध में जो कुछ कहूंगा सच कहूंगा!

इतना कह कर भूतनाथ ने वह सन्दूकड़ी अपने बटुए में रख ली और पुनः हाथ जोड़ कर महाराज से बोला, "महाराज, मैं वादा कर चुका हूं कि अपना हाल सच सच बयान करूंगा, परन्तु मेरा हाल बहुत बड़ा और शोक दुःख तथा भयंकर घटनाओं से भरा हुआ है। मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेवजी, जिन्होंने मेरे अपराधों को क्षमा कर दिया है, कहते हैं कि तेरी जीवनी से लोगों का उपकार होगा और वास्तव में बात भी ठीक ही है अतएव कई कठिनाइयों पर ध्यान देकर मैं विनयपूर्वक महाराज से एक महीने की मोहलत मांगता हूं। इस बीच में अपना पूरा पूरा हाल लिख कर पुस्तक के रूप में महाराज के सामने पेश करूंगा और सम्भव है कि महाराज उसे सुन सुना कर यादगार की तौर पर अपने खजाने में रखने की आज्ञा देंगे! इस एक महीने के बीच में मुझे भी सब बातें याद करके लिख लेने का मौका मिलेगा और मैं अपनी निर्दोष स्त्री तथा उन लोगों से जिन्हें

देखने की भी आशा नहीं थी परन्तु जो बहुत कुछ दुःख भोग कर भी दोनों कुमा की बदौलत इस समय यहां आ गये हैं और जिन्हें मैं अपना दुश्मन समझता मगर अब महाराज की कृपा से जिन्होंने मेरे कसूरों को माफ कर दिया है मि जुल कई बातों का पता भी लगा लूंगा जिससे मेरा किस्सा सिलसिलेवार औ ठीक कायदे से हो जायगा।"

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्द्रदेव राजा गोपालसिंह दोनों कुमारों औ दलीपशाह वगैरह की तरफ देखा और तुरन्त ही मालूम कर लिया कि उसक अर्जी कबूल कर ली जायगी।

महाराज ने कहा, "कोई चिन्ता नहीं, तब तक हम लोग कई जरूरी कामों छुट्टी पा लेंगे।" राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव ने भी इस बात को पसन्द कि और इसके बाद इन्द्रदेव ने दलीपशाह की तरफ देख कर पूछा, "क्यों दलीपशा इसमें तुम लोगों को तो कोई उज्र नहीं है?"

दलीप०। (हाथ जोड़ कर) कुछ भी नहीं, क्योंकि अब महाराज की आज्ञा नुसार हम लोगों को भूतनाथ से किसी तरह की दुश्मनी भी नहीं रही और न य उम्मीद है कि भूतनाथ हमारे साथ किसी तरह की खुटाई करेगा, परन्तु मैं इत जरूर कहूंगा कि हम लोगों का किस्सा भी महाराज के सुनने लायक है और ह लोग भूतनाथ के बाद अपना किस्सा भी सुनाया चाहते हैं।

महाराज०। निःसन्देह तुम लोगों का किस्सा भी सुनने योग्य होगा और ह लोग उसके सुनने की अभिलाषा रखते हैं। यदि सम्भव हुआ तो पहिले तुम्हीं लो का किस्सा सुनने में आवेगा। मगर सुनो दलीपशाह, यद्यपि भूतनाथ से बड़ी ब बुराइयां हो चुकी हैं और भूतनाथ तुम लोगों का भी कसूरवार है परन्तु इधर ह लोगों के साथ भूतनाथ ने जो कुछ किया है उसके लिए हम लोग इसके अहसा मन्द हैं और इसे अपना हितू समझते हैं।

इन्द्र०। बेशक बेशक!

गोपाल०। जरूर हम लोग इसके अहसान के बोझ से दबे हुए हैं!

दलीप०। मैं भी ऐसा ही समझता हूं क्योंकि भूतनाथ ने इधर जो जो अ काम किए हैं उनका हाल कुंअर साहब की जुबानी हम लोग सुन चुके हैं। ख्याल से तथा कुंअर साहब की आज्ञा से हम लोगों ने सच्चे दिल से भूतनाथ अपराध क्षमा ही नहीं कर दिया बल्कि कुंअर साहब के सामने इस बात की प्रति भी कर चुके हैं कि भूतनाथ को दुश्मनी की निगाह से कभी न देखेंगे।

महाराज० । बेशक ऐसा ही होना चाहिए,अस्तु बहुत सी बातों को सोच कर और इसकी कारगुजारी पर ध्यान देकर हमने इसका कसूर माफ करके इसे अपना ऐयार बना लिया है, आशा है कि तुम लोग भी इसे अपनायत की निगाह से देखोगे और पिछली बातों को बिल्कुल भूल जाओगे ।

दलीप० । महाराज अपनी आज्ञा के विरुद्ध चलते हुए हम लोगों को कदापि न देखेंगे यह हमारी प्रतिज्ञा है ।

महाराज० । (अर्जुनसिंह तथा दलीपशाह के दूसरे साथी की तरफ देख कर) तुम लोगों की जुबान से भी हम ऐसा ही सुना चाहते हैं ।

दलीप का साथी० । मेरी भी यही प्रतिज्ञा है और ईश्वर से प्रार्थना है कि मेरे दिल में दुश्मनी के बदले दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने वाली भूतनाथ की मुहब्बत पैदा करे ।

महाराज० । शाबाश ! शाबाश !!

अर्जुन० । कुंअर साहब के सामने मैं जो कुछ प्रतिज्ञा कर चुका हूं उसे महाराज सुन चुके होंगे, इस समय महाराज के सामने भी शपथ खा कर कहता हूं कि स्वप्न में भी भूतनाथ के साथ दुश्मनी का ध्यान आने पर मैं अपने को दोषी समझूंगा।

इतना कह कर अर्जुनसिंह ने वह तस्वीर जो उसके हाथ में थी फाड़ डाली और टुकड़े टुकड़े करके भूतनाथ के आगे फेंक दी और पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा, "यदि आज्ञा हो और बेअदबी न समझा जाय तो हम लोग इसी समय भूतनाथ से गले मिल कर अपने उदास दिल को प्रसन्न कर लें ।"

महाराज० । यह तो हम स्वयम् कहने वाले थे ।

इतना सुनते ही दोनों दलीप अर्जुन और भूतनाथ आपुस में गले गले मिले और इसके बाद महाराज का इशारा पाकर एक साथ बैठ गये ।

भूत०।(दूसरे दलीप और अर्जुनसिंह की तरफ देखकर) अब कृपा करके मेरे दिल का खुटका मिटाओ और साफ साफ बता दो कि तुम दोनों में से असल में अर्जुनसिंह कौन है ? जब मैं दलीपशाह को बेहोश करके उस घाटी में ले गया था* तब तुम दोनों में से कौन महाशय वहां पहुंच कर दूसरे दलीपशाह बनने को तैयार हुए थे ?

दूसरा दलीप० । (हंस कर) उस दिन मैं ही तुम्हारे पास पहुंचा था । इत्तिफाक से उस दिन मैं अर्जुनसिंह की सूरत बन कर बाहर घूम रहा था और जब तुम दलीपशाह को धोखा देकर चले तब मैंने छिप कर पीछा किया था । आज

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवां भाग, तेरहवां बयान ।

केवल धोखा देने के लिए ही अर्जुनसिंह के रहते में अर्जुनसिंह बन कर दलीपशा
के साथ यहां आया हूं।

इतना कह कर दूसरे दलीप ने पास से गीला गमछा उठाया और अपने चे
का रंग पोंछ डाला जो उसने थोड़ी देर के लिए बनाया या लगाया था।

चेहरा साफ होते ही उसकी सूरत ने राजा गोपालसिंह को चौंका दिया औ
वह यह कहते हुए उसके पास चले गये कि 'क्या आप भरतसिंह ही हैं जिनके वि
में इन्द्रजीतसिंह ने हमें नकाबपोश बन कर इत्तिला दी थी' ?‡ और इसके जव
में "जी, हां" सुन कर वे भरतसिंह के गले से चिमट गये। इसके बाद उनका ह
थामे हुए गोपालसिंह अपनी जगह पर चले आये और भरथसिंह को अपने प
बैठा कर महाराज से बोले, "इनके मिलने की मुझे हद से ज्यादे खुशी हुई, क
देर से मैं चाहता था कि इनके विषय में से कुछ पूछूं!"

महाराज०। मालूम होता है इन्हें भी दारोगा ही ने अपना शिकार बनाया थ

भरत०। जी हां, आज्ञा होने पर मैं अपना हाल बयान करूंगा।

इन्द्रजीत०। (महाराज से) तिलिस्म के अन्दर मुझे पांच कैदी मिले थे जि
से तीन तो यही अर्जुनसिंह भरतसिंह और दलीपशाह हैं, इसके अतिरिक्त दो औ
हैं जो यहां बुलाये नहीं गये। दारोगा मायारानी तथा उनके पक्ष वालों के सम्ब
में इन पांचों ही का किस्सा सुनने योग्य है। जब कैदियों का मुकदमा होगा तब
देखियेगा कि इन लोगों की सूरत देख कर कैदियों की क्या हालत होती है।

महाराज०। वे दोनों कहां हैं।

इन्द्रजीत०। इस समय यहां मौजूद नहीं हैं, छुट्टी लेकर अपने घर की अव
देखने गये हैं, दो चार दिन में आ जायेंगे।

भूत०। (इन्द्रदेव से) यदि आज्ञा हो तो मैं भी कुछ पूछूं?

इन्द्रदेव०। आप जो कुछ पूछेंगे उसे मैं खूब जानता हूं मगर खैर पूछिये।

भूत०। कमला की मां आप लोगों को कहां से और क्योंकर मिली?

इन्द्रदेव०। यह तो उसी की जुबानी सुनने में ठीक होगा। जब वह अ
किस्सा बयान करेगी कोई बात छिपी न रह जायगी।

भूत०। और नानक की मां तथा देवीसिंहजी की स्त्री के विषय में कब मा
होगा?

इन्द्रदेव०। वह भी उसी समय मालूम हो जायगा। मगर भूतनाथ, (मुस्

‡ देखिये बीसवें भाग के आठवें बयान में कुमार की चीठी।

कर) तुमने और देवीसिंह ने नकावपोशों का पीछा करके व्यर्थ यह खुटका और तरद्दुद खरीद लिया। यदि उनका पीछा न करते और पीछे से तुम दोनों को मालूम होता कि तुम्हारी स्त्रियां भी इस काम में शरीक हुई थीं तो तुम दोनों को एक प्रकार की प्रसन्नता होती। प्रसन्नता तो अब भी होगी मगर खुटके और तरद्दुद से कुछ खून सुखा लेने के बाद !

इतना कह कर इन्द्रदेव हंस पड़े और इसके बाद सभी के चेहरों पर मुस्कुराहट दिखाई देने लगी।

तेज०। (मुस्कुराते हुए देवीसिंह से) अब तो आपको भी मालूम हो ही गया होगा कि आपका लड़का तारासिंह कई विचित्र भेदों को आपसे क्यों छिपाता था ?

देवी०। जी हां सब कुछ मालूम हो गया। जब अपने को प्रकट करने के पहिलेही दोनों कुमारों ने भैरो और तारा को अपना साथी बना लिया तो हमलोग जहां तक आश्चर्य में डाले जाते थोड़ा था !

देवीसिंह की बात सुन कर पुनः सभी ने मुस्कुरा दिया और अब दर्बार का रंग ढंग ही कुछ दूसरा हो गया अर्थात् तरद्दुद के बदले सभों के चेहरे पर हंसी और मुस्कुराहट दिखाई देने लगी।

तेज०। (भूतनाथ से) भूतनाथ, आज तुम्हारे लिए बड़ी खुशी का दिन है क्योंकि और बातों के अतिरिक्त तुम्हारी नेक और सती स्त्री भी तुम्हें मिल गई जिसे तुम मरी समझते थे और हरनामसिंह तुम्हारा लड़का भी तुम्हारे पास बैठा हुआ दिखाई देता है जो बहुत दिनों से गायब था और जिसके लिए बेचारी कमला बहुत परेशान थी, जब वह हरनामसिंह का हाल सुनेगी तो बहुत ही प्रसन्न होगी।

भूत०। निःसन्देह ऐसा ही है, परन्तु मैं हरनामसिंह के सामने भी एक सन्दूकड़ी देख कर डर रहा हूं कि कहीं यह भी मेरे लिए कोई दुखदाई सामान न लेकर आया हो !

इन्द्रदेव०। (हंस कर) भूतनाथ, अब तुम अपने दिल को व्यर्थ के खुटकों में न डालो, जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम पूरे तौर पर महाराज के ऐयार हो गये, किसी की मजाल नहीं कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ दे सके और महाराज भी तुम्हारे बारे में किसी तरह की शिकायत नहीं सुना चाहते। हरनामसिंह तो तुम्हारा लड़का ही है, वह तुम्हारे साथ बुराई क्यों करने लगा !

इसी समय महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जीतसिंह की तरफ देख कर कुछ इशारा किया और जीतसिंह ने इन्द्रदेव से कहा, "भूतनाथ का मामला तो अब तै हो गया,

इसके बारे में महाराज किसी तरह की शिकायत सुना नहीं चाहते, इसके अतिरि भूतनाथ ने वादा किया है कि अपनी जीवनी लिख कर महाराज के सामने पे करेगा। अस्तु अब रह गये दलीपशाह अर्जुनसिंह और भरतसिंह तथा कमला मां। इन सभों पर जो कुछ मुसीबतें गुजरी हैं उसे महाराज सुना चाहते हैं पर अभी नहीं क्योंकि विलम्ब बहुत हो गया, अब महाराज आराम करेंगे, अस्तु अ दर्बार बर्खास्त करना चाहिए जिसमें लोग भी आपुस में मिल जुल कर अपने दि की कुलफत निकाल लें क्योंकि अब यहां तो किसी से मिलने में अथवा आपुस बर्ताव करने में परहेज न होना चाहिए।"

इन्द्र०। (हाथ जोड़ कर) जो आज्ञा !

दर्बार बर्खास्त हुआ। इन्द्रदेव की इच्छानुसार महाराज आराम करने के लि जीतसिंह को साथ लिए एक दूसरे कमरे में चले गये। इसके बाद और सब को उठे और अपने अपने ठिकाने पर जैसा कि इन्द्रदेव ने इन्तजाम कर दिया था च गये, मगर कई आदमी जो आराम नहीं किया चाहते थे बंगले के बाहर निक कर बागीचों की तरफ रवाना हुए।

पांचवां बयान

एक सुन्दर पांवों वाली मसहरी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह लेटे हुए हैं। ऐयारों के सिरताज जीतसिंह उसी मसहरी के पास फर्श पर बैठे तथा दाहिने हाथ से मसहरी पर ढासना लगाये धीरे धीरे बातें कर रहे हैं।

महा०। इन्द्रदेव का स्थान बहुत ही सुन्दर और रमणीक है, यहां से जाने का जी नहीं चाहता।

जीत०। ठीक है, इस स्थान की तरह इन्द्रदेव का बर्ताव भी चित्त को प्रसन्न करता है, परन्तु मेरी राय यही है कि जहां तक जल्द हो यहां से लौट चलना चाहि

महा०। हम भी यही सोचते हैं। इन लोगों की जीवनी और आश्चर्य भरी कहानी तो वर्षों तक सुनते ही रहेंगे परन्तु इन्द्रजीत और आनन्द की शादी जहां तक जल्द हो सके कर देना चाहिए जिसमें और किसी तरह के विघ्न पड़ने का फिर डर न रहे।

जीत०। जरूर ऐसा होना चाहिए, इसीलिये मैं चाहता हूं कि यहां से जल्द चलिए। भरतसिंह वगैरह की कहानी वहां ही सुन लेंगे या शादी के बाद औरों लोगों को भी यहां ले आवेंगे जिसमें वे लोग भी तिलिस्म और इस स्थान का आनन्द ले लें।

महा०। अच्छी बात है, खैर यह बताओ कि कमलिनी और लाडिली के विषय में भी तुमने कुछ सोचा।

जीत०। उन दोनों के लिए जो कुछ आप विचार रहे हैं वही मेरी भी राय है, उनकी भी शादी दोनों कुमारों के साथ कर ही देना चाहिए।

महा०। है न यही राय ?

जीत०। जी हां,मगर किशोरी और कामिनी की शादी के बाद क्योंकि किशोरी एक राजा की लड़की है इसलिए उसी की औलाद को गद्दी का हकदार होना चाहिए, यदि कमलिनी के साथ पहिले शादी हो जायगी तो उसी का लड़का गद्दी का मालिक समझा जायगा, इसी से मैं चाहता हूं कि पटरानी किशोरी ही बनाई जाय।

महा०। यह बात तो ठीक है, अस्तु ऐसा ही होगा और साथ ही इसके कमला की शादी भैरो के साथ और इन्दिरा की तारा के साथ कर दी जायगी।

जीत०। जो मर्जी।

महाराज०। अच्छा तो अब यही निश्चय रहा कि दलीपशाह और भरतसिंह की बीती यहां से चलने के बाद घर ही पर सुनना चाहिए।

जीत०। जी हां, सच तो यों है कि ऐसा करना ही पड़ेगा क्योंकि इन लोगों की कहानी दारोगा और जयपाल इत्यादि कैदियों से घना सम्बन्ध रखती है बल्कि यों कहना चाहिए इन्हीं लोगों के इजहार पर उन लोगों के मुकदमे का दारोमदार (हेस नेस) है और यही लोग उन कैदियों को लाजवाब करेंगे।

महा०। निःसन्देह ऐसा ही है, इसके अतिरिक्त उन कैदियों ने हम लोगों तथा हमारे सहायकों को बड़ा दुःख दिया है और दोनों कुमारों की शादी में भी बड़े बड़े विघ्न डाले हैं अतएव उन कम्बख्तों को कुमारों की शादी का जल्सा भी दिखा देना चाहिए जिसमें ये लोग भी अपनी आंखों से देख लें कि जिन बातों को वे बिगाड़ा चाहते थे वे आज कैसी खूबी और खुशी के साथ हो रही हैं, इसके बाद उन लोगों को सजा देना चाहिए। मगर अफसोस तो यह है कि मायारानी और माधवी जमानिया ही में मार डाली गईं नहीं तो वे भी दोनों भी देख लेतीं कि........

जीत०। खैर उनकी किस्मत में यही बदा था।

महा०। अच्छा तो एक बात का और खयाल रखना चाहिए।

जीत०। आज्ञा ?

महा०। भूतनाथ वगैरह को मौका देना चाहिए कि वे अपने सम्बन्धियों से

बखूबी मिल जुल कर अपने दिल का खुटका निकाल लें क्यों कि हम लोग उनका हाल वहां चल कर ही सुनेंगे।

जीत०। बहुत खूब।

इतना कह कर जीतसिंह उठ खड़े हुए और कमरे से बाहर चले गये।

छठवां बयान

इन्द्रदेव के इस स्वर्ग-तुल्य स्थान में बंगले से कुछ दूर हट कर बगीचे के दक्खिन तरफ एक घना जामुन का पेड़ है जिसे सुन्दर लताओं ने घेर कर देखने योग्य बना रक्खा है और जहां एक कुंज की सी छटा दिखाई पड़ती है। उसी के नीचे साफ पानी का एक चश्मा भी बह रहा है। अपनी सुरीली बोली से लोगों के दिल लुभा लेने वाली चिड़ियाएं संध्या का समय निकट जान अपने घोसलों के चारो तरफ फुदक-फुदक कर अपने अपौरुष बच्चों को चैतन्य करती हुई कह रही हैं कि लो! बहुत दूर से तुम लोगों के लिये दाना पानी अपने पेट में भर लाई हूं जिससे तुम्हारी सन्तुष्टि की जायगी।

यह रमणीक स्थान ऐसा है कि यहां दो चार आदमी छिप कर इस तरह बैठ सकते हैं कि वे चारो तरफ के आदमियों को बखूबी देख लें पर उन्हें कोई भी न देखे। इस स्थान पर हम इस समय भूतनाथ और उसकी पहिली स्त्री, कमला की मां को पत्थर की चट्टानों पर बैठे बातें करते हुए देख रहे हैं। ये दोनों मुद्दत के बिछुड़े हुए हैं और दोनों के दिल में नहीं तो कमला की मां के दिल में जरूर शिकायतों का खजाना भरा हुआ है जिसे वह इस समय बेतरह उगलने के लिए तैयार है। प्यारे पाठक, आइये हम आप मिल कर जरा इन दोनों की बातें तो सुन लें।

भूत०। शान्ता,* आज तुमसे मिल कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

शान्ता०। क्यों? जो चीज किसी कारणवश खो जाती है उसे यकायक पाने से प्रसन्नता हो सकती है, मगर जो चीज जान बूझ कर फेंक दी जाती है उसके पाने की प्रसन्नता कैसी?

भूत०। किसी को कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा मिल जाय और वह उसे बेकार या बदसूरत समझ कर फेंक दे, तथा कुछ समय के बाद जब उसे यह मालूम हो कि वास्तव में वह हीरा था पत्थर नहीं, तो क्या उसके फेंक देने का उसको दुःख न होगा? या उसे पुनः पाकर प्रसन्नता न होगी?

* शान्ता कमला की मां का नाम था।

शान्ता० । अगर वह आदमी जिसने हीरे को पत्थर समझ कर फेंक दिया है, यह जान कर कि वह वास्तव में हीरा था उसकी खोज करे, या इस विचार से कि उसे मैंने फलानी जगह छोड़ा या फेंका है वहां जाने से जरूर मिल जायगा उसकी तरफ दौड़ जाय, तो बेशक समझा जायगा कि उसे उसके फेंक देने का रंज हुआ था और उसके मिल जाने से प्रसन्नता होगी, लेकिन यदि ऐसा नहीं है तो नहीं।

भूत० । ठीक है, मगर वह आदमी उस जगह जहां उसने हीरे को पत्थर समझ कर फेंका था पुनः उसे पाने की आशा में तभी जायगा जब अपना जाना सार्थक समझेगा । परन्तु जब उसे यह निश्चय हो जायगा कि वहां जाने से उस हीरे के साथ तू भी बर्वाद हो जायगा अर्थात् वह हीरा भी काम का न रहेगा और तेरी भी जान जाती रहेगी तब वह उसकी खोज में क्योंकर जायगा ?

शान्ता० । ऐसी अवस्था में वह अपने को इस योग्य बनावेहीगा नहीं कि वह उस हीरे की खोज में जाने लायक न रहे यदि यह बात उसके हाथ में होगी और वह उस हीरे को वास्तव में हीरा समझता होगा ।

भूतनाथ० । बेशक, मगर शिकायत की जगह तो ऐसी अवस्था में हो सकती थी जब वह अपने विगड़े हुए कंटीले रास्ते को जिसके सबब से वह उस हीरे तक नहीं पहुंच सकता था पुनः सुधारने और साफ करने के लिए परले सिरे का उद्योग करता हुआ दिखाई न देता ।

शान्ता० । ठीक है, लेकिन जब वह हीरा यह देख रहा है कि उसका अधिकारी या मालिक बिगड़ी हुई अवस्था में भी एक मानिक के टुकड़े को कलेजे से लगाए हुए घूम रहा है और यदि वह चाहता तो उस हीरे को भी उसी तरह रख सकता था मगर अफसोस उस हीरे की तरफ जो वास्तव में पत्थर ही समझा गया है कोई भी ध्यान नहीं देता जो बे-हाथ पैर का हो कर भी उसी मालिक की खोज में जगह जगह की मिट्टी छानता फिर रहा है जिसने जान बूझ कर उसे पैर में गड़ने वाले कंकड़ की तरह अपने आगे से उठा कर फेंक दिया है और जानता है कि उस पत्थर के साथ जिसे वह व्यर्थ ही में हीरा कह रहा है वास्तव में छोटी छोटी हीरे की कनियां भी चिपकी हुई हैं जो छोटी होने के कारण सहज ही मिट्टी में मिल जा सकती हैं, तब क्या शिकायत की जगह नहीं है !!

भूत० । परन्तु अदृष्ट भी कोई वस्तु है, प्रारब्ध भी कुछ कहा जाता है, और होनहार भी किसी चीज का नाम है ?

शान्ता० । यह दूसरी बात है, इन सभों का नाम लेना वास्तव में निरुत्तर

(लाजवाब) होना और चलती बहस को जान बूझ कर बन्द कर देना ही नहीं बल्कि उद्योग ऐसे अनमोल पदार्थकी तरफ से मुंह फेर लेना भी है ! अस्तु जाने दीजि मेरी यह इच्छा भी नहीं है कि आपको परास्त करने की अभिलाषा से मैं कि करती ही जाऊं, यह तो बात ही बात में कुछ कहने का मौका मिल गया और ह पर पत्थर रख कर जी का उबाल निकाल लिया, नहीं तो जरूरत ही क्या थी

भूतनाथ० । मैं कसूरवार हूं और बेशक कसूरवार हूं मगर यह उम्मीद भी न थी कि ईश्वर की कृपा से तुम्हें इस तरह जीती इस दुनिया में देखूंगा ।

शान्ता० । अगर यही आशा या अभिलाषा होती तो अपने परलोकगामी की खबर मुझ अभागी के कानों तक पहुंचाने की कोशिश क्यों करते और....

भूत० । बस बस, अब मुझ पर दया करो और इस ढंग की बातें छोड़ क्योंकि आज बड़े भाग्य से मेरे लिए यह खुशी का दिन नसीब हुआ है । इसे जटी बातें सुना कर पुनः कड़वा न करो और यह सुनाओ कि तुम इतने दिनों कहां छिपी हुई थीं और अपनी लड़की कमला को किस तरह धोखा दे कर गईं कि आज तक वह तुमको मरी हुई ही समझती है ?

इस समय शान्ता का खूबसूरत चेहरा नकाब से ढका हुआ नहीं है । य वह जमाने के हाथों सताई हुई तथा दुबली पतली और उदास है और उसका त बदन पीला पड़ गया है मगर फिर भी आज की खुशी उसके सुन्दर बादामी पर रौनक पैदा कर रही है और इस बात की इजाजत नहीं देती कि कोई ज्यादे उम्र वाली कह कर खूबसूरतों की पंक्ति में बैठने से रोके । हजार गई होने पर भी वह रामदेई (भूतनाथ की दूसरी स्त्री) से बहुत अच्छी मालूम है और इस बात को भूतनाथ भी बड़े गौर से देख रहा है । भूतनाथ की बात सुन कर शान्ता ने अपनी डबडबाई हुई बड़ी बड़ी आंखों को आंचल से किया और एक लम्बी सांस ले कर कहा—

शान्ता० । मैं रणधीरसिंहजी के यहां से कभी न भागती अगर अपन किसी को दिखाने लायक समझती । मगर अफसोस आपके भाई ने इस बा अच्छी तरह मशहूर किया कि आपके दुश्मन (अर्थात् आप) इस दुनिया से उ इसके सबूत में उन्होंने बहुत सी बातें पेश कीं, मगर मुझे विश्वास न हुआ इस गम में मैं बीमार हो गई और दिन दिन मेरी बीमारी बढ़ती ही गई । जमाने में मेरी मौसेरी बहिन अर्थात् दलीपशाह की स्त्री मुझे देखने घर आई । मैंने अपने दिल का हाल और बीमारी का सबब उससे बयान

और यह भी कहा कि जिस तरह मेरे पति ने सही सलामत रह कर भी अपने को मरा हुआ मशहूर किया उसी तरह मुझे तुम कहीं छिपा कर मरा हुआ मशहूर कर दो। अगर ऐसा हो जायगा तो मैं अपने पति को ढूंढ़ निकालने का उद्योग करूंगी। उन्होंने मेरी बात पसन्द कर ली और लोगों को यह कह कर कि मेरे यहां की आबोहवा अच्छी है वहां शान्ता को बहुत जल्द आराम हो जायगा, मुझे अपने यहां उठा ले जाने का बन्दोबस्त किया और रणधीरसिंहजी से इजाजत भी ले ली। मैं दो दिन तक अपनी लड़की कमला को नसीहत करती रही और इसके बाद उसे किशोरी के हवाले करके और अपने छोटे दूध पीते बच्चे को गोद में लेकर दलीपशाह के घर चली आई और धीरे धीरे आराम होने लगी। थोड़े ही दिन बाद दलीपशाह के घर में उस भयानक आधी रात के समय आपका आना हुआ, मगर हाय, उस समय आपकी अवस्था पागलों की सी हो रही थी और आपने धोखे में पड़ कर अपने प्यारे लड़के का जिसे मैं अपने साथ ले गई थी खून कर डाला*।

इतना कहते कहते शान्ता का जी भर आया और वह हिचकियां ले ले कर रोने लगी। भूतनाथ की बुरी अवस्था हो रही थी और इससे ज्यादे वह उस घटना का हाल नहीं सुनना चाहता था। वह यह कहता हुआ कि 'बस माफ करो, अब इसका जिक्र न करो।' अपनी स्त्री शान्ता के पैरों पर गिरा ही चाहता था कि उसने पैर खैंच कर भूतनाथ का सिर थाम लिया और कहा—"हां हां, क्या करते हो? क्यों मेरे सिर पर पाप चढ़ाते हो? मैं खूब जानती हूं कि आपने उसे नहीं पहिचाना मगर इतना जरूर समझते थे कि वह दलीपशाह का लड़का है, अस्तु फिर भी आपको ऐसा नहीं करना चाहता था, खैर अब मैं इस जिक्र को छोड़ देती हूं।"

इतना कह कर शान्ता ने अपने आंसू पोछे और फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

"शोक और दुःख से मैं पुनः बीमार पड़ गई मगर आशालता ने धीरे धीरे कुछ दिन में अपनी तरह मुझे भी (आराम) कर दिया। यह आशा केवल इसी बात की थी कि एक दफे आपसे जरूर मिलूंगी। मुश्किल तो यह थी कि उस घटना ने दलीपशाह को भी आपका दुश्मन बना दिया था, केवल उस घटना ने ही नहीं, इसके अतिरिक्त भी दलीपशाह को बर्बाद करने में आपने कुछ उठा न रक्खा था, यहां तक कि आखिर वह दारोगा के हाथ फंस ही गये।"

---

* दलीपशाह ने बीसवें भाग के तेरहवें बयान में इस घटना की तरफ भूतनाथ से इशारा किया।

भूत० । (बेचैनी के साथ लम्बी सांस लेकर) ओफ ! मैं कह चुका हूं कि बातों को मत छेड़ो केवल अपना हाल बयान करो । मगर तुम नहीं मानतीं!

शान्ता० । नहीं नहीं, मैं तो अपना ही हाल बयान कर रही हूं, खैर मुख्त ही में कहती हूं ।

उस घटना के बाद ही मेरी इच्छानुसार दलीपशाह ने मेरा और बच्चे मर जाना मशहूर किया जिसे सुन कर हरनामसिंह और कमला भी मेरी त से निश्चिन्त हो गये । जब खुद दलीपशाह भी दारोगा के हाथ में फंस गये मैं बहुत ही परेशान हुई और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए । उस दलीपशाह के घर में उनकी स्त्री, एक छोटा सा बच्चा और मैं, केवल ये तीन आदमी रह गये थे । दलीपशाह की स्त्री को मैंने धीरज धराया और कहा कि अपनी जान मत बर्बाद कर, मैं बराबर तेरा साथ दूंगी और दलीपशाह को निकालने में उद्योग करूंगी मगर अब हमलोगों को यह घर एक दम छोड़ देना चा और ऐसी जगह छिप कर रहना चाहिये जहां दुश्मनों को हम लोगों का प लगे । आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् हमलोगों की जो कुछ जमा पूंजी थी उसे हमने उस घर को एक दम छोड़ दिया और काशीजी में जाकर एक अंधेरी में पुराने और गंदे मकान में डेरा डाला मगर इस बात की टोह लेते रहे कि शाह कहां हैं अथवा छूटने के बाद अपने घर की तरफ जा कर हम लोगों को हैं या नहीं । इस फिक्र में मैं कई दफे सूरत बदल कर बाहर निकली और उधर घूमती रही । इत्तिफाक से दिल में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह लड़के हरनामसिंह से छिप कर मिलना और उसे अपना साथी बना लेना चा ईश्वर ने मेरी यह मुराद पूरी की । जब माधवी कुंअर इन्द्रजीतसिंह को फं गई और उसके बाद उसने किशोरी पर भी कब्जा कर लिया तब कमला हरनामसिंह दोनों आदमी किशोरी की खोज में निकले और एक दूसरे हो गये । किशोरी की खोज में हरनामसिंह काशी की गलियों में घूम रहा उस पर मेरी निगाह पड़ी और मैंने इशारे से अलग बुला कर अपना परिचय उसको मुझसे मिल कर जितनी खुशी हुई उसे मैं बयान नहीं कर सकती । अपने घर में ले गई और सब हाल उससे कह अपने दिल का इरादा जाहिर जिसे उसने खुशी से मंजूर कर लिया । उस समय मैं चाहती तो कमला अपने पास बुला लेती मगर नहीं, उसे किशोरी की मदद के लिए छोड़ दिया कि किशोरी के नमक को मैं किसी तरह भूल नहीं सकती थी, खुलासा

हरनामसिंह को अपने पास रख लिया और खुद चुपचाप अपने घर में बैठी रह कर आपका और दलीपशाह का पता लगाने का काम लड़के को सुपुर्द किया। बहुत दिनों तक बेचारा लड़का चारो तरफ मारा फिरा और तरह तरह की खबरें ला कर मुझे सुनाता रहा। जब आप प्रकट होकर कमलिनी के साथी बन गए और उसके काम के लिए चारो तरफ घूमने लगे तब हरनामसिंह ने भी आपको देखा और पहिचान कर मुझे इतिला दी। थोड़े दिन बाद यह भी उसी की जुबानी मालूम हुआ कि अब आप नेकनाम होकर दुनिया में अपने को प्रकट किया चाहते हैं। उस समय मैं बहुत प्रसन्न हुई और मैंने हरनाम को राय दी कि तू किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार की शागिर्दी कर ले। आखिर वह तारासिंह से मिला और उसके साथ रह कर थोड़े ही दीनों में उसका प्यारा शागिर्द बल्कि दोस्त बन गया तब उसने अपना सब हाल तारासिंह को कह सुनाया और तारासिंह ने भी उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव करके उसकी इच्छानुसार उसके भेदों को छिपाया। तब से हरनामसिंह सूरत बदले हुये तारासिंह का काम करता रहा और मुझे भी आपकी पूरी पूरी खबर मिलती रही। आपको शायद इस बात की खबर न हो कि तारासिंह की मां चम्पा से और मुझसे बहिन का रिश्ता है, वह मेरे मामा की लड़की है, अस्तु चम्पा ने अपने लड़के की जुबानी हरनामसिंह का हाल सुना और जब यह मालूम हुआ कि वह रिश्ते में उसका भतीजा होता है तब उसने भी उस पर दया प्रकट की और तब से उसे बराबर अपने लड़के की तरह मानती रही।

जमानिया के तिलिस्म को खोलते और कैदियों को साथ लिए हुए जब दोनों कुमार उस खोह वाले तिलिस्मी बंगले में पहुंचे तो उन्होंने भैरोसिंह और तारासिंह को अपने पास बुला लिया और तिलिस्म का पूरा हाल उनसे कह के उन दोनों को अपने पास रक्खा। दलीपशाह को यह हाल भी तारासिंह ही से मालूम हुआ कि उनके बाल बच्चे ईश्वर की कृपा से अभी तक राजी खुशी हैं, साथ ही इसके मेरा हाल भी दलीपशाह को मालूम हुआ। उस समय तारासिंह दोनों कुमारों से आज्ञा लेकर हरनामसिंह को उस बंगले में ले आया और दलीपशाह से उसकी मुलाकात कराई। हरनामसिंह को साथ लेकर दलीपशाह काशी गये और वहां से मुझको तथा अपनी स्त्री और लड़के को साथ लेकर कुमार के पास चले आये। जब तारासिंह की जुबानी चम्पा ने यह हाल सुना तब वह मुझसे मिलने के लिये तारासिंह के साथ यहां अर्थात् उस बंगले में आई।

भूत० । जब दोनों कुमार नकाबपोश बन कर भैरोसिंह और तारासिंह को

यहां ले आए उसके पहिले तो तारासिंह यहां नहीं आए थे ?

शांता० । जी उसके पहिले ही से वे दोनों यहां आते जाते रहे, उस दि[illegible] तो प्रकट रूप से यहां लाए गये थे । क्या इतना हो जाने पर भी आप को अंदा[illegible] से मालूम न हुआ ?

भूत० । ठीक है, इस बात का शक तो मुझे और देवीसिंह को भी होता रहा[illegible]

शान्ता का किस्सा भूतनाथ ने बड़े गौर के साथ ध्यान देकर सुना और तब [illegible] तक आरजू मिन्नत के साथ शान्ता से माफी मांगता रहा । इसके बाद पुनः दो[illegible] में बातचीत होने लगी ।

शान्ता० । अब तो आपको मालूम हुआ कि चम्पा यहां क्योंकर और कि[illegible] लिए आई ।

भूत० । हां यह भेद तो खुल गया मगर इसका पता न लगा कि नानक [illegible] उसकी मां का यहां आना कैसे हुआ ।

शान्ता । सो मैं न कहूंगी, यह उसी से पूछ लेना ।

भूत० । (ताज्जुब से) सो क्यों ?

शान्ता० । मैं उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं चाहती !

भूत० । आखिर इसका कोई सबब भी है ?

शान्ता० । सबब यही है कि उसकी यहां कोई इज्जत नहीं है बल्कि वह [illegible] दरी की निगाह से देखी जाती है ।

भूत० । वह है भी इसी योग्य ! पहिले तो मैं उसे प्यार करता था मगर जब [illegible] यह सुना कि उसी की बदौलत मैं जैपाल (नकली बलभद्र) का शिकार बन[illegible] और एक भारी आफत में फंस गया, तब से मेरी तबीयत उससे खट्टी हो गई[illegible]

शान्ता० । सो क्यों ?

भूत० । इसीजिए कि वह बेगम की गुप्त सहेली नन्हों से गहरी मुहब्बत र[illegible] है* और इसी सबब से वह कागज का मुट्ठा जो मैंने अपने फायदे के लिए तै[illegible] किया था गायब हो के जैपाल के हाथ लग गया और उससे मुझे नुकसान पहुं[illegible] इस बात का सबूत भी मैंने अपनी आंखों से देख लिया ।

शान्ता० । सो ठीक है, मैं भी दलीपशाह से यह बात सुन चुकी हूं ।

भूत० । इसी से अब मैं उसे अपनी स्त्री नहीं बल्कि दुश्मन समझता हूं । [illegible] नन्हों ही से नहीं बल्कि कम्बख्त गौहर से भी वह दोस्ती रखती थी और वह [illegible]

* उन्नीसवां भाग बारहवां बयान, देखिए नकाबपोश की बातचीत ।

पाक न थी। (लम्बी सांस लेकर) अफसोस! इसीसे उस खोटी का लड़का नानक भी खोटा ही निकला।

शान्ता०। (मुस्कुरा कर) तब आप उसके लिए इतना परेशान क्यों थे? क्योंकि यह बात सुनने के बाद ही तो आपने उसे नकाबपोशों के स्थान में देखा था!

भूत०। वह परेशानी मेरी उसकी मुहब्बत के सबब से न थी बल्कि इस ख्याल से थी कि कहीं वह मुझ पर कोई नई आफत लाने के लिए तो नकाबपोशों से नहीं आ मिली।

शान्ता०। ठीक है, यह खयाल भी हो सकता था।

भूत०। फिर इसी बीच में जब उसने मुझे जंगल में गाना सुना के धोखा दिया और गिरफ्तार कर के अपने स्थान पर ले गई* जिसका हाल शायद तुम्हें मालूम होगा, तब मेरा रञ्ज और भी बढ़ गया।

शान्ता०। यह हाल मुझे मालूम है मगर यह कार्रवाई उसकी न थी बल्कि इन्द्रदेव की थी। उन्हीं ही ने आपके साथ यह ऐयारी की थी और उस दिन जंगल में घोड़े पर सवार जो औरत आपको मिली थी और जिसे आपने अपनी स्त्री समझा था, वह भी इन्द्रदेव का एक ऐयार ही था। यह बात मैं उन्हीं (इन्द्रदेव)की जुबानी सुन चुकी हूं, शायद आपसे भी वे कहें। हां उस दिन बंगले में जिस औरत को आपने देखा था वह बेशक नानक की मां थी। वह तो खुद कैदियों की तरह यहां रक्खी गई है, मैदान की हवा क्योंकर खा सकती है! दोनों कुमार नहीं चाहते थे कि प्रकट होने के पहिले ही कोई उन लोगों का पता लगा ले इसी लिए ये सब खेल खेले गये। (कुछ सोच कर) आखिर आपने धीरे धीरे नानक की मां का हाल पूछ ही लिया, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा चाहती थी, अस्तु अब इससे आगे और कुछ भी न कहूंगी, आप उसके बारे में मुझसे कुछ न पूछें।

भूत०। नहीं नहीं, जब इतना बता चुकी हो तो कुछ और भी बताओ क्योंकि मैं उससे मिलकर कुछ भी नहीं पूछा चाहता बल्कि अब उसका मुंह देखना भी मुझे पसन्द नहीं है। अच्छा यह तो बताओ कि वह कम्बख्त यहां क्यों लाई गई?

शान्ता०। लाई नहीं गई बल्कि उसी नन्हों के यहां गिरफ्तार की गई, उस समय नानक भी उसके साथ था।

भूत०। (आश्चर्य और क्रोध से) फिर भी उसी नन्हों के यहां गई थी?

शान्ता०। जी हां।

* देखिये बीसवां भाग का अन्त।

भूत० । (लम्बी सांस लेकर) लोग सच कहते हैं कि ऐयाशी का नतीजा बहुत बुरा निकलता है !

शान्ता० । अस्तु अब उसके बारे में मुझसे कुछ न पूछिए, इन्द्रदेवजी आपको सब कुछ बता देंगे ।

भूत० । हां ठीक है, खैर अब उसके बारे में कुछ न पूछूंगा, जो कुछ पूछूंगा वह तुम्हारे और हरनाम ही के बारे में होगा । अच्छा एक बात और बताओ, आज के दर्बार में मैंने हरनाम को हाथ में एक सन्दूकड़ी लिए देखा था, वह संदूकड़ी कैसी थी और उसमें क्या था ?

शान्ता० । उसमें दारोगा के हाथ की लिखी हुई बहुत सी चिट्ठियां हैं जिनके देखने से आपको निश्चय हो जायगा कि आपने दलीपशाह को व्यर्थ ही अपना दुश्मन समझ लिया था । पहिले जब दारोगा ने दलीपशाह को लालच दिखा कर लिखा था कि वह आपको गिरफ्तार करा दें, तब दो चार चिट्ठियों में तो दलीपशाह ने इस नीयत से कि दारोगा की शैतानियों का सबूत उससे मिल कर बटोर लें दारोगा के मतलब ही का जवाब दिया था जिससे खुश होकर उसने कई चीठियों में दलीपशाह को तरह तरह के सब्जबाग दिखलाए, मगर जब दारोगा की कई चीठियां दलीपशाह ने बटोर लीं तब साफ जवाब दे दिया । उस समय दारोगा बहुत घबड़ाया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि दलीपशाह मुझसे दुश्मनी करके मेरा भेद खोल दे,अस्तु किसी तरह उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिए । उस समय कम्बख्त दारोगा आपसे मिला और उसने दलीपशाह की पहिली चीठियां आपको दिखा कर खुद आप ही को दलीपशाह का दुश्मन बना दिया, बल्कि आप ही के जरिये से दलीपशाह को गिरफ्तार भी करा लिया ।

भूत० । ठीक है, इस विषय में मैंने बहुत बड़ा धोखा खाया ।

शान्ता० । मगर दलीपशाह को गिरफ्तार कर लेने पर भी वे चीठियां दारोगा के हाथ न लगीं क्योंकि वे दलीपशाह की स्त्री के कब्जे में थीं, अब हमलोग उन्हें अपने साथ लाये हैं जिसमें दारोगा के मुकदमे में पेश करें ।

भूत० । अस्तु अब मेरे दिल का खुटका निकल गया और मुझे निश्चय हो गया कि हरनाम की कोई कारंवाई मेरे खिलाफ न होगी ।

शान्ता० । भला वह कोई काम ऐसा क्यों करेगा जिससे आपको तकलीफ हो ? ऐसा ख्याल भी आपको न रखना चाहिये ।

इन दोनों में इस तरह की बातें हो रही थीं कि किसी के आने की आहट मालूम

हुई। भूतनाथ ने घूम कर देखा तो नानक पर निगाह पड़ी। जब वह पास आया तब भूतनाथ ने उससे पूछा, "क्या चाहते हो ?"

नानक०। मेरी मां आपसे मिला चाहती हैं।

भूत०। तो यहां पर क्यों न चली आई ? यहां कोई गैर तो था नहीं !

नानक०। सो तो वही जानें।

भूत०। अच्छा जाओ, उसे इसी जगह मेरे पास भेज दो।

नानक०। बहुत अच्छा।

इतना कह कर नानक चला गया और इसके बाद शान्ता ने भूतनाथ से कहा, "शायद उसे मेरे सामने आपसे बातचीत करना मंजूर न हो, शर्म आती हो या किसी तरह का और कुछ खयाल हो, अस्तु आज्ञा दीजिये तो मैं चली जाऊं, फिर....'

भूत०। नहीं, उसे जो कुछ कहना होगा तुम्हारे सामने ही कहेगी, तुम चुपचाप बैठी रहो।

शान्ता०। सम्भव है कि वह मेरे रहते यहां न आवे या उसे इस बात का ख्याल हो कि तुम मेरे सामने उसकी बेइज्जती करोगे।

भूतनाथ०। हो सकता है, मगर....(कुछ सोच के) अच्छा तुम जाओ।

इतना सुन कर शान्ता वहां से उठी और बंगले की तरफ रवाना हुई। इस समय सूर्य अस्त हो चुका था और चारो तरफ से अंधेरी झुकी आती थी।

सातवां बयान

इन्द्रदेव का यह स्थान बहुत बड़ा था। इस समय यहां जितने आदमी आए हुए हैं उनमें से किसी को किसी तरह की भी तकलीफ नहीं हो सकती थी और इसके लिए प्रबन्ध भी बहुत अच्छा कर रक्खा गया था। औरतों के लिए एक खास कमरा मुकर्रर किया गया था मगर रामदेई (नानक की मां) की निगरानी की जाती थी और इस बात का भी बन्दोबस्त कर रक्खा गया था कि कोई किसी के साथ दुश्मनी का बर्ताव न कर सके। महाराज सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह और दोनों कुमारों के कमरे के आगे पहरे का पूरा पूरा इन्तजाम था और हमारे ऐयार लोग भी बराबर चौकन्ने रहा करते थे।

यद्यपि भूतनाथ एकान्त में बैठा हुआ अपनी स्त्री से बातें कर रहा था मगर यह बात इन्द्रदेव और देवीसिंह से छिपी हुई न थी जो इस समय बागीचे में टहलते हुए बातें कर रहे थे। इन दोनों के देखते ही देखते नानक भूतनाथ की तरफ गया और लौट आया इसके बाद भूतनाथ की स्त्री अपने डेरे पर चली गई और

फिर रामदेई अर्थात नानक की मां भूतनाथ की तरफ जाती हुई दिखाई पड़ी। उस समय इन्द्रदेव ने देवीसिंह से कहा, "सिंहजी देखिये भूतनाथ अपनी पहली स्त्री से बातचीत कर चुका है, अब उसने नानक की मां का अपने पास बुलाया है। शान्ता की जुबानी उसकी खुटाई का हाल तो उसे जरूर मालूम हो ही गया होगा, इसलिए ताज्जुब नहीं कि वह गुस्से में आकर रामदेई के हाथ पैर तोड़ डालें ?"

देवी०। ऐसा हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, मगर उस औरत ने तो सजा पाने के ही लायक काम किया है।

इन्द्र०। ठीक है, मगर इस समय उसे बचाना चाहिये।

देवी०। तो जाइये वहां छिप कर तमाशा देखिये और मौका पड़ने पर उसकी सहायता कीजिये। (मुस्कुरा कर) आप ही आग लगाते हैं और आप ही बुझाने दौड़ते हैं।

इन्द्र०। (हंस कर) आप तो दिल्लगी करते हैं।

देवी०। दिल्लगी काहे की ? क्या आपने उसे गिरफ्तार नहीं कराया है ? अगर गिरफ्तार कराया है तो क्या इनाम देने के लिए ?

इन्द्र०। (मुस्कुराते हुए) तो आपकी राय है कि इसी समय उसकी मरम्मत की जाय !!

देवी०। चाहिए तो ऐसा ही ! जी में आवे तो तमाशा देखने चलिये। कहिये तो आपके साथ चलूं।

इन्द्र०। नहीं नहीं, ऐसा न होना चाहिए। भूतनाथ आपका दोस्त है और रिश्ते में तो नातेदार भी। आप ऐसे मौके पर उसके सामने जा सकते हैं। जाइये और उसे बचाइये, मेरा जाना मुनासिब न होगा।

देवी०। (हंस कर) तो आप चाहते हैं कि मैं भी भूतनाथ के हाथ से दो घूंसे खा लूं ? अच्छा साहब जाता हूं, आपका हुक्म कैसे टालूं, आज आपने बड़ी बड़ी बातें मुझे सुनाई हैं इसलिये आपका अहसान भी तो मानना होगा !

इतना कहते हुए देवीसिंह पेड़ों की आड़ देते हुए भूतनाथ की तरफ रवाना हुए और जब ऐसी जगह पहुंचे जहां से उन दोनों की बातें बखूबी सुन सकें तब एक चट्टान पर बैठ गये और सुनने लगे कि वे दोनों क्या बातें करते हैं।

भूत०। खैर अच्छा ही हुआ जो तुम यहां तक आ गईं, मुझसे मुलाकात हो गई और मैं 'लामाघाटी' तक जाने से बच गया। मगर यह तो बताओ अपनी सहेली "नन्हों" को यहां तक क्यों न लेती आईं, मैं भी जरा उससे मिल

अपना कलेजा ठण्ढा कर लेता ?

रामदेई०। नन्हों बेचारी पर क्यों आक्षेप करते हो,उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? और वह यहां आती ही काहे को ? क्या तुम्हारी लौंडी थी ! व्यर्थ ही एक आदमी को बदनाम और दिक करने के लिए लोग टूटे पड़ते हैं !

भूत० । (उमड़ते हुए गुस्से को दबा कर) छी छी, वह बेचारी हमारी लौंडी क्यों होने लगी, लौंडी तो तुम उसकी थीं जो झख मारने के लिए उसके घर गई थीं।

रामदेई० । (आंचल से आंसू पोंछती हुई) अगर मैं उसके यहां गई तो क्या पाप किया ! मैं पहिले ही नानक से कहती थी कि जाकर पूछ आओ तब मैं नन्हों के यहां जाऊं नहीं तो कहीं व्यर्थ ही बात का बतंगड़ न बन जाय, मगर लड़के ने न माना और आखिर वही नतीजा निकला। बदमाशों ने वहां पहुंच कर उसे भी बेइज्जत किया और मुझे भी बेइज्जत करके यहां तक घसीट लाये। उसके सिर झूठे ही कलंक थोप दिया कि वह बेगम की सहेली है।

इतना कह कर रामदेई नखरे के साथ रोने लगी।

भूत० । तुमने पहिले भी कभी उसका जिक्र मुझसे किया था कि वह तुम्हारी नातेदार है, या मुझसे पूछ कर कभी उसके यहां गई थीं ?

राम०। एक दफे गई सो तो यह गति हुई, और जाती तो न मालूम क्या होता।

भूत० । जो लोग तुझे यहां ले आये हैं वे बदमाश थे ?

राम० । बदमाश तो कहे ही जायंगे ! जो व्यर्थ दूसरों को दुःख दें वही बदमाश होते हैं और क्या बदमाशों के सिर पर सींग होती है ! तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गया है कि जो लोग तुम्हारी बेइज्जती किये ही जाते हैं उन्हीं के लिए तुम जान दे रहे हो। न मालूम तुम्हें ऐसी क्या गरज पड़ी हुई है !

भूत० । ठीक है, यही राय लेने के लिए तो मैंने तुम्हें यहां एकान्त में बुलाया है। अगर तुम्हारी राय होगी तो मैं देखते देखते इन लोगों से बदला ले लूंगा, क्या मैं कमजोर या दब्बू हूं !

रामदेई० । जरूर बदला लेना चाहिए, अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं समझूंगी कि तुमसे बढ़ कर कमीना कोई नहीं है।

इतना सुन कर भूतनाथ को बेहिसाब गुस्सा चढ़ आया मगर फिर भी उसने अपने क्रोध को दबाया और कहा—

भूत० । अच्छा तो अब मैं ऐसा ही करूंगा, मगर यह तो बताओ कि शेर की लड़की 'गौहर' से तुमसे क्या नाता है ?

राम० । उस मुसलमानिन से मुझसे क्या नाता होगा । मैंने तो उसकी सूर भी नहीं देखी ।

भूत० । लोग तो कहते हैं कि तुम उसके यहां भी आती जाती हो और बहुत से भेद तुमने उसे बता दिये हैं ।

राम० । सब झूठ है । ये लोग बात लगाने वाले जैसे ही धूर्त और पाजी वैसे ही तुम सीधे और बेवकूफ हो ।

अब भूतनाथ अपने गुस्से को बर्दाश्त न कर सका और उसने एक चपत राम देई के गाल पर ऐसी जमाई कि वह तिलमिला कर जमीन पर लेट गई मगर चिल्लाने का साहस न हुआ । कुछ देर बाद वह उठ बैठी और भूतनाथ का देखने लगी ।

भूत० । कमीनी, हरामजादी ! जिनके लिये मैं जान तक देने को तैयार उन्हीं लोगों की शान में तू ऐसी बातें कह रही है जो एक पराये को भी कह उचित नहीं है और जिसे मैं एक सायत के लिए भी बर्दाश्त नहीं कर सकता ! समझ ले और कान खोल कर सुन ले कि तेरे हाथ की लिखी वह चीठी मुझे मिल है जो तूने चांद वाले दिन गौहर के यहां मिलने के लिए नन्हों के पास भेजी और जिसमें तूने अपना परिचय 'करौंदा की छैंये छैंये' दिया था । बस इसी समझ ले कि तेरी सब कलई खुल गई और तेरी बेईमानी लोगों का मालूम हो अब तेरा नखरे के साथ रोना और बातें बना कर अपने को बेकसूर साबित क व्यर्थ है । अब तेरी मुहब्बत एक रत्ती बराबर मेरे दिल में नहीं रह गई और उस जहरीली नागिन से भी हजार दर्जे बढ़ के समझने लग गया जिसे खूबसूरत पर भी कोई हाथ से छूने तक का साहस नहीं कर सकता । मुझे आज इस का सख्त रंज है कि मैंने तुझे इतने दिन तक प्यार किया और इस बात की कुछ भी ध्यान न दिया कि उस मुहब्बत ऐयाशी और शौक का नतीजा एक न दिन जरूर भयानक होता है जिसे छिपाने की जरूरत समझी जाती है और जि जाहिर होना शर्मिन्दगी और बेहयाई का सबब समझा जाता है । मुझे इस बात अफसोस है कि तुझसे अनुचित सम्बन्ध रख कर मैंने उस उचित सम्बन्ध वाली साथ छोड़ दिया जिसकी जूतियों की बराबरी भी तू नहीं कर सकती या यों क चाहिए कि तेरे शरीर का चमड़ा जिसकी जूतियों में भी देखना मैं पसन्द नहीं सकता । मुझे इस बात का दुःख है कि नागर या मायारानी के कब्जे से तुझे छु के लिए मैंने तरह तरह के ढोंग रचे और इसका दुःख

किया कि मैं उस क्षयी रोग को अपनी छाती से लगाने का प्रबन्ध कर रहा हूं जिसे पहिली ही अवस्था में ईश्वर की कृपा ने मुझसे अलग कर दिया था। ये बातें तू अपने ही लिए न समझ बल्कि अपने जाए नानक के लिए भी समझ कर मेरे सामने से उठ ज ।ौर उससे भी कह दे कि आज से मेरे सामने आकर मेरी जूतियों का शिकार न बने। यदि मेरे पुराने विचार न बदल गये होते और उन दिनों की तरह आज भी मैं पाप को पाप न समझता होता तो आज तेरी खाल खिंचवा कर नमक और मिर्च का उबटन लगवा देता,मगर खैर अब इतना ही कहता हूं कि मेरे सामने से उठ जा और फिर कभी अपना काला मुंह मुझे मत दिखाइयो। जिस कुल को तू पहिले कलंक लगा चुकी है अब भी उसी कुल की बदनामी का सबब बन कर दुनिया की हवा खा।

रामदेई के पास भूतनाथ की बातों का जवाब न था। वह अपनी पुरानी चोठी का सच्चा परिचय सुन कर बदहवास हो गई और समझ गई कि उसके अच्छे नसीबे के पहिए की धुरी टूट गई जिसे वह किसी तरह भी बना नहीं सकती। वह अपने धड़कते हुए कलेजे और कांपते हुए बदन के साथ भूतनाथ की बातें सुनती रही और अन्त में उठने का साहस करने पर भी अपनी जगह से न हिल सकी मगर भूतनाथ वहां से उठ खड़ा हुआ और बंगले की तरफ चल पड़ा। थोड़ी ही दूर गया होगा कि देवीसिंह से मुलाकात हुई जिसने इसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "भूतनाथ, शाबाश! शाबाश!! जो कुछ नेक और बहादुर आदमियों को करना चाहिए इस समय तुमने वही किया। मैं छिप कर तुम्हारी सब बातें सुन रहा था। अगर तुम कोई बेजा काम करना चाहते तो मैं तुम्हें जरूर रोकता मगर ऐसा करने का मौका न हुआ जिससे मैं बहुत ही खुश हूं। अच्छा जाओ अपने कमरे में आराम करो, मैं इन्द्रदेव के पास जाता हूं।"

आठवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। एक सुन्दर सजे हुए कमरे में राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव बैठे हैं और उनके सामने नानक हाथ जोड़े बैठा दिखाई देता है।

गोपाल०। (नानक से) ठीक है, यद्यपि इन बातों में तुमने अपनी तरफ से कुछ नमक मिर्च जरूर लगाया होगा मगर फिर भी मुझे कोई ऐसी बात नहीं जान पड़ती जिससे भूतनाथ को दोषी ठहराऊं। उसने जो कुछ तुम्हारी मां से कहा सच कहा और उसके साथ जैसा बर्ताव किया वह उचित ही था। इस विषय में मैं भूतनाथ को

कुछ भी नहीं कह सकता और न अब तुम्हारी बातों पर भरोसा ही कर सकता हूं। बड़े अफसोस की बात है कि मेरी नसीहत ने तुम्हारे दिल पर कुछ भी असर न किया* और अगर कुछ किया भी तो वह दो चार दिन बाद जाता रहा। अगर तुम अपनी मां के साथ नन्हों के मकान में गिरफ्तार न हुए होते तो कदाचित् तुम्हारे धोखे में आ जाता मगर अब मैं किसी तरह भी तुम्हारा साथ नहीं दे सकता।

नानक०। मगर आप मेरा कसूर माफ कर चुके हैं और....

इन्द्र०। (नानक से) अगर तुम उस माफी को पाकर खुश हुए थे तो फिर पुराने रास्ते पर क्यों गये और पुनः अपनी मां को लेकर नन्हों के पास क्यों पहुंचे? तुम्हें बात करते शर्म नहीं आती !!

गोपाल०। फिर भी मैं अपनी जबान (माफी) का ख्याल करूंगा और तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूंगा, मगर अब भूतनाथ की तरह मैं भी तुम्हारी सूरत देखना पसन्द नहीं करता और न भूतनाथ को इस विषय में कुछ कहना चाहता हूं। इन्द्रदेव ने तुम्हारे साथ इतनी ही रेयायत की सो बहुत किया कि तुमको यहां से निकल जाने की आज्ञा दे दी नहीं तो तुम इस लायक थे कि जन्म भर कैद में पड़े सड़ा करते।

नानक०। जो आज्ञा, मगर मेरे पिता से इतना तो दिला दीजिए कि मेरी मां जन्म भर खाने पीने की तरफ से बेफिक्र रहे।

इन्द्र०। अबे कमीने ! तुझे यह कहते शर्म नहीं मालूम होती ! इतना बड़ा हो के भी तू अपनी मां के लायक दाना पानी नहीं जुटा सकता ? खैर अब तुझे आखिरी मर्तबे कहा जाता है कि अब हम लोगों से किसी तरह की उम्मीद न रख और अपनी मां को साथ लेकर यहां से चला जा। भूतनाथ ने भी मुझे ऐसा ही कहने के लिए कहला भेजा है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने ताली बजाई और साथ ही अपने ऐयार सर्यूसिंह को कमरे के अन्दर आते देखा।

इन्द्र०। (सर्यू से) भूतनाथ कहां है ?

सर्यू०। नम्बर पांच के कमरे में देवीसिंह से बातें कर रहे हैं, वे दोनों यहां आए भी थे मगर यह सुन कर कि नानक यहां बैठा हुआ है पिछले पैर लौट गए।

इन्द्र०। अच्छा तुम जाओ और उन्हें यहां बुला लाओ।

सर्यूसिंह०। जो आज्ञा, परन्तु मुझे आशा नहीं है कि वे लोग नानक के रहते यहां आवेंगे।

* देखिये उन्नीसवां भाग, तीसरा बयान।

इन्द्र० । अच्छा तो मैं खुद जाता हूं ।

गोपाल० । हां तुम्हारा ही जाना ठीक होगा, देवीसिंह को भी बुलाते आना ।

इन्द्रदेव उठ कर चले गये और थोड़ी ही देर में भूतनाथ तथा देवीसिंह को साथ लिए हुए आ पहुंचे ।

गोपाल० । (भूतनाथ से) क्यों साहब, आप यहां तक आकर लौट क्यों गए ?

भूत० । यों ही, मैंने समझा कि आप लोग किसी खास बात में लगे हुए हैं ।

गोपाल० । अच्छा बैठिए और एक बात का जवाब दीजिए ।

भूत० । कहिए ?

गोपाल० । रामदेई और नानक के बारे में आप क्या हुक्म देते हैं ?

भूत० । महाराज ने क्या आज्ञा दी है ?

गोपाल० । उन्होंने इसका फैसला आप ही के ऊपर छोड़ा है ।

भूत० । फिर जो राय आप लोगों की हो, मैंने तो इन दोनों के बारे में इसकी मां को हुक्म सुना ही दिया है ।

गोपाल० । इनके कसूर तो आप सुन ही चुके होंगे ।

भूत० । पिछले कसूरों को तो मैं सुन ही चुका हूं, हां नया कसूर सिर्फ इतना ही मालूम हुआ है कि ये दोनों नन्हों के यहां गिरफ्तार हुए हैं ।

गोपाल० । इसके अतिरिक्त एक बात और है ।

भूत० । वह क्या ?

गोपाल०। यही कि ये दोनों अगर खाली हाथ न होते तो बेचारी शान्ता को जान से मार डालते ।

इतने ही में नानक बोल उठा, "नहीं नहीं, यह आपके जासूसों ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगाया है !"

भूत०। अगर यह बात है तो मैं इसे हथकड़ी से खाली क्यों देखता हूं ?

इन्द्रदेव०। इसीलिए कि हमारे हाते के अन्दर ये लोग कुछ कर नहीं सकते । जब ये लोग यहां गिरफ्तार होकर आये तो कुछ दिन तक तो भल मनसी के साथ रहे मगर आज इनकी नीयत बिगड़ी हुई मालूम पड़ी ।

भूत० । खैर, अब आप ही इनके लिए हुक्म सुनाइये । मगर इन्द्रदेव, आप यह न समझियेगा कि इन लोगों के बारे में मुझे किसी तरह का रंज है । मैं सच कहता हूं कि इन दोनों का यहां आना मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ । मैं इन लोगों के फेर में बेतरह फंसा हुआ था । आज मालूम हुआ ये लोग जहर हलाहल सेल

भी बढ़े हुए हैं, अस्तु आज इन लोगों से पीछा छुड़ा कर मैं बहुत ही प्रसन्न हु मेरे सिर से बोझा उतर गया और अब मेरी जिन्दगी खुशी के साथ बीतेगी। आ कहना सच निकला अर्थात् इनका यहां आना मेरे लिए खुशी का सबब हुआ।

इन्द्र०। अच्छा यह बताइए कि ये अगर इसी तरह छोड़ दिये जावं आपके खजाने को तो किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकते जो 'लामाघा के अन्दर है ?

भूत०। कुछ भी नहीं, और 'लामाघाटी' के अन्दर जेवरों के अतिरिक्त कुछ है भी नहीं, सो जेवरों को मैं वहां से मंगवा ले सकता हूं।

इन्द्र०। अगर सिर्फ नानक की मां के जेवरों से आपका मतलब है तो अब मेरे कब्जे में है क्योंकि नन्हों के यहां वह बिना जेवरों के नहीं गई थी।

भूत०। बस तो मैं उस तरफ से बेफिक्र हो गया, यद्यपि उन जेवरों की कोई परवाह नहीं है मगर उसके पास मैं एक कौड़ी भी नहीं छोड़ा चाहता। इ अतिरिक्त यह भी जरूर कहूंगा कि अब ये लोग सूखा छोड़ देने लायक नहीं

इन्द्र०। खैर जैसी राय होगी वैसा ही किया जायगा।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने पुनः सर्यूसिंह को बुलाया और जब वह कमरे के अ आ गया तो कहा—"थोड़ी देर के लिए नानक को बाहर ले जाओ।"

नानक को लिए हुए सर्यूसिंह कमरे के बाहर चला गया और इसके बाद आदमी विचार करने लगे कि नानक और उसकी मां के साथ क्या बर्ताव क चाहिए। देर तक सोच विचार कर यही निश्चय किया कि उन दोनों को दे निकाल दिया जाय और कह दिया जाय कि जिस दिन हमारे महाराज की अ दारी में दिखाई दोगे उसी दिन मार डाले जाओगे।

इस हुक्म पर महाराज से आज्ञा लेने की इन लोगों कोई जरूरत न थी उन्होंने सब बातें सुन सुना कर पहिले ही हुक्म दे दिया था कि भूतनाथ की नुसार काम किया जाय, अस्तु नानक कमरे के अन्दर बुलाया गया और बाद रामदेई भी बुलाई गई। जब दोनों इकट्ठे हो गए तो उन्हें हुक्म सुना

यह हुक्म यद्यपि साधारण मालूम होता है मगर उन दोनों के लिए ऐ था जिन्हें भूतनाथ की बदौलत शाहखर्ची की आदत पड़ गई थी। नानक और देई आंखों से आंसू जारी था जब इन्द्रदेव ने सर्यूसिंह को हुक्म दिया कि आदमी इन दोनों को ले जांय और महाराज की सरहद के बाहर कर आवें। सिंह दोनों को लिए हुए कमरे के बाहर निकल गया।

भूत० । सिर से बोझ उतरा और कम्बख्तों से पीछा छूटा, अच्छा अब बतलाइये कि कल क्या क्या होगा ?

गोपाल० । महाराज ने तो यही हुक्म किया है कि कल यहां से डेरा कूच किया जाय और तिलिस्म की सैर करते हुए चुनारगढ़ पहुंचें, चम्पा शांता हरनामसिंह भरतसिंह और दलीपशाह वगैरह बाहर की राह से चुनार भेज दिये जायं, यदि हमारे किसी ऐयार की भी इच्छा हो तो उनके साथ चला जाय ।

भूत०। ऐसा कौन वेवकूफ होगा जो तिलिस्म की सैर छोड़ उनके साथ जायगा !

देवीसिंह० । सभी कोई ऐसा कहते हैं ।

भूत० । हां यह तो बताइये कि मैंने नानक जब दरबार में देखा था तो उसके हाथ में एक लपेटी तस्वीर थी, अबवह तस्वीर कहां है और उसमें क्या बात थी ?

इन्द्र० । वह कागज जिसे आप तस्वीर समझे हुए हैं मेरे पास है, आपको दिखाऊंगा । असल में वह तस्वीर नहीं है बल्कि नानक ने उसमें एक बहुत बड़ी दर्खास्त लिख कर तैयार की थी जो दर्बार में आ के पेश किया चाहता था, मगर ऐसा कर न सका ।

भूत०। उसमें लिखा क्या था ?

इन्द्र० । जो लोग उसे गिरफ्तार कर लाये हैं उनकी शिकायत के सिवाय और कुछ भी नहीं । साथ ही इसके उस दर्खास्त में इस बात पर बहुत जोर दिया गया था कि कमला की मां वास्तव में मर गई है और आज जिस शान्ता को सब कोई देख रहे हैं वह वास्तव में नकली है ।

भूत०। वाह रे शैतान ! (कुछ सोच कर) तो शायद वह दर्खास्त महाराज के हाथ तक नहीं पहुंची ?

इन्द्र० । क्यों नहीं, मैंने जान बूझ कर ऐसा करने का मौका दिया । वह रात को पहरे वालों से इत्तिला करा कर खुद महाराज के पास पहुंचा और उनके सामने वह दर्खास्त रख दी । उस समय महाराज ने मुझे बुलाया और मुझी को वह दर्खास्त पढ़ने के लिए दी गई । उसे सुन कर महाराज ने मुस्कुरा दिया और इशारा किया कि वह कमरे के बाहर निकाल दिया जाय क्योंकि इसके पहिले मैं शान्ता और हरनामसिंह का पूरा पूरा हाल महाराज से अर्ज कर चुका था ।

भूत० । अच्छा मुझे भी वह दर्खास्त दिखाइयेगा ।

इन्द्र० । (कंगलों से इशारा करके) वह कागज जिसके ऊपर रखी हुई है देख लीजिये ।

भूतनाथ ने दर्खास्त उतार कर पढ़ी और इसके बाद कुछ देर तक उन लोगों में बातचीत होती रही ।

नौवां बयान

सुबह का सुहावना समय सब जगह एक सा नहीं मालूम होता, घर की खि कियों में उसका चेहरा कुछ और ही दिखायी देता है और बाग में उसकी कैफि यत कुछ और ही मस्तानी होती है, पहाड़ में उसकी खूबी कुछ और ही ढंग दिखाई देती है और जंगल में उसकी छटा कुछ निराली ही होती है। आज इ देव के इस अनूठे स्थान में इसकी खूबी सबसे चढ़ी बढ़ी है, क्योंकि यहां जंगल हैं, पहाड़ भी, अनूठा बाग तथा सुन्दर बंगला या कोठा भी है, फिर यहां के आन का पूछना ही क्या। इसलिए हमारे महाराज कुंअर साहब और ऐयार लोग यहां घूम घूम कर सुबह के सुहावने समय का पूरा आनन्द ले रहे हैं, खास क इसलिए कि आज ये लोग डेरा कूच करने वाले हैं।

बहुत देर घूमने फिरने के बाद सब कोई बाग में आकर बैठे और इधर उ की बातें होने लगीं।

जीत०। (इन्द्रदेव से) भरतसिंह वगैरह तथा औरतों को आपने चुनार रवा कर दिया।

इन्द्रदेव०। जी हां, बड़े सवेरे ही उन लोगों को बाहर की राह से रवाना दिया। औरतों के लिए सवारी का इन्तजाम कर देने के अतिरिक्त अपने दस मातबिर आदमी भी साथ कर दिये हैं।

जीत०। तो अब हम लोग भी कुछ भोजन करके यहां से रवाना हुआ चाह

इन्द्रदेव०। जैसी मर्जी।

जीत०। भैरो और तारा जो आपके साथ यहां आए थे, हां चले गए नहीं पड़ते!

इन्द्रदेव०। अब भी मैं उन्हें अपने साथ ही ले जाने की आज्ञा चाह क्योंकि उनकी मदद की मुझे जरूरत है।

जीत०। तो क्या आप हम लोगों के साथ न चलेंगे?

इन्द्र०। जी हां उस बाग तक जरूर साथ चलूंगा जहां से मैं आप लोगों तक ले आया हूं पर उसके बाद गुप्त हो जाऊंगा क्योंकि मैं आपको कुछ ति तमाशे दिखाया चाहता हूं और इसके अतिरिक्त उन चीजों को भी तिलि अन्दर से निकलवा कर चुनार पहुंचना है जिनके लिये आज्ञा मिल चुकी है

सुरेन्द्र०। नहीं नहीं, गुप्त रीति पर हम तिलिस्म का तमाशा नहीं चाहते, हमारे साथ रह कर जो जो कुछ दिखा सको दिखा दो, बाकी चीजों को निकलवा कर चुनार पहुंचाना, सो यह काम दो दिन के बाद भी

इन्द्र० । जैसी आज्ञा ।

इतना कह कर इन्द्रदेव थोड़ी देर के लिए कहीं चले गए और तब भैरोसिंह तथा तारासिंह को साथ लिए आकर बोले, "भोजन तैयार है ।"

सब कोई वहां से उठे और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए । जिस तरह इन्द्रदेव इन लोगों को अपने स्थान में ले आये थे उसी तरह पुनः उस तिलिस्मी बाग में ले गये जिसमें से लाए थे ।

जब महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह उस बारहदरी में पहुंचे जिसमें पहिले दिन आराम किया था और जहां बाजे की आवाज सुनी थी तब दिन पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था । जीतसिंह ने इन्द्रदेव से पूछा, "अब क्या करना चाहिये ?"

इन्द्रदेव० । यदि महाराज आज की रात यहां रहना पसन्द करें तो एक दूसरे बाग में चल कर वहां की कुछ कैफियत दिखाऊंगा ?

जीत० । बहुत अच्छी बात है, चलिये ।

इतना सुन कर इन्द्रदेव ने उस बारहदरी की कई आलमारियों में से एक आलमारी खोली और उसके अन्दर जाकर सभों को अपने पीछे आने का इशारा किया । यहां एक गली की तौर पर रास्ता बना हुआ था जिसमें सब कोई इन्द्रदेव की इच्छानुसार बेखौफ चले गए और थोड़ी दूर जाने बाद जब इन्द्रदेव की इच्छानुसार बेखौफ चले गए और थोड़ी दूर जाने बाद जब इन्द्रदेव ने दूसरा दर्वाजा खोला तब उसके बाहर होकर सभों ने अपने को एक छोटे बाग में पाया जिसकी बनावट कुछ विचित्र ही ढंग की थी । यह बाग जंगली पौधों की सब्जी से हरा भरा था और पानी की चश्मा भी बह रहा था मगर चारदीवारी के अतिरिक्त और किसी तरह की बड़ी इमारत इसमें न थी, हां बीच में एक बहुत बड़ा चबूतरा जरूर था जिस पर धूप और बरसाती पानी के लिए सिर्फ मोटे मोटे बारह खम्भों के सहारे पर छत बनी हुई थी और चबूतरे पर चढ़ने के लिए चारो तरफ सीढ़ियां थीं ।

यह चबूतरा कुछ अजीब ढंग का बना हुआ था । लगभग चालीस हाथ के चौड़ा और इतना ही लम्बा होगा । इसके फर्श में लोहे की बारीक नालियां जाल की तरह जड़ी हुई थीं और बीच में एक चौखूटा स्याह पत्थर इस अन्दाज का रक्खा हुआ जिस पर चार आदमी बैठ सकते थे । बस इसके अतिरिक्त इस चबूतरे में और कुछ भी न था ।

थोड़ी देर तक सब कोई उस चबूतरे की बनावट देखते रहे, इसके बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "तिलिस्म बनाने वालों ने यह बगीचा केवल तमाशा देखने के लिए बनाया था

हां यदि आप मुझे दो तीन पहर की छुट्टी दें तो....!!"

इन्द्रदेव की बात महाराज ने मंजूर कर ली और तब वह (इन्द्रदेव) स के देखते देखते चौखूटे पत्थर के ऊपर चले गए जो चबूतरे के बीच में जड़ा था। सवार होने के साथ ही वह पत्थर हिला और इन्द्रदेव को लिए जमी अन्दर चला गया मगर थोड़ी देर में पुनः ऊपर चला गया और अपने ठिकाने ज्यों का त्यों बैठ गया लेकिन इस समय इन्द्रदेव उस पर न थे।

इन्द्रदेव के चले जाने बाद थोड़ी देर तक तो सब कोई उस चबूतरे पर खड़े इसके बाद धीरे धीरे वह चबूतरा गरम होने लगा और वह गर्मी यहां तक बढ़ी लाचार उन सभों को चबूतरा छोड़ देना पड़ा, अर्थात् सब कोई चबूतरे के नीचे आए और बाग में टहलने लगे। इस समय दिन घण्टे भर से कुछ कम बाकी

इस खयाल से कि देखें इसकी दीवार किस ढंग की बनी हुई है, सब घूमते हुए पूरब तरफ वाली दीवार के पास जा पहुंचे और गौर से देखने लगे कोई अनूठी बात दिखाई न दी। इसके बाद उत्तर तरफ वाली और फिर प तरफ वाली दीवार को देखते हुए सब कोई दक्खिन तरफ गए और उधर की दी को आश्चर्य के साथ देखने लगे क्योंकि इसमें कुछ विचित्रता जरूर थी।

यह दीवार शीशे की मालूम होती थी और इसमें महाभारत की तस्वीरें हुई थीं। ये तस्वीरें उसी ढंग की थीं जैसी कि उस तिलिस्मी बंगले में चलती तस्वीरें इन लोगों ने देखी थी। ये लोग तस्वीरों को बड़ी देर तक देखते रहे सभों को विश्वास हो गया कि जिस तरह उस बंगले वाली तस्वीरों को चलते और काम करते हमलोग देख चुके हैं उसी तरह इन तस्वीरों को भी देखेंगे दीवार पर हाथ फेरने से साफ मालूम होता था कि तस्वीरें शीशे के अन्दर

इन तस्वीरों को देखने से महाभारत की लड़ाई का जमाना आंखों के फिर जाता था। कौरवों और पाण्डवों की फौज, बड़े बड़े सेनापति त हाथी घोड़े इत्यादि जो कुछ बने थे सभी अच्छे और दिल पर असर पैदा वाले थे। 'इस लड़ाई की नकल अपनी आंखों से देखेंगे' इस विचार कोई प्रसन्न थे। बड़ी दिलचस्पी के साथ उन तस्वीरों को देख रहे थे, य कि सूर्य अस्त हो गया और धीरे धीरे अन्धकार ने चारो तरफ अपना दख लिया। उस समय यकायक दीवार चमकने लगी और तस्वीरों में हरकत जिससे सभों ने समझा कि नकली लड़ाई शुरू हुआ चाहती है मगर कुछ बाद लोगों का यह विश्वास ताज्जुब के साथ बदल गया जब यह देखा कि

ही सब तस्वीरें गायब हो गईं और दीवार साफ दिखाई देने लगी। इसके बाद दीवार की चमक भी बन्द हो गई और फिर अन्धकार ही दिखाई देने लगा।

थोड़ी देर बाद उस चबूतरे की तरफ रोशनी मालूम हुई। यह देखकर सब कोई उसी तरफ रवाना हुए और जब उसके पास पहुंचे तो देखा कि उस चबूतरें की छत में जड़े हुए शीशों के दस बारह टुकड़े इस तेजी के साथ चमक रहे हैं कि जिससे केवल चबूतरा ही नहीं बल्कि तमाम बाग उजाला हो रहा है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों मूरतें भी उस चबूतरे पर इधर उधर चलती फिरती दिखाई दीं। गौर करने से मालूम हुआ कि ये मूरतें (या तस्वीरें) बेशक वे ही हैं जिन्हें उस दीवार के अन्दर देख चुके हैं। ताज्जुब नहीं कि वह दीवार इन सभों का खजाना हो और वही यहां इस चबूतरे पर आकर तमाशा दिखाती हों।

इस समय जितनी मूरतें उस चबूतरे पर थीं सब अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की लड़ाई से सम्बन्ध रखती थीं। जब उन मूरतों ने अपना काम शुरू किया तो ठीक अभिमन्यु की लड़ाई का तमाशा आंखों के सामने दिखाई देने लगा। जिस तरह कौरवों के रचे हुए व्यूह के अन्दर फंस कर कुमार अभिमन्यु ने वीरता दिखाई थी और अन्त में अधर्म के साथ जिस तरह वह मारा गया था उसी को आज नाटक स्वरूप में देख कर सब कोई बड़े प्रसन्न हुए और सभों के दिलों पर बहुत देर तक इसका असर रहा।

इस तमाशे का हाल खुलासे तौर पर हम इसलिये नहीं लिखते कि इसकी कथा बहुत प्रसिद्ध है और महाभारत में विस्तार के साथ लिखी है।

यह तमाशा थोड़ी ही देर में खत्म नहीं हुआ बल्कि देखते देखते तमाम रात बीत गई। सबेरा होने के कुछ पहिले अंधकार हो गया और उसी अंधकार में सब मूरतें गायब हो गईं। उजाला होने और आंखें ठहरने पर जब सभों ने देखा तो उस चबूतरे पर सिवाय इन्द्रदेव के और कुछ भी दिखाई न दिया।

इन्द्रदेव को देख कर सब कोई प्रसन्न हुए और साहब सलामत के बाद इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। (चबूतरे से नीचे उतर कर और महाराज के पास आकर) मैं उम्मीद करता हूं कि इस तमाशे को देख कर महाराज प्रसन्न हुए होंगे।

महाराज०। बेशक! क्या इसके सिवाय और भी कोई तमाशा यहां दिखाई दे सकता है?

इन्द्र०। जी हां यहां पूरा महाभारत दिखाई दे सकता है, अर्थात् महाभारत ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब इसी ढंग पर और इसी चबूतरे पर आप देख

सकते हैं मगर दो चार दिन में नहीं बल्कि महीनों में, इसके साथ साथ बनाने वाले ने इसकी भी तर्कीब रक्खी है कि चाहे शुरू ही से तमाशा दिखाया जाय या बीच ही से कोई टुकड़ा दिखा दिया जाय अर्थात महाभारत के अन्तर्गत जो कुछ चाहें देख सकते हैं।

महाराज०। इच्छा तो बहुत कुछ देखने की थी मगर इस समय हम लोग यहां ज्यादे रुक नहीं सकते अस्तु फिर कभी जरूर देखेंगे। हां हमें इस तमाशे के विषय में कुछ समझाओ तो सही कि यह काम क्योंकर हो सकता है और तुमने यहां कहां जा कर क्या किया ?

इन्द्रदेव ने इस तमाशे का पूरा पूरा भेद सभों को समझाया और कहा कि ऐसे ऐसे कई तमाशे इस तिलिस्म में भरे पड़े हैं, अगर आप चाहें तो इस काम में वर्षों बिता सकते हैं, इसके अतिरिक्त यहां की दौलत का भी यही हाल है कि वर्षों तक ढोते रहिये फिर भी कमी न हो, सोने चांदी का तो कहना ही क्या है जवाहिरात भी आप जितना चाहें ले सकते हैं, सच तो यों है कि जितनी दौलत यहां है उसके रहने का ठिकाना भी यहीं हो सकता है। इस बगीचे के आस पास और भी चार बाग हैं, शायद उन सभों में घूमना और वहां के तमाशों को देखना इस समय आप पसन्द न करें....

महा०। बेशक इस समय हम इन सब तमाशों में समय बिताना पसन्द न करते। सब से पहिले शादी ब्याह के काम से छुट्टी पाने की इच्छा लगी हुई है मगर इसके बाद पुनः एक दफे इस तिलिस्म में आकर यहां की सैर जरूर करेंगे।

कुछ देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं, इसके बाद इन्द्रदेव सभों को पुनः उसी बाग में ले आये जिसमें उनसे मुलाकात हुई थी या जहां से इन्द्रदेव के स्थान में जाने का रास्ता था।

दसवां बयान

इस बाग में पहिले दिन जिस बारहदरी में बैठ कर सभों ने भोजन किया था आज पुनः उसी बारहदरी में बैठने और भोजन करने का मौका मिला। खाने की चीजें ऐयार लोग अपने साथ ले आये थे और जल की वहां कमी ही न थी, स्नान सन्ध्योपासन और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर सब कोई उसी बारहदरी में सो रहे क्योंकि रात के जागे हुए थे और बिना कुछ आराम किये बढ़ने की इच्छा न थी।

जब दिन पहर भर से कुछ कम बाकी रह गया तब सब कोई उठे और नहर के जल से हाथ मुंह धोकर आगे की तरफ बढ़ने के लिए तैयार हुए।

हम ऊपर किसी बयान में लिख आये हैं कि यहां तीनों तरफ की दीवारों में कई आलमारियां भी थीं अस्तु इस समय कुंअर इन्द्रजीतसिह ने उन्हीं आल

रियों में से एक आलमारी खोली और महाराज की तरफ देख कर कहा, "चुनार के तिलिस्म में जाने का यही रास्ता है और हम दोनों भाई इसी रास्ते से वहां तक गये थे।"

रास्ता बिल्कुल अंधेरा था इसलिए इन्द्रजीतसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए आगे आगे रवाना हुए और उनके पीछे महाराज सुरेन्द्रसिंह राजा वीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह इन्द्रदेव वगैरह और ऐयार लोग रवाना हुए। सबसे पीछे कुंअर आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए जाने लगे क्योंकि सुरंग पतली थी और केवल आगे की रोशनी से काम नहीं चल सकता था।

ये लोग उस सुरंग में कई घंटे तक बराबर चले गये और इस बात का पता न लगा कि कब संध्या हुई या अब कितनी रात बीत चुकी है। जब सुरंग का दूसरा दर्वाजा इन लोगों को मिला और उसे खोल कर सब कोई बाहर निकले तो अपने को एक लम्बी चौड़ी कोठरी में पाया जिसमें इस दर्वाजे के अतिरिक्त तीनों तरफ की दीवारों में और भी तीन दर्वाजे थे जिनकी तरफ इशारा करके कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अब हम लोग उस चबूतरे वाले तिलिस्म के नीचे आ पहुंचे हैं। इस जगह एक दूसरे से मिली हुई सैकड़ों कोठरियां हैं जो भूलभुलैयें की तरह चक्कर दिलाती हैं और जिनमें फंसा हुआ अनजान आदमी जल्दी निकल ही नहीं सकता। जब पहिले पहल हम दोनों भाई यहां आये थे तो सब कोठरियों के दर्वाजे बन्द थे जो तिलिस्मी किताब की सहायता से खोले गये और जिनका खुलासा हाल आपको तिलिस्मी किताब के पढ़ने से मालूम होगा, मगर इनके खोलने में कई दिन लगे और तकलीफ भी बहुत हुई। इन कोठरियों के मध्य में एक चौखूटा कमरा आप देखेंगे तो ठीक चबूतरे के नीचे है और उसी में से बाहर निकलने का रास्ता है बाकी सब कोठरियों में असबाब और खजाना भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त छत के ऊपर एक और रास्ता उस चबूतरे में से बाहर निकलने के लिए बना हुआ है जिसका हाल मुझे पहिले मालूम न था, जिस दिन हम दोनों भाई उस चबूतरे की राह निकले हैं उस दिन देखा कि इसके अतिरिक्त एक रास्ता और भी है।"

इन्द्रदेव०। जी हां दूसरा रास्ता भी जरूर है मगर वह तिलिस्म के दारोगा के लिए बनाया गया था, तिलिस्म तोड़ने वाले के लिए नहीं। मुझे उस रास्ते का हाल बखूबी मालूम है।

गोपाल०। मुझे भी उस रास्ते का हाल (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हीं की जुबानी मालूम हुआ है, इसके पहले मैं कुछ भी नहीं जानता था और न यही मालूम था कि इस तिलिस्म के दारोगा यही हैं।

इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने सभों को तहखाने अथवा कोठरियों औ कमरों की सैर कराई जिसमें लाजवाब और हद्द दरजे की फिजूलखर्ची को मात करने वाली दौलत भरी हुई थी और एक से एक बढ़ कर अनूठी चीजें लोगों दिल को अपनी तरफ खैंच रही थीं। साथ ही इसके यह भी समझाया कि इन कोठरि को हम लोगों ने कैसे खोला और इस काम में कैसी कैसी कठिनाइयां उठानी पड़ीं

घूमते फिरते और सैर करते हुए सब कोई उस मध्य वाले कमरे में पहुंचे ठीक तिलिस्मी चबूतरे के नीचे था। वास्तव में यह कमरा कल पुरजों से बिल्कु भरा हुआ था। जमीन से छत तक बहुत सी तारों और कल पुर्जों का सम्बन् और दीवार के अन्दर से ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं।

दोनों कुमारों ने महाराज को समझाया कि तिलिस्म टूटने के पहिले वे क पुरजे किस ढंग पर लगे थे और तोड़ते समय उनके साथ कैसी कारंवाई की गई इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने सीढ़ियों की तरफ इशारा करके कहा, "अब भी इ सीढ़ियों का तिलिस्म कायम है, हर एक की मजाल नहीं कि इन पर पैर रख सके।

बीरेन्द्र०। यह सब कुछ है मगर असल तिलिस्मी बुनियाद वही खोह वा बंगला जान पड़ता है जिसमें चलती फिरती तस्वीरों का तमाशा देखा था औ जहां से तिलिस्म के अन्दर घुसे थे !

सुरेन्द्र०। इसमें क्या शक है ! वही चुनार जमानिया और रोहतासगढ़ वगै के तिलिस्मों की नकेल है और वहां रहने वाला तरह तरह के तमाशे देख दि सकता है और सब से बढ़ कर आनन्द ले सकता है।

जीत०। वहां की पूरी पूरी कैफियत अभी देखने में नहीं आई।

इन्द्रजीत०। दो चार दिन में वहां की कैफियत देख भी नहीं सकते। जो कु आप लोगों ने देखा वह रुपये में एक आना भी न था। मुझे भी अभी पुनः व जाकर बहुत कुछ देखना बाकी है।

सुरेन्द्र०। इस समय तो जल्दी में थोड़ा बहुत देख लिया है मगर कामों निश्चिन्त होकर पुनः हम लोग वहां चलेंगे और उसी जगह से रोहतासगढ़ के त खाने की भी सैर करेंगे। अच्छा अब यहां से बाहर होना चाहिए।

आगे कुंअर इन्द्रजीतसिंह रवाना हुए। पांच सात सीढ़ियां चढ़ जाने के ब एक छोटा सा लोहे का दर्वाजा मिला जिसे उसी हीरे वाली तिलिस्मी ताली खोला और तब सभों को लिए हुए दोनों कुमार तिलिस्मी चबूतरे के बाहर हु

सब कोई तिलिस्म की सैर करके लौट आये और अपने अपने काम धन्धे लगे। कैदियों के मुकदमे को थोड़े दिन तक मुलतवी रख कर कुंअर इन्द्रजीतसि

और आनन्दसिंह की शादी पर सभों ने ध्यान दिया और इसी के इन्तजाम की फिक्र करने लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जो काम जिसके लायक समझा उसके सुपुर्द करके कुल कैदियों को चुनारगढ़ भेजने का हुक्म दिया और यह भी निश्चय कर लिया कि दो तीन दिन के बाद हमलोग भी चुनारगढ़ चले जायंगे क्योंकि बारात चुनारगढ़ ही से निकल कर यहां आवेगी।

भरतसिंह और दलीपशाह वगैरह का डेरा बलभद्रसिंह के पड़ोस ही में पड़ा और दूसरे मेहमानों के साथ ही साथ इनकी खातिरदारी का बोझ भी भूतनाथ के ऊपर डाला गया। इस जगह संक्षेप में हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं कि कौन काम किसके सुपुर्द किया गया।

(१) इस तिलिस्मी इमारत के इर्द गिर्द जिन मेहमानों के डेरे पड़े हैं उन्हें किसी बात की तकलीफ तो नहीं होती, इस बात को बराबर मालूम करते रहने का काम भूतनाथ के सुपुर्द किया गया।

(२) मोदी, बनिए और हलवाई वगैरह किसी से किसी चीज का दाम तो नहीं लेते, इस बात की तहकीकात के लिए रामनारायण ऐयार मुकर्रर किये गए।

(३) रसद वगैरह के काम में कहीं किसी तरह की बेईमानी तो नहीं होती, या चोरी का नाम तो किसी की जुबान से नहीं सुनाई देता, इसको जानने और शिकायतों के दूर करने पर चुन्नीलाल ऐयार तैनात किए गये।

(४) इस तिलिस्मी इमारत से लेकर चुनारगढ़, तक की सड़क और उसकी सजावट का काम पन्नालाल और पंडित बद्रीनाथ के जिम्मे किया गया।

(५) चुनारगढ़ में बाहर से न्योते में आये हुए पंडितों की खातिरदारी और पूजा पाठ इत्यादि के सामान की दुरुस्ती का बोझ जगन्नाथ ज्योतिषी के ऊपर डाला गया।

(६) बारात और महफिल वगैरह को सजावट तथा उसके सम्बन्ध में जो कुछ काम हो उसके जिम्मेवार तेजसिंह बनाये गये।

(७) आतिशबाजी और अजायबातों के तमाशे तैयार करने के साथ ही साथ उसी तरह की एक इमारत के बनवाने का हुक्म इन्द्रदेव को दिया गया जैसी इमारत के अन्दर हंसते हंसते इन्द्रजीतसिंह वगैरह एक दफे कूद गये थे और जिसका भेद अभी तक खोला नहीं गया है।*

(८) पन्नालाल वगैरह के बदले में रणधीरसिंहजी के डेरे की हिफाजत तथा किशोरी कामिनी वगैरह की निगरानी के जिम्मेवार देवीसिंह बनाये गये।

(९) ब्याह सम्बन्धी खर्च की तहवील (रोकड़) राजा गोपालसिंह के हवाले की गई।

* देखिये सन्तति पांचवां भाग, चौथा बयान।

(१०) कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ रह कर उनके वि सम्बन्धी शानशौकत और जरूरतों को कायदे के साथ निबाहने के लिए भैरों और तारासिंह छोड़ दिये गए।

(११) हरनामसिंह को अपने मातहत में लेकर जीतसिंह ने यह काम अ जिम्मे ले लिया कि हर एक के कामों की जांच और निगरानी रखने के अति कुछ कैदियों को भी किसी उचित ढंग से इस विवाहोत्सव के तमाशे दिखा देंगे वे लोग भी देख लें कि जिस शुभ दिन के हम बाधक थे वह आज किस खुशी और के साथ बीत रहा है और सर्वसाधारण भी देख लें कि धन दौलत और ऐश आ के फेर में पड़ कर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारने वाले, छोटे हो कर बड़ों साथ वैर बांध के नतीजा भोगने वाले, मालिक के साथ में नमकहरामी और पाप करने का कुछ फल इस जन्म में भी भोग लेने वाले, और बदनीयती तथा के साथ ऊंचे दर्जे पर पहुंच कर यकायक रसातल में पहुंच जाने वाले, धर्म ईश्वर से विमुख ये ही प्रायश्चित्ती लोग हैं।

इन सभों के साथ मातहती में काम करने के लिए आदमी भी काफी तौर दिये गये।

इनके अतिरिक्त और लोगों को भी तरह तरह के काम सुपुर्द किए गए सब कोई बड़ी खूबी के साथ अपना अपना काम करने लगे।

अब हम थोड़ा सा हाल कुंअर इन्द्रजीतसिंह का बयान करेंगे जिन्हें इस बात बहुत ही रंज है कि कमलिनी की शादी किसी दूसरे के साथ हो गई और वे उम्मी ही में बैठे रह गये।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है और कुंअर इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे बैठे भैरोंसिंह से धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। इन दोनों के सिवाय कोई तीं आदमी इस कमरे में नहीं है और कमरे का दर्वाजा भी भिड़काया हुआ है।

भैरो०। तो आप साफ साफ कहते क्यों नहीं कि आपकी उदासी का क्या है? आपको तो आज खुश होना चाहिये कि जिस काम के लिए बरसों शान रहे, जिसकी उम्मीद में तरह तरह की तकलीफें उठाईं, जिसके लिए हा पर जान रख के बड़े बड़े दुश्मनों से मुकाबिला करना पड़ा और जिसके हों मिलने ही पर तमाम दुनिया की खुशी समझी जाती थी, आज वही काम आ इच्छानुसार हो रहा है और उसी किशोरी के साथ अपनी शादी का इन्त अपनी आंखों से देख रहे हैं, फिर भी ऐसी अवस्था में आपको उदास देखे कौन ऐसा है जो ताज्जुब न करेगा?

इन्द्रजीत० । बेशक मेरे लिए आज बड़ी खुशी का दिन है और मैं खुश हूं भी मगर कमलिनी की तरफ से जो रंज मुझे हुआ है उसे हजार कोशिश करने पर भी मेरा दिल बरदाश्त नहीं करता ।

भैरो० । (ताज्जुब का चेहरा बना कर) हैं, कमलिनी की तरफ से और आप को रंज ! जिसके अहसानों के बोझ से आप दबे हुए हैं उसी कमलिनी से रंज ! यह आप क्या कह रहे हैं ?

इन्द्र० । इस बात को तो मैं खुद कह रहा हूं कि उसके अहसानों के बोझ से मैं जिन्दगी भर हलका नहीं हो सकता और अब तक उसके जी में मेरी भलाई का ध्यान बंधा ही हुआ है मगर रंज इस बात का है कि अब मैं उसे उस मोहब्बत की निगाह से नहीं देख सकता जिससे कि पहिले देखता था ।

भैरो० । सो क्यों, क्या इसलिए कि अब वह अपने ससुराल चली जायगी और फिर उसे आप पर अहसान करने का मौका न मिलेगा ?

इन्द्र० । हां करीब करीब यही बात है ।

भैरो० । मगर अब आपको उसकी मदद की जरूरत भी तो नहीं है । हां इस बात का खयाल बेशक हो सकता है कि अब आप उसके तिलिस्मी मकान पर कब्जा न कर सकेंगे ।

इन्द्र० । नहीं नहीं, मुझे इस बात की कुछ जरूरत नहीं है और न इसका कुछ खयाल ही है ।

भैरो० । तो इस बात का खयाल है कि उसने अपनी शादी में आपको न्योता नहीं दिया ? मगर वह एक हिन्दू लड़की की हैसियत से ऐसा कर भी तो नहीं सकती थी ! हां इस बात की शिकायत आप गोपालसिंहजी से जरूर कर सकते हैं क्योंकि उस काम के कर्ता धर्ता वे ही हैं ।

इन्द्र० । उनसे तो मुझे बहुत ही शिकायत है मगर मैं शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता ।

भैरो० । (चौंक कर) शर्म तो तब होती जब आप इस बातकी शिकायतकरते कि मैं खुद उससे शादी किया चाहता था ।

इन्द्र० । हां बात तो ऐसी ही है । (मुस्कुरा कर) मगर तुम तो पागलों की सी बातें करते हो ।

भैरो० । (हंस कर) यह कहिए न ! आप दोनों हाथ लड्डू चाहते थे ! तो इस चोर को आप इतने दिनों तक छिपाए क्यों रहे ?

इन्द्र० । तो यही कब उम्मीद हो सकती थी कि इस तरह यकायक गुमसुम

शादी हो जायगी !

भैरो०। खैर अब तो जो कुछ होना था सो होगया, मगर आपको इस बात
ख्याल न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त क्या आप समझते हैं कि किशोरी
बात को पसन्द करती ? कभी नहीं, वल्कि आये दिन का झगड़ा पैदा हो जाता

इन्द्र०। नहीं, किशोरी से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती। खैर अब
विषय पर वहस करना व्यर्थ है, मगर मुझे इसका रंज जरूर है। अच्छा यह
बताओ तुमने उन्हें देखा है जिसके साथ कमलिनी की शादी हुई ?

भैरो०। कई दफे, बातें भी अच्छी तरह कर चुका हूं।

इन्द्र०। कैसे हैं ?

भैरो०। बड़े लायक, पढ़े लिखे, पंडित, बहादुर, दिलेर, हंसमुख और सुन्द
इस अवसर पर आवेंगे ही, देख लीजिएगा। आपने कमलिनी से इस बारे में ब
चीत नहीं की ?

इन्द्र०। इधर तो नहीं मगर तिलिस्म की सैर को जाने के पहिले मुलाक़
हुई थी, उसने खुद मुझे बुलाया था बल्कि उसी की जुबानी उसकी शादी
हाल मुझे मालूम हुआ था। मगर उसने मेरे साथ विचित्र ढंग का बर्ताव कि

भैरो०। सो क्या ?

इन्द्र०। (जो कुछ कैफियत हो चुकी थी उसे बयान करने के बाद)
इस बर्ताव को कैसा समझते हो ?

भैरो०। बहुत अच्छा और उचित !

इस तरह की बात हो रही थी कि पहिले दिन की तरह बगल वाले
का दर्वाजा खुला और एक लौंडी ने आकर सलाम करने बाद कहा, "कमलिन
आपसे मिला चाहती हैं, आज्ञा हो तो...."

इन्द्र०। अच्छा मैं चलता हूं, तू दरवाजा बन्द कर दे।

भैरो०। अब मैं भी जाकर आराम करता हूं।

इन्द्र०। अच्छा जाओ फिर कल देखा जायगा।

लौंडी०। इनसे (भैरोसिंह से) भी उन्हें कुछ कहना है।

यह कहती हुई लौंडी ने दर्वाजा बन्द कर दिया, तब तक स्वयं कमलिनी
कमरे में आ पहुंची और भैरोसिंह की तरफ देख कर बोली, (जो उठ कर
जाने के लिए तैयार था) "आप कहां चले ? आप ही से तो मुझे बहुत सी
बात करनी है।"

भैरो०। सो क्या ?

कमलिनी० । अब उसी कमरे में चलिये वहां बातचीत होगी ।

इतना कह कर कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और अपने कमरे की तरफ ले चली, पीछे पीछे भैरोसिंह भी गये । लौंडी दर्वाजा बन्द करके दूसरी राह से बाहर चली गई और कमलिनी ने इन दोनों को उचित स्थान पर बैठा कर पानदान आगे रख दिया और भैरोसिंह से कहा, "आप लोग तिलिस्म की सैर कर आये और मुझे पूछा भी नहीं !"

भैरो० । महाराज खुद कह चुके हैं कि शादी के बाद औरतों को भी तिलिस्म की सैर करा दी जाय और फिर तुम्हारे लिए तो कहना ही क्या है, तुम जब चाहो तिलिस्म की सैर कर सकती हो ।

कम० । ठीक है, मानो यह मेरे हाथ की बात है !

भैरो० । हुई है !

कम० । (हंस कर) टालने के लिए यह अच्छा ढंग है ! खैर जाने दीजिए, मुझे कुछ ऐसा शौक भी नहीं है, हां यह बताइए कि वहां क्या क्या कैफियत देखने में आई ? मैंने सुना कि भूतनाथ वहां बड़े चक्कर में पड़ गया था और उसकी पहली स्त्री भी वहां दिखाई पड़ गई ।

भैरो० । बेशक ऐसा ही हुआ ।

इतना कह कर भैरोसिंह ने कुल हाल खुलासा बयान किया और इसके बाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "खैर आप बताइए कि शादी की खुशी में मुझे क्या इनाम मिलेगा ?"

इन्द्र० । (हंस कर) गालियों के सिवाय और किसी चीज की तुम्हें कमी ही क्या है जो मैं दूं ?

कम० । (भैरो से) सुन लीजिये, मेरे लिए कैसा अच्छा इनाम सोचा गया है ! (कुमार से हंस कर) याद रखियेगा, इस जवाब के बदले में मैं आपको ऐसा छकाऊंगी कि खुश हो जाइयेगा !

भैरो० । इन्हें तो तुम छका ही चुकी हो, अब इससे बढ़ के क्या होगा कि चुपचाप दूसरे के साथ शादी कर ली और इन्हें अंगूठा दिखा दिया । अब तुम्हें ये गालियां न दें तो क्या करें !

कम० । (मुस्कुराती हुई) आपकी राय भी यही है ?

भैरो० । बेशक !

कम० । तो बेचारी किशोरी के साथ आप अच्छा सलूक करते हैं !

भैरो० । इसका इलाज तो कुमार के ऊपर हो सकता है !

कम० । हां साहब, मर्दों की मुरौवत जो कुछ कर दिखाए थोड़ा है, किशोरी बहिन से इस का जिक्र करूंगी !

भैरो० । तब तो अहसान पर अहसान करोगी ।

इन्द्र० । (भैरो से) तुम भी व्यर्थ की छेड़छाड़ मचा रहे हो, भला इन बा से क्या फायदा ?

भैरो० । ब्याह शादी में ऐसी बातें हुआ ही करती हैं !

इन्द्र० । तुम्हारा सिर हुआ करता है ! (कमलिनी से) अच्छा यह बता कि इस समय तुमने मुझे क्यों याद किया ?

कम० । हरे राम ! अब क्या मैं ऐसी भारी हो गई कि मुझसे मिलना बुरा मालूम होता है ?

इन्द्र० । नहीं नहीं, अगर मिलना बुरा मालूम होता तो मैं यहां आता क्यों ? पूछता हूं कि आखिर कोई काम भी है या........?

कम० । हां है तो सही ।

इन्द्र० । कहो !

कम० । आपको शायद मालूम होगा कि मेरे पिता जब से यहां आये उन्होंने अपने खाने पीने का इन्तजाम अलग रक्खा है अर्थात् आपके यहां का अ नहीं खाते और न कुछ अपने लिए खर्च कराते हैं ।

इन्द्र० । हां मुझे मालूम है ।

कम० । अब उन्होंने इस मकान में रहने से भी इनकार किया है । उन एक मित्र ने खेमे वगैरह का इन्तजाम कर दिया है और वे उसी में अपना उठा ले जाने वाले हैं ।

इन्द्र० । यह भी मालूम है ।

कम० । मेरी इच्छा है कि यदि आप आज्ञा दें तो लाडिली को साथ ले मैं भी उसी डेरे में चली जाऊं ।

इन्द्र० । क्यों तुम्हें यहां रहने में परहेज ही क्या हो सकता है ?

कम० । नहीं नहीं, मुझे किस बात का परहेज होगा मगर यों ही जी चाह है कि मैं दो चार दिन अपने बाप के साथ ही रह कर उनकी खिदमत करूं ।

इन्द्र० । यह दूसरी बात है, इसकी इजाजत तुम्हें अपने मालिक से चाहिए, मैं कौन हूं जो इजाजत दूं ?

कम० । इस समय वे तो यहां हैं नहीं अस्तु उसके बदल में मैं आप को अपना मालिक समझती हूं ।

इन्द्र० । (मुस्कुरा कर) फिर तुमने वही रास्ता पकड़ा ? खैर मैं इस बात की इजाजत न दूंगा ।

कम० । तो मैं आज्ञा के विरुद्ध कुछ न करूंगी ।

इन्द्र० । (भैरो से) इनकी बातचीत का ढंग देखते हो ?

भैरो० । (हंस कर) शादी हो जाने पर भी ये आपको नहीं छोड़ा चाहतीं तो मैं क्या करूं ।

कम० । अच्छा मुझे एक बात की इजाजत तो जरूर दीजिए ।

इन्द्र० । वह क्या ?

कम० । आपकी शादी में मैं आपसे एक विचित्र दिल्लगी किया चाहती हूं ।

इन्द्र० । वह कौन सी दिल्लगी होगी ?

कम० । यही बता दूंगी तो उसमें मजा ही क्या रह जायगा ? बस आप इतना कह दीजिए कि उस दिल्लगी से रंज न होंगे चाहे वह कैसी ही गहरी क्यों न हो ।

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) खैर मैं रंज न होऊंगा ।

इसके बाद थोड़ी देर तक हंसी की बातें होती रहीं और फिर सब कोई उठ कर अपने अपने ठिकाने चले गये ।

बारहवां बयान

ब्याह की तैयारी और हंसी खुशी में ही कई सप्ताह बीत गये और किसी को कुछ मालूम न हुआ । हां कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को खुशी के साथ ही रंज और उदासी से भी मुकाबला करना पड़ा । यह रंज और उदासी क्यों ? शायद कमलिनी और लाडिली के सबब से ही । जिस तरह कुंअर इन्द्रजीतसिंह कमलिनी से मिल कर और उसकी जुबानी उसके ब्याह का हो जाना सुन कर दुःखी हुए, उसी तरह आनन्दसिंह को भी लाडिली से मिल कर दुःखी होना पड़ा या नहीं सो हम नहीं कह सकते क्योंकि लाडिली से और आनन्दसिंह से जो बातें हुईं उससे और कमलिनी की बातों से बड़ा फर्क है । कमलिनी ने तो खुद इन्द्रजीतसिंह को अपने कमरे में बुलवाया था मगर लाडिली ने ऐसा नहीं किया । लाडिली का कमरा भी आनन्दसिंह के कमरे के बगल ही में था । जिस रात कमलिनी से और इन्द्रजीतसिंह दूसरी मुलाकात हुई थी, उसी रात को आनन्दसिंह ने भी अपने बगल वाले कमरे में लाडिली को देखा था मगर दूसरे ढंग से । आनन्दसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटे हुए तरह तरह की बातें सोच रहे थे कि उसी समय बगल वाले कमरे में से कुछ खटके की आवाज आई जिससे आनन्दसिंह चौंके और उन्होंने घूम

कर देखा तो उस कमरे का दर्वाजा कुछ खुला हुआ नजर आया। इन्हें यह ब... मालूम था कि हमारे बगल ही में लाडिली का कमरा है और उससे मिलने की ... से इन्होंने कई दफे दर्वाजा खोलना भी चाहा था मगर बन्द पाकर लाचार हो... थे। अब दर्वाजा खुला पाकर बहुत खुश हुए और मसहरी पर से उठ धीरे ... दर्वाजे के पास गये। हाथ के सहारे दर्वाजा कुछ विशेष खोला और अन्दर की त... झांक कर देखा। लाडिली पर निगाह पड़ी जो एक शमादान के आगे बैठी हुई ... लिख रही थी। शायद उसे इस बात की कुछ खबर ही न थी कि मुझे कोई देख रहा...

भीतर सन्नाटा पाकर अर्थात् किसी गैर को न देख कर आनन्दसिंह बेध... कमरे के अन्दर चले गये। पैर की आहट पाते ही लाडिली चौंकी तथा आन... सिंह को अपनी तरफ आते देख उठ खड़ी हुई और बोली, "आपने दर्वाजा ... खोल लिया?"

आनन्द०। (मुस्कुराते हुए) किसी हिकमत से!

लाडिली०। क्या आज के पहिले वह हिकमत मालूम न थी? शायद स... के लिए किसी लौंडी ने दर्वाजा खोला हो और बन्द करना भूल गई हो।

आनन्द०। अगर ऐसा ही हो तो क्या कुछ हर्ज है?

लाडिली०। नहीं हर्ज काहे का है, मैं तो खुद ही आपसे मिला चाहती... मगर लाचारी........

आनन्द०। लाचारी कैसी? क्या किसी ने मना कर दिया था?

लाडिली०। मना ही समझना चाहिये जब कि मेरी बहिन कमलिनी ने ... देकर कह दिया कि 'या तो तू मेरी इच्छानुसार शादी कर ले या ... वक्त की क... खा जा कि किसी गैर मर्द से कभी बातचीत न करेगी'। जिस उनकी समय (क... की) शादी होने लगी थी उस समय भी लोगों ने मुझ पर शादी कर लेने के ... दबाव डाला था मगर मैं इस समय जैसी हूं वैसी ही रहने के लिए कसम खा ... हूं, मतलब यह है कि इसी बखेड़े में मुझसे और उनसे कुछ तकरार भी हो गई...

आनन्द०। (घबराहट और ताज्जुब के साथ) क्या कमलिनी की शादी हो...

लाडिली०। जी हां।

आनन्द०। किसके साथ?

लाडिली०। सो तो मैं नहीं कह सकती, आपको खुद मालूम हो जायगा...

आनन्द०। यह बहुत बुरा हुआ।

लाडिली०। बेशक बहुत बुरा हुआ मगर क्या किया जाय, जीजाजी (गोप... सिंह) की मर्जी ही ऐसी थी क्योंकि किशोरी ने ऐसा करने के लिए उन पर

जोर डाला था अस्तु कमलिनी बहिन दवाव में पड़ गईं, मगर मैंने साफ इनकार कर दिया कि जैसी हूं वैसी ही रहूंगी।

आनन्द०। तुमने बहुत अच्छा किया।

लाडिली०। और मैं ऐसा करने के लिए सख्त कसम खा चुकी हूं।

आनन्द०। (ताज्जुब से) क्या तुम्हारे इस कहने का यह मतलब लगाया जाय कि अब तुम शादी करोगी ही नहीं?

लाडिली०। बेशक!

आनन्द०। यह तो कोई अच्छी बात नहीं!

लाडि०। जो हो, अब तो मैं कसम खा चुकी हूं और बहुत जल्द यहां से चली जाने वाली भी हूं, सिर्फ कामिनी बहिन की शादी हो जाने का इन्तजार कर रही हूं।

आनन्द०। (कुछ सोच कर) कहां जाओगी?

लाडिली०। आप लोगों की कृपा से अब तो मेरा बाप भी प्रकट हो गया है, अब इसकी चिन्ता ही क्या है?

आनन्द०। मगर जहां तक मैं समझता हूं तुम्हारे बाप तुम्हें शादी करने के लिए जरूर जोर देंगे।

लाडिली०। इस विषय में उनकी कुछ न चलेगी।

लाडिली की बातों से आनन्दसिंह को ताज्जुब के साथ ही साथ रंज भी हुआ और ज्यादे रंज तो इस बात का था कि अब तक लाडिली ने खड़े ही खड़े बातचीत की और कुमार को बैठने तक के लिए नहीं कहा। शायद इसका यह मतलब हो कि 'मैं ज्यादे देर तक आपसे बात नहीं कर सकती'। अस्तु आनन्दसिंह को क्रोध और दुःख के साथ लज्जा ने भी धर दबाया और वे यह कह कर कि 'अच्छा मैं जाता हूं' अपने कमरे की तरफ लौट चले।

आनन्दसिंह के दिल में जो बातें घूम रही थीं उनका अन्दाजा शायद लाडिली को भी मिल गया और जब वे लौट कर जाने लगे तब उसने पुनः इस ढंग से कहा मानों उसकी आखिरी बात अभी पूरी नहीं हुई थी—"क्योंकि जिनकी मुझ पर कृपा रहती थी अब वे और ही ढंग के हो गए!!"

इस बात ने कुमार को तरद्दुद में डाल दिया। उन्होंने घूम कर एक तिरछी निगाह लाडिली पर डाली और कहा, "इसका क्या मतलब?"

लाडिली०। सो कहने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। हां जब आपकी शादी हो जायगी तब मैं साफ साफ आपसे कह दूंगी, उस समय जो कुछ आप राय देंगे उसे मैं कबूल भी कर लूंगी!

इस आखिरी बात से कुमार को कुछ हिम्मत बंध गई मगर बैठने की या कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी और 'अच्छा' कह कर वे अपने कमरे में चले आ

तेरहवां बयान

विवाह का सब सामान ठीक हो गया मगर हर तरह की तैयारी हो जाने भी लोगों की मेहनत में कमी नहीं हुई। सब कोई उसी तरह दौड़ धूप और काज में लगे हुए दिखाई दे रहे हैं। महाराज सुरेन्द्रसिंह सभों को लिए हुए चुना गढ़ चले गए। अब इस तिलिस्मी मकान में सिर्फ जरूरत की चीजों के ढेर इन्तजामकार लोगों के डेरे भर ही दिखाई दे रहे हैं। इस मकान में से उन के लिए भी रास्ता बनाया गया है जो हंसते हंसते उस तिलिस्मी इमारत में करेंगे जिसके बनाने की आज्ञा इन्द्रदेव को दी गई थी और जो इस समय बन तैयार हो गई है।

यह इमारत बीस गज लम्बी और इतनी ही चौड़ी थी। ऊंचाई इसकी भग चालीस हाथ से कुछ ज्यादे होगी। चारो तरफ की दीवार साफ और चि थी तथा किसी तरफ कोई दरवाजे का निशान दिखाई नहीं देता था। पूरब ऊपर चढ़ जाने के लिए छोटी सीढ़ियां बनी हुई थीं जिनके दोनों तरफ हिफा के लिए लोहे के सीखचे लगा दिए गये थे। उसी पूरब तरफ वाली दीवार बड़े बड़े हरफों में यह भी लिखा हुआ था :—

"जो आदमी इन सीढ़ियों की राह ऊपर जायगा और एक नजर अन्दर तरफ झांक वहां की कैफियत देख कर इन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे उतर आ उसे एक लाख रुपये इनाम में दिए जायंगे।"

इस इमारत ने चारो तरफ एक अनूठा रंग पैदा कर दिया था। हजारों उस इमारत के ऊपर चढ़ जाने के लिए तैयार थे और हर एक आदमी अपनी लालसा पूरी करने के लिए जल्दी मचा रहा था, मगर सीढ़ी का बन्द था। पहरेदार लोग किसी को ऊपर जाने की इजाजत नहीं देते थे और कह कर सभों को सन्तोष करा देते थे कि बारात वाले दिन दर्वाजा खुलेगा पन्द्रह दिन तक बन्द न होगा।

यहां से चुनारगढ़ की सड़क के दोनों तरफ जो सजावट की गई थी उस एक अनूठापन था। दोनों तरफ रोशनी के लिए जाफरी बनी हुई थी और अच्छे अच्छे तीति के इलोक दरसाए गये थे। बीच बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर खाने के बगल में एक एक मचान था जिसपर एक या दो कैदियों के बैठने

जगह बनी हुई थी। जाफरी के दोनों तरफ दस दस हाथ चौड़ी जमीन में बाग का नमूना तैयार किया गया था और इसके बाद अतिशबाजी लगाई गई थी। आध आध कोस की दूरी पर सर्वसाधारण और गरीब तमाशबीनों के लिए महफिल तैयार की गई थी और उसके लिए अच्छी अच्छी गाने वाली रंडियां और भांड़ मुकर्रर किए गए थे। रात अन्धेरी होने के कारण रोशनी का सामान ज्यादे तैयार किया गया था और वह तिलिस्मी चन्द्रमा जो दोनों राजकुमारों को तिलिस्म के अन्दर से मिला था† चुनारगढ़ किले के ऊंचे कंगूरे पर लगा दिया गया था जिसकी रोशनी इस तिलिस्मी मकान तक बड़ी खूबी और सफाई के साथ पड़ रही थी।

पाठक, दोनों कुमारों के के बारात की सजावट महफिलों की तैयारी, रोशनी और अतिशबाजी की खूबी मेहमानदारी की तारीफ और खैरात की बहुतायत इत्यादि का हाल विस्तार पूर्वक लिख कर पढ़ने वालों का समय नष्ट करना हमारी आत्मा और आदत के विरुद्ध है। आप खुद समझ सकते हैं कि दोनों कुमारों की शादी का इन्तजाम किस खूबी के साथ किया गया होगा, नुमायश की चीजें कैसी अच्छी होंगी, बड़प्पन का कितना बड़ा खयाल किया गया होगा, और बारात किस धूमधाम से निकली होगी। हम आजतक जिस तरह संक्षेप में लिखते आए हैं अब भी उसी तरह लिखेंगे, तथापि हमारी उन लिखावटों से जो व्याह के सम्बन्ध में ऊपर कई दफे मौके मौके पर लिखी जा चुकी हैं आपको अन्दाज के साथ साथ अनुमान करने का हौसला भी मिल जायगा और विशेष सोच विचार की जरूरत न रहेगी। हम इस जगह पर केवल इतना ही लिखेंगे कि—

बारात बड़े धूमधाम से चुनारगढ़ के बाहर हुई। आगे आगे नौबत निशान और उसके बाद सिलसिलेवार फौजी सवार पैदल और तोपखाने वगैरह थे, जिसके बाद ऐसी फुलवारियां थीं जिनके देखने से खुशी और लूटने से दौलत हासिल हो। इसके बाद बहुत बड़े सजे हुए अम्बारीदार हाथी पर दोनों कुमार हाथी ही पर सवार अपने बड़े बुजुर्गों रिश्तेदारों और मेहमानों से घिरे हुए धीरे धीरे दोतर्फी बहार लूटते और दुश्मनों के कलेजों को जलाते हुए जा रहे थे और उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोड़ों पर बैठे हुए जा रहे थे। उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोड़ों पर बैठे हुए बड़े बड़े सर्दार लोग दिखाई दे रहे थे अन्त में फिर फौजी सिपाहियों का सिलसिला था। आगे वाले नौबत निशान से ले कर कुमारों के हाथी तक कई तरह के बाजे वाले अपने अपने मौके से अपना इल्म और हुनर दिखा रहे थे।

† देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति इक्कीसवां भाग, आठवां बयान।

कुशल पूर्वक बारात ठिकाने पहुंची और शास्त्रानुसार कर्म तथा रीति के वाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह का विवाह किशोरी और आनन्दसिंह का कामिनी के साथ हो गया और इस काम में रणधीरसिंह ने भी वित्त के अनुसार दिल खोल कर खर्च किया। दूसरे रोज पहर भर दिन चढ़ने के पहिले ही दोनों बहुओं की रुखसती करा महाराज चुनार की तरफ लौट पड़े।

चुनारगढ़ पहुंचने पर जो कुछ रस्में थीं वे पूरी होने लगीं और मेहमान तथा तमाशबीन लोग तरह तरह के तमाशों और महफिलों का आनन्द लूटने लगे। उधर तिलिस्मी मकान की सीढ़ियों पर लाख रुपया इनाम पाने की लालसा से लोगों ने चढ़ना आरम्भ किया। जो कोई दीवार के ऊपर पहुंच कर अन्दर की तरफ झांकता वह अपने दिल को किसी तरह न सम्हाल सकता और एक दफे खिलखिला कर हंसने के वाद अन्दर की तरफ कूद पड़ता तथा कई घण्टे के बाद उस चबूतरे वाली बहुत बड़ी तिलिस्मी इमारत की राह से बाहर निकल जाता।

बस, विवाह का इतना ही हाल संक्षेप में लिख कर हम इस बयान को पूरा करते हैं और इसके बाद सोहागरात की एक अनूठी घटना का उल्लेख करके इस बाईसवें भाग को समाप्त करेंगे क्योंकि हम दिलचस्प घटनाओं ही का लिखना पसन्द करते हैं।

चौदहवां बयान

आज कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के खुशी का कोई ठिकाना नहीं, क्योंकि तरह तरह की तकलीफें उठा कर एक मुद्दत के वाद इन दोनों की दिली मुरादें हासिल हुई हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और एक सुन्दर सजे हुए कमरे में उम्दा और मुलायम गद्दी पर किशोरी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह बैठे हुए दिखाई देते हैं। यद्यपि कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरह किशोरी के दिल में भी तरह तरह की उमंगें भरी हुई हैं और वह आज इस ढंग पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की पहिली मुलाकात को सौभाग्य का कारण समझती है मगर उस अनोखी लज्जा के पाले में पड़ी है, किशोरी का चेहरा घूंघट की ओट से बाहर नहीं होता जिसे प्रकृति अपने हाथ से औरत की बुद्धि में जन्म ही से दे देती है। यद्यपि आज से पहिले कुंअर इन्द्रजीतसिंह को कई दफे किशोरी देख चुकी है और उनसे बातें भी कर चुकी है तथापि आज पूरी स्वतंत्रता मिलने पर भी यकायक सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती। कुमार तरह तरह की बातें कह कर और समझा कर उसकी लज्जा दूर किया चाहते हैं मगर कृतकार्य नहीं होते। बहुत कुछ कहने सुनने पर कभी कभी किशोरी दो

शब्द बोल देती है मगर वह भी धड़कते हुए कलेजे के साथ। कुमार ने सोच लिया कि यह स्त्रियों की प्रकृति है अतएव उसके विरुद्ध जोर न देना चाहिये, यदि इस समय इसकी हिम्मत नहीं खुलती तो क्या हुआ, घण्टे दो घण्टे, पहर या एक दो दिन में खुल ही जायगी ! आखिर ऐसा ही हुआ।

इसके बाद किस तरह की छेड़छाड़ शुरू हुई या क्या हुआ सो हम नहीं लिख सकते, हां उस समय का हाल जरूर लिखेंगे जब धीरे धीरे सुबह की सुफेदी आसमान पर फैलने लग गई थी और नियमानुसार प्रातःकाल बजाए जाने वाली नफीरी की आवाज ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को नींद से जगा दिया था। किशोरी जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह के बगल में सोई हुई थी घबड़ा कर उठ बैठी और मुंह धोने तथा बिखरे हुए बालों को सुधारने की नीयत से उस सुनहरी चौकी की तरफ बढ़ी जिस पर सोने के बर्तन में गंगाजल भरा हुआ था और जिसके पास ही जल गिराने के लिए एक बड़ा सा चांदी का आफताबा भी रक्खा हुआ था। हाथ में जल लेकर चेहरे पर लगाने और पुनः अपना हाथ देखने के साथ ही किशोरी चौंक पड़ी और घबड़ा कर बोली, "हैं ! यह क्या मामला है ?"

इन शब्दों ने इन्द्रजीतसिंह को चौंका दिया। वे घबड़ा कर किशोरी के पास चले गए और पूछा, "क्यों क्या हुआ ?"

किशोरी०। मेरे साथ यह क्या दिल्लगी की ?"

इन्द्र०। कुछ कहो भी तो क्या हुआ ?

किशोरी०। (हाथ दिखा कर) देखिए यह रंग कैसा है जो चेहरे पर से पानी लगने के साथ ही छूट रहा है।

इन्द्र०। (हाथ देख कर) हां है तो सही ! मगर मैंने तो कुछ भी नहीं किया, तुम खुद सोच सकती हो कि मैं भला तुम्हारे चेहरे पर रंग क्यों लगाने लगा। मगर तुम्हारे चेहरे पर यह रंग आया ही कहां से।

किशोरी०। (पुनः चेहरे पर जल लगा के) यह देखिए है या नहीं।

इन्द्र०। सो तो मैं खुद कह रहा हूं कि रंग जरूर है, मगर जरा मेरी तरफ देखो तो सही !

किशोरी ने जो अब समयानुकूल लज्जा के हाथों से छूट कर ढिठाई का पल्ला पकड़ चुकी थी और जो कई घण्टों की कशमकश और चालचलन की बदौलत बातचीत करने लायक समझी जाती थी, कुमार की तरफ देखा और फिर कहा, "देखिए और कहिए यह किसकी सूरत है ?"

इन्द्र०। (और भी हैरान हो कर) बड़े ताज्जुब की बात है ! और इस रंग के छूटने से तुम्हारा चेहरा भी कुछ बदला हुआ सा मालूम पड़ता है ! अच्छा

जरा अच्छी तरह मुंह धो डालो !

किशोरी ने 'अच्छा' कह मुंह धो डाला और रूमाल से पोछने के बाद कुमार की तरफ देख कर बोली, "बताइए अब कैसा मालूम पड़ता है, रंग अब छूट गया या अभी नहीं ?"

इन्द्र० । (घबड़ा कर) हैं ! अब तो तुम साफ कमलिनी मालूम पड़ती हो ! यह क्या मामला है ?

किशोरी० । मैं कमलिनी तो हई हूं । क्या पहिले कोई दूसरी मालूम पड़ती थी ?

इन्द्र० । बेशक ! पहिले तुम किशोरी मालूम पड़ती थीं, कम रोशनी और लज्जा के कारण यद्यपि बहुत अच्छी तरह तुम्हारी सूरत रात को देखने में न आई तथापि मौके मौके पर कई दफे निगाह पड़ ही गई थी अस्तु किशोरी के सिवाय दूसरी औरत होने का गुमान भी नहीं हो सकता था ! मगर सच तो यों है कि तुमने मुझे बड़ा धोखा दिया !

कम० । (जिसे अब इसी नाम से लिखना उचित है) मैंने धोखा नहीं दिया बल्कि आप मुझे इस बात का जवाब तो दीजिये कि अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो इतनी ढिठाई करने की हिम्मत कैसे पड़ी ? क्योंकि किशोरी आपकी स्त्री नहीं है।

इन्द्र० । क्या पागलपने की सी बातें कर रही हो ! अगर किशोरी मेरी स्त्री नहीं थी तो क्या तुम मेरी स्त्री थीं ?

कम० । अगर आपने मुझे किशोरी समझा था तो आपको मेरे पास से उठ जाना चाहिए था । जब कि आप जानते हैं कि किशोरी कुमार के साथ ब्याही गई है तो आपको उसके पास बैठने या उससे बातचीत करने का क्या हक था ?

इन्द्र० । तो क्या मैं इन्द्रजीतसिंह नहीं हूं ? बल्कि उचित तो यह था कि तुम मेरे पास से उठ जातीं । जब तुम कमलिनी थीं तो तुम्हें पराये मर्द के पास बैठना भी न चाहिए था ।

कम० । (ताज्जुब और कुछ क्रोध का चेहरा बना कर) फिर आप वही बात कहे जाते हैं ? आप अपने को समझ ही क्या रहे हैं ? पहिले आप आईने में अपनी सूरत देखिए और तब कहिए कि आप किशोरी के पति हैं या कमलिनी के ! (ऊपर से आईना उठा और कुमार को दिखा कर) बतलाइये आप कौन हैं ? और मैं क्यों आपके पास से उठ जाती ?

अब तो कुमार के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा, क्योंकि आईने में उन्होंने अपनी सूरत में फर्क पाया । यह तो नहीं कह सकते थे कि किस आदमी की सूरत मालूम पड़ती है क्योंकि ऐसे आदमी को कभी देखा भी न था मगर इतना जरूर कह सकते थे कि सूरत बदल गई और अब मैं इन्द्रजीतसिंह नहीं मालूम पड़ता

इन्द्रजीतसिंह समझ गए कि किसी ने मेरे और कमलिनी के साथ चालबाजी करके दोनों का धर्म नष्ट किया और इसमें वेचारी कमलिनी का कोई कसूर नहीं है मगर फिर भी कमलिनी को आज का सामान देख कर चौंकना चाहिये था। हां ताज्जुब की बात यह है कि इस घर में आने के पहिले मुझे किसी ने टोका भी नहीं! तो क्या इस घर में आने के वाद मेरी सूरत बदली गई? मगर ऐसा भी क्योंकर हो सकता है? इत्यादि बातें सोचते हुए कुमार कमलिनी का मुंह देखने लगे। कमलिनी ने आईना हाथ से रख दिया और पूछा, "अव वताइये आप कौन हैं?" इसके जवाव में इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अव मैं भी अपना मुंह धो डालूं तो कहूं!"

इतना कह कर कुमार ने भी जल से अपना चेहरा साफ किया और रूमाल से पोछने के वाद कमलिनी की तरफ देख के कहा—"अव तुम ही वताओ कि मैं कौन हूं?"

कम०। अरे, यह क्या हुआ! तुम तो वेशक बड़े कुमार हो? मगर तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? तुम्हें जरा भी धर्म का विचार न हुआ? वताओ, अव मैं किस लायक रह गई और क्या कर सकती हूं? लोगों को कैसे अपना मुंह दिखाऊंगी और इस दुनिया में क्योंकर रहूंगी?

इन्द्र०। जिसने ऐसा किया वह वेशक मारे जाने लायक है। मैं उसे कभी न छोड़ूंगा क्योंकि ऐसा होने से मेरा भी धर्म नष्ट हुआ और इस बदनामी को मैं कभी वर्दाश्त नहीं कर सकता, मगर यह तो वताओ कि आज का समान देखकर तुम्हारे दिल में किसी प्रकार का शक पैदा न हुआ?

कम०। क्योंकर शक पैदा हो सकता था जब कि आप ही की तरह मेरे लिए भी 'सोहागरात आज ही तै की गई थी! मैं नहीं कह सकती कि दूसरी तरफ का क्या हाल है! ताज्जुब नहीं कि जिस तरह मैं धोखे में डाली गई उसी तरह किशोरी के साथ भी वेईमानी की गई हो और आपके वदले में किशोरी मेरे पति के पास पहुंचाई गई हो!!

ओ हो! कमलिनी की इस बात ने तो कुमार की रही सही अक्ल भी खो दी! जिस बात का अब तक कुमार के दिल में ध्यान भी न था उसे समझा कर तो कमलिनी ने अनर्थ कर दिया। व्याह हो जाने पर भी किशोरी किसी दूसरे मर्द के पास भेजी जाय, क्या इस बात को कुमार वर्दाश्त कर सकते थे? कभी नहीं! सुनने केसाथ ही मारे क्रोध के उनका शरीर कांपने लगा और वे घवड़ा कर कमलिनी से वोले, "यह तो तुमने ठीक कहा! ताज्जुब नहीं कि ऐसा हुआ हो। लेकिन अगर ऐसा हुआ होगा तो मैं उन दोनों को इस दुनिया से उठा दूंगा!"

इतना कहकर कुमार ने अपनी तलवार उठा ली जो गद्दी पर पड़ी हुई थी और

कमरे के बाहर जाने लगे। उस समय कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और कहा, "कृपानिधान, जरा मेरी एक बात का जवाब दे दीजिये तो यहां से जाइये।"

इन्द्रजीत०। कहो।

कम०। आपका धर्म नष्ट हुआ, खैर कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि धर्मशास्त्र ने मर्दों के लिए कोई कड़ी पाबन्दी नहीं लगाई गई है, मगर औरतों को तो कि... लायक नहीं छोड़ा है। आपके लिए तो प्रायश्चित है मगर मेरे लिए तो कोई प्रा... श्चित भी नहीं जिसे कर मैं सुधर जाऊंगी, इतना जान कर भी मेरा धर्म नष्ट होने पर आपको उतना रंज या क्रोध नहीं हुआ जितना यह सोच कर हुआ कि किशोरी की भी ऐसा ही दशा हुई होगी! ऐसा क्यों? क्या मेरा पति कम... और नामर्द है? क्या वह भी आपको ही तरह क्रोध में न आया होगा? ... इसी तरह वह भी तलवार लेकर मेरी और आपकी खोज में न निकला होगा? आप जल्दी क्यों करते हैं, वह खुद यहां आता होगा क्योंकि वह आपसे ... क्रोधी है, मैं तो खुद उसके सामने अपनी गर्दन झुका दूंगी!!

कुमार को क्रोध पर क्रोध रंज पर रंज और अफसोस पर अफसोस हो... ही जाता था। कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार के दिल में दूसरा रंज पैदा कर लिया। उन्होंने घबड़ा कर एक लम्बी सांस ली और ऊपर की तरफ मुंह करके कहा, "विधाता! तूने यह क्या किया? मैंने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसके बदले में इस खुशी को ऐसे रंज के साथ तूने बदल दिया! अब मैं क्या करूं? क्या अपने हाथ से अपना गला काट कर निश्चिन्त हो जाऊं? मुझे आत्मघात का दोष तो नहीं लगाया जायगा!"

इन्द्रजीतसिंह ने इतना ही कहा था कि कमरे का दर्वाजा जिसे कुमार ... समझते थे खुला और किशोरी तथा कमला अन्दर आती हुई दिखाई पड़ीं। कु... ने समझा कि बेशक किशोरी इसी ढंग का उलाहना लेकर आई होगी, मगर दोनों के चेहरों पर हंसी देख कर कुमार को ताज्जुब हुआ और यह देख कर ताज्जुब और भी बढ़ गया कि किशोरी और कमला को देख कर कमलिनी ... खिला कर हंस पड़ी और किशोरी से बोली—"लो बहिन, आज मैंने तुम्हारे पति को अपना बना लिया!" इसके जवाब में किशोरी बोली, "तुमने पहले ही अपना बना लिया था, आज की बात ही क्या है!!"

* बाईसवां भाग समाप्त *

लहरी प्रेस, वाराणसी।



चन्द्रकान्ता सन्तति

तेईसवां भाग

पहिला बयान

सोहागरात के दिन कुंअर इन्द्रजीतसिंह जैसे तरद्दुद और फेर में पड़ गये थे ठीक वैसा तो नहीं मगर करीब करीब उसी ढंग का बखेड़ा कुंअर आनन्दसिंह के साथ भी मचा, अर्थात् उसी दिन रात के समय जब आनन्दसिंह और कामिनी का एक कमरे में मेल हुआ तो आनन्दसिंह छेड़छाड़ करके कामिनी की शर्म को तोड़ने और कुछ बातचीत करने के लिए उद्योग करने लगे मगर लज्जा और संकोच के बोझ से कामिनी हर तरह दबी जाती थी। आखिर थोड़ी देर की मेहनत और चालाकी तथा बुद्धिमानी की बदौलत आनन्दसिंह ने अपना मतलब निकाल ही लिया और कामिनी भी जो बहुत दिनों से दिल के खजाने में आनन्दसिंह की मुहब्बत को हिफाजत के साथ छिपाये हुए थी, लज्जा और डर को बिदाई का बीड़ा दे कुमार से बातचीत करने लगी।

जब रात लगभग दो घण्टे के बाकी रह गई तो कामिनी जाग पड़ी और घबराहट के साथ चारो तरफ देख के सोचने लगी कि कहीं सवेरा तो नहीं हो गया क्योंकि कमरे के सभी दर्वाजे बन्द रहने के कारण आसमान दिखाई नहीं देता था। उस समय आनन्दसिंह गहरी नींद में सो रहे थे और उनके घुर्राटे की आवाज से मालूम होता था कि वे अभी दो तीन घंटे तक बिना जगाये नहीं जाग सकते अस्तु कामिनी अपनी जगह से उठी और कमरे की कई छोटी छोटी खिड़कियों (छोटे दर्वाजों) में से जो मकान के पिछली तरफ पड़ती थीं एक खिड़की खोल कर आसमान की तरफ देखने लगी। इस तरफ से पतित-पावनी भगवती जाह्नवी की तरल तरंगों की सुन्दर छटा दिखाई देती थी जो

उदास और बुझे दिल को भी एक दफे प्रसन्न करने की सामर्थ्य रखती थी। इस समय अंधकार के कारण कामिनी उस छटा को नहीं देख सकती थी और इस सबब से आसमान की तरफ देख कर भी वह इस बात का पता न लगा सकी कि अब रात कितनी बाकी है, मगर सवेरा होने में अभी देर है इतना विचार कर उसके दिल को कुछ भरोसा हुआ। उसी समय सरकारी पहरे वाले ने घड़ी बजाई जिसे सुन कर कामिनी ने निश्चय कर लिया कि रात अभी दो घंटे से कम बाकी नहीं है। उसने उसी तरफ की एक और खिड़की खोल दी और उस जगह चली गई जहाँ चौकी के ऊपर गंगा-जमुनी लोटे में जल रक्खा हुआ था। उसी चौकी पर से एक रूमाल उठा लिया और उसे गीला करके अपना मुँह अच्छी तरह पोछने अथवा धोने के बाद रूमाल खिड़की के बाहर फेंक दिया और तब उस जगह चली आई जहाँ आनन्दसिंह गहरी नींद में सो रहे थे।

कामिनी ने आंचल के कपड़े से एक मामूली बत्ती बनाई और नाक में डाल कर उसके जरिये से दो तीन छींकें मारीं जिसकी आवाज से आनन्दसिंह की आँख खुल गई और उन्होंने अपने पास कामिनी को बैठे हुए देख कर ताज्जुब से कहा, "हैं, तुम बैठी क्यों हो? खैरियत तो है!"

कामिनी०। जी हाँ मेरी तबीयत तो अच्छी है मगर तरद्दुद और सोच के मारे नींद नहीं आ रही है। बहुत देर से जाग रही हूँ।

आनन्द०। (उठ कर) इस समय भला कौन से तरद्दुद और सोच ने तुम्हें आ घेरा?

कामिनी०। क्या कहूँ, कहते हुए भी शर्म मालूम पड़ती है?

आनन्द०। आखिर कुछ कहो तो सही, शर्म कहाँ तक करोगी?

कामिनी०। खैर मैं कहती हूँ मगर आप बुरा तो न मानेंगे!

आनन्द०। मैं कुछ भी बुरा न मानूंगा, तुम्हें जो कुछ कहना है कहो।

कामिनी०। बात केवल इतनी ही है कि मैं छोटे कुमार से एक दिल्लगी कर बैठी हूँ मगर आज उस दिल्लगी का भेद जरूर खुल गया होगा, इसी से सोच रही हूँ कि अब क्या करूँ? इस समय कामिनी बहिन से भी मुलाकात नहीं हो सकती जो उनको कुछ समझा बुझा देती।

आनन्द०। (ताज्जुब में आकर) तुमने कोई भयानक सपना तो नहीं देखा जिसका असर अभी तक तुम्हारे दिमाग में घुसा हुआ है? यह मामला क्या है, तुम कैसी बातें कर रही हो!

कामिनी० । नहीं नहीं कोई विशेष बात नहीं है और मैंने कोई भयानक पना भी नहीं देखा, बात केवल इतनी ही है कि मैं हंसी हंसी में छोटे कुमार कह चुकी हूँ कि 'मेरी शादी अभी तक नहीं हुई है और मैं प्रतिज्ञा कर चुकी कि व्याह कदापि न करूँगी' । अब आज ताज्जुब नहीं कि कामिनी बहिन ने रा सच्चा भेद खोल दिया हो और कह दिया हो कि 'लाडिली की शादी तो मलिनी की शादी के साथ ही साथ अर्थात् दोनों की एक ही दिन हो चुकी है र आज उसको भी सोहागरात है' । अगर ऐसा हुआ तो मुझे बड़ी शर्म ...

आनन्द० । (ताज्जुब और घबराहट से) तुम तो पागलों की सी बातें र रही हो । आखिर तुमने अपने को और मुझको समझा ही क्या है ? जरा ट हटा कर बातें करो । तुम्हारा मुंह तो दिखाई ही नहीं देता !!

कामिनी० । नहीं मुझे इसी तरह बैठे रहने दीजिए । मगर आपने क्या कहा कुछ भी नहीं समझी, इसमें पागलपने की भला कौन सी बात है ?

आनन्द० । तुमने जरूर कोई सपना देखा है जिसका असर अभी तक तुम्हारे ाग में बसा हुआ है और तुम अपने को लाडिली समझ रही हो । ताज्जुब नहीं लाडिली ने तुमसे वे बातें कही हों जो उसने मुझसे दिल्लगी के ढंग पर की थीं।

कामिनी० । मुझे आपकी बातों पर ताज्जुब मालूम पड़ता है । मैं समझती क आप ही ने कोई अनूठा स्वप्न देखा है और यह भी देखा है कि कामिनी के बगल में पड़ी हुई है जिसका ख्याल अभी तक बना हुआ है और मुझे ा कामिनी समझ रहे हैं । भला सोचिए तो सही कि छोटे कुमार (आनन्द-) को छोड़ कर कामिनी आपके पास आने ही क्यों लगी ? कहीं आप से दिल्लगी तो नहीं कर रहे हैं ?

कामिनी की आखिरी बात को सुन कर आनन्दसिंह बहुत बेचैन हो गये और ने घबड़ा कर कामिनी के मुँह से घूंघट हटा दिया, मगर शमादान की नी में उसका खूबसूरत चेहरा देखते ही वे चौंक पड़े और बोले—"हैं ! यह ला क्या है ? लाडिली को मेरे पास आने की क्या जरूरत थी ? बेशक तुम डिली मालूम पड़ती हो ? कहीं तुमने अपना चेहरा रंगा तो नहीं है ?"

कामिनी० । (घबराहट के ढंग पर) आपकी बातें तो मेरे दिल में हौल पैदा ती हैं ! न मालूम आप क्या कह रहे हैं और इस बात को क्यों नहीं सोचते कामिनी को आपके पास आने की जरूरत ही क्या थी !

आनन्द० । (बेचैनी के साथ) पहिले तुम अपना चेहरा धो डालो तो मैं से बातें करूं ! तुम मुझे जरूर धोखा दे रही हो और अपनी सूरत कामिनी

की सी बना कर मेरी जान सांसत में डाल रही हो ! मैं अभी तक तुम्हें का
समझ रहा था और समझता हूँ।

कामिनी०। (ताज्जुब से आनन्दसिंह की सूरत देख कर) आपकी
तो कुछ विचित्र ढंग की हो रही हैं। जब आप मुझे कामिनी समझते
अपने को भी जरूर आनन्दसिंह समझते होंगे ?

आनन्द०। इसमें शक ही क्या है ? क्या मैं आनन्दसिंह नहीं हूँ ?

कामिनी०। (अफसोस से हाथ मल कर) हे परमेश्वर ! आज इनको
हो गया है !!

आनन्द०। बस अब तुम अपना चेहरा धो डालो तो मुझसे बातें करो
नहीं जानतीं कि इस समय मेरे दिल की कैसी अवस्था है !

कामिनी०। ठहरिये. ठहरिये, मैं बाहर जाकर सभों को इस बा
खबर कर देती हूँ कि आपको कुछ हो गया है। मुझे आपके पास बै
लगता है ! हे परमेश्वर !!

आनन्द०। तुम नाहक मेरी जान को दुःख दे रही हो ! पास ही तो
पड़ा है, अपना चेहरा क्यों नहीं धो डालतीं। मुझे ऐसी दिल्लगी अच्छ
मालूम होती, खैर अब बहुत हो गया, तुम उठो !

कामिनी०। मेरे चेहरे में क्या लगा है जो धो डालूँ ? आप ह
नहीं अपना चेहरा धो डालते ! क्या मुंह में पानी लगा कर मैं लाडिली
दूसरी ही औरत बन जाऊँगी ? या आप मुँह धो कर छोटे कुमार बन

आनन्द०। (बेचैनी से बिगड़ कर) बस बस, अब मैं बरदाश्त
सकता और न ज्यादे देर तक ऐसी दिल्लगी सह सकता हूँ। मैं हुक्म
कि तुम तुरत अपना चेहरा धो डालो नहीं तो तुम्हारे साथ जबर्द
जायगी, फिर पीछे दोष न देना !

यह सुनते ही कामिनी घबड़ा कर उठ खड़ी हुई और यह कहती
'आज भोर ही भोर ऐसी दुर्दशा में फँसी हूँ, न मालूम दिन कैसा
उस चौकी के पास चली गई जिस पर गंगाजमनी लोटा जल से
रक्खा था और पास ही में एक बड़ा सा आफताबा भी था। पानी
चेहरा साफ किया और दो चार कुल्ला भी करने के बाद रूमाल से
आनन्दसिंह से बोली, "कहिये मैं वही हूँ कि बदल गई ?"

कामिनी के साथ ही साथ आनन्दसिंह भी बिछावन पर से उठ
तक चले आये थे जहाँ पानी और आफताबा रक्खा हुआ था। जब

मुंह धोकर उनकी तरफ देखा तो कुमार के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा र वह पत्थर की मूरत बन कर एकटक उसकी तरफ देखते खड़े रह गये। स समय खिड़कियों में से आसमान पर सुबह की सुफेदी फैली हुई दिखाई दे ही थी और कमरे में भी रोशनी की कमी न थी।

कामिनी०। (कुछ चिढ़ी हुई आवाज से) कहिये कहिये, क्या मैं मुंह धोने कुछ बदल गई ? आप बोलते क्यों नहीं ?

आनन्द०। (एक लम्बी सांस लेकर) अफसोस ! तुम्हारे घूंघट ने मुझे धोखा या। अगर मिलाप के पहिले तुम्हारी सूरत देख लेता तो धर्म नष्ट क्यों होता !

कामिनी०। (जिसे अब हम लाडिली लिखेंगे, क्योंकि यह वास्तव में लाडिली है) फिर भी आप उसी ढंग की बातें कर रहे हैं और अभी तक अपने को कुमार समझते हैं। इतना हिलने डोलने पर भी आपके दिमाग से स्वप्न का र न निकला। (कमरे में लटकते हुए एक बड़े आईने की तरफ उंगली से इशारा के) अब आप उसमें अपना चेहरा देख लीजिये तो मुझसे बातें कीजिये !

कुंअर आनन्दसिंह भी यही चाहते थे, अस्तु वे उस आईने के सामने चले और बड़े गौर से अपनी सूरत देखने लगे। लाडिली भी उनके साथ ही उस आईने के पास चली गई और जब वे ताज्जुब के साथ आईने में अपना रा देख रहे थे तो बोली, "कहिये अब भी आप अपने को छोटे कुमार ही झते हैं या और कोई ?"

क्रोध के साथ ही साथ शर्मिन्दगी ने भी आनन्दसिंह पर अपना कब्जा कर था और वे घबड़ा कर अपनी पोशाक पर ध्यान देने लगे, मगर उसमें किसी की खराबी न पाकर उन्होंने पुनः लाडिली की तरफ देखा और कहा, क्या मामला है ? मेरी सूरत किसने बदली ?"

लाडिली०। (ताज्जुब और घबराहट के ढंग पर) क्या आप अपनी सूरत ली हुई समझते हैं ?

आनन्द०। बेशक !!

लाडिली०। (अफसोस के साथ हाथ मल कर) अफसोस ! अगर यह ठीक है तो बड़ा ही गजब हुआ !!

आनन्द०। जरूर ऐसा ही है, मैं अभी अपना चेहरा धोता हूं !

इतना कह कर कुंअर आनन्दसिंह उस चौकी के पास चले गये जिस पर नी रक्खा हुआ था और अपना चेहरा धोने लगे। पानी पड़ते ही हाथ पर उतर आया जिस पर निगाह पड़ते ही लाडिली चौंकी और रंज के साथ

बोली, "बेशक चेहरा रंगा हुआ है! हाय बड़ा ही गजब हो गया! मैं मारी गई। मेरा धर्म नष्ट हुआ। अब मैं अपने पति के सामने किस जाऊँगी और अपनी हमजोलियों की बातों का क्या जवाब दूंगी! के लिये यह बड़े ही शर्म की बात है, नहीं नहीं, बल्कि औरतों के लिये पातक है कि पराये मर्द का संग करें। सच तो यों है कि पराये मर्द का छू जाने से भी प्रायश्चित् लगता है और बात का तो कहना ही क्या है! मैं बर्बाद हो गई और कहीं की भी न रही। इसमें कोई शक नहीं कि जान बूझ कर मुझे मिट्टी में मिला दिया!

आनन्द०। (अच्छी तरह चेहरा धोने के बाद रूमाल से मुंह पोछ कर) कहा? क्या जान बूझ कर मैंने तुम्हारा धर्म नष्ट किया?

लाडिली०। बेशक ऐसा ही है, मैं इस बात की दुहाई दूंगी और से इन्साफ चाहूँगी।

आनन्द०। क्या मेरा धर्म नष्ट नहीं हुआ?

लाडिली०। मर्दों के धर्म का क्या कहना है और उसका बिगड़ना जो दस दस पन्द्रह पन्द्रह ब्याह से भी ज्यादे कर सकते हैं! बर्बादी तो के लिये है। इसमें कोई शक नहीं कि आपने जान बूझ कर मेरा किया! जब आप छोटे कुमार ही थे तो आपको मेरे पास से उठ जाना था या मेरे पास बैठना ही मुनासिब न था।

आनन्द०। मैं कसम खा कर कह सकता हूँ कि मैंने तुम्हारी सूरत के सबब से अच्छी तरह नहीं देखी, एक दफे ऐंचातानी में निगाह गयी थी तो तुम्हें कामिनी ही समझा था, और इसके लिये भी मैं कसम हूँ कि मैंने तुम्हें धोखा देने के लिये जान बूझ कर अपनी सूरत नहीं बल्कि मुझे इस बात की खबर भी नहीं कि मेरी सूरत किसने रंगी या

लाडिली०। अगर आपका यह कहना ठीक है तो समझ लीजिये कि गजब हो गया! मेरे साथ ही साथ कामिनी भी बर्बाद हो गई होगी धर्मात्मा ने धोखा देकर मेरा संग आपके साथ करा दिया है उसने को भी जो आपके साथ ब्याही गई है, जरूर धोखा देकर मेरे पति के सुला दिया होगा!

यह एक ऐसी बात थी जिसे सुनते ही आनन्दसिंह का रंग बदल रंज और अफसोस की जगह क्रोध ने अपना दखल जमा लिया और तथा ठंढी रंगों में ... से हसरत पैदा हो गई जिससे बदन कांपने

उन्होंने लाल आँखें करके लाडिली की तरफ देख के कहा—"क्या कहा? तुम्हारे पति के पलंग पर कामिनी! यह किसकी मजाल है कि……"

लाडिली०। ठहरिये ठहरिये, आप गुस्से में न आ जाइये। जिस तरह आप अपनी और कामिनी की इज्जत समझते हैं उसी तरह मेरी और मेरे पति की इज्जत पर भी आपको ध्यान देना चाहिये। मेरी बर्बादी पर तो आपको गुस्सा न आया और कामिनी का भी मेरा ही सा हाल सुन कर आप जोश में आकर उछल पड़े, अपने आपे से बाहर हो गये और आपको बदला लेने की धुन सवार हो गई! सच है दुनिया में किसी बिरले हीं महात्मा को हमदर्दी और इन्साफ का ध्यान रहता है, दूसरे पर जो कुछ बीती है उसका अंदाजा किसी को तब तक नहीं लग सकता जब तक उस पर भी वैसी ही न बीते। जिसने कभी एक उपवास भी नहीं किया है वह अकाल के मारे भूखे गरीबों पर उचित और सच्ची हमदर्दी नहीं कर सकता, यों उनके उपकार के लिये भले ही बहुत कुछ जोश दिखाये और कुछ कर भी बैठे। ताज्जुब नहीं कि हमारे बुजुर्ग और बड़े लोग इसी खयाल से बहुत से व्रत चला गये हों और इससे उनका मतलब यह भी हो कि स्वयं भूखे रह कर देख लो तब भूखों की कदर कर सकोगे। दूसरे के गले पर छुरी चला देना कोई बड़ी बात नहीं है मगर अपने गले पर सूई से भी निशान नहीं किया जाता। जो दूसरों की बहू बेटियों को झांका करते हैं वे अपनी बहू बेटियों का झांका जाना सहन नहीं कर सकते। इसी से समझ लीजिये की मेरी बर्बादी पर आपको अगर कुछ खयाल हुआ तो केवल इतना ही कि बस कसम खा कर अफसोस करने लगे और सोचने लगे कि मेरे दिल से किसी तरह इस बात का रंज निकल जाय मगर कामिनी का भी मेरे ही ऐसा हाल सुन कर म्यान के बाहर हो गये! क्या यही इन्साफ है और यही हमदर्दी है? इसी दिल को ले कर आप राजा बनेंगे और राज काज करेंगे!!

लाडिली की जोश भरी बातें सुन कर आनन्दसिंह सहम गये और शर्म ने उनकी गर्दन झुका दी। वह सोचने लगे कि क्या करूँ और इसकी बातों का क्या जवाब दूँ! इसी समय कमरे का दर्वाजा खुला (जो शायद धोखे में खुला रह गया होगा) और इन्द्रदेव की लड़की इन्दिरा को साथ लिये हुए कामिनी आती दिखाई पड़ी।

लाडिली०। लीजिए, कामिनी बहिन भी आ पहुँचीं! ताज्जुब नहीं कि ये भी अपना हाल कहने के लिए आई हों, (कामिनी से) लो बहिन आज हम तुम्हारे बराबर हो गए!

कामिनी॰। बराबर नहीं बल्कि बढ़ के !!

दूसरा बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। महल के अन्दर एक सजे हुए कमरे में एक तरफ रानी चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी हुई हैं और उनसे थोड़ी ही दूर पर राजा बीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह और भैरोसिंह बैठे आपुस में बातचीत कर रहे हैं।

चन्द्र॰। (बीरेन्द्र से) सच्चा सच्चा हाल मालूम होना तो दूर रहा इस बात का किसी तरह कुछ गुमान भी न हुआ। इस समय मैं दुलहिनों के सोहागरात का इन्तजाम देख सुन कर यहाँ आई और दिन भर की थकावट से सुस्त होकर पड़ रही, जी में आया कि घंटे दो घंटे सो रहूँ, मगर इसी बीच में चपला बहिन आ पहुँची और बोली, "लो बहिन, मैं तुम्हें एक अनूठा हाल सुनाती हूँ जिसकी अब तक हम लोगों को कुछ खबर ही न थी!" बस इतना कह कर बैठ गई और कहने लगीं कि 'कमलिनी और लाडिली की शादी तिलिस्म के अन्दर ही इन्द्रजीत और आनन्द के साथ हो चुकी है जिसके बारे में अब तक हम लोगों को किसी ने कुछ भी नहीं कहा, इस समय इन्होंने (भैरोसिंह) ने मुझसे कहा है'। सुनते ही मैं धक्क हो गई कि या राम! वह कौन सी बात थी जिसे अभी तक सब कोई छिपाये बैठे रहे !!

चपला॰। (भैरोसिंह की तरफ इशारा करके) सामने तो बैठा हुआ है, पूछिये कि इस समय के पहिले कभी कुछ कहा था! यद्यपि दोनों की शादी इसके सामने ही तिलिस्म के अन्दर हुई थीं।

वीरेन्द्र॰। मुझे भी इस विषय में किसी ने कुछ नहीं कहा था, अभी थोड़ी देर हुई कि गोपालसिंह ने यह सब हाल पिताजी से बयान किया तब मालूम हुआ।

चन्द्र॰। यही सुन के तो मैंने आपको तकलीफ दी क्योंकि आपकी जुबानी सुने बिना मेरी दिलजमई नहीं हो सकती।

वीरेन्द्र॰। जो कुछ तुमने सुना सब ठीक है।

चन्द्र॰। मजा तो यह है कि लड़कों ने भी मुझसे इस बात की कुछ चर्चा नहीं की।

वीरेन्द्र॰। लड़कों को तो खुद ही इस बात की खबर नहीं है कि उनकी शादी कमलिनी और लाडिली के साथ हुई थी।

चन्द्र० । यह तो आप और भी ताज्जुब की बात कहते हैं । यह भला कैसे हो सकता है कि जिनकी शादी हो उन्हीं को पता न लगे कि मेरी शादी हो गई है ? इस पर कौन विश्वास करेगा !

वीरेन्द्र० । बात ही कुछ ऐसी हो गई थी और यह शादी जानबूझ कर किसी मतलब से छिपाई गई थी । (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) अब ये खुलासा हाल तुमसे बयान करेंगे तब तुम समझ जाओगी कि ऐसा क्यों हुआ ।

गोपाल० । मैं सब हाल आपसे खुलासा बयान करता हूं और आशा करता हूं कि आप मेरा कसूर माफ करेंगी क्योंकि यह सब मेरी ही करतूत है और मैंने ही यह शादी कराई है ।

चन्द्र० । अगर तुमने ऐसा किया तो छिपाने की क्या जरूरत थी ? क्या हम लोग तुमसे रंज हो जाते ? या हमलोग इस बात को नहीं समझते कि जो कुछ तुम करोगे अच्छा ही समझ के करोगे !

गोपाल० । ठीक है मगर किया क्या जाय, इस बात को छिपाये बिना काम नहीं चलता था, यही तो सबब हुआ कि खुद दोनों कुमारों को भी इस बात का पता न लगा कि उनकी शादी फलाने के साथ हो गई है ।

चन्द्र० । आखिर ऐसा किया क्यों गया सो तो कहो !

गोपाल० । इसका सबब यह है कि एक दिन कमला मेरे पास आई और बोली कि 'मैं आपसे एक जरूरी बात कहती हूँ जिस पर आपको विशेष ध्यान देना होगा' । मैंने पूछा—"क्या !" इस पर उसने जवाब दिया कि कमलिनी ने जो कुछ अहसान हम लोगों पर, खास करके दोनों कुमारों तथा किशोरी और कामिनी पर किये हैं वह किसी से छिपे नहीं हैं । किशोरी का ख्याल है कि 'इसका बदला किसी तरह अदा हो ही नहीं सकता' और बात भी ऐसी ही है, अस्तु किशोरी ने बात ही बात में अपने दिल का हाल मुझसे भी कह दिया और इस बारे में जो कुछ उसने सोच रक्खा था वह भी बयान किया । किशोरी कहती है कि अगर मैं शादी न करूं या शादी होने के पहले ही इस दुनिया से उठ जाऊँ तो उसके अहसान और ताने से कुछ बच सकती हूं । इस विषय पर जब मैंने किशोरी को बहुत कुछ समझाया तो बोली कि खैर अगर मेरी शादी के पहिले कमलिनी की शादी कुंअर इन्द्रजीतसिंह के साथ हो जायेगी तब मैं सुख से अपनी जिन्दगी बिता सकूंगी और उसके अहसान से भी हलकी हो जाऊंगी क्योंकि ऐसा होने से कमलिनी को पटरानी की पदवी मिलेगी और उसी का लड़का गद्दी का मालिक समझा जायेगा । मैं छोटी रानी और कमलिनी की

लौंडी होकर रहूँगी तभी मेरे दिल को तस्कीन होगा और मैं समझूंगी कमलिनी के अहसान का बोझ मेरे सिर से उतर गया।

चन्द्र०। शाबाश! शाबाश!

बीरेन्द्र०। बेशक किशोरी ने बड़े हौसले की और लासानी बात सोची!

चपला०। बेशक यह साधारण बात नहीं है, यह बड़े कलेजे वाली औरत का काम है, और इससे बढ़ कर किशोरी कुछ कर ही नहीं सकती थी।

गोपाल०। मैंने जब कमला की जुबानी यह बात सुनी तो दंग हो गया और मन में किशोरी की तारीफ करने लगा। सच तो यों है कि यह बात मेरे दिल में भी जम गई। अस्तु मैंने कमला से वादा तो कर दिया कि 'ऐसा ही होगा' मगर तरद्दुद में पड़ गया कि यह काम क्योंकर पूरा होगा, क्योंकि यह बात बड़ी ही कठिन बल्कि असम्भव थी कि इन्द्रजीतसिंह और कमलिनी इस राय को मंजूर करें। इसके अतिरिक्त यह भी उम्मीद नहीं हो सकती थी कि हमारे महाराज इस बात को स्वीकार कर लेंगे।

भैरो०। बेशक यह कठिन काम था, इन्द्रजीतसिंह इस बात को कभी मंजूर न करते।

गोपाल०। कई दिन के सोच विचार के बाद मैंने और भैरोसिंह ने मिल कर एक तर्कीब निकाल ली और किसी न किसी तरह कमलिनी और लाडिली को इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दोनों की शादी इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ करा दी। उन दिनों कमलिनी के पिता बलभद्रसिंहजी भूतनाथ की मदद से छूट कर यहां (अर्थात् बगुले वाले तिलिस्मी मकान में) आ चुके थे। अस्तु मैं तिलिस्म के अन्दर ही अन्दर यहां आया और बलभद्रसिंहजी को कन्यादान करने के लिए समझा बुझा कर जमानिया ले गया॥। उस समय भूतनाथ बहुत परेशान हुआ था और भैरोसिंह मेरे साथ था। हम लोग जब इस मकान में आये थे तो भूतनाथ और बलभद्रसिंहजी के नाम की एक चीठी दोनों की चारपाई पर रख के चले गये थे। बलभद्रसिंहजी की चीठी में उनकी दिलजमई के लिए एक अँगूठी भी रक्खी थी जो उन्होंने ब्याह के पहले मुझे बतौर सगुन के दी थी। इसके बाद दूसरे दिन फिर पहुँचे और भूतनाथ को अपना पूरा पूरा परिचय देकर बलभद्रसिंहजी को ले गये। उनके जाने का सबब भूतनाथ को ठीक ठीक कह दिया था मगर साथ ही इसके इस बात की भी ताकीद कर दी थी कि यह हाल किसी को मालूम न होवे।

॥ देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति अठारहवां भाग, आठवां बयान।

इतना कहते कहते गोपालसिंह कुछ देर के लिए रुके और फिर इस तरह कहने लगे :—

"पहिले तो मुझे इस बात की चिन्ता थी कि वलभद्रसिंह मेरा कहना मानेंगे या नहीं मगर उन्होंने इस बात को बड़ी खुशी से मंजूर कर लिया। अपनी लड़कियों से मिल कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए और हम लोगों पर जो कुछ आफतें बीत चुकी थीं उन्हें सुन सुना कर अफसोस करते रहे, फिर अपनी बीती सुना कर प्रसन्नता पूर्वक हम लोगों के काम में शरीक हुए अर्थात् हँसी खुशी के साथ उन्होंने कमलिनी और लाडिली का कन्यादान कर दिया*। इस काम में भैरोसिंह को भी कम तरद्दुद नहीं उठाना पड़ा बल्कि दोनों कुमार इनसे रञ्ज भी हो गये थे क्योंकि इनकी जुबानी असल बातों का उन्हें पता नहीं लगता था, अस्तु शादी हो जाने के बाद इस बात का बन्दोबस्त किया गया कि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस अनूठे व्याह को भूल जायँ तथा इन्द्रानी और आनन्दी से मिलने की उम्मीद न रक्खें।"

इसके बाद राजा गोपालसिंह ने और भी बहुत सा हाल बयान किया जो हम सन्तति के अट्ठारहवें भाग में लिख आये हैं और सब बातें सुन कर अन्त में चन्द्रकान्ता ने कहा, "खैर जो हुआ अच्छा ही हुआ, हम लोगों के लिए तो जैसे किशोरी और कामिनी हैं वैसे ही कमलिनी और लाडिली हैं, मगर किशोरी के नाना को यदि इस बात का कुछ रंज हो तो ताज्जुब नहीं।"

बीरेन्द्र०। पिताजी भी यही कहते थे। मगर इसमें कोई शक नहीं कि किशोरी ने परले सिरे की हिम्मत दिखलाई!

गोपाल०। साथ ही इसके यह भी समझ लीजिये कि कमलिनी ने भी इस बात को सहज ही में स्वीकार नहीं कर लिया, इसके लिए भी हम लोगों को बहुत कुछ उद्योग करना पड़ा। बात यह है कि कमलिनी भी किशोरी को जान से ज्यादे चाहती और मानती है।

चन्द्र०। मगर मुझे इस बात का अफसोस जरूर है कि इन दोनों की शादी में किसी तरह की तैयारी नहीं की गई और न कुछ धूमधाम ही हुई।

इसके बाद बहुत देर तक इन सभों में बातचीत होती रही।

तीसरा बयान

अब हम कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरफ चलते और देखते हैं कि उधर क्या हो रहा है।

---

* देखिये अट्ठारहवां भाग, बारहवां बयान।

किशोरी और कमलिनी की बातचीत सुन कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह से रहा न गया और उन्होंने बेचैनी के साथ उन दोनों की तरफ देख कर कहा, "क्या तुम लोगों ने मुझे सताने और दुःख देने के लिए कसम ही खा ली है? क्यों मेरे दिल में हौल पैदा कर रही हो? असल बात क्यों नहीं बतातीं!"

किशोरी०। (मुस्कुराती हुई) यद्यपि मुझे आपसे शर्म करनी चाहिए मगर कमला और कमलिनी बहिन ने मुझे बेहया बना दिया, तिस पर आज की दिल्लगी मुझे हंसाते हंसाते बेहाल कर रही है। आप बिगड़े क्यों जाते हैं। ठहरिये ठहरिये, जल्दी न कीजिये, और समझ लीजिये कि मेरी शादी आपके साथ नहीं हुई बल्कि कमलिनी की शादी आपके साथ हुई है।

कुमार०। सो कैसे हो सकता है! और मैं क्योंकर ऐसी अनहोनी बात मान लूं।

कमलिनी०। अब आपकी हालत बहुत ही खराब हो गई! क्या कहूँ, मैं तो आपको अभी और छकाती मगर दया आती है इसलिए छोड़ देती हूँ। इसमें कोई शक नहीं कि मैंने आपसे दिल्लगी की है मगर इसके लिए मैं आपसे इजाजत ले चुकी हूं! (अपनी तर्जनी उंगली की अंगूठी दिखा कर) आप इसे पहिचानते हैं!

कुमार०। हां हां, मैं इस अंगूठी को खूब पहिचानता हूं, तिलिस्म के अन्दर यह अंगूठी मैंने इन्द्रानी को दी थी, मगर अफसोस।

कमलिनी०। अफसोस न कीजिए, आपकी इन्द्रानी मरी नहीं बल्कि जीती जागती आपके सामने खड़ी है।

कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार के दिल से आश्चर्य और दुःख को धोकर साफ कर दिया और उन्होंने खुशी खुशी कमलिनी और किशोरी का हाथ पकड़ कर कहा, "क्या यह सच है?"

किशोरी०। जी हां सच है।

कुमार०। और जिन दोनों को मैंने मरी हुई देखा था वे कौन थीं?

किशोरी०। वे वास्तव में माधवी और मायारानी थीं जो तिलिस्म के अन्दर ही अपनी बदकारियों का फल भोग कर मर चुकी थीं। आपके दिल से उस शादी का खयाल उठा देने के लिए ही उनकी लाशें इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दिखा दी गई थीं, मगर वास्तव में इन्द्रानी यहीं मौजूद है और आनन्दी लाडिली थी जो आनन्दसिंह के साथ ब्याही गई थी। इस समय उधर भी कुछ ऐसा ही रंग मचा हुआ है।

कुमार० । तुम्हारी बातों ने इस समय मुझे प्रसन्न कर दिया । विशेष प्रसन्नता तो इस बात से होती है कि तुम खुले दिल से इन बातों को बयान कर रही हो और कमलिनी में तथा तुममें पूरे दर्जे की मुहब्बत मालूम होती है । ईश्वर इस मुहब्बत को बराबर इसी तरह बनाए रहे । (कमलिनी से) मगर तुमने मुझे बड़ा ही धोखा दिया, ऐसी दिल्लगी भी कभी किसी ने नहीं सुनी होगी ! आखिर ऐसा किया ही क्यों !

कमलिनी० । अब क्या सब बातें खड़े खड़े ही खतम होंगी और बैठने की इजाजत न दी जायगी ।

कुमार० । क्यों नहीं, अब बैठ कर हँसी दिल्लगी करने और खुशी मनाने के सिवाय और हम लोगों को करना ही क्या है !

इतना कह कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह गद्दी पर बैठ गए और हाथ पकड़ कर किशोरी और कमलिनी को अपने दोनों बगल में बैठा लिया । कमला आज्ञा पाकर बैठा ही चाहती थी कि दर्वाजे पर ताली बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही वह बाहर चली गई और तुरन्त लौट कर बोली, "पहरे वाली लौंडी कहती है कि भैरोंसिंह बाहर खड़े हैं ।"

कुमार० । (खुश होकर) हां हां, उन्हें जल्द ले आओ, इन हजरत ने मेरे साथ क्या कम दिल्लगी की है ? अब तो मैं सब बातें समझ गया । भला आज उन्हें इत्तिला कराके मेरे पास आने का दिन तो नसीब हुआ ।

कुमार की बातें सुन कर कमला पुनः बाहर चली गई और कमलिनी तथा किशोरी कुमार के बगल से कुछ हट कर बैठ गईं, इतने ही में भैरोंसिंह भी आ पहुंचे ।

कुमार० । आइए आइए, आपने भी मुझे बहुत छकाया है पर क्या चिन्ता है, समय मिलने पर समझ लूँगा !

भैरो० । (हंस कर) जो कुछ किया (किशोरी की तरफ बता कर) इन्होंने किया, मेरा कोई कसूर नहीं !

कुमार० । खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब मुझे सच्चा सच्चा हाल तो सुना दो कि तिलिस्म के अन्दर इस तरह की रूखी फीकी शादी क्यों कराई गई और इस काम के अगुआ कौन महापुरुष हैं ?

भैरो० । (किशोरी की तरफ इशारा करके) जो कुछ किया सब इन्होंने किया । यही सब काम में अगुआ थीं और राजा गोपालसिंह इस काम में इनकी मदद कर

रहे थे। उन्हीं की आज्ञानुसार मुझे भी मजबूर होकर इन लोगों का साथ देना पड़ा था। इसका खुलासा हाल आप कमला से पूछिए, यही ठीक ठीक बतावेगी।

कुमार०। (कमला से) खैर तुम्हीं बताओ कि क्या हुआ ?

कमला०। (किशोरी से) कहो बहन, अब तो मैं साफ कह दूँ ?

किशोरी०। अब छिपाने की जरूरत ही क्या है ?

कमला ने इस तरह से कहना शुरू किया, "किशोरी बहिन ने मुझसे कई दफे कहा कि 'तू इस बात का बन्दोबस्त कर कि किसी तरह मेरी शादी के पहिले ही कमलिनी की शादी कुमार के साथ हो जाय' मगर मेरे किये इसका कुछ भी बन्दोबस्त न हो सका और कमलिनी रानी भी इस बात पर राजी होती दिखाई न दीं अस्तु मैं बात टाल कर चुपकी हो बैठी, मगर मुझे इस काम में सुस्त देख कर किशोरी ने फिर मुझसे कहा कि 'देख कमला, तू मेरी बात पर कुछ ध्यान नहीं देती, मगर इसे खूब समझ रखियो कि अगर मेरा इरादा पूरा न हुआ अर्थात् मेरी शादी के पहिले ही कमलिनी की शादी कुमार के साथ न हो गई तो मैं कदापि ब्याह न करूंगी बल्कि अपने गले में फाँसी लगा कर जान दे दूंगी। कमलिनी ने जो कुछ अहसान मुझ पर किये हैं उनका बदला मैं किसी तरह चुका नहीं सकती, अगर कुछ चुका सकती हूँ तो इसी तरह कि कमलिनी को पटरानी बनाऊँ और आप उसकी लौंडी होकर रहूँ, मगर अफसोस है कि तू मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं देती जिसका नतीजा यह होगा कि एक दिन तू रोएगी और पछताएगी'।

"किशोरी की इस आखिरी बात से मेरे कलेजे पर एक चोट सी लगी और मैंने सोचा कि जो कुछ यह कहती हैं बहुत ठीक है, ऐसा होना ही चाहिए। आखिर मैंने राजा गोपालसिंह से यह सब हाल कहा और उन्हें अपनी तरफ से भी बहुत कुछ समझाया जिसका नतीजा यह निकला कि वे दिलोजान से इस काम के लिये तैयार हो गए। जब वे खुद तैयार हो गए तो फिर क्या था सब काम खूबी के साथ होने लगा।

"राजा गोपालसिंह ने इस विषय में कमलिनीजी से कहा और इन्हें बहुत समझाया मगर ये राजी न हुईं और बोलीं कि 'आपकी आज्ञानुसार मैं कुमार से ब्याह कर लेने के लिये तैयार हूँ मगर यह नहीं हो सकता कि किशोरी के पहिले ही अपनी शादी करके उसका हक मार दूँ, हां किशोरी की शादी हो जाने के बाद जो कुछ आप आज्ञा देंगे मैं करूंगी'। यह जवाब सुन कर गोपालसिंह ने फिर कमलिनी को समझाया और कहा कि अगर तुम किशोरी की इच्छा पूरी

करोगी तो वह अपनी जान दे देगी, फिर तुम ही सोच लो कि उसके मर जाने से कुमार की क्या हालत होगी और तुम्हारी इस जिद्द का क्या नतीजा निकलेगा' ?

"गोपालसिंहजी की इस बात ने (कमलिनी की तरफ बता के) इन्हें लाजवाब कर दिया और ये लाचार हो शादी करने पर राजी हो गईं। तब राजा साहब ने भैरोसिंह को मिलाया और ये इस बात पर राजी हो गये। इसके बाद यह सोचा गया कि कुमार इस बात को स्वीकार न करेंगे अस्तु उन्हें धोखा देकर जहां तक जल्द हो तिलिस्म के अन्दर ही कमलिनी के साथ उनकी शादी कर देनी चाहिये, क्योंकि तिलिस्म के बाहर हो जाने पर हम लोग स्वाधीन न रहेंगे और अगर बड़े महाराज इस बात को सुन कर अस्वीकार कर देंगे तो फिर हम लोग कुछ भी न कर सकेंगे, इत्यादि।

"बस यही सबब हुआ कि तिलिस्म के अन्दर आपसे तरह तरह की चालबाजियां खेली गईं और भैरोसिंह ने भी आप से सब भेद छिपा रक्खा। खुद राजा गोपालसिंहजी तिलिस्म के अन्दर आये और बुड्ढे दारोगा बन कर इस काम में उद्योग करने लगे।"

कुमार०। (बात रोक कर ताज्जुब के साथ) क्या खुद गोपालसिंह बुड्ढे दारोगा बने थे ?

कमला०। जी हां, वह बुड्ढी मैं बनी थी, तथा किशोरी और इन्दिरा आदि ने लड़कों का रूप धरा था।

कम०। (हँस कर) यह बुड्ढी भैरोसिंह की जोरू बनी थी। अब इस बात को सच कर दिखाना चाहिये, अर्थात् इस बुड्ढी को भैरोसिंह के गले मढ़ना चाहिये।

कुमार०। जरूर ! (कमला से) तब तो मैं समझता हूँ कि 'मकरन्द' इत्यादि के बारे में जो कुछ भैरोसिंह ने बयान किया था वह सब झूठ था ?

कमला०। हां बेशक उसमें बारह आने से ज्यादा झूठ था।

कुमार०। खैर तब क्या हुआ ? तुम आगे बयान करो।

कमला ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

"भैरोसिंह जान बूझ कर इसलिये पागल बना कर आपको दिखाये गये थे जिसमें एक तो आप धोखे में पड़ जांय और समझें कि हमारे विपक्षी लोग भी वहां रहते हैं, दूसरे आपसे मिलाप हो जाने पर यदि भैरोसिंह से कभी कुछ भूल भी हो जाय तो आप यही समझें कि अभी तक इनके दिमाग में पागलपन का कुछ घूमा बचा हुआ है। जिस समय हम लोग तिलिस्म के अन्दर पहुंचाए गये थे।

उस समय राजा गोपालसिंह ने अपनी खास तिलिस्मी किताब कमलिनीजी को दी थी जिससे तिलिस्म का बहुत कुछ हाल इन्हें मालूम हो गया था और इसकी मदद से हम लोग जो चाहते थे करते थे तथा किसी बात की तकलीफ भी नहीं होती थी और खाने पीने की सभी चीजें राजा गोपालसिंहजी पहुँचा दिया करते थे।

"भैरोसिंह जब पागल बनने के बाद आपसे मिले थे तो अपना ऐयारी बटुआ जान बूझ कर कमलिनीजी के पास रख गये थे। फिर जब भैरोसिंह को बुलाने की इच्छा हुई तो उन्हीं का बटुआ और पीले मकरन्द की लड़ाई दिखा कर वे आपसे अलग कर लिये गये, कमलिनी पीछे मकरन्द की सूरत में थीं और मैं उनका मुकाबला कर रही थी, कही बदी और मेल की लड़ाई थी इसलिए आपने समझा होगा कि हम दोनों बड़े बहादुर और लड़ाके हैं। अस्तु इस मामले के बाद जब इन्द्रानी और आनन्दी वाले बाग में भैरोसिंह आपसे मिले तब इन्होंने बहुत सी झूठ बातें बना कर आपसे कहीं और जब आप इनसे रंज हुए तो आपका संग छोड़ कर फिर हम लोगों की तरफ चले आये*। आप दोनों उस समय शादी करने से इन्कार करते थे मगर मजबूरी और लाचारी ने आपका पीछा न छोड़ा, इसके अतिरिक्त खुद इन्द्रानी और आनन्दी ने भी आप दोनों को किशोरी और कामिनी की चीठी दिखा कर खुश कर लिया था। यहाँ आकर आपने सुना ही है कि कमलिनीजी के पिता बलभद्रसिंहजी जिन्हें भूतनाथ छुड़ा लाया था यकायक गायब हो गए और कई दिनों के बाद लौट कर आये।"

कुमार०। हां सुना था।

कमला०। बस उन्हें राजा गोपालसिंह ही यहाँ आकर ले गये थे और बलभद्रसिंहजी ने ही अपनी दोनों लड़कियों का कन्यादान किया था।

कुमार०। (हंसते हुए) ठीक है, अब मैं सब बातें समझ गया और यह भी मालूम हो गया कि केवल धोखा देने के लिए ही माधवी और मायारानी जो पहिले ही मर चुकी थीं इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दिखाई गई थीं।

भैरो०। जी हाँ।

कुमार०। मगर नानक वहाँ क्योंकर पहुँचा था?

भैरो०। आप सुन चुके हैं कि तारासिंह ने नानक को कैसा छकाया था, अस्तु वह हम लोगों से बदला लेने की नीयत करके वहाँ गया और मायारानी से मिल गया था। कमलिनीजी ने वहां का रास्ता उसे बता दिया था।

---

* देखिये अठारहवां भाग, ग्यारहवां बयान।

का यह नतीजा निकला। जब मायारानी राजा गोपालसिंह के कब्जे में पड़ गई तब राजा साहब ने नानक को बहुत कुछ बुरा भला कहा, यहाँ तक कि नानक उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनसे अपने कसूर की माफी माँगी। उस समय राजा साहब ने उसका कसूर माफ करके उसे अपने साथ रख लिया। तब से वह उन्हीं के कब्जे में रहा और उन्हीं की आज्ञानुसार आपको धोखे में डालने की नीयत से मायारानी और माधवी की लाश के पास दिखाई दिया था। वे दोनों पहिले ही मारी जा चुकी थीं, मगर आपको भुलावा देने की नीयत से उनकी लाश इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दिखाई गई थी। इसके अतिरिक्त और जो कुछ हाल है वह आपको राजा गोपालसिंहजी की जुबानी मालूम होगा।

कुमार०। ठीक है, मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मायारानी और माधवी की लाश को इन्द्रानी और आनन्दी की सूरत में देख कर जो कुछ रंज मुझे हुआ था और आज तक इस घटना का जो कुछ असर मेरे दिल में था वह जाता रहा। अब मैं अपने को खुशनसीब समझने लगा। (कमलिनी से) अच्छा यह बताओ कि रात की दिल्लगी तुमने किस तौर पर की? मेरी समझ में कुछ न आया और न इसी बात का पता लगा कि मेरी सूरत क्योंकर बदल गई?

कमलिनी०। इस बात का जवाब आपको कमला से मिलेगा।

कमला०। यह तो एक मामूली बात है। समझ लीजिये कि जब आप सो गए तो इन्हीं (कमलिनी) ने आपको बेहोश करके आपकी सूरत बदल दी*।

कुमार०। ठीक है मगर ऐसा क्यों किया?

कमला०। एक तो दिल्लगी के लिए और दूसरे किशोरी के इस खयाल से कि जिसकी शादी पहिले हुई है उसी की सुहागरात भी पहिले होनी चाहिये।

कुमार०। (हँस कर और किशोरी की तरफ देख कर) अच्छा तो यह सब आपकी बहादुरी है। खैर आज आपकी पारी होगी ही, समझ लूँगा!

किशोरी ने शर्मा कर सिर नीचा कर लिया और कुमार की बात का कुछ भी जवाब न दिया।

इसके बाद वे लोग कुछ देर तक हँसी खुशी की बातें करते रहे और तब अपने अपने ठिकाने चले गये।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की शादी के बाद कई दिनों तक हंसी खुशी का जलसा बराबर बना रहा क्योंकि इस शादी के आठवें ही दिन कमला

---

* यही काम उधर लाडिली ने किया था। खुद तो पहिले ही से कामिनी बनी हुई थी मगर जब कुमार सो गये तब उन्हें बेहोश करके उनकी सूरत बदल दी और सुबह को उनके जागने के पहिले ही अपना चेहरा साफ कर लिया।

की शादी भैरोसिंह के साथ और तारासिंह की शादी इन्दिरा के साथ हो गई। इस नाते को भूतनाथ तथा इन्द्रदेव ने बड़ी खुशी के साथ मंजूर कर लिया।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर महाराज ने निश्चय किया कि अब पुनः बगुले वाले तिलिस्मी मकान में चल कर कैदियों का मुकदमा सुना जाय, आज्ञानुसार बाहर के आये हुए मेहमान लोग हँसी खुशी के साथ विदा किए और फिर कई दिनों तक तैयारी करने के बाद सभों का डेरा कूच हुआ और की तरह पुनः वह तिलिस्मी मकान हरा भरा दिखाई देने लगा। कैदी भी मकान के तहखानों में पहुँचाये गये और सब का मुकदमा सुनने की तैयारी होने लगी।

चौथा बयान

अब हम थोड़ा सा हाल नानक और उसकी मां का बयान करते हैं जो तरह से कसूरवार होने पर भीमहाराज की आज्ञानुसार कैद किये जाने से गये और उन्हें केवल देश निकाले का दण्ड दिया गया।

यद्यपि महाराज ने उन दोनों पर दया की और उन्हें छोड़ दिया मगर बात सर्वसाधारण को पसन्द न आई। लोग यही कहते रहे कि 'यह काम महा ने अच्छा नहीं किया और इसका नतीजा बहुत बुरा निकलेगा'। आखिर ही हुआ अर्थात् नानक ने इस अहसान को भूल कर फसाद करने और लोगों जान लेने पर कमर बांधो।

जब नानक की मां और नानक को देश निकाले का हुक्म हो गया इन्द्रदेव के आदमी इन दोनों को सरहद के पार करके लौट आये तब ये बहुत ही दुःखी और उदास हो एक पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगे कि क्या करना चाहिये। उस समय सवेरा हो चुका था और सूर्य की ला पूरब तरफ आसमान पर फैल रही थी।

राम०। कहो अब क्या इरादा है ? हम लोग तो बड़ी मुसीबत में फँस

नानक०। वेशक मुसीबत में फँस गए और बिल्कुल कंगाल कर दिये तुम्हारे जेवरों के साथ ही साथ मेरे हर्बे भी छीन लिए गये और हम इस भी न रहे कि किसी ठिकाने पहुँच कर रोजी के लिए कुछ उद्योग कर

राम०। ठीक है मगर मैं समझती हूँ कि अगर हम लोग किसी जिन्हों के यहाँ पहुँच जांयगे तो खाने का ठिकाना हो जायेगा और उन तरह की मदद भी ले सकेंगे।

नानक० । नन्हों के यहाँ जाने से क्या फायदा होगा ? वह तो खुद गिरफ्तार होकर कैदखाने की हवा खा रही होगी ! हां उसका भतीजा बेशक बचा हुआ है जिसे उन लोगों ने छोड़ दिया और जो नन्हों की जायदाद का मालिक बन बैठा होगा, मगर उससे किसी तरह की उम्मीद मुझको नहीं हो सकती है ।

रामदेई० । ठीक है मगर नन्हों की लौंडियों में से दो एक ऐसी हैं जिनसे मुझे मदद मिल सकती है ।

नानक० । मुझे इस बात की भी उम्मीद नहीं है, इसके अतिरिक्त वहां तक पहुँचने के लिए भी तो समय चाहिये, यहां तो एक शाम की भूख बुझाने के लिए पल्ले में कुछ नहीं है ।

राम० । ठीक है मगर क्या तुम अपने घर भी मुझे नहीं ले जा सकते ? वहां तो तुम्हारे पास रुपये पैसे की कमी नहीं होगी !

नानक० । हां यह हो सकता है, वहां पहुँचने पर फिर मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, मगर इस समय तो वहां तक पहुँचना भी कठिन हो रहा है । (लम्बी सांस लेकर) अफसोस मेरा ऐयारी का बटुआ भी छीन लिया गया और हम लोग इस लायक भी न रह गये कि किसी तरह सूरत बदल कर अपने को लोगों की आंखों से छिपा लेते ।

राम० । खैर जो होना था सो हो गया, अब इस समय अफसोस करने मे काम न चलेगा । सब जेवर छिन जाने पर भी मेरे पास थोड़ा सा सोना बचा हुआ है, अगर इससे कुछ काम चले तो...

नानक० । (चौंक कर) क्या कुछ है !

रामदेई० । हां !

इतना कह कर रामदेई ने धोती के अन्दर छिपी हुई सोने की एक करधनी निकाली और नानक के आगे रख दी ।

नानक० । (करधनी को हाथ में लेकर) बहुत है, हम लोगों को घर तक पहुँचा देने के लिए काफी है, और वहाँ पहुँचने पर किसी तरह की तकलीफ न रहेगी क्योंकि वहां मेरे पास खाने पीने की कमी नहीं है ।

रामदेई० । तो क्या वहां चल कर इन बातों को भूल ..

नानक० । (बात काट कर) नहीं नहीं, यह न समझना कि वहाँ पहुँच कर हम इन बातों को भूल जायेंगे और बेकार बैठे टुकड़े तोड़ेंगे, बल्कि वहां पहुँच कर इस बात का बन्दोबस्त करेंगे कि अपने दुश्मनों से बदला लिया जाय ।

रामदेई० । हाँ मेरा भी यही इरादा है, क्योंकि मुझे तुम्हारे बाप की बेमु रौवती का बड़ा रंज है जिसने हम लोगों को दूध की मक्खी की तरह एक द निकाल कर फेंक दिया और पिछली मुहब्बत का कुछ ख्याल न किया । शान्ता और हरनामसिंह को पाकर ऐंठ गया और इस बात का कुछ भी ख्याल न कि कि आखिर नानक भी तो उसका ही लडका है और वह ऐयारी भी जानता है

नानक० । (जोश के साथ) बेशक यह उसकी बेईमानी और हरमजद है ! अगर वह चाहता तो हम लोगों को बचा सकता था ।

रामदेई० । बचा लेना क्या, यह जो कुछ किया सब उसी ने तो किया महाराज ने तो हुक्म दे ही दिया था कि 'भूतनाथ की इच्छानुसार इन दो के साथ बर्ताव किया जाय' ।

नानक० । बेशक ऐसा ही है ! उसी कम्बख्त ने हम लोगों के साथ ऐसा सलू किया । मगर क्या चिन्ता है, इसका बदला लिये बिना मैं कभी न छोड़ूँगा।

रामदेई० । (आँसू बहा कर) मगर तेरी बातों पर मुझे विश्वास नहीं है क्योंकि तेरा जोश थोड़ी ही देर का होता है ।

नानक० । (क्रोध के साथ रामदेई के पैरों पर हाथ रख के) मैं तुम्हा चरणों की कसम खाकर कहता हूँ कि इसका बदला लिए बिना कभी न रहूँगा

रामदेई० । भला मैं भी तो सुनूँ कि तुम क्या बदला लोगे ? मेरे ख्याल तो वह जान से मार देने लायक है ।

नानक० । ऐसा ही होगा, ऐसा ही होगा ! जो तुम कहती हो वही कर बल्कि उसके लड़के हरनामसिंह को भी यमलोक पहुँचाऊँगा !!

रामदेई० । शाबाश ! मगर मेरा चित्त तब तक प्रसन्न न होगा जब शान्ता का सिर अपने तलवों से न रगड़ने पाऊँगी !

नानक० । मैं उसका सिर भी काट कर तुम्हारे सामने लाऊँगा और तुमसे आशीर्वाद लूँगा ।

रामदेई० । शाबाश, ईश्वर तेरा भला करे ! मैं समझती हूँ कि इन के लिए तू एक दफे फिर कसम खा जिसमें मेरी पूरी दिलजमई हो जाय।

नानक० । (सूर्य की तरफ हाथ उठा कर) मैं त्रिलोकीनाथ के हाथ उठा कर क़सम खाता हूँ कि अपनी माँ की इच्छा पूरी करूँगा और तक ऐसा न कर लूंगा अन्न न खाऊँगा ।

रामदेई० । (नानक की पीठ पर हाथ फेर कर) बस बस, अब मैं हो गई और मेरा आधा दुःख जाता रहा ।

नानक० । अच्छा तो फिर यहाँ से उठो । (हाथ का इशारा करके) किसी तरह उस गाँव में पहुँचना चाहिये फिर सब बन्दोबस्त होता रहेगा ।

दोनों उठे और एक गाँव की तरफ रवाना हुए जो वहाँ से दिखाई दे रहा था ।

पाँचवाँ बयान

पाठक, आपने सुना कि नानक ने क्या प्रण किया ? अस्तु अब यहां पर हम यह कह देना उचित समझते हैं कि नानक अपनी माँ को लिये हुए जब घर पहुँचा तो वहाँ उसने एक दिन के लिए भी आराम न किया । ऐयारी का बटुआ तैयार करने के बाद हर तरह का इन्तजाम कर के और चार पाँच शागिर्दों औरु नौकरों को साथ ले के वह उसी दिन घर के बाहर निकला और चुनार की तरफ रवाना हुआ । जिस दिन कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की बारात निकलने वाली थी उस दिन वह चुनार की सरहद में मौजूद था । बारात की कैफियत उसने अपनी आँखों से देखी थी और इस बात की फिक्र में भी लगा हुआ था कि किसी तरह दो चार कैदियों को कैद से छुड़ा कर अपना साथी बना लेना चाहिये और मौका मिलने पर राजा गोपालसिंह को भी इस दुनिया से उठा देना चाहिये ।

अब हम कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल बयान करते हैं ।

दोपहर दिन का समय है और सब कोई भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हो चुके हैं । एक सजे हुए कमरे में राजा गोपालसिंह भरतसिंह कुंअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह बैठे हुए हँसी खुशी की बातें कर रहे हैं ।

गोपाल० । (भरतसिंह से) क्या मुझे स्वप्न में भी इस बात की उम्मीद हो सकती थी कि आपसे किसी दिन मुलाकात होगी ? कदापि नहीं, क्योंकि लोगों के कहने पर मुझे विश्वास हो गया था कि आप जंगल में डाकुओं के हाथ से मारे गए......

भरत० । और इसका बहुत बड़ा सबब यह था कि तब तक दारोगा की बेईमानी का आपको पता न लगा था, उसे आप ईमानदार समझते थे और उसी ने मुझे कैद किया था ।

गोपाल० । बेशक यही बात है मगर खैर, ईश्वर जिसका सहायक रहता है वह किसी के बिगाड़े नहीं बिगड़ सकता । देखिए मायारानी ने मेरे साथ क्या कुछ न किया, मगर ईश्वर ने मुझे बचा लिया और साथ ही इसके बिछुड़े हुओं को भी मिला दिया !

भरत०। ठीक है, मगर मेरे प्यारे दोस्त, मैं कह नहीं सकता कि कम्बख्त दारो ने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं और मजा तो यह है कि इतना करने पर वह बराबर अपने को निर्दोष ही बताता रहा। अस्तु जब मैं अपना हाल करूँगा तब आपको मालूम होगा कि दुनिया में कैसे कैसे निमकहराम और लोग होते हैं और बदों के साथ नेकी करने का नतीजा बहुत बुरा होता है।

गोपाल०। ठीक है, ठीक है, इन्हीं बातों को सोच कर भैरोसिंह बार मुझसे कहते हैं कि 'आपने नानक को सूखा छोड़ दिया सो अच्छा नहीं किया, बद है और बदों के साथ नेकी करना वैसा ही है जैसा नेकों के साथ बदी करना

भरत०। भैरोसिंह का कहना वाजिब है, मैं उनका समर्थन करता हूं।

भैरो०। कृपानिधान, सच तो यों है कि नानक की तरफ से मुझे किसी तरह बेफिक्री होती ही नहीं। मैं अपने दिल को कितना ही समझाता हूं मगर वह जरा भी नहीं मानता। ताज्जुब नहीं कि....

भैरोसिंह इतना कह ही रहा था कि सामने से भूतनाथ आता हुआ दिखाई पड़ा

गोपाल०। अजी वाह जी भूतनाथ, चार चार दफे बुलाने पर भी आपके दर्शन नहीं होते !!

भूत०। (मुस्कुराता हुआ) अभी क्या हुआ है, दो चार दिन बाद तो दर्शन और भी दुर्लभ हो जायंगे !

गोपाल०। (ताज्जुब से) सो क्या ?

भूत०। यही कि मेरा सपूत नानक इस शहर में आ पहुँचा है मेरी अन्त्येष्टि क्रिया करके बहुत जल्द अपने सिर का बोझ हलका करने फिक्र में लगा है। (बैठ कर) कृपा कर आप भी जरा होशियार रहियेगा।

गोपाल०। तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह बदनीयती के साथ यहाँ आ गया

भूत०। मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया है। इसी से तो मुझे यहाँ आने देर हो गई क्योंकि मैं यह हाल कहने और तीन चार दिन की छुट्टी लेने के महाराज के पास चला गया था, वहाँ से लौटा हुआ आपके पास आ रहा हूँ।

गोपाल०। तो क्या महाराज से छुट्टी ले आये ?

भूत०। जी हाँ, अब आपसे यह पूछना है कि आप अपने लिये क्या बन्दोबस्त करेंगे ?

गोपाल०। तुम तो इस तरह की बातें करते हो जैसे उसकी तरफ से बहुत बड़ा तरद्दुद हो गया हो ! वह बेचारा कल का लौंडा हम लोगों का क्या कर सकता है ?

भूत० । सो तो ठीक है मगर दुश्मन को छोटा और कमजोर न समझना चाहिये ।

गोपाल० । तुम्हें ऐसा ही डर है तो कहो बैठे ही बैठे चौबीस घण्टे के अन्दर उसे गिरफ्तार करा के तुम्हारे हवाले कर दूं ?

भूत० । यह मुझे विश्वास है और आप ऐसा कर सकते हैं, मगर मुझे यह मंजूर नहीं है, क्योंकि मैं जरा दूसरे ढंग से उसका मुकाबिला किया चाहता हूं । आप जरा बाप बेटे की लड़ाई देखिये तो ! हाँ अगर वह आपकी तरफ झुके तो जैसा मौका देखिये कीजियेगा ।

गोपाल० । खैर ऐसा ही सही, मगर तुमने क्या सोचा है, जरा अपना मनसूबा तो सुनाओ !

इसके बाद उन लोगों में देर तक बातें होती रहीं और दो घण्टे के बाद भूतनाथ उठ कर अपने डेरे की तरफ चला गया ।

छठवां बयान

नानक जब चुनारगढ़ की सरहद पर पहुँचा तब सोचने लगा कि दुश्मनों से क्योंकर बदला लेना चाहिये । वह पांच आदमियों को अपना शिकार समझे हुए था और उन्हीं पाँचों की जान लेने का विचार करता था । एक तो राजा गोपालसिंह, दूसरे इन्द्रदेव, तीसरा भूतनाथ, चौथा हरनामसिंह और पांचवीं शान्ता । बस ये ही पाँच उसकी आँखों में खटक रहे थे मगर इनमें से दो अर्थात् राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव के पास फटकने की तो उसकी हिम्मत नहीं पड़ती थी और वह समझता था कि ये दोनों तिलिस्मी आदमी हैं, इनके काम जादू की तरह हुआ करते हैं और इनमें लोगों के दिल की बात समझ जाने की कुदरत है, मगर बाकी तीनों को वह निरा शिकार ही समझता था और विश्वास करता था कि इन तीनों को किसी न किसी तरह फँसा लेंगे । अस्तु चुनारगढ़ की सरहद में आ पहुँचने के बाद उसने गोपालसिंह और इन्द्रदेव का खयाल तो छोड़ दिया और भूतनाथ की स्त्री और उसके लड़के हरनामसिंह की जान लेने के फेर में पड़ा । साथ ही इसके यह भी समझ लेना चाहिये कि नानक यहाँ अकेला नहीं आया था बल्कि समय पर मदद पहुँचाने के लायक सात आठ आदमी और भी अपने साथ लाया था जिनमें से चार पांच तो उसके शागिर्द ही थे ।

दोनों कुमारों की शादी में जिस तरह दूर दूर के मेहमान और तमाशबीन लोग आये थे उसी तरह साधु महात्मा तथा साधु वेषधारी पाखण्डी लोग भी

बहुत से इकट्ठे हो गये थे जिन्हें सरकार की तरफ से खाने पीने को मिलता था और इस लालच में पड़े हुए उन लोगों ने अभी तक चुनार का पीछा नहीं छोड़ा था तथा तिलिस्मी मकान के चारो तरफ तथा आस पास जंगलों में डेरा डाले पड़े हुए थे। नानक और उसके साथी लोग भी साधुओं के वेष में वहाँ पहुँचे और उसी मंडली में मिल जुल कर रहने लगे।

नानक को यह बात मालूम थी कि भूतनाथ का डेरा तिलिस्मी इमारत के अन्दर है और वह वहाँ बड़ी कड़ी हिफाजत के साथ रहता है। इसलिए वह कभी यह सोचता था कि मेरा काम सहज ही में नहीं हो जायगा बल्कि इसके लिए बड़ी भारी मेहनत करनी पड़ेगी। मगर वहाँ पहुँचने के कुछ ही दिन बाद (जब शादी ब्याह से सब कोई निश्चिन्त होकर तिलिस्मी इमारत में आ गए) उसने सुना और देखा कि महाराज की आज्ञानुसार भूतनाथ ने स्त्री और बच्चों सहित तिलिस्मी इमारत के बाहर एक बहुत बड़े और खूबसूरत खेमे में डेरा डाला है, अतएव वह बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे विश्वास हो गया कि अपना काम शीघ्र और सुभीते के साथ निकाल लूँगा।

नानक ने और भी दो तीन रोज तक इन्तजार किया और इस बीच में यह भी जान लिया कि भूतनाथ के खेमे की कुछ विशेष हिफाजत नहीं होती, पहरे वगैरह का इन्तजाम भी साधारण सा ही है तथा उसके शागिर्द लोग भी आजकल मौजूद नहीं हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी। यद्यपि चन्द्रदेव के दर्शन नहीं थे मगर आसमान साफ होने के कारण टुटपूंजिया तारागण अपनी नामवरी पैदा करने का उद्योग कर रहे और नानक जैसे बुद्धिमान लोगों से पूछ रहे थे कि यदि हम लोग इकट्ठे हो जाँय तो क्या चन्द्रमा से चौगुनी और पाँचगुनी चमक दमक नहीं दिखा सकते तथा तथा जवाब में यह भी सुना चाहते थे कि 'निःसन्देह'। ऐसे समय में एक आदमी स्याह लबादा ओढ़े रहने पर भी लोगों की निगाह से अपने को बचाता हुआ भूतनाथ के खेमे की तरफ जा रहा है। पाठक समझ गए होंगे कि यह नानक है अस्तु जब वह खेमे के पास पहुँचा तो अपने चारो तरफ का सन्नाटा देख कर खड़ा हो गया और किसी के आने का इन्तजार करने लगा। थोड़ी ही देर में एक दूसरा आदमी भी उसके पास आया और दो चार पल तक बातें करके चला गया। उस समय नानक जमीन पर लेट गया और धीरे धीरे खिसकता हुआ खेमे की कनात के पास जा पहुँचा, तब उसने धीरे से

अन्दर चला गया। यहाँ उसने अपने को गुलामगर्दिश में पाया मगर यहाँ बिल्कुल ही अंधकार था, हाँ यह जरूर मालूम होता था कि आगे वाली कनात के अन्दर अर्थात् खेमे में कुछ रोशनी हो रही है। नानक फिर वहाँ लेट गया और पहिले की तरह यह दूसरी कनात भी उठा कर खेमे के अन्दर जाने का विचार कर ही रहा था कि दाहिनी तरफ से कुछ खड़खड़ाहट की आवाज मालूम पड़ी। वह चौंका और उसी अंधेरे में तीन चार कदम बाईं तरफ हट कर पुनः कोई आवाज सुनने और उसे जांचने की नीयत से ठहर गया। जब थोड़ी देर तक किसी तरह की आहट नहीं मालूम हुई तो पहिले की तरह जमीन पर लेट गया और कनात उठा अन्दर जाया ही चाहता था कि दाहिनी तरफ फिर किसी के पैर पटक पटक कर चलने की आहट मालूम हुई। वह खड़ा हो गया और पुनः चार पांच कदम पीछे की तरफ (बाँई तरफ) हट गया, मगर इसके बाद फिर किसी तरह की आहट मालूम न हुई। कुछ देर तक इन्तजार करने के बाद वह पुनः जमीन पर लेट गया और कनात के अन्दर सिर डाल कर देखने लगा। कोने की तरफ एक मामूली शमादान जल रहा था जिसकी मद्धिम रोशनी में दो चारपाई बिछी हुई दिखाई पड़ी। कुछ देर तक गौर करने पर नानक को निश्चय हो गया कि इन दोनों चारपाइयों पर भूतनाथ तथा उसकी स्त्री शान्ता सोई हुई है। परन्तु उनका लड़का हरनामसिंह खेमे के अन्दर दिखाई न दिया और उसके लिए नानक को कुछ चिन्ता हुई, तथापि वह साहस करके खेमे के अन्दर चला ही गया।

डरता कांपता नानक धीरे धीरे चारपाई के पास पहुँच गया, चाहा कि खंजर से इन दोनों का गला काट डालें मगर फिर यह सोचने लगा कि पहिले किस पर वार करूं, भूतनाथ पर या शान्ता पर? वे दोनों सिर से पैर तक चादर ताने पड़े हुए थे इससे यह मालूम करने की जरूरत थी कि किस चारपाई पर कौन सो रहा है, साथ ही इसके नानक इस बात पर भी गौर कर रहा था कि रोशनी बुझा दी जाय या नहीं। यद्यपि वह वार करने के लिए खंजर हाथ में ले चुका था मगर उसकी दिली कमजोरी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा था और उसका हाथ कांप रहा था।

सातवां बयान

किशोरी कामिनी कमलिनी और लाडिली ये चारो बड़ी मुहब्बत के साथ अपना दिन बिताने लगीं। इनकी मुहब्बत दिखौवा नहीं थी बल्कि दिली और सचाई के साथ थी। चारो ही जमाने के ऊँच नीच को अच्छी तरह समझ चुकी

थीं और खूब जानती थीं कि दुनिया में हर एक के साथ दुःख और सुख का लगा ही रहता है, खुशी तो मुश्किल से मिलती है मगर रंज और दुःख के किसी तरह का उद्योग नहीं करना पड़ता, यह आप से आप पहुँचता है, एक साथ दस को लपेट लेने पर भी जल्दी नहीं छोड़ता, इसलिये बुद्धिमान का काम यही है कि जहां तक हो सके खुशी का पल्ला न छोड़े और न कोई ऐसा करे जिसमें दिल को किसी तरह का रंज पहुँचे। इन चारों औरतों का दिल उन नादान और कमीनी औरतों का सा नहीं था जो दूसरों को खुश देख ही जलभुन कर कोयला हो जाती हैं और दिन रात कुप्पे की तरह मुंह फुलाए आंखों से पाखण्ड का आंसू बहाया करती हैं अथवा घर की औरतों के साथ मिल जुल कर रहना अपनी बेइज्जती समझती हैं।

इन चारों का दिल आईने की तरह साफ था। नहीं नहीं हम भूल गये, दिल के साथ आईने की उपमा पसन्द नहीं। न मालूम लोगों ने इस उपमा को किस लिये पसन्द कर रक्खा है! उपमा में उसी वस्तु का व्यवहार करना चाहिये जिसकी प्रकृति में उपमेय से किसी तरह का फर्क न पड़े, मगर आईने (दर्पण) में यह बात पाई नहीं जाती, हर एक आईना बेऐब साफ और बिना धब्बे नहीं होता और वह हर एक की सूरत एक सा भी नहीं दिखाता बल्कि जिसकी जैसी सूरत होती है उसके मुकाबिले में वैसा ही बन जाता है। इसलिये आईना उन लोगों के दिल को कहना उचित है जो नीति कुशल हैं या जिन्होंने यह ठान ली है कि जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही करना चाहिये, चाहे वह अपना हो या पराया, छोटा हो या बड़ा। मगर इन चारों में यह बात न थी, बड़ों की झिड़की को आशीर्वाद और छोटों की ऐंठन को उनकी नादानी समझती थीं। जब कोई हमजोली या आपुस वाली क्रोध में भरी हुई अपना मुंह फुलाए इनके सामने आती तो यदि मौका होता तो ये हंस कर कह देतीं कि 'वाह, तुम ने अच्छी सूरत बनाई है'! या 'बहिन, हमने तो तुम्हारा जो कुछ बिगाड़ा सो बिगाड़ा मगर तुम्हारी सूरत ने तुम्हारा क्या कसूर किया है जो तुम उसे बिगाड़ रही हो'? बस इतने ही में उसका रंग बदल जाता। इन बातों को विचार कर हम इनके दिल का आईने के साथ मिलान करना पसन्द नहीं करते बल्कि यह कहना मुनासिब समझते हैं कि 'इनका दिल समुद्र की तरह गम्भीर था'।

इन चारों को इस बात का ख्याल ही न था कि हम अमीर हैं, हाथ पैर हिलाना या घर का कामकाज करना हमारे लिए पाप है। ये खुशी से

काम जो इनके लायक होता करतीं और खाने पीने की चीजों पर विशेष ध्यान रखतीं। सबसे बड़ा खयाल इन्हें इस बात का रहता था कि इनके पति इनसे किसी तरह रंज न होने पावें और घर के किसी बड़े बुजुर्ग को इन्हें बेअदब कहने का मौका न मिले। महारानी चन्द्रकान्ता की तो बात ही दूसरी है, ये चपला और चम्पा को भी सास की तरह समझतीं और इज्जत करती थीं। घर की लौंडियां तक इनसे प्रसन्न रहतीं और जब किसी लौंडी से कोई कसूर हो जाता तो झिड़की और गालियों के बदले नसीहत के साथ समझा कर ये उसे कायल और शर्मिन्दा कर देतीं और उसके मुंह से कहला देतीं कि 'बेशक मुझसे भूल हुई आइन्दे कभी ऐसा न होगा' ! सबसे विचित्र बात तो यह थी कि इनके चेहरे पर रंज क्रोध या उदासी कभी दिखाई देती ही न थी और जब कभी ऐसा होता तो किसी भारी घटना का अनुमान किया जाता था। हाँ, उस समय इनके दुःख और चिन्ता का कोई ठिकाना नहीं रहता था जब ये अपने पति को किसी कारण दुःखी देखतीं। ऐसी अवस्था में इनकी सच्ची भक्ति के कारण इनके पति को अपनी उदासी छिपानी पड़ती या इन्हें प्रसन्न करने और हंसाने के लिए और किसी तरह का उद्योग करना पड़ता। मतलब यह है कि इन्होंने घर भर का दिल अपने हाथ में कर रक्खा था और ये घर भर की प्रसन्नता का कारण समझी जाती थीं।

भूतनाथ की स्त्री शान्ता का इन्हें बहुत बड़ा खयाल रहता और ये उसकी पिछली घटनाओं को याद करके उसकी पति-भक्ति की सराहना किया करतीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्हें अपनी जिन्दगी में दुखों के बड़े बड़े समुद्र पार करने पड़े थे परन्तु ईश्वर की कृपा से जब ये किनारे लगीं तब इन्हें कल्पवृक्ष की छाया मिली और किसी बात की परवाह न रही।

इस समय संध्या होने में घण्टे भर की देर है। सूर्य भगवान अस्ताचल की तरफ तेजी के साथ झुके चले जा रहे हैं और उनकी लाल लाल पिछली किरणों से बड़ी-बड़ी अटारियां तथा ऊँचे-ऊँचे वृक्षों के ऊपरी हिस्सों पर ठहरा हुआ सुनहरा रंग बड़ा ही सोहावना मालूम पड़ता है। ऐसा जान पड़ता है मानों प्रकृति ने प्रसन्न होकर अपना गौरव बढ़ाने के लिए अपने सहचरियों और सहायकों को सुनहरा ताज पहिरा दिया है।

ऐसे समय में किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली और कमला अटारी पर एक सजे हुए बंगले के अन्दर बैठी जालीदार खिड़कियों से उस जंगल की शोभा देख रही हैं जो इस तिलिस्मी मकान से थोड़ी दूर पर है और साथ ही इसके मीठी बातें भी करती जाती हैं।

कमलिनी० । (किशोरी से) बहिन, एक दिन वह था कि हमें अपनी इ... के विरुद्ध ऐसे बल्कि इससे भी बढ़ कर भयानक जंगलों में घूमना पड़ता था... उस समय यह सोच कर डर मालूम पड़ता था कि कोई शेर इधर उ... निकल कर हम पर हमला न करे, और एक आज का दिन है कि इस जंग... शोभा भली मालूम पड़ती है और इसमें घूमने को जी चाहता है।

किशोरी० । ठीक है, जो काम लाचारी के साथ करना पड़ता है वह... अच्छा ही क्यों न हो परन्तु चित्त को बुरा लगता है, फिर भयानक तथा... कामों का तो कहना ही क्या ! मुझे तो जंगल में शेर और भेड़ियों का... खयाल न होता था जितना दुश्मनों का, मगर वह समय और ही था जो ई... करे किसी दुश्मन को दिखे। उस समय हम लोगों की किस्मत बिगड़ी हुई थी... अपने मायी लोग भी दुश्मन बन कर सताने के लिए तैयार हो जाते थे। (मु... की तरफ देख कर) भला तुम्हीं बताओ कि उस चमेला छोकरी का मैंने क्या बि... था जिसने मुझे हर तरह से तबाह कर दिया ? अगर वह मेरी मुहब्बत का... मेरे पिता से न कह देती तो मुझ पर वैसी भयानक मुसीबत क्यों आ जाती...

कमला० । बेशक ऐसा ही है, मगर उसने जैसी नमकहरामी की वै... सजा पाई। मेरे हाथ के कोड़े* वह जन्म भर न भूलेगी !

किशोरी० । मगर इतना होने पर भी उसने मेरे पिता का ठीक ठि... न बताया।

कमला० । बेशक वह बड़ी जिद्दी निकली, मगर तुमने भी यह बड़ी... दिखाई कि अन्त में उसे छोड़ देने का हुक्म दे दिया। अब भी वह जहां... दुःख ही भोगेगी।

किशोरी० । इसके अतिरिक्त उस जमाने में धनपति के भाई ने क... कम तकलीफ दी थी जब मैं नागर के यहाँ कैद थी ! उस कम्बख्त की... देखने से मेरा खून खुश्क हो जाता था !

लाडिली० । वही जिसे भूतनाथ ने जहन्नुम में पहुँचा दिया ! मगर... इस मामले को बिल्कुल ही छिपा गई, मायारानी से उसने कुछ भी... और इसी में उसका भला भी था।

किशोरी० । (लाडिली से) बहिन, तुम तो बड़ी नेक हो और ... ध्यान भी धर्म विषयक कामों में विशेष रहता है, मगर उन दिनों तुम्हें...

* देखिये पहिला भाग, ग्यारहवें बयान का अन्त।

† देखिये आठवां भाग, नौवां बयान।

या था कि मायारानी के साथ बुरे कामों में अपना दिन बिताती थीं और हम लोगों की जान लेने के लिए तैयार रहती थीं ?

लाडिली० । (लज्जा और उदासी के साथ) फिर तुमने वही चर्चा छेड़ी ! कई दफे हाथ जोड़ कर तुमसे कह चुकी हूं कि उन बातों की याद दिला कर मुझे शर्मिन्दा न करो, दुःख न दो, मेरे मुंह में बार बार स्याही न लगाओ । उन दिनों मैं पराधीन थी, मेरा कोई सहायक न था, मेरे लिए कोई और ठिकाना न था, और उस दुष्टा का साथ छोड़ कर मैं अपने को कहीं छिपा भी नहीं सकती थी और डरती थी कि वहां से निकल भागने पर कहीं मेरी इज्जत पर न आ बने ! मगर बहिन, तुम जान बूझ कर बार बार उन बातों की याद दिला कर मुझे सताती हो, कहो बैठूं या यहां से उठ जाऊँ ?

किशोरी० । अच्छा अच्छा जाने दो, माफ करो मुझसे भूल हो गई, मगर मेरा मतलब वह न था जो तुमने समझा है, मैं दो चार बातें नानक के विषय में पूछा चाहती थी जिनका पता अभी तक नहीं लगा और जो भेद की तरह हम लोगों....

लाडिली० । (बात काट कर) वे बातें भी तो मेरे लिए वैसी ही दुःखदायी हैं ।

किशोरी० । नहीं नहीं, मैं यह न पूछूंगी कि तुमने नानक के साथ रामभोली बन कर क्या-क्या किया बल्कि यह पूछूंगी कि उस टीन के डिब्बे में क्या था जो नानक ने चुरा ला कर तुम्हें बजरे में दिया था ? कूएँ में से हाथ कैसे निकला था ? नहर के किनारे वाले बंगले में पहुँच कर वह क्योंकर फंसा लिया गया ?, उस बंगले में वह तस्वीरें कैसी थीं ? असली रामभोली कहां गई और क्या हुई ? रोहतासगढ़ तहखाने के अन्दर तुम्हारी तस्वीर किसने लटकाई और तुम्हें वहां का भेद कैसे मालूम हुआ था इत्यादि बातें मैं कई दफे कई तरफ से सुन चुकी हूं मगर उनका असल भेद अभी तक कुछ मालूम न हुआ* ।

लाडिली० । हां इन सब बातों का जवाब देने के लिए मैं तैयार हूं । तुम जानती हो और अच्छी तरह सुन और समझ चुकी हो कि वह तिलिस्मी बाग तरह तरह के अजायबातों से भरा हुआ है, विशेष नहीं तो भी वहां का बहुत कुछ हाल मायारानी और दारोगा को मालूम था । वहां अथवा उसकी सरहद में जाकर किसी को डराने धमकाने या तकलीफ देने के लिए कोई ताज्जुब का तमाशा दिखाना कौन बड़ी बात थी ।

किशोरी० । हाँ सो तो ठीक ही है ।

---

*देखिये सन्तति चौथा भाग, नानक का बयान ।

लाडिली० । और फिर नानक जान बूझ कर काम निकालने के लिए गिरफ्तार किया गया था । इसके अतिरिक्त तुम यह भी सुन चुकी हो कि दारोगा के बंगले या अजायबघर से खास बाग तक नीचे नीचे रास्ता बना हुआ है, ऐसी अवस्था में नानक के साथ वैसा वर्ताव करना कौन बड़ी बात ही थी!

किशोरी० । बेशक ऐसा ही है, अच्छा उस डिब्बे वगैरह का भेद तो बताओ।

लाडिली० । उस गठरी में जो कलमदान था वह तो हमारे विशेष काम का न था मगर उस डिब्बे में वही इन्दिरा वाला कलमदान था जिसके लिये दारोगा साहब बेताब हो रहे थे और चाहते थे कि वह किसी तरह पुनः उनके कब्जे में आ जाय । असल में उसी कलमदान के लिये मुझे रामभोली बनना पड़ा था। दारोगा ने असली रामभोली को तो गिरफ्तार करवा के इस तरह मरवा डाला कि किसी को कानोकान खबर भी न हुई और मुझे रामभोली बन कर यह काम निकालने की आज्ञा दी । लाचार मैं रामभोली बन कर नानक से मिली और उसे अपने वश में करने के बाद इन्द्रदेवजी के मकान में से वह कलमदान और उसके साथ और भी कई तरह के कागज नानक की मार्फत चुरा मंगवाया। मुझे तो उस कलमदान की सूरत देखने से डर मालूम होता था क्योंकि मैं जानती थी कि वह कलमदान हमलोगों के खून का प्यासा और दारोगा के बड़े बड़े ऐबों से भरा हुआ है । इसके अतिरिक्त उस पर इन्दिरा की बचपन की तस्वीर भी बनी हुई थी और सुन्दर अक्षरों में इन्दिरा का नाम लिखा हुआ था, जिसके विषय में मैं उन दिनों जानती थी कि वे मां बेटी बड़ी बेदर्दी के साथ मारी गईं। यही सब सबब था कि उस कलमदान की सूरत देखते ही मुझे तरह तरह की बातें याद आ गईं, मेरा कलेजा दहल गया और मैं डर के मारे काँपने लगी। खैर जब मैं नानक को लिये हुए जमानिया की सरहद में पहुँची तो उसे घनपत के हवाले करके खास बाग में चली गई, अपना दुपट्टा नहर में फेंकती गई। उसी राह से उस तिलिस्मी कूएँ के नीचे पहुँच कर पानी का प्याला और बर्तन हाथ निकालने बाद मायारानी से जा मिली और फिर बचा हुआ काम मायारानी और दारोगा ने पूरा किया । दारोगा वाले बंगले में जो तस्वीर रक्खी हुई थी वह केवल नानक को धोखा देने के लिए थी, उसका और कोई मतलब न था और रोहतासगढ़ के तहखाने में जो मेरी तस्वीर* आप लोगों ने देखी थी वह वास्तव में दिग्विजयसिंह की बूआ ने मेरे सुबीते के लिए लटकाई थी, और

* देखिये सन्तति चौथा भाग, दसवाँ बयान ।

खाने की बहुत सी बातें समझा कर बता दिया था कि 'जहां तू अपनी तस्वीर देखियो समझ लीजियो कि उसके फलानी तरफ फलानी बात है' इत्यादि। बस वह तस्वीर इतने ही काम के लिए लटकाई गई थी। वह बुढ़िया बड़ी नेक थी, और उस तहखाने का हाल बनिस्बत दिग्विजयसिंह के बहुत ज्यादे जानती थी, मैं पहले भी महाराज के सामने बयान कर चुकी हूँ कि उसने मेरी मदद की थी। वह कई दफे मेरे डेरे पर आई थी और तरह तरह की बातें समझा गई थी। मगर न तो दिग्विजयसिंह उसकी कदर करता था और न वही दिग्विजयसिंह को चाहती थी। इसके अतिरिक्त यह भी कह देना आवश्यक है कि मैं तो उस बुढ़िया की मदद से तहखाने के अन्दर चली गई थी मगर कुन्दन अर्थात् धनपति ने वहाँ जो कुछ किया वह मायारानी के दारोगा की बदौलत था। घर लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि दारोगा वहां कई दफे छिप कर गया और कुन्दन से मिला था मगर उसे मेरे बारे में कुछ खबर न थी, अगर खबर होती तो मेरे और कुन्दन में जुदाई न रहती। मगर मुझे इस बात का ताज्जुब जरूर है कि घर पहुँचने पर भी धनपति ने वहाँ की बहुत सी बातें मुझसे छिपा रक्खीं।

किशोरी०। अच्छा यह तो बताओ कि रोहतासगढ़ में जो तस्वीर तुमने कुन्दन को दिखाने के लिए मुझे दी थी वह तुम्हें कहाँ से मिली थी और तुम्हें या कुन्दन को उसका असली हाल क्योंकर मालूम हुआ था?

लाडिली०। उन दिनों मैं यह जानने के लिए बेताब हो रही थी कि कुन्दन असल में कौन है। मुझे इस बात का भी शक हुआ था कि वह राजा साहब (वीरेन्द्रसिंह) की कोई ऐयारा होगी और यही शक मिटाने के लिए मैंने वह तस्वीर खुद बना कर उसे दिखाने के लिए तुम्हें दी थी। असल में उस तस्वीर का भेद हम लोगों को मनोरमा की जुबानी मालूम हुआ था और मनोरमा ने इन्दिरा से उस समय सुना था जब मनोरमा को मां समझ के वह उसके फेर में पड़ गई थी*।

किशोरी०। ठीक है मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि इन सब बखेड़ों की जड़ वही कम्बख्त दारोगा है। यदि जमानिया के राज्य में दारोगा न होता तो इन सब बातों में से एक भी न सुनाई देती और न हम लोगों की दुःखमय कहानी का कोई अंश लोगों के कहने सुनने के लिये पैदा होता। (कमलिनी से) मगर बहिन, यह तो बताओ कि इस हरामी के पिल्ले (दारोगा) का कोई वारिस या रिश्तेदार भी दुनिया में है या नहीं?

---

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग दसवां बयान, और उन्नीसवां भाग आठवां बयान।

कम० । सिवाय एक के और कोई नहीं ! दुनिया का कायदा है कि जब आदमी भलाई या बुराई कुछ सीखता है तो पहिले अपने घर ही से आरम्भ करता है। बाप के अनुचित लाड़ प्यार और उनकी असावधानी से बुरी राह पर चलने लड़के घर ही में श्रीगणेशाय करते हैं और तब कुछ दिन के बाद दुनिया में होने योग्य होते हैं । यही बात इस हरामखोर की भी थी, इसने पहिले अपने रिश्तेदारों ही पर सफाई का हाथ फेरा और उन्हें जहन्नुम में मिला कर सब पहले घर का मालिक बन बैठा । साधु का भेष धरना इसने लड़कपन ही से है और विशेष करके इसके इसी भेष की बदौलत लोग धोखे में भी पड़े। हमारे गोपालसिंह ने भी (मुस्कुराती हुई) इसे वशिष्ट ऋषि ही समझ कर अपने यहां था । हाँ, इसका एक चचेरा भाई जरूर बच गया था जो इसके हत्थे नहीं चढ़ा क्योंकि वह खुद भी परले सिरे का बदमाश था और इसकी करतूतों को समझता था जिससे लाचार होकर इसे उसकी खुशामद करनी ही पड़ी और अपना साथी बनाना ही पड़ा ।

किशोरी० । क्या वह मर गया ? उसका क्या नाम था ?

कमलिनी० । नहीं वह मरा नहीं मगर मरने के ही बराबर है, क्योंकि हमारे यहाँ कैद है । उसने अपना नाम शिखण्डी रख लिया था । तुम जानती हो कि जब मैं जमानिया के खास बाग के तहखाने और सुरंग की राह से दोनों कुमार तथा बाकी कैदियों को लेकर बाहर निकल रही थी तो हाथी वाले दरवाजे उसने इनके (इन्द्रजीतसिंह) के ऊपर वार किया था* ।

किशोरी० । हाँ हाँ, तो क्या वह वही कम्बख्त था ?

कमलिनी० । हाँ वही था । उसे मैं अपना पक्षपाती समझती थी मगर बेईमान ने मुझे धोखा दिया । ईश्वर की कृपा थी कि पहिले ही वार में वह उसी जगह गिरफ्तार हो गया नहीं तो शायद मुझे धोखे में पड़ कर बहुत तकलीफें उठानी पड़तीं ।

कमलिनी ने इतना कहा ही था कि उसका ध्यान सामने के जंगल की तरफ पड़ा । उसने देखा कि कुंअर आनन्दसिंह एक सब्ज घोड़े पर सवार सामने की से आ रहे हैं, साथ में केवल तारासिंह एक छोटे टट्टू पर सवार बातें करते हैं, और दूसरा कोई आदमी साथ नहीं है । साथ ही इसके कमलिनी को

*देखिये आठवां भाग दूसरा बयान ।

अद्भुत दृश्य दिखाई दिया जिससे वह यकायक चौंक पड़ी और इसलिए उसका तथा और सभों का ध्यान भी उसी तरफ जा पड़ा।

उसने देखा कि आनन्दसिंह और तारासिंह जंगल में से निकल कर कुछ ही दूर मैदान में आये थे कि यकायक एक वार पुनः पीछे की तरफ घूमे और गौर के साथ कुछ देखने लगे। कुछ ही देर बाद और भी दस बारह नकाबपोश आदमी हाथ में तीर कमान लिए दिखाई पड़े जो जंगल से बाहर निकलते ही इन दोनों पर फुर्ती के साथ तीर चलाने लगे। ये दोनों भी म्यान से तलवार निकाल कर उन लोगों की तरफ झपटे और देखते ही देखते सब के सब लड़ते-भिड़ते पुनः जंगल में घुस कर देखने वालों की नजरों से गायब हो गए। कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह इस घटना को देख कर घबरा गयीं, सभों की इच्छानुसार कमला दौड़ी हुई गई और एक लौंडी को इस मामले की खबर करने के लिए उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास भेजा।

आठवां बयान

नानक इस बात को सोच रहा था कि मैं पहिले किस पर वार करूँ? अगर पहिले शान्ता पर वार करूँ तो आहट पाकर भूतनाथ जाग जायगा और मुझे गिरफ्तार कर लेगा क्योंकि मैं अकेला किसी तरह उसका मुकाबिला नहीं कर सकता अतएव पहिले भूतनाथ ही का काम तमाम करना चाहिए। अगर इसकी आहट पाकर शान्ता जाग भी जायगी तो कोई चिन्ता नहीं, मैं उसे साँस लेने की भी मोहलत न दूँगा, वह औरत की जात मेरे मुकाबिले में क्या कर सकती है। मगर ऐसा करने के लिए यह जानने की जरूरत है कि इन दोनों में शान्ता कौन है और भूतनाथ कौन।

थोड़ी ही देर के अन्दर ऐसी बहुत सी बातें नानक के दिमाग में दौड़ गई और उन दोनों में भूतनाथ कौन है इसका पता न लगा सकने के कारण लाचार होकर उसने यह निश्चय किया कि इन दोनों ही को बेहोश करके यहाँ से ले चलना चाहिए। ऐसा करने से मेरी माँ बहुत ही प्रसन्न होगी।

नानक ने अपने बटुए में से बहुत ही तेज बेहोशी की दवा निकाली और उन दोनों के मुँह पर चादर के ऊपर ही छिड़क कर उनके बेहोश होने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर में उन दोनों ने हाथ पैर हिलाये जिससे नानक समझ गया कि

अब इन पर बेहोशी का असर हो गया, अस्तु उसने दोनों के ऊपर से चादर दी और तभी देखा कि इन दोनों में भूतनाथ नहीं है बल्कि ये दोनों औरतें जिनमें एक भूतनाथ की स्त्री शान्ता है। उस दूसरी औरत को नानक पहिचान था।

नानक ने फिर एक दफे बेहोशी की दवा सुंघा कर शान्ता को अच्छी बेहोश किया और चारपाई पर से उठा कर बहुत हिफाजत और होशियारी साथ खेमे के बाहर निकाल लाया जहाँ उसने अपने एक साथी को मौजूद पा दोनों ने मिल कर उसकी गठरी बाँधी और फुर्ती से लश्कर के बाहर निकाल ले

शान्ता को पा जाने से नानक बहुत ही खुश था और सोचता जाता इसे पाकर मेरी माँ बहुत ही प्रसन्न होगी और हद से ज्यादे मेरी तारीफ में इसे सीधे अपने घर ले जाऊँगा और जब दूसरी दफे लौटूँगा तो भूतना कब्जा करूँगा। इसी तरह धीरे धीरे अपने सब दुश्मनों को जहन्नुम में मिला दा

कोस भर निकल जाने के बाद जब नानक एक संकेत पर पहुँचा तो और साथियों से भी मुलाकात हुई जो कसे कसाये कई घोड़ों के साथ उसका जार कर रहे थे।

एक घोड़े पर सवार होने के बाद नानक ने शान्ता को अपने आगे रख उसके साथी लोग भी घोड़ों पर सवार हुए, और सभों ने पूरब का रास्ता

दूसरे दिन संध्या के समय नानक अपने घर पहुँचा । रास्ते में उस उसके साथियों ने कई दफे भोजन किया मगर शान्ता की कुछ खबर न जब इस बात का ख्याल हुआ कि अब उसकी बेहोशी उतरा चाहती है दवा सुंघा कर उसकी बेहोशी मजबूत कर दी गई।

नानक को देख कर उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई और जब उसे यह हुआ कि उसका सपूत शान्ता को गिरफ्तार कर लाया है तब तो उसकी कोई ठिकाना ही न रहा। उसने नानक की बहुत ही आवभगत की और बहुत करने के बाद बोली, "इससे बदला लेने में अब क्षण भर की भी देर न करनी इसे तुरन्त खम्भे के साथ बाँध कर होश में ले आओ और पहिले जूतियों अच्छी तरह खबर लो फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। मगर इसके मुँह अच्छी तरह कपड़ा ठूँस दो जिससे कुछ बोल न सके और हम लोगों को गालि

नानक को भी यह बात पसन्द आई और उसने ऐसा ही किया। मुँह में कपड़ा ठूँस दिया गया और वह दालान में एक खम्भे के साथ बाँध

में लाई गई। होश आते ही अपने को ऐसी अवस्था में देख कर वह बहुत ही घबराई और जब उद्योग करने पर भी कुछ बोल न सकी तो आँखों से आँसू की धारा बहाने लगी।

नानक ने उसकी दशा पर कुछ भी ध्यान न दिया। अपनी माँ की आज्ञा पाकर उसने शान्ता को जूते से मारना शुरू किया और यहाँ तक मारा कि अन्त में वह बेहोश होकर झुक गई। उस समय नानक की माँ कागज का एक लपेटा हुआ पुर्जा नानक के आगे फेंक कर यह कहती हुई घर के बाहर निकल गई कि 'इसे अच्छी तरह पढ़ तब तक मैं लौट कर आती हूँ'।

उसकी कार्रवाई ने नानक को ताज्जुब में डाल दिया। उसने जमीन पर से पुर्जा उठा लिया और चिराग के सामने ले जाकर पढ़ा, यह लिखा हुआ था—

"भूतनाथ के साथ ऐयारी करना या उसका मुकाबला करना नानक ऐसे नौसिखे लौंडों का काम नहीं है। तू समझता होगा कि मैंने शान्ता को गिरफ्तार कर लिया, मगर खूब समझ रख कि वह कभी तेरे पंजे में नहीं आ सकती। जिस औरत को तू जूतियों से मार रहा है वह शान्ता नहीं है, पानी से इसका चेहरा धो डाल और भूतनाथ के कारीगरी का तमाशा देख! अब अगर अपनी जान तुझे प्यारी है तो खबरदार भूतनाथ का पीछा कभी न कीजियो।"

पुर्जा पढ़ते ही नानक के होश उड़ गये। झटपट पानी का लोटा उठा लिया और मुँह में ठूँसा हुआ लत्ता निकाल कर शान्ता का चेहरा धोने लगा, तब तक वह भी होश में आ गई। चेहरा साफ होने पर नानक ने देखा कि यह तो उसकी असली माँ 'रामदेई' है। उसने होश में आते ही नानक से कहा, "क्यों बेटा, तुमने मेरे ही साथ ऐसा सलूक किया!"

नानक के ताज्जुब का कोई हद न रहा। वह घबराहट के साथ अपनी माँ का मुँह देखने लगा और ऐसा परेशान हुआ कि आधी घड़ी तक उसमें कुछ बोलने की शक्ति न रही। इस बीच में रामदेई ने उसे तरह तरह की बेतुकी बातें सुनाईं जिन्हें वह सिर नीचा किये हुए चुपचाप सुनता रहा। जब उसकी तबीयत कुछ ठिकाने हुई तब उसने सोचा कि पहिले उस रामदेई को पकड़ना चाहिये जो मेरे सामने चीठी फेंक कर मकान के बाहर निकल गई है, परन्तु यह उसकी सामर्थ्य के बाहर था क्योंकि उस घर से बाहर गए हुए देर हो चुकी थी, अस्तु उसने सोचा कि अब वह किसी तरह नहीं पकड़ी जा सकती।

नानक ने अपनी माँ के हाथ पैर खोल डाले और कहा, "मेरी समझ में कुछ

नहीं आता कि यह क्या हुआ, तुम वहाँ कैसे जा पहुँचो, और तुम्हारी शक्ल में यहाँ रहने वाली कौन थी या क्योंकर आई !!"

रामदेई०। मैं इसका जवाब कुछ भी नहीं दे सकती और न मुझे कुछ मालूम ही है। मैं तुम्हारे चले जाने के बाद इसी घर में थी, इसी घर में बेहोश हुई और होश आने पर अपने को इसी घर में देखती हूँ अब तुम्हीं बयान करो कि क्या हुआ और तुमने मेरे साथ ऐसा सलूक क्यों किया ?

नानक ने ताज्जुब के साथ अपना किस्सा पूरा पूरा बयान किया और अन्त में कहा, "अब तुम ही बताओ कि मैंने इसमें क्या भूल की ?

नौवां बयान

दिन का समय है और दोपहर ढल चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिंह अभी भोजन करके आये हैं, और अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए पान चबाते हुए अपने दोस्तों तथा लड़कों से हँसी खुशी कि बातें कर रहे हैं जो कि महाराज से घंटे भर पहिले ही भोजन इत्यादि से छुट्टी पा चुके हैं।

महाराज के अतिरिक्त इस समय इस कमरे में राजा वीरेन्द्रसिंह कुंवर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह राजा गोपालसिंह जीतसिंह तेजसिंह देवीसिंह पन्नालाल रामनारायण पंडित बद्रीनाथ चुन्नीलाल जगन्नाथ ज्योतिषी भैरोसिंह इन्द्रदेव और गोपालसिंह के दोस्त भरतसिंह भी बैठे हुए हैं।

वीरेन्द्र०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो तिलिस्म मैंने तोड़ा था वह इस तिलिस्म के सामने रुपये में एक पैसा भी नहीं है, साथ ही इसके जमानिया राज्य में जैसे जैसे महापुरुष (दारोगा को तरह) रह चुके हैं तथा वहाँ जैसी जैसी घटनाएँ हो गई हैं उनकी नजीर भी कभी सुनने में न आवेगी।

गोपाल०। बखेड़ों का सबब भी उसी तिलिस्म को समझना चाहिए उसी का आन्नद लूटने के लिए लोगों ने ऐसे बखेड़े मचाए और उसी की बदौलत लोगों की ताकत और हैसियत भी बढ़ी।

जीत०। बेशक यही बात है, जैसे जैसे तिलिस्म के भेद खुलते गये वैसे पाप और लोगों की बदकिस्मती का जमाना भी तरक्की करता गया।

सुरेन्द्र०। हमें तो कम्बख्त दारोगा के कामों पर आश्चर्य होता है, न मालूम किस सुख के लिए उस कम्बख्त ने ऐसे ऐसे कुकर्म किए !!

भरत०। (हाथ जोड़ कर) मैं तो समझता हूँ कि दारोगा के कुकर्मों का हाल

महाराज ने अभी बिल्कुल नहीं सुना, उसकी कुछ पूर्ति तब होगी जब हम लोग अपना किस्सा बयान कर चुकेंगे ।

सुरेन्द्र० । ठीक है, हमने भी आज आप ही का किस्सा सुनने की नियत से आराम नहीं किया ।

भरत० । मैं अपनी दुर्दशा बयान करने के लिए तैयार हूँ ।

जीत० । अच्छा तो अब आप शुरू करें ।

भरत० । जो आज्ञा ।

इतना कह कर भरतसिंह ने इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया:—

भरत० । मैं जमानिया का रहने वाला और एक जमींदार का लड़का हूँ । मुझे इस बात का सौभाग्य प्राप्त था कि राजा गोपालसिंह मुझे अपना मित्र समझते थे, यहां तक कि भरी मजलिस में भी मित्र कह कर मुझे सम्बोधन करते थे, और घर में भी किसी तरह का पर्दा नहीं रखते थे । यही सबब था कि वहां के कर्मचारी लोग तथा अच्छे अच्छे रईस मुझसे डरते और मेरी इज्जत करते थे परन्तु दारोगा को यह बात पसन्द न थी ।

केवल राजा गोपालसिंह ही नहीं इनके पिता भी मुझे अपने लड़के की तरह मानते और प्यार करते थे, विशेष करके इसलिए कि हम दोनों मित्रों की चालचलन में किसी तरह की बुराई दिखाई नहीं देती थी ।

जमानिया में जो बेईमान और दुष्ट लोगों की एक गुप्त कमेटी थी उसका हाल आप लोग जान ही चुके हैं अतएव उसके विषय में विस्तार के साथ कुछ कहना वृथा ही है, हाँ जरूरत पड़ने पर उसके विषय में इशारा मात्र कर देने से काम चल जायगा ।

रियासतों में मामूली तौर पर तरह तरह की घटनाएँ हुआ ही करती हैं इसलिए राजा गोपालसिंह को गद्दी मिलने के पहिले जो कुछ मुझ पर बीत चुकी उसे मामूली समझ कर मैं छोड़ देता हूँ और उस समय से अपना हाल बयान करता हूँ जब इनकी शादी हो चुकी थी । इस शादी में जो कुछ चालबाजी हुई थी उसका हाल आप सुन ही चुके हैं ।

जमानिया की वह गुप्त कुमेटी यद्यपि भूतनाथ की बदौलत टूट चुकी थी मगर उसकी जड़ नहीं कटी थी क्योंकि कम्बख्त दारोगा हर तरह से साफ बच गया था और कुमेटी का कमजोर दफ्तर अभी भी उसके कब्जे में था ।

गोपालसिंहजी की शादी हो जाने के बहुत दिन बाद एक दिन मैं एक

नौकर ने रात के समय जब कि वह मेरे पैरों में तेल लगा रहा था मुझसे कहा कि 'राजा गोपालसिंह की शादी असली लक्ष्मीदेवी के साथ नहीं बल्कि किसी दूसरी ही औरत के साथ हुई है। यह काम दारोगा ने रिश्वत लेकर किया है और इस काम में सुबीता होने के लिए गोपालसिंहजी के पिता को भी उसी ने मारा है।'

सुनने के साथ ही मैं चौंक पड़ा, मेरे ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, मैंने उससे तरह तरह के सवाल किये जिनका जवाब उसने ऐसा तो न दिया जिससे मेरी दिलजमई हो जाती मगर इस बात पर बहुत जोर दिया कि 'जो कुछ मैं कह चुका हूँ वह बहुत ठीक है'।

मेरे जी में तो यही आया कि इसी समय उठ कर राजा गोपालसिंह के पास जाऊँ और सब हाल कह दूँ, परन्तु यह सोच कर कि किसी काम में जल्दी न करनी चाहिए मैं चुप रह गया और सोचने लगा कि यह कार्रवाई क्योंकर हुई और इसका ठीक ठीक पता किस तरह लग सकता है?

रात भर मुझे नींद न आई और इन्हीं बातों को सोचता रह गया। सवेरा होने पर स्नान संध्या इत्यादि से छुट्टी पाकर मैं राजा साहब से मिलने के लिए गया, मालूम हुआ कि राजा साहब अभी महल से बाहर नहीं निकले हैं। मैं सीधे महल में चला गया। उस समय गोपालसिंहजी सन्ध्या कर रहे थे और इनसे थोड़ी दूर पर सामने बैठी मायारानी फूलों का गजरा तैयार कर रही थी। उसने मुझे देखते ही कहा, "अहा, आज क्या है! मालूम होता है मेरे लिए आप कोई अनूठी चीज लाए हैं।"

इसके जवाब में मैं हँस कर चुप हो गया और इशारा पाकर गोपालसिंह के पास एक आसन पर बैठ गया। जब वे सन्ध्योपासना से छुट्टी पा चुके तब मुझसे बातचीत होने लगी। मैं चाहता था कि मायारानी वहाँ से उठ जाय तो मैं अपना मतलब बयान करूँ पर वह वहाँ से उठती न थी और चाहती थी कि मैं जो कुछ बयान करूँ उसे वह भी सुन ले। यह सम्भव था कि मैं मामूली बातें करके मौका टाल देता और वहाँ से उठ खड़ा होता मगर वह हो न सका क्योंकि उन दोनों ही को इस बात का विश्वास हो गया था कि मैं जरूर कोई अनूठी बात कहने के लिए आया हूँ। लाचार गोपालसिंह जी से इशारे में कहना पड़ा कि 'मैं एकान्त में केवल आप ही से कुछ कहना चाहता हूँ। जब गोपालसिंह ने किसी काम के बहाने से उसे अपने सामने से उठाया तब वह भी मेरा मतलब समझ गई और कुछ मुँह बना कर उठ खड़ी हुई।

हम दोनों यही समझते थे कि मायारानी वहाँ से चली गई मगर उस कम्बख्त ने हम दोनों की बातें सुन लीं क्योंकि उसी दिन से मेरी कम्बख्ती का जमाना शुरू हो गया। मैं ठीक नहीं कह सकता कि किस ढंग से उसने हमारी बातें सुनीं। जिस जगह हम दोनों बैठे थे उसके पास ही दीवार में एक छोटी सी खिड़की पड़ती थी, शायद उसी जगह पिछवाड़े की तरफ खड़ी होकर उसने मेरी बातें सुन ली हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

मैंने जो कुछ अपने नौकर से सुना था सब तो नहीं कहा केवल इतना कहा कि 'आपके पिता को दारोगा ही ने मारा है और लक्ष्मीदेवी की इस शादी में भी उसने कुछ गड़बड़ किया है, गुप्त रीति पर इसकी जाँच करनी चाहिए'। मगर अपने नौकर का नाम नहीं बताया क्योंकि मैं उसे बहुत चाहता था और वैसा ही उसकी हिफाजत का भी खयाल रखता था। इसमें कोई शक नहीं कि मेरा वह नौकर बहुत ही होशियार और बुद्धिमान था बल्कि इस योग्य था कि राज्य का कोई भारी काम उसके सुपुर्द किया जाता, परन्तु वह जाति का कहार था इसलिए किसी बड़े मर्तबे पर न पहुँच सका।

गोपालसिंहजी ने मेरी बातें ध्यान देकर सुनीं मगर इन्हें उन बातों का विश्वास न हुआ क्योंकि ये मायारानी को पतिव्रताओं की नाक और दारोगा को सचाई तथा ईमानदारी का पुतला समझते थे। मैंने इन्हें अपनी तरफ से बहुत कुछ समझाया और कहा कि 'यह बात चाहें झूठ हो मगर आप दारोगा से हर दम होशियार रहा कीजिए और उसके कामों को जांच की निगाह से देखा कीजिए, मगर अफसोस, इन्होंने मेरी बातों पर कुछ ध्यान न दिया और इसी से मेरे साथ ही अपने को भी बर्बाद कर लिया।

उसके बाद भी कई दिनों तक मैं इन्हें समझाता रहा और ये भी हाँ में हाँ मिला देते रहे जिससे विश्वास होता था कि कुछ उद्योग करने से ये समझ जायेंगे मगर ऐसा कुछ न हुआ। एक दिन मेरे उसी नौकर ने जिसका नाम हरदीन था मुझसे फिर एकान्त में कहा कि 'अब आप राजा साहब को समझाना बुझाना छोड़ दीजिए, मुझे निश्चय हो गया कि उनकी बदकिस्मती के दिन आ गये हैं और वे आपकी बातों पर कुछ भी ध्यान न देंगे। उन्होंने बहुत बुरा किया कि आपकी बातें मायारानी और दारोगा पर प्रकट कर दीं। अब उनको समझाने के बदले आप अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिए और अपने को हर वक्त आफत से घिरा हुआ समझिए। शुक्र है कि आपने सब बातें नहीं कह दीं नहीं तो और भी

गजब हो जाता......'

औरों को चाहे कैसा ही कुछ खयाल हो मगर मैं अपने खिदमतगार हरदीन की बातों पर विश्वास करता था और उसे अपना खैरख्वाह समझता था। उसकी बातें सुन कर मुझे गोपालसिंह पर बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और उसी दिन से मैंने इन्हें समझाना बुझाना छोड़ दिया मगर इनकी मुहब्बत ने मेरा साथ न छोड़ा।

मैंने हरदीन से पूछा कि 'ये सब बातें तुझे क्योंकर मालूम हुई और होती हैं' ? मगर उसने ठीक ठीक न बताया, बहुत जिद्द करने पर कहा कि कुछ दिन और सब्र कीजिए मैं इसका भेद भी आपको बता दूँगा।

दूसरे दिन जब कि सूरज अस्त होने में दो घण्टे की देर थी मैं अकेला अपने नजरबाग में टहल रहा था और इस सोच में पड़ा हुआ था कि राजा गोपालसिंह का भ्रम मिटाने के लिए अब क्या बन्दोवस्त करना चाहिये। उसी समय रघुबरसिंह मेरे पास आया और साहब सलामत करने के बाद इधर उधर की बातें करने लगे। बात ही बात में उसने कहा कि 'आज मैंने एक घोड़ा नेहायत उम्दा खरीद किया है मगर अभी तक उसका दाम नहीं दिया है, आप उस पर सवारी करके देखिए, अगर आप भी पसन्द करें तो मैं उसका दाम चुका दूँ। इस समय मैं उसे अपने साथ लेता आया हूँ, आप उस पर सवार हो लें और मैं अपने पुराने घोड़े पर सवार होकर आपके साथ चलता हूँ, चलिए दो चार कोस का चक्कर लगा आवें......'।

मुझे घोड़े का बहुत ही शौक था। रघुबरसिंह की बातें सुन कर मैं खुश हो गया और यह सोच कर कि अगर जानवर उम्दा होगा तो मैं खुद उसका दाम देकर अपने यहाँ रख लूँगा मैंने जवाब दिया कि 'चलो देखें कैसा घोड़ा है, एक घोड़े की जरूरत मुझे भी थी'। इसके जवाब में रघुबर ने कहा कि 'अच्छी बात है, अगर आपको पसन्द आवे तो आप ही रख लीजियेगा'।

उन दिनों मैं रघुबरसिंह को भला आदमी अशराफ और अपना दोस्त समझता था, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह परले सिरे का बेईमान और शैतान का भाई है, उसी तरह दारोगा को भी मैं इतना बुरा नहीं समझता था और राजा गोपालसिंह की तरह मुझे भी विश्वास था कि जमानिया की उस गुप्त कुमेटी से इन दोनों का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, मगर हरदीन ने मेरी आँखें खोल दीं और साबित कर दिया कि जो कुछ हम लोग सोचे हुए थे वह हमारी भूल थी।

खैर, मैं रघुवर के साथ ही वाग के बाहर निकला और दर्वाजे पर आया कसे कसाये दो घोड़े दिखे जिनमें एक तो खास रघुवरसिंह का घोड़ा था और दूसरा एक नया और बहुत ही शानदार वही घोड़ा था जिसकी रघुवरसिंह ने तारीफ की थी।

मैं उस घोड़े पर सवार होने वाला ही था कि हरदीन दौड़ा दौड़ा बदहवास मेरे पास आया और बोला, "घर में बहूजी (मेरी स्त्री) को न मालूम क्या हो गया है कि गिर कर बेहोश हो गई हैं और मुँह से खून निकल रहा है, जरा चल कर देख लीजिए।"

हरदीन को बात सुन कर मैं तरद्दुद में पड़ गया और उसे साथ लेकर घर के अन्दर गया, क्योंकि हरदीन बराबर जनाने में आया जाया करता था और उसके लिए किसी तरह का पर्दा न था। जब घर की दूसरी ड्योढ़ी मैंने लाँघी तब वहाँ एकान्त देख कर हरदोन ने मुझे रोका और कहा, "जो कुछ मैंने आपको खबर दी वह बिल्कुल झूठ थी, बहूजी बहुत अच्छी तरह हैं।"

मैं०। तो तुमनें ऐसा क्यों किया ?

हरदीन०। इसीलिए कि रघुवरसिंह के साथ जाने से आपको रोकूँ।

मैं०। सो क्यों ?

हरदीन०। इसलिए कि वह आपको धोखा देकर ले जा रहा है और आपकी जान लिया चाहता है। मैं उसके सामने आपको रोक नहीं सकता था, अगर रोकता तो उसे मेरी तरफदारी मालूम हो जाती और मैं जान से मारा जाता और फिर आपको इन दुष्टों की चालबाजियों से बचाने वाला कोई न रहता। यद्यपि मुझे अपनी जान आपसे बढ़ कर प्यारी नहीं है तथापि आपकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है और यह बात आपके आधीन है, यदि आप मेरा भेद खोल देंगे तो फिर मेरा इस दुनिया में रहना मुश्किल है।

मैं। (ताज्जुब के साथ) तुम यह क्या कह रहे हो ? रघुवर तो हमारा दोस्त है !

हर०। इस दोस्ती पर आप भरोसा न करें और इस समय इस मौके को टाल जायँ, रात को मैं सब बातें आपको अच्छी तरह समझा दूँगा या यदि आपको मेरी बातों पर विश्वास न हो तो जाइए मगर एक तमंचा कमर में छिपा कर लेते जाइए और पश्चिम तरफ कदापि न जाकर पूरब तरफ जाइए—साथ ही हर तरह से होशियार रहिए। इतनी होशियारी करने पर आपको मालूम हो जायगा

कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सच है या झूठ।

हरदीन की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया। कुछ सोचने के वाद मैंने कहा, "शावाश हरदीन; तुमने वेशक इस समय मेरी जान वचाई, मगर खैर तुम चिन्ता न करो और मुझे इस दुष्ट के साथ जाने दो, अब मैं इसके पंजे में न फसूँगा और जैसा तुमने कहा है वैसा ही करूँगा।"

इसके वाद मैं चुपचाप अपने कमरे में चला गया और एक छोटा सा दोनाली तमंचा भर कर अपने कमर में छिपा लेने के वाद वाहर निकला। मुझे देखते ही रघुवरसिंह ने पूछा, "कहिए क्या हाल है?" मैंने जवाव दिया, "अब तो होश में आ गई हैं, वैद्यजी को बुला लाने के लिए कह दिया है, तब तक हम लोग भी घूम आवेंगे।"

इतना कह कर मैं उस घोड़े पर सवार हो गया, रघुवरसिंह भी अपने घोड़े पर सवार हुआ और मेरे साथ चला। शहर के वाहर निकलने के वाद मैंने पूरब तरफ घोड़े को घुमाया, उसी समय रघुवरसिंह ने टोका और कहा, "उधर नहीं पश्चिम तरफ चलिए, इधर का मैदान वहुत अच्छा और सोहावना है।"

मैं०। इधर पूरब तरफ भी तो कुछ बुरा नहीं है, मैं इधर ही चलूँगा।

रघु०। नहीं नहीं आप पश्चिम ही की तरफ चलिए, उधर एक काम और निकलेगा। दारोगा साहव भी इस घोड़े की चाल देखा चाहते थे, मैंने कह दिया था कि आप अपने घोड़े पर सवार होकर जाइये और फलानी जगह ठहरियेगा हम लोग घूमते हुए उसी तरफ आवेंगे, वे जरूर वहाँ गये होंगे और हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे।

मैं०। ऐसा ही शौक था तो दारोगा साहव भी हमारे यहाँ आ जाते और हम लोगों के साथ चलते!

रघु०। खैर, अब तो जो हो गया सो हो गया अव उनका खयाल जरूर करना चाहिए।

मैं०। मुझे भी पूरब तरफ जाना वहुत जरूरी है क्योंकि एक आदमी से मिलने का वादा कर चुका हूँ।

इसी तौर पर मेरे और उसके वीच वहुत देर तक हुज्जत होती रही। मैं पूरब तरफ जाना चाहता था और वह पश्चिम तरफ जाने के लिए जोर देता रहा। नतीजा यह निकला कि न पूरब ही गये न पश्चिम ही गये बल्कि लौट कर सीधे घर चले आये और यह बात रघुवरसिंह को वहुत ही बुरी मालूम हुई, उसने मुझसे

मुँह फुला दिया और कुढ़ा हुआ अपने घर चला गया।

मेरा रहा सहा शक भी जाता रहा और हरदीन की बातों पर मुझे पूरा पूरा विश्वास हो गया, मगर मेरे दिल में इस बात की उलझन हद से ज्यादे पैदा हुई कि हरदीन को इन सब बातों की खबर क्योंकर लग जाती है। आखिर रात के समय जब एकान्त हुआ तब मुझसे और हरदीन से इस तरह की बातें होने लगीः—

मैं०। हरदीन, तुम्हारी बात तो ठीक निकली, उसने पश्चिम तरफ ले जाने के लिए बहुत जोर मारा मगर मैंने उसकी एक न सुनी।

हरदीन०। आपने बहुत अच्छा किया नहीं तो इस समय बड़ा अन्धेर हो गया होता।

मैं०। खैर, यह तो बताओ कि यकायक वह मेरी जान का दुश्मन क्यों बन बैठा? वह तो मेरी दोस्ती का दम भरता था!

हर०। इसका सबब वही लक्ष्मीदेवी वाला भेद है। मैं अपनी भूल पर अफसोस करता हूँ, मुझसे चूक हो गई जो मैंने वह भेद आपसे खोल दिया मैंने तो राजा गोपालसिंहजी का भला करना चाहा था मगर उन्होंने नादानी करके मामला ही बिगाड़ दिया। उन्होंने जो कुछ आपसे सुना था लक्ष्मीदेवी से कह कर दारोगा और रघुवर को आपका दुश्मन बना दिया, क्योंकि इन्हीं दोनों की बदौलत वह इस दर्जे को पहुँची, इन्हीं दोनों की बदौलत हमारे महाराज (गोपालसिंह के पिता) मारे गये और इन्हीं दोनों ने लक्ष्मीदेवी ही को नहीं बल्कि उसके घर भर को बर्बाद कर दिया।

मैं०। इस समय तो तुम बड़े ही ताज्जुब की बातें सुना रहे हो?

हर०। मगर इन बातों को आप अपने ही दिल में रख कर जमाने की चाल के साथ काम करें नहीं तो आपको पछताना पड़ेगा, यद्यपि मैं यह कदापि न कहूँगा कि आप राजा गोपालसिंह का ध्यान छोड़ दें और उन्हें डूबने दें क्योंकि वह आपके दोस्त हैं।

मैं०। जैसा तुम चाहते हो मैं वैसा ही करूँगा। अच्छा तो यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह पर क्या बीती?

हर०। उन दोनों को दारोगा ने अपने पंजे में फँसा कर कहीं कैद कर दिया था इतना तो मुझे मालूम है मगर इसके बाद का हाल मैं कुछ भी नहीं जानता, न मालूम वे मार डाले गये या अभी तक कहीं कैद हैं। हाँ, उस गदाधरसिंह को इसका हाल शायद मालूम होगा जो रणधीरसिंहजी का ऐयार है और जिसने

नानक की माँ को धोखा देने के लिए कुछ दिन तक अपना नाम रघुवरसिंह रख लिया था तथा जिसकी बदौलत यहाँ की गुप्त कुमेटी का भण्डा फूटा है। उसने इस रघुवीरसिंह और दारोगा को खूब ही छकाया है। लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर की शादी करा देने की बाबत इनके और हेलासिंह के बीच में जो पत्र-व्यवहार हुआ उसकी नकल भी गदाधरसिंह (रणधीरसिंह के ऐयार) के पास मौजूद है जो कि उसने समय पर काम देने के लिए असल चीठियों से अपने हाथ से नकल की थी। अफसोस, उसने रुपये की लालच में पड़ कर रघुवरसिंह और दारोगा को छोड़ दिया और इस बात को छिपा रक्खा कि यही दोनों उस गुप्त कुमेटी के मुखिया हैं। इस पाप का फल गदाधरसिंह को जरूर भोगना पड़ेगा, ताज्जुब नहीं कि एक दिन उन चीठियों की नकल से उसी को दुःख उठाना पड़े और वे चीठियाँ उसी के लिए काल बन जाँय।

इस समय मुझे हरदीन की वे बातें अच्छी तरह याद पड़ रही हैं। मैं देखता हूँ कि जो कुछ उसने कहा था सच उतरा। उन चीठियों की नकल ने खुद भूतनाथ का गला दबा दिया जो उन दिनों गदाधरसिंह के नाम से मशहूर हो रहा था! भूतनाथ का हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है और इधर-जो कुछ हो चुका है वह सब भी मैं सुन चुका हूँ मगर इतना मैं जरूर कहूँगा कि भूतनाथ के मुकदमे में तेजसिंहजी ने बहुत बड़ी गलती की। गलती तो सभों ने की मगर तेजसिंहजी को ऐयारों का सरताज मान कर मैं सब के पहिले इन्हीं का नाम लूँगा। इन्होंने जब लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली इत्यादि के सामने वह कागज का मुट्ठा खोला था और चीठियों को पढ़ कर भूतनाथ पर इलजाम लगाया था कि 'बेशक ये चीठियाँ भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई हैं" तो इतना क्यों नहीं सोचा कि भूतनाथ की चीठियों के जबाब में हेलासिंह ने जो चीठियाँ भेजी हैं वे भी तो भूतनाथ ही के हाथों की लिखी हुई मालूम पड़ती हैं, तो क्या अपनी चीठी का जवाब भी भूतनाथ अपने ही हाथ से लिखा करता था?

यहाँ तक कह कर भरतसिंह चुप हो रहे और तेजसिंह की तरफ देखने लगे। तेजसिंह ने कहा, "आपका कहना बहुत ही ठीक है, बेशक उस समय मुझसे बड़ी भूल हो गई। उनमें की एक ही चीठी पढ़ कर क्रोध के मारे हम लोग ऐसे पागल हो गए कि इस बात पर कुछ भी ध्यान न दे सके। बहुत दिनों के बाद जब देवीसिंह ने यह बात सुझाई तब हम लोगों को बहुत अफसोस हुआ और तब से हम लोगों का ख्याल भी बदल गया।"

भरतसिंह ने कहा, "तेजसिंहजी—इस दुनिया में बड़े बड़े चालाकों और होशियारों से यहाँ तक कि स्वयं विधाता ही से भूल हो गई है तो फिर हम लोगों की क्या बात है ? मगर मजा तो यह है कि बड़ों की भूल कहने सुनने में नहीं आती इसीलिए आपकी भूल पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

को कहि सके बड़ेन सों लखे बड़े ही भूल।
दीन्हें दई गुलाब के इन डारन ये फूल ॥

अस्तु अब मैं पुनः अपनी कहानी शुरू करता हूँ।

इसके बाद भरतसिंह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

भरत०। मैंने हरदीन से कहा कि 'अगर यह बात है तो गदाधरसिंह से मुलाकात करनी चाहिए, मगर वह मुझसे अपने भेद की बातें क्यों कहने लगा ? इसके अतिरिक्त वह यहाँ रहता भी नहीं है, कभी कभी आ जाता है। साथ ही इसके यह जानना भी कठिन है कि वह कब आया और कब चला गया'।

हर०। ठीक है, मगर मैं आपसे उनकी मुलाकात करा सकता हूँ, आशा है कि वे मेरी बात मान लेंगे और आपको असल हाल भी बता देंगे। कल वह जमानिया में आने वाले हैं।

मैं०। मगर मुझसे और उससे तो किसी तरह की मुलाकात नहीं है, वह मुझ पर क्यों भरोसा करेगा ?

हर०। कोई चिन्ता नहीं, मैं आपकी उनकी मुलाकात करा दूँगा।

हरदीन की इस बात ने मुझे और भी ताज्जुब में डाल दिया, मैं सोचने लगा कि इससे और गदाधरसिंह (भूतनाथ) से ऐसी गहरी जान पहिचान क्यों कर हो गई और वह इस पर क्यों भरोसा करता है ?

भरतसिंह ने अपना किस्सा यहाँ तक बयान किया था कि उनके काम में विघ्न पड़ गया अर्थात् उसी समय एक चोबदार ने आकर इत्तिला दी कि 'भूतनाथ हाजिर है'। इस खबर को सुनते ही सब कोई खुश हो गये और भरतसिंह ने भी कहा, "अब मेरे किस्से में विशेष आनन्द आवेगा।"

महाराज ने भूतनाथ को हाजिर करने की आज्ञा दी और भूतनाथ ने कमरे के अन्दर पहुँच कर सभों को सलाम किया।

तेज०। (भूतनाथ से) कहो भूतनाथ, कुशल तो है ? आज कई दिनों पर तुम्हारी सूरत दिखाई दी !

भूत० । जी हाँ ईश्वर की कृपा से सब कुशल है, जितने दिन की छुट्टी लेकर गया था उसके पहिले ही हाजिर हो गया हूँ ।

तेज० । सो तो ठीक है मगर अपने सपूत लड़के का तो कुछ हाल कहो, कैसी निपटी ?

भूत० । निपटी क्या आपकी आज्ञा पालन की, नानक को मैंने किसी तरह की तकलीफ नहीं दी मगर सजा बहुत ही मजेदार और चटपटी दे दी गई !

देवी० । (हँसते हुए) सो क्या ?

भूत० । मैंने उससे एक ऐसी दिल्लगी की कि वह भी खुश हो गया होगा। अगर बिल्कुल जानवर न होगा तो अब हम लोगों की तरफ कभी मुँह भी न करेगा। बात बिल्कुल मामूली थी, जब वह यहाँ आकर मेरी फिक्र में डूबा तो घर की हिफाजत का बन्दोबस्त करने बाद कुछ शागिर्दों को साथ लेकर मैं उसके मकान पर पहुँच उसकी माँ को उड़ा लाया मगर उसकी जगह अपने एक शागिर्द को रामदेई बना कर छोड़ आया । यहाँ उसे शान्ता बना कर अपने खेमे में जो इसी काम के लिए खड़ा किया गया था एक लौंडी के साथ सुला दिया और खुद तमाशा देखने लगा । आखिर नानक उसी को शान्ता समझ के उठा ले गया और खुशी खुशी अपनी नकली माँ के सामने पहुँच कर डींग हाँकने लगा बल्कि उसकी आज्ञानुसार नकली शान्ता को खम्भे के साथ बाँध कर जूते से पूजा करने लगा । जब खूब दुर्गति कर चुका तब नकली रामदेई उसके सामने एक पुर्जा फेंक कर घर से बाहर निकल गई । उस पुर्जे के पढ़ने से जब उसे मालूम हुआ कि मैंने जो कुछ किया अपनी ही माँ के साथ किया तब वह बहुत ही शर्मिन्दा हुआ । उस समय उन दोनों की जैसी कैफियत हुई मैं क्या बयान करूँ, आप लोग खुद सोच समझ लीजिये ।

भूतनाथ की बात सुन कर सब लोग हँस पड़े । महाराज ने उसे अपने पास बुला कर बैठाया और कहा, "भूतनाथ, जरा एक दफे तुम इस किस्से को फिर बयान कर जाओ मगर जरा खुलासे तौर पर कहो ।"

भूतनाथ ने इस हाल को विस्तार के साथ ऐसे ढंग पर दोहराया कि हँसते हँसते सभों का दम फूलने लगा । इसके बाद जब भूतनाथ को मालूम हुआ कि भरतसिंह अपना किस्सा बयान कर रहे हैं तब उसने भरतसिंह की तरफ देखा और कहा, "मुझे भी तो आपके किस्से से कुछ सम्बन्ध है ।"

भरत० । बेशक, और वही हाल मैं इस समय बयान कर रहा था ।

भूतनाथ० । (गोपालसिंह से) क्षमा कीजियेगा, मैंने आपसे उस समय जब कृष्णाजिन्न बने हुए थे यह झूठ बयान किया था कि 'राजा गोपालसिंह के छूटने के बाद मैंने उन कागजों का पता लगाया है जो इस समय मेरे ही साथ दुश्मनी कर रहे हैं' इत्यादि । असल में वे कागज मेरे पास उसी जमाने में मौजूद थे, जब दुनिया में मुझसे और भरतसिंह से मुलाकात हुई थी । आप यह हाल इनकी जुबानी सुन चुके होंगे ।

भरत० । हाँ भूतनाथ, इस समय मैं वही हाल बयान कर रहा हूँ, अभी कह नहीं चुका ।

भूत० । खैर तो अभी श्रीगणेश है । अच्छा आप बयान कीजिये ।

भरतसिंह ने फिर इस तरह बयान किया :—

भरत० । दूसरे दिन आधी रात के समय जब मैं गहरी नींद में सोया हुआ था हरदीन ने आकर मुझे जगाया और कहा, "लीजिये मैं गदाधरसिंहजी को ले आया हूँ, उठिये और इनसे मुलाकात कीजिये, ये बड़े ही लायक और बात के धनी आदमी हैं !" मैं खुशी खुशी उठ बैठा और बड़ी नर्मी के साथ भूतनाथ से मिला । इसके बाद मुझसे और भूतनाथ (गदाधर) से इस तरह बातचीत होने लगी :—

भूत० । साहब, आपका हरदीन बड़ा ही नेक और दिलावर है, ऐसे जीवट का आदमी दुनियाँ में कम दिखाई देगा । मैं तो इसे अपना परम हितैषी और मित्र समझता हूँ, इसने मेरे साथ जो कुछ भलाइयाँ की हैं उनका बदला मैं किसी तरह चुका ही नहीं सकता । मुझसे आपसे कभी की जान पहिचान नहीं, मुलाकात नहीं ऐसी अवस्था में मैं पहिल पहल बिना मतलब के आपके घर कदापि न आता परंतु इसकी इच्छा के विरुद्ध मैं नहीं चल सका, इन्होंने यहाँ आने के लिए कहा और मैं बेधड़क चला आया । इनकी जुबानी मैं सुन भी चुका हूँ कि आज कल आप किस फेर में पड़े हुए हैं और मुझसे मिलने की जरूरत आपको क्यों पड़ी अस्तु हरदीन की आज्ञानुसार मैं वह कागज का मुट्ठा भी आपको दिखाने के लिए लेता आया हूँ जिससे आपको दारोगा और रघुबरसिंह की हरमजदगी और राजा गोपालसिंह की शादी का पूरा पूरा हाल मालूम हो जायेगा, मगर खूब याद रखिये कि इस कागज को पढ़ कर आप बेताब हो जायँगे, आपको बेहिसाब गुस्सा चढ़ आवेगा और आपका दिल बेचैनी के साथ तमाम भण्डा फोड़ देने के लिए तैयार हो जायगा मगर नहीं, आपको बहुत बर्दाश्त करना पड़ेगा, दिल को सम्हालना और इन बातों को हर तरह से छिपाना पड़ेगा। मुझे हरदीनने आपका बहुत ज्यादेविश्वास दिलाया

है तभी मैं यहाँ आया हूँ और यह अनूठी चीज भी दिखाने के लिए तैयार हूँ नहीं तो कदापि न आता।

मैं०। आपने बड़ी मेहरबानी की जो मुझ पर भरोसा किया और यहाँ तक चले आये, मेरी जुबान से आपका रत्ती भर भेद भी किसी को नहीं मालूम हो सकता इसका आप विश्वास रखिये। यद्यपि मैं इस बात का निश्चय कर चुका हूँ कि गोपालसिंह के मामले में मैं अब कुछ भी दखल न दूँगा मगर इस बात का अफ़सोस जरूर है कि वह मेरे मित्र हैं और दुष्टों ने उन्हे बेतरह फँसा रक्खा है।

भूत०। केवल आप ही को नहीं इस बात का अफसोस मुझको भी है और मैं खुद गोपालसिंह को इस आफत से छुड़ाने का इरादा कर रहा हूँ, मगर लाचार हूँ कि बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी का कुछ भी पता नहीं लगता और जब तक उन दोनों का पता न लग जाय तब तक इस मामले को उठाना बड़ी भूल है।

मैं० मगर यह तो आपको निश्चय है न कि इसका कर्ताधर्ता कमबख्त दारोगा ही है।

भूत०। भला इसमें भी कुछ शक है? लीजिये इस कागज के मुट्ठे को पढ़ जाइये तब आपको भी विश्वास हो जायगा।

इतना कह कर भूतनाथ ने कागज का एक मुट्ठा निकाला और मेरे आगे रख दिया तथा मैंने भी उसे पढ़ना शुरू किया। मैं आपसे नहीं कह सकता कि उन कागजों को पढ़ कर मेरे दिल की कैसी अवस्था हो गई और दारोगा तथा रघुबर सिंह पर मुझे कितना क्रोध चढ़ आया। आप लोग तो उसे पढ़ सुन चुके हैं अत एव इस बात को खुद समझ सकते हैं। मैंने भूतनाथ से कहा कि 'यदि तुम मेरा साथ दो तो मैं आज ही दारोगा और रघुबरसिंह को इस दुनिया से उठा दूँ।'

भूत०। इससे फायदा ही क्या होगा? और यह काम ही कितना बड़ा है? मुझे खुद इस बात का खयाल है और मैं लक्ष्मीदेवी का पता लगाने के लिए दिल से कोशिश कर रहा हूँ, तथा आपका हरदीन भी पता लगा रहा है। इस तरह समय के पहिले छेड़छाड़ करने से खुद अपने को झूठा बनना पड़ेगा और लक्ष्मी देवी भी जहाँ की तहाँ पड़ी सड़ेगी या मर जायगी।

मैं०। हाँ ठीक है, अच्छा यह तो बताइये कि आप हरदीन की इतनी इज्जत क्यों करते हैं?

भूत०। इसलिए कि यह सब कुछ इन्हीं की बदौलत है, इन्होंने मुझे उस कुमेटी का पता बताया और उसका भेद समझाया और इन्हीं की मदद से मैंने उस कुमेटी का सत्यानाश किया।

मैं० । (हरदीन से) और तुम्हें उस कुमेटी का भेद क्योंकर मालूम हुआ ?

हर० । (हाथ जोड़ के) माफ कीजियेगा, मैं उस कुमेटी का मेम्बर था और अभी तक उन लोगों के खयाल से उन सभों का पक्षपाती बना हुआ हूँ, मगर मैं ईमानदार मेम्बर था इसलिए ऐसी बातें मुझे पसन्द न आईं और मैं गुप्त रीति से उन लोगों का दुश्मन बन बैठा, मगर इतना करने पर भी अभी तक मेरी जान इसलिए बची हुई है कि आपके घर में मेरे सिवाय और कोई इन लोगों का साथी नहीं है।

मैं० । तो क्या अभी तक तुम उन लोगों के साथी बने हुए हो और वे लोग अपने दिल का हाल तुमसे कहते हैं ?

हर० । जी हाँ, तभी तो मैंने आपको रघुवरसिंह के पंजे से बचाया था जब वह आपको घोड़े पर सवार कराके ले चला था !

मैं० । अगर ऐसा हो तो तुम्हें यह भी मालूम हो गया होगा कि उस दिन दाँव न लगने के कारण रघुवरसिंह ने अब कौन सी कार्रवाई सोची है।

हर० । जी हाँ, पहिले तो उसने मुझसे पूछा था कि 'भरतसिंह ने ऐसा क्यों किया, क्या उसको मेरी नीयत का कुछ पता लग गया' ? जिसके जवाब में मैंने कहा कि 'नहीं, किसी दूसरे सबब से ऐसा हुआ होगा'। इसके बाद दारोगा साहब ने मुझ पर हुक्म लगाया कि 'तू भरतसिंह को जिस तरह हो सके जहर दे दे'। मैंने कहा, "बहुत अच्छा ऐसा ही करूँगा, मगर इस काम में पाँच सात दिन जरूर लग जायँगे।"

इतना कह कर हरदीन ने भूतनाथ से पूछा कि 'कहिए अब क्या करना चाहिए' ? इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा कि 'अब पाँच सात दिन के बाद भरतसिंह को झूठ हल्ला मचा देना चाहिए कि मुझको किसी ने जहर दे दिया, बल्कि कुछ बीमारी की सी नकल भी करके दिखा देनी चाहिये'।

इसके बाद थोड़ी देर तक और भी भूतनाथ से बातचीत होती रही और किसी दिन फिर मिलने का वादा करके भूतनाथ विदा हुआ।

इस घटना के बाद कई दफे भूतनाथ से मुलाकात हुई बल्कि कहना चाहिए कि इनके और मेरे बीच में एक प्रकार की मित्रता सी हो गई और इन्होंने कई कामों में मेरी सहायता भी की।

जैसा कि आपुस में सलाह हो चुकी थी मुझे यह मशहूर करना पड़ा कि 'मुझे किसी ने जहर दे दिया'। साथ ही इसके कुछ बीमारी की नकल भी की गई जिसमें

मेरे नौकर पर कम्बख्त दारोगा को शक न हो जाय, मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला अर्थात् दारोगा को मालूम हो गया कि हरदीन उसका सच्चा साथी और भेदिया नहीं है।

एक दिन रात के समय एकान्त में हरदीन ने मुझसे कहा, "लीजिये हु दारोगा साहब को निश्चय होगया कि मैं उनका सच्चा साथी नहीं हूँ। आज उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया था मगर मैं गया नहीं क्योंकि मुझे यह निश्चय हो गया कि जाने के साथ ही मैं उसके कब्जे में आ जाऊँगा और फिर किसी तरह जान न बचेगी, यों तो छिटके रहने पर लड़ते झगड़ते जैसा होगा देखा जायगा। अस्तु इस समय मुझे आपसे यह कहना है कि आज से मैं आपके यहाँ रहना छोड़ दूँगा और तब तक आपके पास न आऊँगा जब तक मैं दारोगा की तरफ से बेफिक्र न होऊँ। देखा चाहिए मेरे उससे क्योंकर निपटती है, वह मुझे मार कर निश्चिन्त होता है या मैं उसे जहन्नुम में पहुँचा कर कलेजा ठंढा करता हूँ। मुझे अपने मरने का कुछ भी नहीं है मगर इस बात का अफसोस जरूर है कि मेरे जाने बाद आपका मददगार यहाँ कोई भी नहीं है और कम्बख्त दारोगा आपको फँसाने में किसी तरह की कसर न करेगा, खैर लाचारी है क्योंकि मेरे यहाँ रहने से भी आपका कल्याण नहीं हो सकता, यों तो मैं छिपे छिपे कुछ न कुछ मदद जरूर करूँगा पर आप जहाँ तक हो सके खूब होशियारी के साथ काम कीजियेगा।"

मैं०। अगर यही बात है तो तुम्हारे भागने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती। हम लोग दारोगा के भेदों को खोल कर खुल्लमखुल्ला उसका मुकाबला कर सकते हैं।

हर०। इससे कोई फायदा नहीं हो सकता, क्योंकि हम लोगों के पास दारोगा के खिलाफ कोई सबूत नहीं है और न उसके बराबर ताकत ही है।

मैं०। क्या इन भेदों को हम गोपालसिंह से नहीं खोल सकते और ऐसा करने से भी कोई काम नहीं चलेगा?

हर०। नहीं, ऐसा करने से जो कुछ बरस दो बरस गोपालसिंहजी की जिन्दगी है वह भी न रहेगी अर्थात् हम लोगों के साथ ही साथ वे भी मार डाले जायेंगे। आप नहीं समझ सकते और नहीं जानते कि दारोगा की असली सूरत क्या है, उसकी ताकत कैसी है, और उसके मजबूत जाल किस कारीगरी के साथ फैले हुए हैं। गोपालसिंह अपने को राजा और शक्तिमान समझते होंगे मगर मैं सच कहता हूँ कि दारोगा के सामने उनकी कुछ भी हकीकत नहीं है, हाँ यदि राजा गोपालसिंह किसी को किसी तरह की खबर किए बिना एकाएक दारोगा को गिरफ्तार

करके मार डालें तो वेशक वे राजा कहला सकते हैं, मगर ऐसी अवस्था में माया-रानी उन्हें जीता न छोड़ेगी और लक्ष्मीदेवी वाला भेद भी ज्यों का त्यों वन्द रह जायगा, वह भी किसी तहखाने में पड़ी पड़ी भूखी प्यासी मर जायगी।

इसी तरह पर हमारे और हरदीन के बीच में देर तक वातें होती रहीं और वह मेरी हर एक वात का जवाव देता रहा। अन्त में वह मुझे समझा वुझा कर घर से बाहर निकल गया और उसका पता न लगा।

रात भर मुझे नींद न आई और मैं तरह तरह की वातें सोचता रह गया। सुबह को चारपाई से उठा, हाथ मुँह धोने के बाद दर्बारी कपड़े पहिरे, हर्बे लगाए और राजा साहव की तरफ रवाना हुआ। जव मैं उस तिरमुहानी पर पहुंचा जहाँ से एक रास्ता राजा साहव के दीवानखाने की तरफ और दूसरा खास वाग की तरफ गया है तव उस जगह पर दारोगा साहव से मुलाकात हुई जो दीवानखाने की तरफ से लौटे हुए चले आ रहे थे।

प्रकट में मुझसे और दारोगा साहव से वहुत अच्छी तरह साहव सलामत हुई और उन्होंने उदासीनता के साथ मुझसे कहा, "आप दीवानखाने की तरफ कहाँ जा रहे हैं, राजा साहव तो खास वाग में चले गये, मेरे साथ चलिए, मैं भी उन्हीं से मिलने के लिए जा रहा हूँ, सुना है कि रात से उनकी तवीयत खराव हो रही है।

मैं०। (ताज्जुव के साथ) क्यों क्यों, कुशल तो है ?

दारोगा०। अभी अभी पता लगा है कि आधी रात के वाद से उन्हें वेहिसाव दस्त और कै आ रहे हैं, आप कृपा करके यदि मोहनजी वैद्य को अपने साथ लेते आवें तो वड़ा काम हो, मैं खुद उनकी तरफ जाने का इरादा कर रहा था।

दारोगा की वातें सुन कर मैं घवड़ा गया, राजा साहव की वीमारी का हाल सुनते ही मेरी तवीयत उदास हो गई और मैं 'वहुत अच्छा' कह उल्टे पैर लौटा और मोहनजी वैद्य की तरफ रवाना हुआ।

यहाँ तक अपना हाल कह कुछ देर के लिए भरतसिंह चुप हो गये और दम लेने लगे। इस समय जीतसिंह ने महाराज की तरफ देखा और कहा, "भरत-सिंह जी का किस्सा भी दर्वारे-आम में कैदियों के सामने ही सुनने लायक है।"

महाराज०। वेशक ऐसा ही है। (गोपालसिंह से) तुम्हारी क्या राय है ?

गोपाल०। महाराज की इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ वोल न सका नहीं तो मैं यही चाहता था कि और नकावपोशों की तरह इनका किस्सा भी कैदियों के सामने सुना जाय।

और सभों ने भी यही राय दी, आखिर महाराज ने हुक्म दिया कि 'दर्बार-आम किया जाय और कैदी लोग दर्बार में लाये जाँय'।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी था जब यह छोटा सा दर्बार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने ठिकाने चले गये, कुँअर आनन्दसिंह शिकारी कपड़े पहिन कर तारासिंह को साथ लिए महल के बाहर आए और दोनों दोस्त घोड़ों पर सवार हो जंगल की तरफ रवाना हो गये।

दसवाँ बयान

घोड़े पर सवार तारासिंह को साथ लिए हुए कुँअर आनन्दसिंह जंगल जंगल घूमते और साधारण ढंग पर शिकार खेलते हुए बहुत दूर निकल गये और जब दिन बहुत कम बाकी रह गया तब धीरे धीरे घर की तरफ लौटे।

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि 'अटारी पर एक सजे बँगले में बैठी हुई किशोरी कामिनी और कमलिनी वगैरह ने जंगल से निकल घर की तरफ आते हुए कुँअर आनन्दसिंह और तारासिंह को देखा तथा यह देखा कि दस बारह नकाबपोशों ने जंगल में से निकल इन दोनों पर तीर चलाए और ये दोनों उनका पीछा करते हुए पुनः जंगल के अन्दर घुस गए'—इत्यादि।

यह वही मौका है जिसका हम जिक्र कर रहे हैं। उस समय कमला ने लौंडी की जुबानी इन्द्रजीतसिंह को इस बात की खबर दिलवा दी थी, और खबर पाते ही कुँअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह तथा और भी बहुत से आदमी आनन्दसिंह की मदद के लिए रवाना हो गए थे।

असल बात यह थी कि भूतनाथ की चालाकी से शर्मिन्दगी उठा कर भी नानक ने सब्र नहीं किया बल्कि पुनः इन लोगों का पीछा किया और अबकी दफे इस इरादे से जाहिर हुआ था कि मौका मिले तो आनन्दसिंह को तीर का निशाना बनावे और इसी तरह बारी बारी से अपने दुश्मनों की जान लेकर कलेजा ठंढा करे। मगर उसका यह इरादा भी काम न आया, आनन्दसिंह और तारासिंह की चालाकी और उनके घोड़ों की चपलता के कारण उसका निशाना कारगर न हुआ और उन्होंने तेजी के साथ उसके सर पर पहुँच कर सभों को हर तरह से मजबूर कर दिया, तब तक मदद लिए हुए कुँअर इन्द्रजीतसिंह भी जा पहुँचे और आठ साथियों सहित बेईमान नानक को गिरफ्तार कर लिया। यद्यपि उसी समय यह भी मालूम हो गया कि इसके साथियों में से कई आदमी निकल गए मगर इस बात की

परवाह न की गई और जो कुछ गिरफ्तार हो गए थे उन्हीं को लेकर सब कोई घर की तरफ रवाना हो गए।

कम्वख्त नानक पर हर तरह की रिआयत की गई, वहुत कड़ी सजा पाने के योग्य होने पर भी उसे किसी तरह की सजा न दी गई, और वह इस ख्याल से बिल्कुल साफ छोड़ दिया गया कि शायद फिर भी सुधर जाय मगर नहीं—

भूयोपि सिक्ता पयसा घृतेन
न निम्व वृक्षो मधुरत्त्वमेति

अर्थात् "नीम न मीठी होय सींचे गुड़ घीउ से।"

आखिर नानक को वह दुःख भोगना ही पड़ा जो उसकी किस्मत में वदा हुआ था।

जिस समय नानक गिरफ्तार करके लाया गया और लोगों ने उसका हाल सुना उस समय सभों को उसकी नालायकी पर वहुत ही रंज हुआ। महाराज की आज्ञानुसार वह कैदखाने में पहुंचाया गया और सभों को निश्चय हो गया कि अव उसे किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता।

दूसरे दिन दर्बारे-आम का वन्दोवस्त किया गया और कैदियों का मुकदमा सुनने के लिए वड़े शौक से लोग इकट्ठा होने लगे। हथकड़ियों और बेड़ियों से जकड़े हुए कैदी लोग हाजिर किए गए और आपुस वालों तथा ऐयारों को साथ लिए हुए महाराज भी दर्बार में आकर एक ऊँची गद्दी पर वैठ गये। आज के दर्बार में भीड़ मामूली से वहुत ज्यादे थी और कैदियों का मुकदमा सुनने के लिए सभी उतावले हो रहे थे। भरतसिंह दलीपशाह अर्जुनसिंह तथा उनके और भी दो साथी जो तिलिस्म के वाहर होने के वाद अपने घर चले गए थे और अव लौट आये हैं अपने अपने चेहरों पर नकाव डाल कर दर्बार में राजा गोपालसिंह के पास वैठ गये और महाराज के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

महाराज का इशारा पाकर भरतसिंह खड़े हो गए और उन्होंने दारोगा तथा जैपाल की तरफ देख कर कहा—

"दारोगा साहव, जरा मेरी तरफ देखिए और पहिचानिए कि मैं कौन हूं। जैपाल, तू भी इधर निगाह कर!"

इतना कह कर भरतसिंह ने अपने चेहरे पर से नकाव उलट दी और एक दफे चारो तरफ देख कर सभों का ध्यान अपनी तरफ खैंच लिया। सूरत देखते ही दारोगा और जैपाल थर थर काँपने लगे। दारोगा ने लड़खड़ाई हुई आवाज में कहा, "कौन? ओफ, भरतसिंह! नहीं नहीं भरतसिंह कहाँ? उसे मरे वहुत

दिन हो गए, यह तो कोई ऐयार है !!"

भरत० । नहीं नहीं दारोगा साहब मैं ऐयार नहीं हूँ, मैं वही भरतसिंह हूँ जिसे आपने हद से ज्यादा सताया था, मैं वही भरतसिंह हूँ जिसके मुँह पर आपने मिर्च का तोवड़ा चढ़ाया था और मैं वही भरतसिंह हूँ जिसे आपने अंधेरे कूएं में लटका दिया था । सुनिये मैं अपना किस्सा वयान करता हूँ और यह भी कहता हूँ कि आखीर में मेरी जान क्योंकर वची । जैपालसिंह, आप भी सुनिए और हुंकारी भरते चलिए ।

इतना कह कर भरतसिंह ने अपना किस्सा आदि से कहना आरम्भ किया जैसा कि हम ऊपर वयान कर आये हैं और इसके वाद यों कहने लगे :—

भरत० । दारोगा की वातों ने मुझे घवड़ा दिया और मैं उलटे पैर मोहनजी वैद्य को बुलाने के लिए रवाना हुआ । मुझे इस वात का रत्ती भर भी शक न था कि मोहनजी और दारोगा साहब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं अथवा इन दोनों में हमारे लिए कुछ वातें तै पा चुकी हैं । मैं बेधड़क उनके मकान पर गया और इत्तिला कराने के वाद उनके एकान्त वाले कमरे में जा पहुंचा जहाँ उन्होंने मुझे बुला भेजा था । उस समय वे अकेले बैठे माला जप रहे थे । नौकर मुझे वहाँ तक पहुंचा कर विदा हो गया और मैंने उनके पास बैठ कर राजा साहब का हाल वयान करके खास वाग में चलने के लिए कहा । जवाव में वैद्यजी यह कहते हुए कि 'मैं दवाओं का वन्दोवस्त करके अभी आपके साथ चलता हूँ' खड़े हुए और आलमारी में से कई तरह की शीशियाँ निकाल निकाल जमीन पर रखने लगे । उसी बीच में उन्होंने एक छोटी शीशी निकाल कर मेरे हाथ में दी और कहा "देखिए यह मैंने एक नये ढंग की ताकत की दवा तैयार की है, खाना तो दूर रहा इसके सूघने ही से तुरत मालूम होता है कि वदन में एक तरह की ताकत आ रही है ! लीजिए जरा सूंघ के अन्दाज तो कीजिए ।"

मैं वैद्यजी के फेर में पड़ गया और शीशी का मुँह खोल कर सूंघने लगा । इतना तो मालूम हुआ कि इसमें कोई खुशवूदार चीज है मगर फिर तनोवदन की सुध न रही । जब मैं होश में आया तो अपने को हथकड़ी वेड़ी से मजबूर एक अंधेरी कोठरी में कैद पाया । नहीं कह सकता कि वह दिन का समय था या रात का । कोठरी के एक कोने में चिराग जल रहा था और दारोगा तथा जैपाल हाथ में नंगी तलवार लिए सामने बैठे हुए थे ।

मैं० । (दारोगा से) अब मालूम हुआ कि आपने इसी काम के लिए मुझे वैद्यजी के पास भेजा था ।

दारोगा० । बेशक इसीलिए, क्योंकि तुम मेरी जड़ काटने के लिए तैयार हो चुके थे ।

मैं० । तो फिर मुझे कैद कर रखने से क्या फायदा ? मार कर बखेड़ा निपटाइए और बेखटके आनन्द कीजिए ।

दारोगा० । हाँ अगर तुम मेरी बात न मानोगे तो बेशक मुझे ऐसा ही करना पड़ेगा ।

मैं० । मानने की कौन सी बात है ? मैंने तो अभी तक कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे आपको किसी तरह का नुकसान पहुंचे ।

दारोगा० । ये सब बातें तो रहने दो क्योंकि तुम और हरदीन मिल कर जो कुछ कर चुके थे और जो किया चाहते थे उसे मैं खूब जानता हूँ मगर बात यह है कि अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें इस कैद से छुट्टी दे सकता हूँ नहीं तो मौत तुम्हारे लिए रक्खी हुई है ।

मैं० । खैर बताइये तो सही कि वह कौन सा काम है जिसके करने से छुट्टी मिल सकती है ।

दारोगा० । यही कि तुम एक चीठी इन रघुवरसिंह अर्थात् जैपाल के नाम लिख दो जिसमें यह बात हो कि 'लक्ष्मीदेवी के बदले में मुन्दर को मायारानी बना देने में जो कुछ मेहनत की है वह हम तुम दोनों ने मिल कर की है अतएव उचित है कि इस काम में जो कुछ तुमने फायदा उठाया है उसमें से आधा मुझे दे दो नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा' ।

मैं० । ठीक है, आपका मतलब मैं समझ गया, खैर आज तो नहीं मगर कल जैसा आप कहते हैं वैसा ही कर दूँगा ।

दारोगा० । आखिर एक दिन की देर करने में तुमने फायदा ही क्या सोच रक्खा है !

मैं० । सो भी कल ही बताऊँगा ।

दारोगा० । अच्छा क्या हर्ज है कल ही सही ।

इतना कह कर दारोगा चला गया और मैं भूखा प्यासा उसी कोठरी में पड़ा हुआ तरह तरह की बातें सोचने लगा क्योंकि उस दिन दारोगा ने मेरे खाने पीने के लिए कुछ भी प्रबन्ध न किया । मुझे निश्चय हो गया कि इस ढंग की चीठी लिखवाने के बाद दारोगा मुझे जान से मार डालेगा और मेरे मरने के बाद यही चीठी मेरी बदनामी का सबब बनेगी, मेरे दोस्त गोपालसिंह मुझको बेईमान समझेंगे और तमाम दुनिया मुझे कमीना खयाल करेगी, अस्तु मैंने दिल में ठान लिया कि चाहे

जान जाय या रहे मगर इस तरह की चीठी मैं कदापि न लिखूंगा। आखिर मरना तो जरूर ही है फिर कलंक का टीका जान बूझ कर अपने माथे क्यों लगाऊं!

दूसरे दिन रघुवरसिंह को साथ लिए हुए दारोगा पुनः मेरे पास आया।

भरतसिंह ने अपना हाल यहाँ तक वयान किया था कि राजा गोपालसिंह बीच ही में टोका और पूछा, "क्या रघुवरसिंह भी इसी जैपाल का नाम है?"

भरत०। जी हाँ, इसका नाम रघुवरसिंह था और कुछ दिन के लिए इसने अपना नाम 'भूतनाथ' रख लिया था।

गोपाल०। ठीक है, मुझे इस वारे में धोखा हुआ, नहीं वल्कि मेरे खजाने ही ने मुझे धोखा दिया, खैर तब क्या हुआ?

भरत०। हाँ तो दूसरे दिन जैपाल को साथ लिए हुए दारोगा पुनः मेरे पास आया और बोला, "कहो चीठी लिख देने के लिए तैयार हो या नहीं?" इसके जवाब में मैंने कहा कि 'मर जाना मंजूर है मगर झूठे कलंक का टीका अपने माथे पर लगाना मंजूर नहीं'!

दारोगा ने मुझे कई तरह से समझाना वुझाना और धोखे में डालना चाहा मगर मैंने उसकी एक न सुनी। आखिर दोनों ने मिल कर मुझे मारना शुरू किया यहाँ तक मारा कि मैं वेहोश हो गया। जब होश में आया तो फिर उसी तरह अपने को कैद पाया। भूख और प्यास के मारे मेरा बुरा हाल हो गया था और मार के सबब से तमाम बदन चूर चूर हो रहा था। तीसरे दिन दोनों शैतान फिर मेरे पास आये और जब उस दिन भी मैंने दारोगा की बात न मानी तो उन्होंने घोड़ों के दाना खाने वाले तोवड़े में चूर किया हुआ मिरचा रख कर मेरे मुँह पर चढ़ा दिया। हाय हाय! उस तकलीफ को मैं कभी नहीं भूल सकता!!

यहाँ तक कह कर भरतसिंह चुप हो गये और दारोगा तथा जैपाल की तरफ देखने लगे। वे दोनों सर नीचा किए हुए जमीन की तरफ देख रहे थे और डर के मारे दोनों का वदन काँप रहा था। भरतसिंह ने पुकार कर कहा, "कहिए दारोगा साहब, जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सच है या झूठ?" मगर दारोगा ने इसका कुछ भी जवाब न दिया। मगर उस समय दर्वार में जितने आदमी बैठे थे क्रोध के मारे सभों का बुरा हाल था और सब कोई दारोगा की तरफ जलती हुई निगाह से देख रहे थे। भरतसिंह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

भरत०। दारोगा के सम्बन्ध में मेरा किस्सा वैसा दिलचस्प नहीं है जैसा दलीपशाह और अर्जुनसिंह का आप लोग सुनेंगे, क्योंकि उनके साथ बड़ी

विचित्र घटनाएँ हो चुकी हैं, बल्कि यों कहना चाहिए कि मेरा तमाम किस्सा उनकी एक दिन की घटना का मुकाबला भी नहीं कर सकता, परन्तु साथ ही इसके यह बात भी जरूर है कि मैंने न तो कभी किसी के साथ किसी तरह की बुराई की और न किसी से विशेष मेलजोल या हँसी दिल्लगी ही रखता था, फिर भी उन दिनों जमानिया की वह दशा थी कि सादे ढंग पर जिन्दगी बिताने वाला मैं भी सुख की नींद न सो सका और राजा साहब की दोस्ती की बदौलत मुझे हर तरह का दुःख भोगना पड़ा। इस हरामखोर दारोगा ने ऐसे ऐसे कुकर्म किए हैं कि जिनका पूरा पूरा बयान हो ही नहीं सकता और न यही मेरी समझ में आता है कि दुनिया में कौन सी ऐसी सजा है जो इसके योग्य समझी जाय। अस्तु अब मैं संक्षेप में अपना हाल समाप्त करता हूँ।

अपने मन के माफिक चीठी लिखाने की नीयत से आठ दिन तक कम्बख्त दारोगा ने मुझे बेहिसाब तकलीफें दीं। मिर्च का तोबड़ा मेरे मुँह पर चढ़ाया, जहरीली राई का लेप मेरे बदन पर किया, कूएँ में लटकाया, गन्दी कोठरी में बन्द किया, जो जो सूझा सब कुछ किया और इतने दिनों तक बराबर ही मुझे भूखा भी रक्खा मगर न मालूम क्या सबब है कि मेरी जान न निकली। मैं बराबर ईश्वर से प्रार्थना करता था कि किसी तरह मुझे मौत दे जिससे इस दुःख से छुट्टी मिले। आखिरी दिन मैं इतना कमजोर हो गया था कि मुझमें बात करने की ताकत न थी।

उस दिन आधी रात के समय मैं उसी कोठरी में पड़ा पड़ा मौत का इन्तजार कर रहा था कि यकायक कोठरी का दर्वाजा खुला और एक नकाबपोश दाहिने हाथ में नंगी तलवार और बाएँ हाथ में एक छोटी सी गठरी लिए हुए कोठरी के अन्दर आता हुआ दिखाई पड़ा। हाथ में वह जो तलवार लिए था उसके अतिरिक्त उसके कमर में एक तलवार और भी थी। कोठरी के अन्दर आते ही उसने भीतर से दरवाजा बन्द कर दिया और मेरे पास चला आया, हाथ की गठरी और तलवार जमीन पर रख मुझसे चिमट गया और रोने लगा। उसकी ऐसी मुहब्बत देख मैं चौंक पड़ा और मुझे तुरत मालूम हो गया कि यह मेरा पुराना खैरख्वाह हरदीन है। उसके चेहरे से नकाब हटा कर मैंने उसकी सूरत देखी और तब रोने में उसका साथ दिया।

थोड़ी ही देर बाद हरदीन मुझसे अलग हुआ और बोला, "मैं किसी न किसी तरह यहाँ तो पहुंच गया मगर यहाँ से निकल भागना जरा कठिन है, तथापि आप

घवड़ाएँ नहीं, मैं एक दफे तो दुश्मन को सताए विना नहीं रहता, अव आप शीघ्र उठें और जो कुछ मैं खाने पीने के लिए लाया हूँ उसे भोजन करके चैतन्य हो जायें।"

जो गठरी हरदीन लाया था उसमें खाने पीने का सामान था। उसने मुझे भोजन कराया, पानी पिलाया और इसके वाद मेरे हाथ में एक तलवार देकर बोला, "बस अव आप उठिये और मेरे पीछे पीछे चले आइए, इतना समय नहीं है कि मैं आपसे विशेष वातें करूँ, इसके अतिरिक्त जिस जगह पर आप कैद हैं यह तिलिस्म का एक हिस्सा है, यहाँ से निकलने के लिए भी वहुत उद्योग करना होगा।"

भोजन करने से कुछ ताकत तो मुझमें हो ही गई थी मगर कैद से छुटकारा मिलने की उम्मीद ने उससे भी ज्यादे ताकत पैदा कर दी। मैं उठ खड़ा हुआ और हरदीन के पीछे पीछे रवाना हुआ। कोठरी का दरवाजा खोलने के बाद जब मैं बाहर निकला तब मुझे मालूम हुआ कि मैं खास बाग के तीसरे दर्जे में हूँ जिसमें कई दफे राजा गोपालसिंह के साथ आ चुका था, मगर इस बात से मुझको वहुत ही ताज्जुब हुआ और मैं सोचने लगा कि देखो राजा साहब के खास बाग ही में दारोगा लोगों पर इतना जुल्म करता है और राजा साहब को खबर तक नहीं होती ! क्या यहाँ कई ऐसे स्थान हैं जिनका हाल दारोगा जानता है और राजा साहव नहीं जानते ?

खैर मैं कोठरी के बाहर निकल कर बारामदे में पहुंचा जहाँ से बायें और दाहिने सिर्फ दो ही तरफ जाने का रास्ता था। दाहिने तरफ इशारा करके हरदीन ने मुझसे कहा, "इसी तरफ से मैं आया हूँ, दारोगा जैपाल तथा वहुत से आदमी इस तरफ बैठे हैं इसलिए इधर तो अब जा नहीं सकते, हाँ बाईं तरफ चलिए कहीं न कहीं तो रास्ता मिल ही जायगा।"

रात चाँदनी थी और ऊपर से खुला रहने के सबब उधर की हर एक चीज साफ साफ दिखाई देती थी। हम दोनों आदमी बाईं तरफ रवाना हुए। लगभग पचीस कदम जाने के बाद नीचे उतरने के लिए दस बारह सीढ़ियाँ मिलीं जिन्हें तै करने के बाद हम दोनों एक दालान में पहुंचे जो बहुत लम्बा चौड़ा तो न था मगर निहायत खूबसूरत और स्याह पत्थर का बना हुआ था। उस दालान में पहुंचे ही थे कि पीछे से दारोगा और जैपाल तेजी के साथ आते हुए दिखाई दिए मगर हरदीन ने इनकी कुछ भी परवाह न की और कहा, "इन दोनों के लिए तो मैं अकेला ही काफी हूँ।"

हरदीन मुझे अपने पीछे करने के बाद अड़ कर खड़ा हो गया। उसने दारो

को सैकड़ों गालियाँ दीं और मुकाबला करने के लिए ललकारा मगर उन दोनों की हिम्मत न पड़ी कि आगे बढ़ें और हरदीन का मुकाबला करें। कुछ देर तक खड़े खड़े. देखने और सोचने के बाद दारोगा ने अपने जेब में से एक छोटा सा गोला निकाला और हम दोनों की तरफ फेंका। हरदीन समझ गया कि जमीन पर गिरने के साथ ही इसमें से वेहोशी का धूंआ निकलेगा। उसने अपने हाथ से मुझे भागने का इशारा किया। गोला जमीन पर गिर कर फटा और उसमें से बहुत सा धूआँ निकला मगर हम दोनों वहाँ से हट गये थे इसलिए उसका कुछ असर न हुआ। उसी समय दारोगा ने हम लोगों की तरफ फेंकने के लिए दूसरा गोला निकाला।

इस दालान के बीचोबीच में एक छोटा सा चबूतरा लाल पत्थर का बना हुआ था मगर हम दोनों यह नहीं जानते थे कि इसमें क्या गुण है। दारोगा को दूसरा गोला निकालते देख हम दोनों उस चबूतरे पर चढ़ गए मगर उस पर से उतर कर भाग न सके क्योंकि चढ़ने के साथ ही चबूतरा हिला, तब हम दोनों को लिए हुए जमीन के अन्दर धँस गया और साथ ही न मालूम किस चीज के असर से हम दोनों वेहोश हो गये। जब होश में आये तो चारो तरफ अन्धकार ही अन्धकार दिखाई दिया, नहीं कह सकते कि हम दोनों कितनी देर तक वेहोश रहे।

कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद सामने की तरफ कुछ उजाला मालूम हुआ और वह उजाला धीरे धीरे बढ़ने लगा जिससे हमने समझा कि सामने कोई दर्वाजा है और उसमें से सुबह की सुफेदी दिखाई दे रही है। हम दोनों उठ कर खड़े हुए और उसी उजाले की तरफ बढ़े। वास्तव में वैसा ही था जैसा हम लोगों ने सोचा था। कई कदम चलने के बाद एक दर्वाजा मिला जिसे लाँघ कर हम दोनों उसी बुर्ज वाले बाग में जा पहुंचे जहाँ दोनों कुमारों से मुलाकात हुई थी। इसके बाद बाहर का हाल बहुत दिनों तक कुछ भी मालूम न हुआ कि क्या हो रहा है और क्या हुआ। बहुत दिनों तक वहाँ से बाहर निकलने के लिए उद्योग करते रहे परन्तु सब व्यर्थ हुआ और वहाँ से छुट्टी तभी मिली जब दोनों कुमारों के दर्शन हुए*। कुछ दिनों बाद दलीपशाह से भी उसी बाग में मुलाकात हुई जिसका हाल उनका किस्सा सुनने से आप लोगों को मालूम होगा। बस इतना ही तो मेरा किस्सा है, हाँ जब आप लोग दलीपशाह की कहानी सुनेंगे तब बेशक कुछ आनन्द मिलेगा। (एक नकाबपोश की तरफ बता कर) मेरा पुराना खैरखाह

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवाँ भाग, चौथा बयान।

हरदीन यही है जो इतने दिनों तक मेरे दुःख सुख का साथी बना रहा और अन्त में मेरे साथ ही कैद से छूटा।

भरतसिंह की कथा समाप्त होने के बाद दर्बार बर्खास्त किया गया और महाराज ने हुक्म दिया कि 'कल के दर्बार में दलीपशाह अपना किस्सा बयान करें'।

ग्यारहवाँ बयान

दूसरे दिन पुनः उसी ढंग का दर्बार लगा और सब कोई अपने अपने ठिकाने पर बैठ गये।

इशारा पाकर दलीपशाह उठ खड़ा हुआ और उसने अपने चेहरे पर से नकाब हटा कर दारोगा जैपाल बेगम और नागर वगैरह की तरफ देख कर कहा—

दलीप०। आप लोगों की खुशकिस्मती का जमाना तो बीत गया अब वह जमाना आ गया है कि आप लोग अपने किए का फल भोगें और देखें कि आपने जिन लोगों को जहन्नुम में पहुंचाने का बीड़ा उठाया था आज ईश्वर की कृपा से वे ही लोग आपको हँसते खेलते दिखाई देते हैं। खैर मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं, इसका निपटारा तो महाराज की आज्ञा से होगा, मुझे अपना किस्सा बयान करने का हुक्म हुआ है सो बयान करता हूँ। (और लोगों की तरफ देख कर) मेरे किस्से से भूतनाथ का भी बहुत बड़ा सम्बन्ध है मगर इस खयाल से कि महाराज ने भूतनाथ का कसूर माफ करके उसे अपना ऐयार बना लिया है मैं अपने किस्से में उन बातों का जिक्र छोड़ता जाऊँगा जिससे भूतनाथ की बदनामी होती है, इसके अतिरिक्त भूतनाथ प्रतिज्ञानुसार महाराज के आगे पेश करने के लिए स्वयं अपनी जीवनी लिख रहा है जिससे महाराज को पूरा पूरा हाल मालूम हो जायगा अस्तु मुझे कुछ कहने की जरूरत भी नहीं है।

मैं मिर्जापुर के रहने वाले दीनदयालसिंह ऐयार का लड़का हूँ। मेरे पिता महाराज धौलपुर के यहाँ रहते थे और वहाँ उनकी बहुत इज्जत और कदर थी। उन्होंने मुझे ऐयारी सिखाने में किसी तरह की त्रुटि नहीं की, जहाँ तक हो सका दिल लगा कर मुझे ऐयारी सिखाई और मैं भी इस फन में खूब होशियार हो गया, परन्तु पिता के मरने के बाद मैंने किसी रियासत में नौकरी नहीं की। मुझे अपने पिता की जगह मिलती थी और महाराज मुझे बहुत चाहते थे, मगर मैं पिता के मरने के साथ ही रियासत छोड़ दी और अपने जन्म-स्थान मिर्जापुर में चला आया क्योंकि मेरे पिता मेरे लिए बहुत दौलत छोड़ गये थे और मुझे खा-

पीने की कुछ परवाह न थी। पिता के देहान्त के साल भर पहिले ही मेरी माँ मर चुकी थी अतएव केवल मैं और मेरी स्त्री दो ही आदमी अपने घर के मालिक थे।

जमानिया की रियासत से मुझे किसी तरह का सम्बन्ध नहीं था परन्तु इस-लिए कि मैं एक नामी ऐयार का लड़का और खुद भी ऐयार था तथा बहुत से ऐयारों से गहरी जान पहिचान रखता था मुझे चारो तरफ की खबरें बराबर मिला करती थीं, इसी तरह जमानिया में जो कुछ चालबाजियाँ हुआ करती थीं वह भी मुझसे छिपी हुई न थीं। भूतनाथ की स्त्री और मेरी स्त्री आपुस में मौसेरी बहिनें होती हैं और भूतनाथ को जमानिया से बहुत घना सम्बन्ध हो गया था इसलिए जमा-निया का हाल जानने के लिए मैं उद्योग भी किया करता था मगर उसमें किसी तरह का दखल नहीं देता था। (दारोगा की तरफ इशारा करके) इस हरामखोर दारोगा ने रियासत पर अपना दबाव डालने की नीयत से विचित्र ढोंग रच लिया था, शादी नहीं की थी और बाबाजी तथा ब्रह्मचारी के नाम से अपने को प्रसिद्ध कर रक्खा था बल्कि मौके मौके पर लोगों को कहा करता था कि मैं तो साधू आदमी हूँ मुझे रुपये पैसे की जरूरत ही क्या है, मैं तो रियासत की भलाई और परोपकार में अपना समय बिताना चाहता हूँ, इत्यादि। परन्तु वास्तव में यह परले सिरे का ऐयाश बदमाश और लालची था जिसके विषय में कुछ विशेष कहना मैं पसन्द नहीं करता।

मेरे पिता और इन्द्रदेव के पिता दोनों दिली दोस्त और ऐयारी में एक ही गुरु के शिष्य थे अतएव मुझमें और इन्द्रदेव में भी उसी प्रकार की दोस्ती और मुहब्बत थी इसीलिए मैं प्रायः इन्द्रदेव से मिलने के लिए उनके घर जाया करता और कभी कभी वे भी मेरे घर आया करते थे। जरूरत पड़ने पर इन्द्रदेव की इच्छानुसार मैं उनका कुछ काम भी कर दिया करता और उन्हीं के यहाँ कभी कभी इस कम्बख्त दारोगा से भी मुलाकात हो जाया करती थी, बल्कि यों कहना चाहिए कि इन्द्रदेव ही के सबब से दारोगा जैपाल राजा गोपालसिंह और भरत-सिंह तथा जमानिया के और भी कई नामी आदमियों से मेरी मुलाकात और साहब सलामत हो गई थी।

जब भूतनाथ के हाथ से बेचारा दयाराम मारा गया तब से मुझमें और भूत-नाथ में एक प्रकार की खिचाखिची हो गई थी और वह खिचाखिची दिनों दिन बढ़ती ही गई, यहाँ तक कि कुछ दिनों बाद हम दोनों की साहब सलामत भी छूट गई।

एक दिन मैं इन्द्रदेव के यहाँ बैठा हुआ भूतनाथ के विषय में बातचीत कर रहा था क्योंकि उन दिनों यह खबर बड़ी तेजी के साथ मशहूर हो रही थी कि 'गदाधरसिंह (भूतनाथ) मर गया'। परन्तु उस समय इन्द्रदेव इस बात पर जोर दे रहे थे कि भूतनाथ मरा नहीं, कहीं छिप कर बैठ गया है, कभी न कभी यकायक प्रकट हो जायगा। इसी समय दारोगा के आने की इत्तिला मिली जो बड़े शान शौकत के साथ इन्द्रदेव से मिलने के लिए आया था। इन्द्रदेव बाहर निकल कर बड़ी खातिर के साथ इसे घर के अन्दर ले गये और अपने आदमियों को हुक्म दे गये कि दारोगा के साथ जो आदमी आये हैं उनके खाने पीने और रहने का उचित प्रबन्ध किया जाय।

दारोगा को साथ लिए हुए इन्द्रदेव उसी कमरे में आए जिसमें मैं पहिले ही से बैठा हुआ था, क्योंकि इन्द्रदेव की तरह मैं दारोगा को लेने के लिए मकान के बाहर नहीं गया था और न दारोगा के आ पहुंचने पर मैंने उठ कर इसकी इज्जत ही बढ़ाई, हाँ साहब सलामत जरूर हुई। यह बात दारोगा को बहुत ही बुरी मालूम हुई मगर इन्द्रदेव को नहीं क्योंकि इन्द्रदेव गुरुभाई का सिर्फ नाता निबाहते थे, दिल से दारोगा की खातिर नहीं करते थे।

इन्द्रदेव से और दारोगा से देर तक तरह तरह की बातें होती रहीं, जिसमें मौके मौके पर दारोगा अपनी होशियारी और बुद्धिमानी की तस्वीर खैंचता रहा। जब ऐयारों की कहानी छिड़ी तो वह यकायक मेरी तरफ पलट पड़ा और बोला, "आप इतने बड़े ऐयार के लड़के होकर घर में बेकार क्यों बैठे हैं? और नहीं तो मेरी ही रियासत में काम कीजिए, यहाँ आपको बहुत आराम मिलेगा, देखिए बिहारीसिंह और हरनामसिंह कैसी इज्जत और खुशी के साथ रहते हैं, आप तो उनसे बहुत ज्यादे इज्जत के लायक हैं।"

मैं०। मैं बेकार तो बैठा रहता हूँ मगर अभी तक अपने को महाराज धौलपुर का नौकर समझता हूँ क्योंकि रियासत का काम छोड़ देने पर भी वहाँ से मुझे खाने को बराबर मिल रहा है।

दारोगा०। (मुंह बना कर) अजी मिलता भी होगा तो क्या, एक छोटी सी रकम से आपका क्या काम चल सकता है? आखिर अपने पल्ले की जमा तो खर्च करते होंगे।

मैं०। यह भी तो महाराज ही का दिया हुआ है!

दारोगा०। नहीं वह आपके बाप का दिया हुआ है। खैर मेरा मतलब यह है कि वहाँ से अगर कुछ मिलता है तो उसे भी आप रखिए और मेरी रियासत

से भी फायदा उठाइए।

मैं०। ऐसा करना वेईमानी और नमकहरामी कहा जायगा और यह मुझसे न हो सकेगा।

दारोगा०। (हँस कर) वाह वाह! ऐयार लोग दिन रात ईमानदारी की हँड़िया ही तो चढ़ाए रहते हैं!!

मैं०। (तेजी के साथ) वेशक! अगर ऐसा न हो तो वह ऐयार नहीं रियासत का कोई ओहदेदार कहा जायगा!

दारोगा०। (तन कर) ठीक है! गदाधरसिंह आप ही का नातेदार तो है, जरा उसकी तस्वीर तो खैंचिए!

मैं०। गदाधरसिंह किसी रियासत का ऐयार नहीं है और न मैं उसे ऐयार समझता हूँ, इतना होने पर भी आप यह नहीं सावित कर सकते कि उसने अपने मालिक के साथ किसी तरह की बेईमानी की।

दारोगा०। (और भी तनक के) वस वस वस, रहने दीजिए, हमारे यहाँ भी विहारीसिंह और हरनामसिंह ऐयार ही तो हैं।

मैं०। इसी से तो मैं आपकी रियासत में जाना वेइज्जती समझता हूँ।

दारोगा०। (भौं सिकोड़ कर) तो इसका यह मतलव कि हम लोग बेईमान और नमकहराम हैं!!

मैं०। (मुस्कुरा कर) इस वात को तो आप ही सोचिये!

दारोगा०। देखिए जुवान सम्हाल कर वात कीजिए, नहीं तो समझ रखिए कि मैं मामूली आदमी नहीं हूँ!!

मैं०। (क्रोध से) यह तो मैं खुद कहता हूँ कि आप मामूली आदमी नहीं हैं क्योंकि आदमी में शर्म होती है और वह जानता है कि ईश्वर भी कोई चीज है।

दारोगा०। (क्रोध भरी आँखें दिखा कर) फिर वही वात!!

मैं०। हाँ वही वात! गोपालसिंह के पिता वाली वात! गुप्त कुमेटी वाली वात! गदाधरसिंह की दोस्ती वाली वात! लक्ष्मीदेवी की शादी वाली बात और जो वात कि आपके गुरुभाई साहव को नहीं मालूम है वह वात!!

दारोगा०। (दाँत पीस कर और कुछ देर मेरी तरफ देख कर) खैर अव इस बहुत सी वात का जवाव लात ही से दिया जायगा।

मैं०। वेशक, और साथ ही इसके यह भी समझ रखिए कि जवाव देने वाले भी एक दो नहीं हैं, लातों की गिनती भी आप न सम्हाल सकोगे, दारोगा साहव,

जरा होश में आइए और सोच विचार कर बातें कीजिए। अपने को आप ईश्वर न समझिए बल्कि यह समझ कर बातें कीजिए कि आप आदमी हैं और रियासत धौलपुर के किसी ऐयार से बातें कर रहे हैं।

दारोगा०। (इन्द्रदेव की तरफ गुरेर कर) क्या आप चुपाच बैठे तमाशा देखेंगे और अपने मकान में मुझे बेइज्जत करावेंगे ?

इन्द्रदेव०। आप तो खुद ही अपनी अनोखी मिलनसारी से अपने को बेइज्जत करा रहे हैं, इनसे बात बढ़ाने की आपको जरूरत ही क्या थी ? मैं आप दोनों के बीच में नहीं बोल सकता क्योंकि दलीपशाह को भी अपना भाई समझता और इज्जत की निगाह से देखता हूँ।

दारोगा०। तो फिर जैसे बने हम इनसे निपट लें !

इन्द्रदेव०। हाँ हाँ !

दारोगा०। पीछे उलाहना न देना क्योंकि आप इन्हें अपना भाई समझते हैं।

इन्द्रदेव०। मैं कभी उलाहना न दूंगा।

दारोगा०। अच्छा तो अब मैं जाता हूँ, फिर कभी मिलूंगा तो बातें करूँगा।

इन्द्रदेव ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया, हाँ जब दारोगा साहब विदा हुए तो उन्हें दरवाजे तक पहुंचा आये। जब लौट कर कमरे में मेरे पास आये तो मुस्कुराते हुए बोले, "आज तो तुमने इसकी खूब खबर ली। 'जो बात तुम्हारे गुरुभाई साहब को नहीं मालूम है वही बात' इन शब्दों ने तो उसका कलेजा छेद दिया होगा। मगर तुमसे बेतरह रंज होकर गया है इस बात का खूब खयाल रखना।"

मैं०। आप इस बात की चिन्ता न कीजिए, देखिए मैं इन्हें कैसा छकाता हूँ मगर वाह रे आपका कलेजा ! इतना कुछ हो जाने पर भी आपने अपनी जुबान से कुछ न कहा बल्कि पुराने बर्ताव में बल तक न पड़ने दिया।

इन्द्रदेव०। मैंने तो अपना मामला ईश्वर के हवाले कर दिया है।

मैं०। खैर ईश्वर भी इन्साफ करेगा। अच्छा तो अब मुझे भी विदा दीजिए क्योंकि अब इसके मुकाबले का बन्दोबस्त शीघ्र करना पड़ेगा।

इन्द्र०। यह तो मैं कहूँगा कि आप बेफिक्र न रहिए।

थोड़ी देर तक और बातचीत करने बाद मैं इन्द्रदेव से विदा होकर अपने घर आया और उसी समय से दारोगा के मुकाबले का ध्यान मेरे दिमाग में चक्कर लगाने लगा।

घर पहुंच कर मैंने सब हाल अपनी स्त्री से बयान किया और ताकीद की कि हर दम होशियार रहा करना। उन दिनों मेरे यहाँ कई शागिर्द भी रहा करते थे जिन्हें मैं ऐयारी सिखाता था। उनसे भी यह सब हाल कहा और होशियार रहने की ताकीद की। उन शागिर्दों में गिरिजाकुमार नाम का एक लड़का बड़ा ही तेज और चंचल था, लोगों को धोखे में डाल देना तो उसके लिए एक मामूली बात थी। बातचीत के समय वह अपना चेहरा ऐसा बना लेता था कि अच्छे अच्छे उसकी बातों में फँस कर बेवकूफ बन जाते थे। यह गुण उसे ईश्वर का दिया हुआ था जो बहुत कम ऐयारों में पाया जाता है। अस्तु गिरिजाकुमार ने मुझसे कहा कि 'गुरूजी यदि दारोगा वाला मामला आप मेरे सुपुर्द कर दीजिए तो मैं बहुत ही प्रसन्न होऊँ और उसे ऐसा छकाऊँ कि वह भी याद करे, जमानिया में मुझे कोई पहिचानता भी नहीं है, अतएव मैं अपना काम बड़े मजे में निकाल लूंगा'। मैंने उसे समझाया और कहा कि 'कुछ दिन सब्र करो जल्दी क्यों करते हो, फिर जैसा मौका होगा किया जायेगा' मगर उसने एक न माना। हाथ जोड़ के, खुशामद करके, गिड़गिड़ा के, जिस तरह हो सका उसने आज्ञा ले ही ली और उसी दिन सब सामान दुरुस्त करके मेरे यहाँ से चला गया।

अब मैं थोड़ा सा हाल गिरिजाकुमार का बयान करूँगा कि इसने दारोगा के साथ क्या किया।

आप लोगों को यह बात सुन कर ताज्जुब होगा कि मनोरमा असल में दारोगा साहब की रंडी है, इन्हीं की बदौलत मायारानी के दरबार में उसकी इज्जत बढ़ी और इन्हीं की बदौलत उसने मायारानी को अपने फन्दे से फँसा कर बेहिसाब दौलत पैदा की। पहिले पहिल गिरिजाकुमार ने मनोरमा के मकान ही पर दारोगा साहब से मुलाकात भी की थी।

दारोगा साहब मनोरमा से प्रेम रखते थे सही, मगर इसमें कोई शक नहीं कि इस प्रेम और ऐयाशी को इन्होंने बहुत अच्छे ढंग से छिपाया और बहुत आदमियों को मालूम न होने दिया तथा लोगों की निगाहों में साधु और ब्रह्मचारी ही बने रहे। स्वयं तो जमानिया में रहते थे मगर मनोरमा के लिए इन्होंने काशी में एक मकान भी बनवा दिया था, दसवें बारहवें दिन अथवा जब कभी समय मिलता तब घोड़े पर या रथ पर सवार होकर काशी चले जाते और दस बारह घण्टे मनोरमा के मेहमान रह कर लौट जाते।

एक दिन दारोगा साहब आधी रात के समय मनोरमा के खास कमरे में बैठे

हुए उसके साथ शराब पी रहे थे और साथ ही साथ हँसी दिल्लगी का आनन्द भी लूट रहे थे। उस समय इन दोनों में इस तरह की बातें हो रही थीं :—

दारोगा० । जो कुछ मेरे पास है सब तुम्हारा है, रुपये पैसे के बारे में तुम्हें कभी तकलीफ न होने दूंगा ! तुम बेशक अमीराना ठाठ के साथ रहो और खुशी से जिन्दगी बिताओ। गोपालसिंह अगर तिलिस्म का राजा है तो क्या हुआ, मैं भी तिलिस्म का दारोगा हूँ, उसमें दो चार स्थान ऐसे हैं कि जिनकी खबर राजा साहब को भी नहीं मगर मैं वहाँ बखूबी जा सकता हूँ और वहाँ की दौलत को खास अपनी मिल्कियत समझता हूँ। इसके अतिरिक्त मायारानी से भी मैंने तुम्हारी मुलाकात करा दी है और वह भी हर तरह से तुम्हारी खातिर करती ही है फिर तुम्हें परवाह किस बात की है ?

मनोरमा० । बेशक मुझे किसी बात की परवाह नहीं है और आपकी बदौलत मैं बहुत खुश रहती हूँ, मगर मैं यह चाहती हूँ कि मायारानी के पास खुल्लम खुल्ला मेरी आमदरफ्त हो जाय, अभी गोपालसिंह के डर से बहुत लुक छिप कर और नखरे तिल्ले के साथ जाना पड़ता है !

दारोगा० । फिर यह तो जरा मुश्किल बात है।

मनोरमा० । मुश्किल क्या है ? लक्ष्मीदेवी की जगह दूसरी औरत का राज रानी बना देना क्या साधारण काम था ? सो तो आपने सहज ही में कर दिखाया और इस एक सहज काम के लिए कहते हैं कि मुश्किल है !

दारोगा० । (मुस्कुरा कर) सो तो ठीक है, गोपालसिंह को मैं सहज में बैकुंठ पहुंचा सकता हूं मगर यह काम मेरे किए न हो सकेगा, उसके ऊपर मेरा हाथ न उठेगा।

मनोरमा० । (तिनक कर) अब इतनी रहमदिली से तो काम न चलेगा, उनके मौजूद रहने से बहुत बड़ा हर्ज हो रहा है, अगर वह न रहें तो बेशक आप खुद जमानिया और तिलिस्म का राज्य कर सकते हैं, मायारानी तो अपने को आपका ताबेदार समझती हैं।

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है मगर......

मनोरमा० । और इसमें आपको कुछ करना भी न पड़ेगा, सब काम माया रानी ठीक कर लेंगी।

दारोगा० । (चौंक कर) क्या मायारानी का भी ऐसा इरादा है ?

मनोरमा० । जी हाँ, वह इस काम के लिए तैयार हैं मगर आपसे डरती हैं, आप आज्ञा दे तो सब कुछ ठीक हो जाय।

दारोगा० । तो तुम उसी की तरफ से इस बात की कोशिश कर रही हो ?

मनोरमा० । बेशक, मगर साथ ही इसमें आपका और अपना भी फायदा समझती हूँ तब ऐसा कहती हूँ । (दारोगा के गले में हाथ डाल कर) बस आप आज्ञा दे दीजिए ।

दारोगा० । (मुस्कुरा कर) खैर तुम्हारी खातिर मुझे मंजूर है, मगर एक काम करना कि मायारानी से और मुझसे इस बारे में बातचीत न कराना जिसमें मौका पड़े तो मैं यह कहने लायक रह जाऊँ कि मुझे इसकी कुछ भी खबर नहीं। तुम मायारानी की दिलजमयी करा दो कि दारोगा साहब इस बारे में कुछभी न बोलेंगे तुम जो कुछ चाहो कर गुजरो, मगर साथ ही इसके इस बात का खयाल रक्खो कि सर्वसाधारण को किसी तरह का शक न होने पावे और लोग यही समझें कि गोपालसिंह अपनी मौत से मरा है । मैं भी जहाँ तक हो सकेगा छिपाने की कोशिश करूँगा ।

मनोरमा० । (खुश होकर) बस अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम मुझसे प्रेम रखते हो ।

इसके बाद दोनों में बहुत ही धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जिन्हें गिरिजाकुमार सुन न सका । गिरिजाकुमार चोरों की तरह उस मकान में घुस गया था और छिप कर ये बातें सुन रहा था । जब मनोरमा ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया तब वह कमन्द लगा कर मकान के पीछे की तरफ उतर गया और धीरे धीरे मनोरमा के अस्तबल में जा पहुँचा । अबकी दफे दारोगा यहाँ रथ पर सवार होकर आया था, वह रथ अस्तबल में था, घोड़े बँधे हुए थे और सारथी रथ के अन्दर सो रहा था । इससे कुछ दूर पर मनोरमा के और सब साईस तथा घसियारे वगैरह पड़े खुर्राटे ले रहे थे ।

बहुत होशियारी से गिरिजाकुमार ने दारोगा के सारथी को बेहोशी की दवा सुँघा कर बेहोश किया और उठा के बाग के एक कोने में घनी झाड़ी के अन्दर छिपा कर रख आया, उसके कपड़े आप पहिर लिए और चुपचाप रथ के अन्दर घुस कर सो रहा ।

जब रात घण्टा भर के लगभग बाकी रह गई तब दारोगा साहब जमानिया जाने के लिए विदा हुए और एक लौंडी ने अस्तबल में आकर रथ जोतने की आज्ञा सुनाई । भये सारथी अर्थात् गिरिजाकुमार ने रथ जोत कर तैयार किया और फाटक पर लाकर दारोगा साहब का इन्तजार करने लगा । शराब के नशे में चूर

झूमते और एक लौंडी का हाथ थामे हुए दारोगा साहब भी आ पहुंचे। उनके रथ पर सवार होने के साथ ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ। सुबह की ठंढी हवा ने दारोगा साहब के दिमाग में खुनकी पैदा कर दी और वे रथ के अन्दर लेट कर वेखबर सो गये। गिरिजाकुमार ने जिधर चाहा घोड़ों का मुँह फेर दिया और दारोगा साहब को लेकर रवाना हो गया। इस तौर पर उसे सूरत बदलने की भी जरूरत न पड़ी।

नहीं कह सकते कि मनोरमा के बाग में दारोगा का असली सारथी जब होश में आया होगा तो वहाँ कैसी खलबली मची होगी मगर गिरिजाकुमार को इस बात की कुछ भी परवाह न थी, उसने रथ को रोहतासगढ़ की सड़क पर रवाना किया और चलते चलते अपने बटुए में से मसाला निकाल कर अपनी सूरत साधारण ढंग पर बदल ली जिसमें होश आने पर दारोगा उसकी सूरत से जानकार न हो सके, इसके बाद उसने दवा सुंघा कर दारोगा को और भी वेहोश कर दिया।

जब रथ एक घने जंगल में पहुंचा और सुबह की सुफेदी भी निकल आई तब गिरिजाकुमार रथ को सड़क पर से हटा कर जंगल में ले आया जहाँ सड़क पर चलने वाले मुसाफिरों की निगाह न पड़े। घोड़ों को खोल लम्बी बागडोर के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिया और दारोगा को पीठ पर लाद वहाँ से थोड़ी दूर पर एक घनी झाड़ी के अन्दर ले गया जिसके पास ही एक पानी का झरना भी बह रहा था। घोड़े की रास से दारोगा साहब को एक पेड़ के साथ बाँध दिया और वेहोशी दूर करने की दवा सुंघाने के बाद थोड़ा पानी भी चेहरे पर डाला जिसमें शराब का नशा ठंढा हो जाय, और तब हाथ में कोड़ा लेकर सामने खड़ा हो गया।

दारोगा साहब जब होश में आये तो बड़ी परेशानी के साथ चारो तरफ निगाह दौड़ाने लगे। अपने को मजबूर और एक अनजान आदमी को हाथ में कोड़ा लिए सामने खड़ा देख काँप उठे और बोले, "भाई तुम कौन हो और मुझे इस तरह क्यों सता रक्खा है ? मैंने तुम्हारा क्या विगाड़ा है ?"

गिरिजा० । क्या करूँ लाचार हूँ, मालिक का हुक्म ही ऐसा है !

दारोगा० । तुम्हारा मालिक कौन है और उसने ऐसी आज्ञा तुम्हें क्यों दी ?

गिरिजा० । मैं मनोरमाजी का नौकर हूँ और उन्होंने अपना काम ठीक करने के लिए मुझे ऐसी आज्ञा दी है।

दारोगा० । (ताज्जुब से) तुम मनोरमा के नौकर हो ! नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता, मैं उसके सब नौकरों को अच्छी तरह पहिचानता हूँ।

गिरिजा० । मगर आप मुझे नहीं पहिचानते क्योंकि मैं गुप्त रीति पर उनका काम किया करता हूं और उनके मकान पर बराबर नहीं रहता !

दारोगा० । शायद ऐसा हो मगर विश्वास नहीं होता, खैर लाचार हूँ, खैर यह बताओ कि उन्होंने किस काम के लिए ऐसा करने को कहा है ?

गिरिजा० । आपको विश्वास हो चाहे न हो इसके लिए मैं लाचार हूं, हाँ उनके हुक्म की तामील किए बिना नहीं रह सकता । उन्होंने मुझे यह कहा है कि दारोगा साहब मायारानी के लिए इस बात की इजाजत दे गये हैं कि वह जिस तरह हो सके राजा गोपालसिंह को मार डाले हम इस मामले में कुछ दखल न देंगे, मगर यह बात वह नशे में कह गये हैं कहीं ऐसा न हो कि भूल जायँ, अस्तु जिस तरह हो सके तुम इस बात की एक चीठी उनसे लिखा कर मेरे पास ले आओ जिसमें उन्हें अपना वादा अच्छी तरह याद रहे' । अब आप कृपा कर इस मजमून की एक चीठी लिख दीजिये कि मैं गोपालसिंह को मार डालने के लिए मायारानी को इजाजत देता हूँ ।

दारोगा० । (ताज्जुब का चेहरा बना कर) न मालूम तुम क्या कह रहे हो ! मैंने मनोरमा से ऐसा कोई वादा नहीं किया !!

गिरिजा० । तो शायद मनोरमाजी ने मुझसे झूठ कहा होगा, मैं इस बात को नहीं जानता, हाँ उन्होंने जो आज्ञा दी है सो आपसे कह रहा हूं ।

इतना सुन कर दारोगा कुछ सोच में पड़ गया । मालूम होता था कि उसे गिरिजाकुमार की बातों पर विश्वास हो रहा है मगर फिर भी बात को टाला चाहता है ।

दारोगा० । मगर ताज्जुब है कि मनोरमा ने मेरे साथ ऐसा बुरा बर्ताव क्यों किया और उसे जो कुछ कहना था वह स्वयं मुझसे क्यों नहीं कहा ?

गिरिजा० । मैं इस बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूं ?

दारोगा० । अगर मैं तुम्हारे कहें मुताबिक चीठी लिख कर न दूं तो ?

गिरिजा० । तब इस कोड़े से आपकी खबर ली जायगी और जिस तरह हो सकेगा आपसे चीठी लिखाई जायगी । आप खुद समझ सकते हैं कि यहाँ आपका कोई मददगार नहीं पहुंच सकता ।

दारोगा० । क्या तुमको या मनोरमा को इस बात का कुछ भी खयाल नहीं है कि चीठी लिख कर भी छूट जाने के बाद मैं क्या कर सकता हूं !!

गिरिजा० । अब ये सब बातें तो आप उन्हीं से पूछियेगा, मुझे जवाब देने

की कोई जरूरत नहीं, मैं सिर्फ उनके हुक्म की तामील करना जानता हूं। बता-इए आप जल्दी चीठी लिख देते हैं या नहीं, मैं ज्यादे देर तक इन्तजार नहीं कर सकता !

दारोगा० । (झुंझला कर और यह समझ कर कि यह मुझ पर हाथ न उठा वेगा केवल धमकाता है) अबे, मैं चीठी किस बात की लिख दू ! व्यर्थ की बकबक लगा रक्खी है !!

इतना सुनते ही गिरिजाकुमार ने कोड़े जमाने शुरू किए, पाँच ही सात कोड़े खाकर दारोगा बिलबिला उठा और हाथ जोड़ कर बोला, "बस बस माफ करो जो कुछ कहो मैं लिख देने को तैयार हूं !"

गिरिजाकुमार ने झट कलम दावात और कागज अपने बटुए में से निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया और उसके हाथ की रस्सी ढीली कर दी। दारोगा ने उसकी इच्छानुसार चीठी लिख दी। चीठी अपने कब्जे में कर लेने के बाद उसने दारोगा की तलाशी ली, कमर में खंजर और कुछ अशर्फियाँ निकलीं वह भी ले लेने के बाद दारोगा के हाथ पैर खोल दिये और बता दिया कि फलानी जगह आपके रथ और घोड़े हैं, जाइए कसकसा कर अपने घर का रास्ता लीजिए।

इतना कह गिरिजाकुमार चला गया और फिर दारोगा को मालूम न हुआ कि वह कहाँ गया और क्या हुआ।

बारहवां बयान

इतना किस्सा कह कर दलीपशाह ने कुछ दम लिया और फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

गिरिजाकुमार ने अपना काम करके दारोगा का पीछा छोड़ नहीं दिया बल्कि उसे यह जानने का शौक पैदा हुआ कि देखें अब दारोगा साहब क्या करते हैं, जमानिया की तरफ बिदा होते हैं या पुनः मनोरमा के घर जाते हैं, या अगर मनोरमा के घर जाते हैं तो देखना चाहिए कि किस ढंग की बातें होती हैं और कैसी रंगत निकलती है।

यद्यपि दारोगा का चित्त द्विविधा में पड़ा हुआ था परन्तु उसे इस बात का कुछ कुछ विश्वास जरूर हो गया था कि मेरे साथ ऐसा खोटा वर्ताव मनोरमा ने किया है, दूसरे किसी को क्या मालूम कि मुझसे उससे किस समय क्या बातें हुईं, मगर साथ ही इसके वह इस बात को भी जरूर सोचता था कि मनोरमा ने ऐसा

क्यों किया ? मैं तो कभी उसकी बात से किसी तरह इनकार नहीं करता था। जो कुछ उसने कहा उस बात की इजाजत तुरत दे दी, अगर वह चीठी लिख देने के लिए कहती तो चीठी भी लिख देता, फिर उसने ऐसा क्यों किया ?....... इत्यादि।

खैर जो कुछ हो दारोगा साहब अपने हाथ से रथ जोत कर सवार हुए और मनोरमा के पास न जाकर सीधे जमानिया की तरफ रवाना हो गये। यह देख कर गिरिजाकुमार ने उस समय उनका पीछा छोड़ दिया और मेरे पास चला आया। जो कुछ मामला हुआ था खुलासा बयान करने बाद दारोगा साहब की लिखी हुई चीठी दी और फिर मुझसे विदा होकर जमानिया की तरफ चला गया।

मुझे यह जान कर एक हौल सा पैदा हो गया कि बेचारे गोपालसिंह की जान मुफ्त में जाया चाहती है। मैं सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए जिसमें गोपालसिंह की जान बचे। एक दिन और रात तो इसी सोच में पड़ा रह गया और अन्त में यह निश्चय किया कि इन्द्रदेव से मिलकर यह सब हाल कहना चाहिए। दूसरा दिन मुझे घर का इन्तजाम करने में लग गया क्योंकि दारोगा की दुश्मनी के खयाल से मुझे घर की हिफाजत का पूरा पूरा इन्तजाम करके ही तब बाहर जाना जरूरी था, अस्तु मैंने अपनी स्त्री और बच्चे को गुप्त रीति से अपने ससुराल अर्थात् स्त्री के माँ बाप के घर पहुंचा दिया और उन लोगों को जो कुछ समझाना था सो भी समझा दिया इसके बाद घर का इन्तजाम करके इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ।

जब इन्द्रदेव के मकान पर पहुंचा तो देखा कि वे सफर की तैयारी कर रहे हैं। पूछने पर जवाब मिला कि गोपालसिंह बीमार हो गये हैं, उन्हें देखने के लिए जाते हैं। सुनने के साथ ही मेरा दिल धड़क उठा और मेरे मुंह से ये शब्द निकल पड़े—"हाय अफसोस ! कम्बख्त दुश्मन लोग अपना काम कर गए !!"

मेरी बात सुन कर इन्द्रदेव चौंक पड़े और उन्होंने पूछा, "आपने यह क्या कहा ?" दो चार खिदमतगार वहाँ मौजूद थे उन्हें विदा करके मैंने गिरिजाकुमार का सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और दारोगा साहब की लिखी हुई वह चीठी उनके हाथ पर रख दी। उसे देख कर और सब हाल सुन कर इन्द्रदेव बेचैन हो गए, आधे घंटे तक तो ऐसा मालूम होता था कि उन्हें तनोबदन की सुध नहीं है, इसके बाद उन्होंने अपने को सम्हाला और मुझसे कहा—"बेशक दुश्मन लोग अपना काम कर गए, मगर तुमने भी बहुत बड़ी भूल की कि दो दिन

की देर कर दी और आज मेरे पास खबर करने के लिए आए ! अभी दो ही पहर बीती है कि मुझे उनके बीमार होने की खबर मिली है, ईश्वर ही कुशल करें !"

इसके जवाब में चुप रह जाने के सिवाय मैं कुछ भी न बोल सका और अपनी भूल स्वीकार कर ली। कुछ और बातचीत होने के बाद इन्द्रदेव ने मुझसे कहा, "खैर जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम भी मेरे साथ जमानिया चलो, वहाँ पहुंचने तक अगर ईश्वर ने कुशल रक्खी तो जिस तरह बन पड़ेगा उनकी जान बचावेंगे !!"

अस्तु हम दोनों आदमी तेज घोड़ों पर सवार होकर जमानिया की तरफ रवाना हो गये और साथियों को पीछे से आने की ताकीद कर गये।

जब हम लोग जमानिया के करीब पहुंचे और जमानिया सिर्फ दो कोस की दूरी पर रह गया तो सामने से कई देहाती आदमी रोते और चिल्लाते हुए आते दिखाई पड़े। हम लोगों ने घबड़ा कर रोने का सबब पूछा तो उन्होंने हिचकियाँ लेकर कहा कि हमारे राजा गोपालसिंह हम लोगों को छोड़ कर बैकुंठ चले गये।

सुनने के साथ हम लोगों का कलेजा धक हो गया। आगे बढ़ने की हिम्मत न पड़ी और सड़क के किनारे एक घने पेड़ के नीचे जाकर घोड़ों पर से उतर पड़े। दोनों घोड़ों को पेड़ के साथ बांध दिया और जीनपोश बिछा कर बैठ गये। आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। घंटे भर तक हम दोनों में किसी तरह की बातचीत न हुई क्योंकि चित्त बड़ा ही दुःखी हो गया था। उस समय दिन अनुमान तीन घंटे के बाकी था, हम दोनों आदमी पेड़ के नीचे बैठे आँसू बहा रहे थे कि यकायक जमानिया से लौटता हुआ गिरिजाकुमार भी उसी जगह पर पहुंचा। उस समय उसकी सूरत बदली हुई थी इसलिए हम लोगों ने तो नहीं पहिचाना परन्तु वह हम लोगों को देख कर स्वयं पास चला आया और अपना गुप्त परिचय देकर बोला, "मैं गिरिजाकुमार हूं।"

इन्द्रदेव०। (आँसू पोंछ कर) अच्छे मौके पर तुम आ पहुंचे ? यह बताओ कि क्या वास्तव में राजा गोपालसिंह मर गये ?

गिरिजा०। जी हाँ, उनकी चिता मेरे सामने लगाई गई और देखते ही देखते उनकी लाश पंचतत्व में मिल गई, परन्तु अभी तक मेरे दिल को विश्वास नहीं होता कि राजा साहब मर गये।

इन्द्रदेव०। (चौंक कर) सो क्या ? यह कैसी बात ?

गिरिजा०। जी हाँ, हर तरह का रंग ढंग देख कर मेरा दिल कबूल नहीं करता कि वे मर गये।

मैं० । क्या तुम्हारी तरह वहाँ और भी किसी को इस बात का शक है ?

गिरिजा० । नहीं ऐसा तो नहीं मालूम होता, बल्कि मैं तो समझता हूं कि खास दारोगा साहब को भी उनके मरने का विश्वास है मगर क्या किया जाय मुझे विश्वास नहीं होता और दिल बार बार यही कहता है कि राजा साहब मरे नहीं।

इन्द्रदेव० । आखिर तुम क्या सोचते हो और इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है ? तुमने कौन सी ऐसी बात देखी जिससे तुम्हारे दिल को अभी तक उनके मरने का विश्वास नहीं होता ?

गिरिजा० । और बातों के अतिरिक्त दो बातें तो बहुत ही ज्यादे शक पैदा करती है। एक तो यह है कि कल दो घंटे रात रहते मैंने हरनामसिंह और बिहारीसिंह को एक कंगले की लाश उठाये हुए चोर दर्वाजे की राह से महल के अन्दर जाते हुए देखा, फिर बहुत टोह लेने पर भी उस लाश का कुछ पता न लगा और न वह लाश लौटा कर महल के बाहर ही निकाली गई, तो क्या वह महल ही में हजम हो गई ? उसके बाद केवल राजा साहब की लाश बाहर निकली।

इन्द्रदेव० । जरूर यह शक करने की जगह है।

गिरिजा० । इसके अतिरिक्त राजा गोपालसिंह की लाश को बाहर निकालने और जलाने में हद दर्जे की फुर्ती और जल्दीबाजी की गई, यहाँ तक कि रियासत के उमरा लोगों के भी इकट्ठा होने का इन्तजार नहीं किया गया। एक साधारण आदमी के लिए भी इतनी जल्दी नहीं की जाती, वे तो राजा ही ठहरे ! हाँ एक बात और भी सोचने के लायक है। चिता पर क्रिया नियम के विरुद्ध लाश का मुंह खोले बिना ही कर दी गई और इस बारे में बिहारीसिंह और हरनामसिंह तथा लौंडियों ने यह बहाना किया कि 'राजा साहब की सूरत देख मायारानी बहुत बेहाल हो जायँगी इसलिए मुर्दे का मुँह खोलने की कोई जरूरत नहीं'। और लोगों ने इन बातों पर खयाल किया हो चाहे न किया हो मगर मेरे दिल पर तो इन बातों ने बहुत बड़ा असर किया और यही सबब है कि मुझे राजा साहब के मरने का विश्वास नहीं होता।

इन्द्रदेव० । (कुछ सोच कर) शक तो तुम्हारा बहुत ठीक है, अच्छा यह बताओ कि तुम इस समय कहाँ जा रहे थे ?

गिरिजा० । (मेरी तरफ इशारा करके) गुरुजी के पास यही सब हाल कहने के लिए जा रहा था।

मैं० । इस समय मनोरमा कहाँ है सो बताओ ?

गिरिजा० । जमानिया में मायारानी के पास है ।

मैं० । तुम्हारे हाथ से छूटने के बाद दारोगा और मनोरमा में कैसी निपटी इसका कुछ हाल मालूम हुआ ?

गिरिजा० । जी हाँ मालूम हुआ, उस बारे में बहुत बड़ी दिल्लगी हुई जो मैं निश्चिन्ती के साथ बयान करूँगा ।

इन्द्रदेव० । अच्छा यह तो बताओ कि गोपालसिंह के बारे में तुम्हारी क्या राय है और अब हम लोगों को क्या करना चाहिये ?

गिरिजा० । इस बारे में मैं एक अदना और नादान आदमी आपको क्या राय दे सकता हूं ! हाँ मुझे जो कुछ आज्ञा हो सो करने के लिए जरूर तैयार हूं।

इतनी बातें हो ही रही थीं कि सामने जमानिया की तरफ से दारोगा और जैपाल घोड़ों पर सवार आते हुए दिखाई पड़े जिन्हें देखते ही गिरिजाकुमार ने कहा, "देखिए ये दोनों शैतान कहीं जा रहे हैं, इसमें भी कोई भेद जरूर है, यदि आज्ञा हो तो मैं इनके पीछे जाऊँ ।"

दारोगा और जैपाल को देख कर हम दोनों पेड़ की तरफ घूम गये जिसमें वे -पहिचान न सकें । जब वे आगे निकल गए तब मैंने अपना घोड़ा गिरिजाकुमार को देकर कहा, "तुम जल्द सवार हो के इन दोनों का पीछा करो ।" और गिरिजाकुमार ने भी ऐसा ही किया ।

* तेईसवाँ भाग समाप्त *

२८ वाँ संस्करण] १९८१ ई० [२२०० प्रति

भारतजीवन प्रेस, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

चौबीसवाँ भाग

पहिला बयान

दिन घंटे भर से ज्यादे चढ़ चुका है। महाराज सुरेन्द्रसिंह सुनहरी चौकी र बैठे दानून कर रहे हैं और जीतसिंह, तेजसिंह, इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, रीसिंह, भूतनाथ और राजा गोपालसिंह उनके सामने की तरफ बैठे हुए इधर धर की बातें कर रहे हैं। रात महाराज की तबीयत कुछ खराब थी, इसलिये ाज स्नान सन्ध्या में देर हो गई है।

सुरेन्द्र०। (गोपालसिंह से) गोपाल, इतना तो हम जरूर कहेंगे कि गद्दी र बैठने के बाद तुमने कोई बुद्धिमानी का काम नहीं किया बल्कि हर एक ामले में तुमसे भूल ही होती गई !!

गोपाल०। निःसन्देह ऐसा ही है और उस लापरवाही का नतीजा भी से वैसा ही भोगना पड़ा।

वीरेन्द्र०। धोखा खाये बिना कोई होशियार नहीं होता। कैद से छूटने े बाद तुमने बहुत से अनूठे काम भी किये हैं। हाँ यह तो बताओ कि दारोगा ौर जैपाल के लिये तुमने क्या सजा तजवीज की है।

गोपाल०। इस बारे में दिन रात सोचा ही करता हूँ मगर कोई सजा ऐसी हीं सूझती जो उन लोगों के लायक हो और जिससे मेरा गुस्सा शान्त हो।

सुरेन्द्र०। (मुस्कुरा कर) मैं तो समझता हूँ कि यह काम भूतनाथ के हवाले किया जाय, वही उन शैतानों के लिए कोई मजेदार सजा तजवीज करेगा। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों जी, तुम कुछ बता सकते हो ?

भूत० । (हाथ जोड़ के) उनके योग्य क्या सजा है इसका बताना तो बड़ा ही कठिन है, मगर एक छोटी सी सजा मैं जरूर बता सकता हूँ ।

गोपाल० । वह क्या ?

भूत० । पहिले तो उन्हें कच्चा पारा खिलाना चाहिये जिसकी गरमी से उन्हें सख्त तकलीफ हो और तमाम बदन फूट जाय, जब जख्म खूब मजेदार हो जांय तो नित्य लाल मिर्च और नमक का लेप चढ़ाया जाय । जब तक वे दोनों जीते रहें तब तक ऐसा ही होता रहे ।

सुरेन्द्र० । सजा हलकी तो नहीं है, मगर किसी की आत्मा......

गोपाल० । (बात काट कर) खैर उन कम्बख्तों के लिए आप कुछ न सोचिये, उन्हें मैं जमानिया ले जाऊंगा और उसी जगह उनकी मरम्मत करूंगा।

वीरेन्द्र० । इन सब रञ्ज देने वाली बातों का जिक्र जाने दो, यह बताओ कि अगर हम लोग जमानिया के तिलिस्म की सैर किया चाहें तो कैसे कर सकते हैं ?

गोपाल० । यह तो मैं आप ही निश्चय कर चुका हूँ कि आप लोगों को वहां की सैर जरूर कराऊंगा ।

इन्द्रजीत । (गोपाल से) हां खूब याद आया, वहाँ के बारे में मुझे भी एक बातों का शक बना हुआ है ।

गोपाल० । वह क्या ?

इन्द्र० । एक तो यह बताइए कि तिलिस्म के अन्दर जिस मकान में पहिले पहल आनन्दसिंह फँसे थे, उस मकान में सिंहासन पर बैठी हुई लाडिली की मूरत कहाँ से आई* और उस आइने (शीशे) वाले मकान में जिसमें कमलिनी लाडिली तथा हमारे ऐयारों की सी मूरतों ने हमें धोखा दिया क्या था ? जब हम दोनों उसके अन्दर गये तो उन मूरतों को देखा जो नालियों पर चला करती थीं[1] मगर ताज्जुब है कि...

गोपाल० । (बात काट कर) वह सब कार्रवाई मेरी थी । एक तौर से आप लोगों को कुछ कुछ तमाशा भी दिखाता जाता था । वे सब मूरतें पुराने जमाने की बनी हुई हैं मगर मैंने उन पर ताजा रंग रोगन चढ़ा कमलिनी लाडिली वगैरह की सूरतें बना दी थीं ।

इन्द्र० । ठीक है, मेरा भी यही खयाल था । अच्छा एक बात और बता

* देखिये नौवां भाग, दूसरा बयान ।

१. देखिये सोलहवां भाग, छठवां बयान ।

गोपाल० । पूछिये ।

इन्द्र० । जिस तिलिस्मी मकान में हम लोग हँसते हँसते कूद पड़े थे उसमें मलिनी के कई सिपाही भी जा फंसे थे और...

गोपाल० । जी हां ईश्वर की कृपा से वे लोग कैदखाने में जीते जागते ये गये और इस समय जमानिया में मौजूद हैं । उन्हीं में के एक आदमी को रोगा ने गठरी बांध कर रोहतासगढ़ के किले में छोड़ा था जब मैं कृष्णाजिन्न न कर पहिले पहिल वहां गया था* ।

इन्द्रजीत० । बहुत अच्छा हुआ, उन बेचारों की तरफ से मुझे बहुत ही टका था ।

वीरेन्द्र० । (गोपालसिंह से) आज दलीपशाह की जुबानी जो कुछ उसका स्सा सुनने में आया उससे हमें बड़ा ही आश्चर्य हुआ । यद्यपि उसका किस्सा भी तक समाप्त नहीं हुआ और समाप्त होने तक शायद और भी बहुत सी तें मालूम हों, परन्तु इस बात का ठीक ठीक जवाब तो तुम्हारे सिवाय सरा शायद कोई नहीं दे सकता कि तुम्हें कैद करने में मायारानी ने कौन सी सी कार्रवाई की कि किसी को पता न लगा और सभी लोग धोखे में पड़ ये, यहां तक कि तुम्हारी समझ में भी कुछ न आया और तुम चारपाई पर उठा कर कैदखाने में डाल दिये गये ।

गोपाल० । इसका ठीक ठीक जवाब तो मैं नहीं दे सकता । कई बातों का ता मुझे भी नहीं लगा क्योंकि मैं ज्यादा देर तक बीमारी की अवस्था में पड़ा हीं रहा, बहुत जल्द बेहोश कर दिया गया । मैं क्योंकर जान सकता था कि वक्त मायारानी दवा के बदले मुझे जहर पिला रही है, मगर मुझको विश्वास कि दलीपशाह को इसका हाल बहुत ज्यादे मालूम हुआ होगा ।

जीत० । खैर आज के दर्बार में और भी जो कुछ है मालूम हो जायगा ।

कुछ देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं । जब महाराज उठ गये तब सब ई अपने ठिकाने चले गये और कारिन्दे लोग दर्बार की तैयारी करने लगे ।

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाने बाद दोपहर होते होते महाराज दर्बार में रे । आज का दर्बार भी कल की तरह रौनकदार था और आदमियों की नती बनिस्बत कल के आज बहुत ज्यादे थी ।

महाराज की आज्ञानुसार दलीपशाह ने इस तरह अपना किस्सा बयान करना

* देखिये बारहवां भाग, सातवां बयान ।

शुरू किया :—

"मैं बयान कर चुका हूँ कि मैंने अपना घोड़ा गिरिजाकुमार को देकर दारोगा का पीछा करने के लिए कहा, अस्तु जब वह दारोगा के पीछे चला गया तब हम दोनों में सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिए, अन्त में यह निश्चय हुआ कि इस समय जमानिया न जाना चाहिए, बल्कि घर लौट चलना चाहिये।

"उसी समय इन्द्रदेव के साथी लोग भी वहां आ पहुँचे। उनमें से एक का घोड़ा मैंने ले लिया और फिर हम लोग इन्द्रदेव के मकान की तरफ रवाना हुए। मकान पर पहुँच कर इन्द्रदेव ने अपने कई जासूसों और ऐयारों को हर एक बातों का पता लगाने के लिए जमानिया की तरफ रवाना किया। मैं भी अपने घर जाने को तैयार हुआ मगर इन्द्रदेव ने मुझे रोक दिया।

"यद्यपि मैं कह चुका हूँ कि अपने किस्से में भूतनाथ का हाल बयान न करूंगा तथापि मौका पड़ने पर कहीं कहीं लाचारी से उसका जिक्र करना ही पड़ेगा, अस्तु इस जगह यह कह देना जरूरी जान पड़ता है कि इन्द्रदेव के मकान ही पर मुझे इस बात की खबर लगी कि भूतनाथ की स्त्री बहुत बीमार है। मेरे एक शागिर्द ने आकर यह संदेशा दिया और साथ ही इसके यह कहा कि आपकी स्त्री उसे देखने के लिए जाने की आज्ञा मांगती है।

"भूतनाथ की स्त्री शान्ता बड़ी नेक और स्वभाव की बहुत अच्छी है। मैं भी उसे बहिन की तरह मानता था इसलिए उसकी बीमारी का हाल सुन कर मुझे तरद्दुद हुआ और मैंने अपनी स्त्री को उसके पास जाने की आज्ञा दे दी तथा उसकी हिफाजत का पूरा पूरा इन्तजाम भी कर दिया। इसके कई दिन बाद खबर लगी कि मेरी स्त्री शान्ता को लेकर अपने घर आ गई।

"आठ दस दिन बीत जाने पर भी न तो जमानिया से कुछ खबर आई न गिरिजाकुमार ही लौटा। हाँ रियासत की तरफ से एक चीठी न्योते की आई थी जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने लिख दिया कि गोपालसिंह से और मुझसे दोस्ती थी सो वह तो चल बसे, अब उनकी क्रिया में अपनी आँखों से देखना पसन्द नहीं करता।

"मेरी इच्छा तो हुई कि गिरिजाकुमार का पता लगाने के लिए मैं जाऊं मगर इन्द्रदेव ने कहा कि नहीं दो चार दिन और राह देख लो, ऐसा न हो कि तुम उसकी खोज में जाओ और वह यहां आ जाय।

"बारहवें दिन गिरिजाकुमार हम लोगों के पास आ पहुँचा। उसके साथ अर्जुनसिंह भी थे जो हम लोगों की मण्डली में एक अच्छे ऐयार गिने जाते थे, मगर भूतनाथ से और इनसे खूब ही चखाचखी चली आती था। (महाराज और जीतसिंह की तरफ देख कर) आपने सुना ही होगा कि इन्होंने एक दिन भूतनाथ को धोखा देकर कूएँ में ढकेल दिया था और उसके बटुए में से कई चीजें निकाल ली थीं।

जीत०। हां मालूम है, मगर इस बात का पता नहीं लगा कि अर्जुन ने भूतनाथ के बटुए में से क्या निकाला था।

इतना कह कर जीतसिंह ने भूतनाथ की तरफ देखा।

भूत०। (महाराज की तरफ देख कर) मैंने जिस दिन अपना किस्सा सरकार को सुनाया था उस दिन अर्ज किया था कि जब वह कागज का मुट्ठा मेरे पास से चोरी गया तो मुझे बड़ा ही तरद्दुद हुआ और उसके बहुत दिनों के बाद राजा गोपालसिंह के मरने की खबर उड़ी* इत्यादि। यह वही कागज का मुट्ठा था जो अर्जुनसिंह ने मेरे बटुए में से निकाल लिया था, तथा इसके साथ और भी कई कागज थे। असल बात यह है कि उन चीठियों की नकल के मैंने दो मुट्ठे तैयार किये थे, एक तो हिफाजत के लिए अपने मकान में रख छोड़ा था और दूसरा मुट्ठा समय पर काम लेने के लिए हरदम अपने बटुए में रखता था। मुझे गुमान था कि अर्जुनसिंह ने जो मुट्ठा ले लिया था उसी से मुझे नुकसान पहुँचा मगर अब मालूम हुआ कि ऐसा नहीं हुआ, अर्जुनसिंह ने न तो वह किसी को दिया और न उससे मुझे कुछ नुकसान पहुँचा। हाल में जो दूसरा मुट्ठा जैपाल ने मेरे घर से चुरवा लिया था उसी ने तमाम बखेड़ा मचाया।

जीत०। ठीक है (दलीपशाह की तरफ देख के) अच्छा तब क्या हुआ?

दलीशाह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

दलीप०। गिरिजाकुमार और अर्जुनसिंह में एक तरह की नातेदारी भी है परन्तु उसका खयाल न करके ये दोनों आपुस में दोस्ती का बर्ताव रखते थे। खैर, उस समय इन दोनों के आ जाने से हम लोगों को खुशी हुई और फिर इस तरह बातें होने लगीं :—

मैं०। गिरिजाकुमार, तुमने तो बहुत दिन लगा दिए!

गिरजा०। जी हां, मुझे तो और भी कई दिन लग जाते मगर इत्तिफाक से अर्जुनसिंह से मुलाकात हो गई और इनकी मदद से मेरा काम बहुत जल्द हो गया।

* देखिये इक्कीसवां भाग, दूसरा बयान।

मैं० । खैर यह बताओ कि तुमने किन किन बातों का पता लगाया और मुझसे विदा होकर तुम दारोगा के पीछे कहां तक गए ?

गिरिजा० । जैपाल को साथ लिए हुए दारोगा सीधे मनोरमा के मकान पर चला गया। उस समय मनोरमा वहां न थी, वह दारोगा के आने के तीन पहर बाद रात के समय अपने मकान पर पहुँची । मैं भी छिप कर किसी किसी तरह उस मकान में दाखिल हो गया । रात को दारोगा और मनोरमा में खूब हुज्जत हुई मगर अन्त में मनोरमा ने उसे विश्वास दिला दिया कि राजा गोपालसिंह को मारने के विषय में उससे जबर्दस्ती पुर्जा लिखा लेने वाला मेरा आदमी न था बल्कि वह कोई और था जिसे मैं नहीं जानती । दारोगा ने बहुत सोच विचार कर विश्वास कर लिया कि यह काम भूतनाथ का है । इसके बाद उन दोनों में जो कुछ बातें हुई उनसे यही मालूम हुआ कि गोपालसिंह जल मर गये और दारोगा को भी यही विश्वास है, मगर मेरे दिल में यह बात नहीं बैठती, खैर जो कुछ हो । उसके दूसरे दिन मनोरमा के मकान में से एक कैदी निकाला गया जिसे बेहोश करके जैपाल ने बेगम के मकान में पहुँचा दिया। मैंने उसे पहिचानने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर पहिचान न सका क्योंकि उसे गुप्त रखने में उन्होंने बहुत कोशिश की थी, मगर मुझे गुमान होता है कि वह जरूर बलभद्रसिंह होगा । अगर वह दो दिन भी बेगम के मकान में रहता तो मैं जरूर निश्चय कर लेता मगर न मालूम किस वक्त और कहां बेगम ने उसे पहुँचवा दिया कि मुझे इस बात का कुछ भी पता न लगा, हां इतना जरूर मालूम हो गया कि दारोगा भूतनाथ को फंसाने के फेर में पड़ा हुआ है और चाहता है कि किसी तरह भूतनाथ मार डाला जाय ।

"इन कामों से छुट्टी पाकर दारोगा अकेला अर्जुनसिंह के मकान पर गया, इनसे बड़ी नरमी और खुशामद के साथ मुलाकात की, और देर तक मीठी मीठी बातें करता रहा जिसका तत्व यह था कि तुम दलीपशाह को साथ लेकर मेरी मदद करो और जिस तरह हो सके भूतनाथ को गिरफ्तार करा दो। अगर तुम दोनों की मदद से भूतनाथ गिरफ्तार हो जायगा तो मैं इसके बदले में दो लाख रुपया तुम दोनों को इनाम दूंगा, इसके अतिरिक्त वह आपके नाम का एक पत्र भी अर्जुनसिंह को दे गया ।

"अर्जुनसिंह ने दारोगा का वह पत्र निकाल कर मुझे दिया, मैंने पढ़ कर इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया और कहा, "इसका मतलब भी वही है जो गिरिजा

कुमार ने अभी बयान किया है परन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मैं भूतनाथ के साथ किसी तरह की बुराई करूं, हां दारोगा के साथ दिल्लगी अवश्य करूंगा।"

"इसके बाद कुछ देर तक और भी बातचीत होती रही। अन्त में गिरिजाकुमार ने कहा कि मेरे इस सफर का नतीजा कुछ भी न निकला और न मेरी तबीयत ही भरी, आप कृपा करके मुझे जमानिया जाने की इजाजत दीजिये।

"गिरिजाकुमार की दरखास्त मैंने मंजूर कर ली। उस दिन रात भर हम लोग इन्द्रदेव के यहां रहे, दूसरे दिन गिरिजाकुमार जमानिया की तरफ रवाना हुआ और मैं अर्जुनसिंह को साथ लेकर अपने घर मिर्जापुर चला आया।

"घर पहुँच कर मैंने भूतनाथ की स्त्री शान्ता को देखा जो बीमार तथा बहुत ही कमजोर और दुबली हो रही थी, मगर उसकी सब बीमारी भूतनाथ की नादानी के सबब से थी और वह चाहती थी कि जिस तरह भूतनाथ ने अपने को मरा हुआ मशहूर किया था उसी तरह वह भी अपने और अपने छोटे बच्चे के बारे में मशहूर करे। उसकी अवस्था पर मैं बड़ा दुःखी हुआ और जो कुछ वह चाहती थी उसका प्रबन्ध मैंने कर दिया। यही सबब था कि भूतनाथ ने अपने छोटे बच्चे के विषय में धोखा खाया जिसका हाल महाराज तथा राजकुमारों को मालूम है, मगर सर्वसाधारण के लिए मैं इस समय उसका जिक्र न करूंगा। इसका खुलासा हाल भूतनाथ अपनी जीवनी में बयान करेगा। खैर—

"घर पहुँच कर मैंने दिल्लगी के तौर पर भूतनाथ के विषय में दारोगा से लिखा पढ़ी शुरू कर दी मगर ऐसा करने से मेरा असल मतलब यह था कि मुलाकात होने पर मैं वह सब पत्र जो इस समय हरनामसिंह के पास मौजूद हैं भूतनाथ को दिखाऊं और उसे होशियार कर दूं अस्तु अन्त में मैंने उसे (दारोगा को) साफ साफ जवाब दे दिया।"

यहां तक अपना किस्सा कह कर दलीपशाह ने हरनामसिंह की तरफ देखा और हरनामसिंह ने सब पत्र जो एक छोटी सी सन्दूकड़ी में बन्द थे महाराज के आगे पेश किये जिसे मामूली तौर पर सभों ने देखा। इन चीठियों से दारोगा की बेईमानी के साथ ही साथ यह भी साबित होता था कि भूतनाथ ने दलीपशाह पर व्यर्थ ही कलंक लगाया। महाराज की आज्ञानुसार वह चीठियां कम्बख्त दारोगा के आगे फेंक दी गईं और इसके बाद दलीपशाह ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

"मेरे और दारोगा के बीच में जो कुछ लिखा पढ़ी हुई थी उसका हाल

किसी तरह भूतनाथ को मालूम हो गया या शायद वह स्वयं दारोगा से जाकर मिला और दारोगा ने मेरी चीठियां दिखा कर इसे मेरा दुश्मन वना दिया तथा खुद भी मेरी वर्बादी के लिए तैयार हो गया इस तरह दारोगा की दुश्मनी का वह पौधा जो कुछ दिनों के लिए मुरझा गया था फिर से लहलहा उठा और हराभरा हो गया, और साथ ही इसके मैं भी हर तरह से दारोगा का मुकाविला करने के लिए तैयार हो गया।

"कई दिन के वाद गिरिजाकुमार जमानिया से लौटा तो उसकी जुवानी मालूम हुआ कि मायारानी का दिन बड़ी खुशी और चहल पहल के साथ गुजर रहा है। मनोरमा और नागर के अतिरिक्त धनपति नामी एक औरत और भी है जिसे मायारानी वहुत प्यार करती है मगर उस पर मर्द होने का शक होता है। इसके अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ कि दारोगा ने मेरी गिरफ्तारी के लिए तरह तरह के वन्दोवस्त कर रक्खे हैं और भूतनाथ भी दो तीन दफे उसके पास आता जाता दिखाई दिया है मगर यह वात निश्चय रूप से मैं नहीं कह सकता कि वह जरूर भूतनाथ ही था।

"एक दिन संध्या के समय जव दारोगा अपने वाग में टहल रहा था तो भेष वदले हुए गिरिजाकुमार पिछली दीवार लांघ के उसके पास जा पहुँचा और वेखौफ सामने खड़ा होकर वोला, "दारोगा साहव, इस समय आप मुझे गिरफ्तार करने का ख्याल भी न कीजिएगा क्योंकि मैं आपके कब्जे में नहीं आ सकता, साथ ही इसके यह भी समझ रखिए कि मैं आपकी जान लेने के लिए नहीं आया हूँ वल्कि आपसे दो चार वातें करने के लिए आया हूँ।"

दारोगा घवड़ा गया और उसकी वातों का कुछ विशेष जवाव न देकर वोला, "खैर कहो क्या कहते हो।"

गिरिजा०। मनोरमा और मायारानी के फेर में पड़ कर तुमने राजा गोपालसिंह को मरवा डाला, इसका नतीजा एक न एक दिन तुम्हें भोगना ही पड़ेगा। मगर अव मैं यह पूछता हूँ कि जिनके डर से तुमने लक्ष्मीदेवी और वलभद्रसिंह को कैद कर रखा था वे तो मर ही गये अव अगर तुम उन दोनों को छोड़ भी दोगे तो तुम्हारा क्या विगड़ेगा?

दारोगा०। (ताज्जुव में आकर) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम कौन हो और क्या कह रहे हो?

गिरिजा०। मैं कौन हूँ इसके जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं मगर मैं

तुम कह सकते हो कि जो कुछ मैंने कहा है वह सब झूठ है ?

दारोगा० । बेशक झूठ है ! तुम्हारे पास इन बातों का क्या सबूत है ?

गिरिजा० । जैपाल और हेलासिंह के बीच में जो कुछ लिखा पढ़ी हुई है उसके अतिरिक्त वह चीठी इस समय भी मेरे पास मौजूद है जो राजा गोपालसिंह को मार डालने के लिए तुमने मनोरमा को लिख दी थी।

दारोगा० । मैंने कोई चीठी नहीं लिखी थी, मालूम होता है कि दलीपशाह और भूतनाथ वगैरह मिलजुल कर मुझ पर जाल बांधा चाहते हैं और तुम उन्हीं में से किसी के नौकर हो ।

गिरिजा० । भूतनाथ तो मर गया अब तुम भूतनाथ को क्यों बदनाम करते हो ?

दारोगा० । भूतनाथ जैसा मरा है सो मैं खूब जानता हूँ, अगर खुद मुझसे मुलाकात न हुई होती तो शायद मैं धोखे में आ भी जाता ।

गिरिजा० । भूतनाथ तुम्हारे पास न आया होगा, किसी दूसरे आदमी ने सूरत बदल कर तुम्हें धोखा दिया होगा, वह बेशक मर गया !

दारोगा० । (सिर हिला कर) हां ठीक है, शायद ऐसा ही हो, मगर उन सब बातों से तुम्हें मतलब ही क्या है और तुम मेरे पास किस लिए आये हो सो कहो।

गिरिजा० । मैं केवल इसी लिए आया हूँ कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह को छोड़ देने के लिए तुमसे प्रार्थना करूं ।

दारोगा० । पहिले तुम अपना ठीक ठीक परिचय दो तब मैं तुम्हारी बातों का जवाब दूंगा ।

गिरिजा० । अपना ठीक परिचय तो नहीं दे सकता ।

दारोगा० । तब मैं तुम्हारी बातों का जवाब भी नहीं दे सकता ।

"इतना कह कर दारोगा पीछे की तरफ हटा और उसने अपने आदमियों को आवाज दी मगर गिरिजाकुमार झपट कर एक मुक्का दारोगा की गर्दन पर मारने के बाद तेजी के साथ बाग के बाहर निकल गया।

"उसके दूसरे दिन गिरिजाकुमार ने उसी तरह मायारानी से भी मिलने की कोशिश की मगर उसके खास बाग के अन्दर न जा सका । लाचार उसने मायारानी के ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह का पीछा किया और दो ही तीन दिन की मेहनत में धोखा देकर बिहारीसिंह को गिरफ्तार कर लिया और उसे अर्जुनसिंह के यहां पहुँचा कर मेरे पास चला आया ।

"ऊपर लिखी बातें बयान करके गिरिजाकुमार चुप हो गया और तब मैंने

उससे कहा, "बिहारीसिंह को तुमने गिरफ्तार कर लिया यह बहुत बड़ा काम हुआ और जब तुम बिहारीसिंह बन कर वहां जाओगे और चालाकी से उन लोगों में मिलजुल कर अपने को छिपा सकोगे तो बेशक बहुत सी बातों का पता लग जायगा और हम लोगों के लिए जो कुछ दारोगा किया चाहता है वह भी मालूम हो जायगा।"

गिरिजा०। बेशक ऐसा ही है। मैं आपसे विदा होकर अर्जुनसिंह के यहां जाऊंगा और फिर बिहारीसिंह बन कर जमानिया पहुँचूंगा। मेरे जी में तो यही आया था कि मैं कम्बख्त दारोगा को सीधे यमलोक पहुँचा दूं मगर यह काम आपकी आज्ञा के बिना नहीं कर सकता था।

मैं०। नहीं नहीं, इन्द्रदेव की आज्ञा बिना यह काम कदापि न करना चाहिए, पहिले वहां का असल हाल चाल तो मालूम कर लो फिर इस बारे में इन्द्रदेव से बातचीत करेंगे।

गिरिजा०। जो आज्ञा।

"इसके बाद और भी तरह तरह की बातचीत होती रही। उस दिन गिरिजाकुमार मेरे ही घर पर रहा और दूसरे दिन मुझसे विदा हो अर्जुनसिंह के पास चला गया।

इसके बाद आठ दिन तक मुझे किसी बात का पता नहीं लगा, आखिर जब गिरिजाकुमार का पत्र आया तब मालूम हुआ कि वह बिहारीसिंह बन कर बड़ी खूबी के साथ उन लोगों में मिल गया है। उन लोगों की गुप्त कमेटी में बैठ कर हर एक बात में राय दिया करता है जिससे बहुत जल्द कुल भेदों का पता लग जाने की आशा होती है। गिरिजाकुमार ने यह भी लिखा कि दारोगा को उस चीठी की बड़ी ही चिन्ता लगी हुई है जो मनोरमा के नाम से राजा गोपालसिंह को मार डालने के लिए मैंने (गिरिजाकुमार ने) जबर्दस्ती उससे लिखवा ली थी। वह चाहता है कि जिस तरह हो वह चीठी उसके हाथ लग जाय और इस काम के लिए लाखों रुपये खर्च करने को तैयार है। वह कहता है और वास्तव में ठीक कहता है कि उस चीठी का हाल अगर लोगों को मालूम हो जायगा तो दूसरों की कौन कहे जमानिया की रिआया ही मुझे बुरी तरह मारने के लिए तैयार हो जायगी। एक दिन हरनामसिंह ने उसे राय दी कि दलीपशाह को मार डालना चाहिये। इस पर वह बहुत ही झुंझलाया और बोला 'जब तक वह चीठी मेरे हाथ न लग जाय तब तक दलीपशाह और उसके साथियों को मार डालने से मुझे क्या फायदा होगा। बल्कि मैं और भी बहुत जल्द बर्बाद

होजाऊंगा क्योंकि दलीपशाह के मारे जाने से उसके दोस्त लोग जरूर उस चीठी को मशहूर कर देंगे, इसलिए जब तक वह चीठी अपने कब्जे में न आ जाय तब तक किसी के मारने का ध्यान भी मन में न लाना चाहिए। हां दलीपशाह को गिरफ्तार करने से वेशक फायदा पहुंच सकता है। अगर वह कब्जे में आ जायगा तो उसे तरह तरह की तकलीफ पहुँचा कर किसी प्रकार उस चीठी का पता जरूर लगा लूंगा, इत्यादि।

"वास्तव में वात भी ऐसी ही थी, इसमें कोई शक नहीं कि उसी चीठी की बदौलत हम लोगों की जान बची रही, यद्यपि तकलीफें हद दर्जे की भोगनी पड़ीं मगर जान से मारने की हिम्मत दारोगा को न हुई, क्योंकि उसके दिल में विश्वास करा दिया गया था कि हम लोगों की मण्डली का एक भी आदमी जिस दिन मारा जायगा उसी दिन वह चीठी तमाम दुनिया में मशहूर हो जायगी इस बात का बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया गया है।

"इसके वाद कई दिन बीत गये मगर गिरिजाकुमार की फिर कोई चीठी न आई जिससे एक तरह पर तरद्दुद हुआ और जी में आया कि खुद जमानिया चल कर उसका पता लगाना चाहिये।

दूसरे दिन अपने घर की हिफाजत का इन्तजाम करके मैं बाहर निकला और अर्जुनसिंह के घर पहुँचा। ये उस समय अपने बैठक में अकेले बैठे हुए एक चीठी लिख रहे थे, मुझे देखते ही उठ खड़े हुए और बोले, "वाह वाह, बहुत ही अच्छा हुआ जो आप आ गये, मैं इस समय आप ही के नाम एक चीठी लिख रहा था और उसे अपने शागिर्द के हाथ आपके पास भेजने वाला था, आइये बैठिये।"

मैं०। (बैठ कर) क्या कोई नई बात मालूम हुई है।

अर्जुन०। नहीं बल्कि एक नई बात हो गई है।

मैं०। वह क्या?

अर्जुन०। आज रात को बिहारीसिंह हमारी कैद से निकल कर भाग गया है।

मैं०। (घवड़ा कर) यह तो बहुत बुरा हुआ।

अर्जुन०। वेशक बुरा हुआ। जिस समय वह जमानिया पहुँचेगा उस समय वेचारे गिरिजाकुमार पर जो बिहारीसिंह बन कर बैठा हुआ है आफत आ जायगी और वह भारी मुसीबत में गिरफ्तार हो जायगा। मैं यही खबर देने के लिए आपके पास आदमी भेजने वाला था।

मैं०। आखिर ऐसा हुआ ही क्यों? हिफाजत में कुछ कसर पड़ गई थी?

अर्जुन०। अब तो ऐसा ही समझना पड़ेगा चाहे उसकी कैसी ही हिफाजत क्यों न की गई हो, मगर असल में यह मेरे एक सिपाही की बेईमानी का नतीजा है क्योंकि बिहारीसिंह के साथ ही वह भी यहां से गायब हो गया है। जरूर बिहारीसिंह ने उसे लालच देकर अपना पक्षपाती बना लिया होगा।

मैं०। खैर जो कुछ होना था वह तो हो गया। अब किसी तरह गिरिजाकुमार को बचाना चाहिए क्योंकि असली बिहारीसिंह के जमानिया पहुँचते ही नकली बिहारीसिंह (गिरिजाकुमार) का भेद खुल जायगा और वह मजबूर करके कैदखाने में झोंक दिया जायगा।

अर्जुन०। मैं खुद यही बात कह चुका हूँ। खैर अब इस विषय में विशेष सोच विचार न करके जहां तक जल्द हो सके जमानिया पहुँचना चाहिए।

मैं०। मैं तो तैयार ही हूँ क्योंकि अभी कमर भी नहीं खोली।

अर्जुन०। खैर आप कमर खोलिये और कुछ भोजन कीजिये, मैं भी आपके साथ चलने के लिए घंटे भर के अन्दर ही तैयार हो जाऊंगा।

मैं०। क्या आप जमानिया चलेंगे?

अर्जुन०। (आवाज में जोर देकर) जरूर!

"घंटे भर के अन्दर ही हम दोनों आदमी जमानिया जाने के लिए हर तरह से तैयार हो गये और ऐयारी का पूरा पूरा सामान दुरुस्त कर लिया। दोनों आदमी असली सूरत में पैदल ही घर से बाहर निकले और कई कोस निकल जाने के बाद जंगल में बैठ कर अपनी सूरत बदली, इसके बाद कुछ देर आराम करके फिर आगे की तरफ रवाना हुए और इरादा कर लिया कि आज की रात किसी जंगल में पेड़ के ऊपर बैठ कर बिता देंगे।

"आखिर ऐसा ही हुआ। संध्या होने पर हम दोनों दोस्त जंगल में एक रमणीक स्थान देख कर अटक गये जहां पानी का सुन्दर चश्मा बह रहा था और सलई का एक बहुत बड़ा और घना पेड़ भी था जिस पर बैठने के लिए ऐसी अच्छी जगह थी कि उस पर बैठे बैठे घंटे दो घंटे नींद भी ले सकते थे।

यद्यपि हम लोग किसी सवारी पर बहुत जल्द जमानिया पहुँच सकते और वहां अपने लिए टिकने का भी इन्तजाम कर सकते थे मगर उन दिनों जमानिया की ऐसी बुरी अवस्था थी कि ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी और जंगल में टिके रहना ही उचित जान पड़ा। दोनों आदमी एक दिल थे इसलिए कुछ

दुद या किसी तरह के खुटके का भी कुछ खयाल न था।

"अंधकार छा जाने के साथ ही हम दोनों आदमी पेड़ के ऊपर जा बैठे और धीरे धीरे बातें करने लगे, थोड़ी ही देर बाद कई आदमियों के आने की आहट मालूम हुई, हम दोनों चुप हो गये और इन्तजार करने लगे कि देखें कौन आता है। थोड़ी ही देर में दो आदमी उस पेड़ के नीचे आ पहुँचे। रात हो जाने के सबब हम उनकी सूरत शक्ल अच्छी तरह देख नहीं सकते थे, घने पेड़ों में से छनी हुई कुछ कुछ और कहीं कहीं चन्द्रमा की रोशनी जमीन पर पड़ रही थी, उसी से अन्दाजा कर लिया कि ये दोनों सिपाही हैं, मगर ताज्जुब होता था कि ये लोग रास्ता छोड़ भेदियों और ऐयारों की तरह जंगल में क्यों टिके हैं।

"दोनों आदमी अपनी छोटी गठरी जमीन पर रख कर पेड़ के नीचे बैठ गये और इस तरह बातें करने लगे :—

एक०। भाई हमें तो इस जंगल में रात काटना कठिन मालूम होता है।

दूसरा०। सो क्यों ?

पहिला०। डर मालूम होता है कि किसी जानवर का शिकार न बन जांय।

दूसरा०। बात तो ऐसी ही है। मुझे भी यहां टिकना बुरा मालूम होता है, मगर क्या किया जाय, बाबाजी का हुक्म ही ऐसा है।

पहिला०। बाबाजी तो अपने काम के आगे दूसरे की जान का कुछ भी खयाल नहीं करते। जब से हमारे राजा साहब का देहान्त हुआ है तब से इनका दिमाग और भी बढ़ गया है।

दूसरा०। इनकी हुकूमत के आगे तो हमारा जी ऊब गया, नौकरी करने की इच्छा नहीं होती।

पहिला०। मगर इस्तीफा देते भी डर मालूम होता है, झट यही कह बैठेंगे कि 'तू हमारे दुश्मनों से मिल गया है'। अगर इस तरह की बात उनके दिल में बैठ जाय तो जान बचनी भी मुश्किल होगी।

दूसरा०। इनकी नौकरी में यही तो मुश्किल है, रुपया खूब मिलता है इसमें कोई सन्देह नहीं, मगर जान का डर हरदम बना रहता है। कम्बख्त मनोरमा की हुकूमत के मारे तो और भी नाक में दम रहता है। जब से राजा साहब मरे हैं इसने महल में डेरा ही जमा लिया है, पहिले डर के मारे दिखाई भी नहीं देती थी। एक बाजारू औरत का इस तरह रियासत में घुसे रहना कोई अच्छी बात है ?

पहिला०। अजी जब हमारी रानी साहिबा ही ऐसी हैं तो दूसरे को क्या कहें?

मनोरमा तो बाबाजी की जान ही ठहरी।

दूसरा०। बीच में यह बेगम कम्बख्त नई निकल पड़ी है जहां बड़ी बड़ी दौड़ के जाना पड़ता है!

पहिला०। (हंस कर) जानते नहीं हो? यह जैपालसिंह की नानी (रण्डी) है। पहिले भूतनाथ के पास रही, अब इनके गले पड़ी है। इसे भी तुम आफत की पुड़िया ही समझो, चार दफे मैं उसके पास जा चुका हूँ आज पांचवीं दफे जा रहा हूँ, इस बीच में मैं उसे अच्छी तरह पहिचान गया।

दूसरा०। मैं समझता हूं कि बिहारीसिंह से और उससे भी कुछ सम्बन्ध है।

पहिला०। नहीं ऐसा तो नहीं है, अगर बिहारीसिंह से बेगम का कुछ लगाव होता तो जैपालसिंह और बिहारीसिंह से जरूर खटक जाती, तिसमें इधर तो बिहारीसिंह बहुत दिनों तक अर्जुनसिंह के यहां कैदी ही रहे, आज किसी तरह छूट कर अपने घर पहुँचे हैं, अब देखो गिरिजाकुमार पर क्या मुसीबत आती है।

दूसरा०। गिरिजाकुमार कौन है?

पहिला०। वही जो बिहारीसिंह बना हुआ था।

दूसरा०। वह तो अपना नाम शिवशंकर बताता है।

पहिला०। बताता है मगर मैं तो उसे खूब पहिचानता हूँ।

दूसरा०। तो तुमने बाबाजी से कहा क्यों नहीं?

पहिला०। मुझे क्या गरज पड़ी है जो उसके लिए दलीपशाह से दुश्मनी पैदा करूं? वह दलीपशाह का बहुत प्यारा शागिर्द है, खबरदार तुम भी इस बात का जिक्र किसी से न करना, मैंने तुम्हें अपना दोस्त समझ कर कह दिया।

दूसरा०। नहीं जी मैं क्यों किसी को कहने लगा? (चौंक कर) देखो यह किसी भयानक जानवर के बोलने की आवाज है।

पहिला०। तो डर के मारे तुम्हारा दम क्यों निकला जाता है? ऐसा ही है तो थोड़ी सी लकड़ी बटोर कर आग सुलगा लो या पेड़ के ऊपर चढ़ कर बैठो।

दूसरा०। इससे तो यही बेहतर होगा कि यहां से चले चलें, सफर ही में रात काट देंगे, बाबाजी कुछ देखने थोड़े ही आते हैं!

पहिला०। जैसा कहो।

दूसरा०। हमारी तो यही राय है।

पहिला०। अच्छा चलो जिसमें तुम खुश रहो वही ठीक।

"उन दोनों की बात सुन कर हम लोगों को बहुत सी बातों का पता लग

गया। गिरिजाकुमार की बात सुन कर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ, साथ ही इस बात के जानने की उत्कंठा भी हुई कि वे दोनों वेगम के यहां क्यों जा रहे हैं। दिल दो तरफ के खिंचाव में पड़ गया, एक तो इच्छा हुई कि दोनों को कब्जे में करके मालूम कर लें कि बेगम के पास किस मजमून का चीठी ले जा रहे हैं और अगर उचित मालूम हो तो इनकी सूरत बन कर खुद बेगम के पास चलें, सम्भव है कि बहुत से भेदों का पता लग जाय, दूसरे इस बात की भी जल्दी पड़ गई कि किसी तरह शीघ्र जमानिया पहुँच कर गिरिजाकुमार की मदद करनी चाहिये। जब यह मालूम हुआ कि अब वे दोनों यहां से जाना चाहते हैं तब हम लोग भी झट पेड़ के नीचे उतर आए और उन दोनों के सामने खड़े होकर मैंने कहा, "नहीं जानवरों के डर से मत भागो, हम लोग तुम्हारे साथ हैं।"

हम दोनों को यकायक इस तरह पेड़ से उतर कर सामने खड़े होते देख वे दोनों डर गये मगर कुछ देर बाद एक ने जी कड़ा करके कहा, "भाई तुम लोग कौन हो ? भूत हो, प्रेत हो, या जिन्न हो ?"

मैं०। डरो मत, हम लोग भूत प्रेत नहीं हैं आदमी हैं और ऐयार हैं, तुम लोगों में जो कुछ बातें हुई हैं हम लोग पेड़ पर बैठे बैठे सुन रहे थे, जब देखा कि अब तुम लोग जाया चाहते हो तो हम दोनों भी उतर आये।

एक सिपाही०। (घबड़ानी आवाज से) आप कहां के रहने वाले और कौन हैं ?

मैं०। हम दोनों आदमी दलीपशाह के नौकर हैं।

दूसरा०। अगर आप दलीपशाह के नौकर हैं तो हम लोगों को विशेष न डरना चाहिये क्योंकि आप लोग न तो हमारे मालिकों से मिलेंगे और न इस बात का जिक्र करेंगे कि हम लोग क्या बातें करते थे, हां अगर कोई हमारे दर्बार का आदमी होता तो जरूर हम लोग बर्बाद हो जाते।

मैं०। बेशक ऐसा ही है और तुम लोगों की बातों से यह जान कर हम दोनों बहुत प्रसन्न हुए कि तुम लोग ईमानदार और इन्साफपसन्द आदमी हो और हमें यह भी उम्मीद है कि जो कुछ हम पूछेंगे उसका ठीक ठीक जवाब दोगे।

दूसरा०। हमारी बातों से आप जान ही चुके हैं कि हम लोग कैसे खूंखार आदमी के नौकर हैं और आप लोगों से बातें करने का कैसा बुरा नतीजा निकल सकता है।

मैं०। ठीक है मगर तुम्हारे दारोगा साहब को इन बातों की खबर कुछ भी न लगेगी।

पहिला० । इस समय हम आपके काबू में हैं क्योंकि सिपाही होने पर भी ऐयारों का मुकाबला नहीं कर सकते तिस पर ऐसी अवस्था में कि दोनों तरफ की गिनती बराबर हो इसलिये इस समय आप जो कुछ चाहें हम लोगों पर जबर्दस्ती कर सकते हैं।

मैं० । नहीं नहीं, हम लोग तुम पर जबर्दस्ती नहीं किया चाहते बल्कि तुम्हारी खुशी और हिफाजत का ख्याल रख कर अपना काम निकाला चाहते हैं।

पहिला० । इसके अतिरिक्त हम लोगों को इस बात का भी निश्चय हो जाना चाहिये कि आप लोग वास्तव में दलीपशाह के ऐयार हैं और हम लोगों की हिफाजत के लिये आपने कोई अच्छी तरकीब सोच ली है अगर हम लोग आपकी किसी बात का जवाब दें।

सिपाही की आखिरी बात से हमें निश्चय हो गया कि वे लोग हमारे कब्जे में आ जांयगे और हमारी बात मान लेंगे और अगर ऐसा न करते तो वे लोग कर ही क्या सकते थे? आखिर हर तरह का ऊंच नीच दिखा कर हमने उन्हें राजी कर लिया और अपना सच्चा परिचय देकर उन्हें विश्वास करा दिया कि जो कुछ हमने कहा है सब सच है। इसके बाद हमने जो कुछ पूछा उन्होंने साफ साफ बता दिया और जो कुछ देखना चाहा (बेगम के नाम का पत्र इत्यादि) दिखा दिया। गिरिजाकुमार के बारे में तो जो कुछ पहिले मालूम कर चुके उससे ज्यादा हाल कुछ मालूम न हुआ क्योंकि उसके विषय में उन्हें कुछ विशेष खबर ही न थी केवल इतना ही जानते थे कि असली बिहारीसिंह के पहुँचने पर नकली बिहारीसिंह (गिरिजाकुमार) गिरफ्तार कर लिया गया, हां दूसरी बात यह मालूम हो गई कि वे दोनों आदमी दारोगा और जैपाल की चीठी लेकर बेगम के पास जा रहे हैं, कल संध्या समय तक बेगम के पास पहुँच जांयगे और परसों संध्या को बेगम को साथ लिए हुए किश्ती की सवारी से गंगाजी की तरफ से रातोरात जमानिया लौटेंगे। अस्तु हम लोगों ने उन दोनों सिपाहियों को जिस तरह बन पड़ा इस बात पर राजी कर किया कि जब तुम लोग बेगम को लिए हुए रातोरात गंगाजी की राह लौटो तो अमुक समय अमुक स्थान पर कुछ देरी के लिए किसी बहाने से किश्ती किनारे लगा के रोक लेना, उस समय हम लोग डाकुओं की तरह पहुँच कर बेगम को गिरफ्तार कर लेंगे और जो कुछ चीजें हमारे मतलब की उसके पास होंगी उन्हें ले लेंगे मगर तुम लोगों को छोड़ देंगे, इस तरह पर हमारा काम भी निकल जायगा और तुम लोगों पर कोई किसी तरह का शक भी न कर सकेगा।

"रुपये पाने के साथ ही अपना किसी तरह का हर्ज न देख कर दोनों सिपाहियों ने इस बात को भी मंजूर कर लिया। इसके बाद हम लोगों में मेल मुहब्बत की बातचीत होने लगी और तमाम रात हम लोगों ने उस पेड़ पर काट दी। सवेरा होने पर दोनों सिपाही हमसे विदा होकर चले गये तब हम लोग आपस में विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये। अन्त में यह निश्चय करके कि अर्जुनसिंह तो गिरिजाकुमार को छुड़ाने के लिए जमानिया जांय और मैं बेगम को फंसाने का बन्दोबस्त करूं, हम दोनों भी एक दूसरे से विदा हुए।

"इस जगह मैं किस्से के तौर पर थोड़ा सा हाल गिरिजाकुमार का बयान करूंगा जो कुछ दिन बाद मुझे उसी की जुबानी मालूम हुआ था।

"अर्जुनसिंह की कैद से छुटकारा पाकर बिहारीसिंह सीधे जमानिया दारोगा के पास चला मगर ऐसे ढंग से गया कि किसी को कुछ मालूम न हुआ और न गिरिजाकुमार ही को इस बात का पता लगा। रात पहर भर से कुछ ज्यादा जा चुकी थी जब दारोगा ने नकली 'बिहारीसिंह अर्थात् गिरिजाकुमार को अपने पास बुलाया। बेचारे गिरिजाकुमार को क्या खबर थी कि आज मैं मुसीबत में डाला जाऊंगा। वह बेधड़क मामूली ढंग पर बाबाजी (दारोगा) के मकान पर चला गया और देखा कि दारोगा अकेले ऊंची गद्दी पर बैठा हुआ है और उसके सामने सात आठ सिपाही तलवार लगाये खड़े हैं। दारोगा का इशारा पाकर गिरिजाकुमार उसके सामने बैठ गया। बैठने के साथ ही उन सब सिपाहियों ने एक साथ गिरिजाकुमार को धर दबाया और बात की बात में हाथ पैर बांध कर छोड़ दिया। बेचारा गिरिजाकुमार अकेला कुछ भी न कर सका और जो कुछ हुआ उसने चुपचाप बर्दाश्त कर लिया। इसके बाद दारोगा ने ताली बजाई, उसी समय असली बिहारीसिंह कोठरी में से निकल कर बाहर चला आया और गिरिजाकुमार की तरफ देख के बोला, "अब तो तुम समझ गये होगे कि तुम्हारा भण्डा फूट गया और मैं तुम्हारे कैद से छूट कर निकल आया। मगर शाबाश, तुमने बड़ी खूबी के साथ मुझे धोखा देकर गिरफ्तार किया था। अब मेरी पारी है, देखो मैं किस तरह तुमसे बदला लेता हूं!"

गिरिजा०। यह तो ऐयारों का काम ही है कि एक दूसरे को धोखा दिया करता है, इसमें अनर्थ क्या हो गया? मेरा दांव लगा मैंने तुम्हें गिरफ्तार करके कैदखाने में डाल दिया, अब तुम्हारा दांव लगा है तो तुम मुझे कैदखाने में डाल दो, जिस तरह तुम अपनी चालाकी से छूट आये हो उसी तरह छूटने के लिए

मैं भी उद्योग करूंगा।

बिहारी०। सो तो ठीक है, मगर इतना समझ रक्खो कि हम लोग तुम्हारे साथ मामूली बर्ताव न करेंगे बल्कि हद दर्जे की तकलीफ देंगे।

गिरिजा०। यह तो ऐयारी के कायदे के बाहर है।

बिहारी०। जो भी हो।

गिरिजा०। खैर कोई हर्ज नहीं, जो कुछ होगा झेलेंगे।

बिहारी०। अगर तुम तकलीफ से बचा चाहो तो मेरी बातों का साफ और सच सच जवाब दो।

गिरिजा०। वादा तो नहीं करते मगर जो कुछ पूछना हो पूछो।

बिहारी०। तुम्हारा नाम क्या है ?

गिरिजा०। शिवशंकर।

बिहारी०। किसके नौकर हो ?

गिरिजा०। किसी के भी नहीं।

बिहारी०। फिर यहां आये थे किसके काम के लिये ?

गिरिजा०। गुरुजी के।

बिहारी०। तुम्हारा गुरु कौन है ?

गिरिजा०। वही जिसे तुम जान चुके हो और जिसके यहां इतने दिनों तक तुम कैद थे।

बिहारी०। अर्जुनसिंह ?

गिरिजा०। हां।

बिहारी०। उन्हें हम लोगों से क्या दुश्मनी थी ?

गिरिजा०। कुछ भी नहीं।

बिहारी०। फिर यहां उत्पात मचाने के लिए तुम्हें भेजा क्यों ?

गिरिजा०। मुझे सिर्फ भूतनाथ का पता लगाने के लिए भेजा था क्योंकि उन्हें भूतनाथ से बहुत ही रंज है। यद्यपि भूतनाथ ने अपना मरना मशहूर किया है मगर उन्हें विश्वास है कि वह मरा नहीं और दारोगा साहब के साथ मिल जुल कर काम कर रहा है और उनकी (अर्जुनसिंह की) बर्बादी का बन्दोबस्त करता है। इसी से उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि दारोगा साहब के यहां पैठ कर और कुछ दिन तक उन लोगों के साथ रह कर ठीक ठीक पता लगाओ और बन पड़े तो उसे गिरफ्तार भी कर लो, बस।

बिहारी० । भूतनाथ और अर्जुनसिंह से लड़ाई क्यों हो गई।

गिरिजा० । लड़ाई तो बहुत पुरानी है मगर इधर जब से गुरुजी ने उसका ...री का बटुआ ले लिया तब से रंज ज्यादे हो गया है।

बिहारी० । (ताज्जुब से) क्या भूतनाथ का बटुआ अर्जुनसिंह ने ले लिया।

गिरिजा० । हां।

बिहारी० । उसमें से क्या चीज निकली ?

गिरिजा० । सो तो नहीं मालूम मगर इतना गुरुजी कहते थे कि उस बटुए ...मारा काम नहीं चला इसलिए उसे गिरफ्तार ही करना पड़ेगा।

बिहारी० । मगर भूतनाथ के खयाल से तुम्हारे गुरुजी ने हमें क्यों तकलीफ दी।

गिरिजा० । तुम्हें उन्होंने किसी तरह की तकलीफ नहीं दी बल्कि बड़े आराम ...थ कैद में रक्खा था, क्योंकि तुम लोगों से उन्हें किसी तरह की दुश्मनी ...है। उनका खयाल यही था कि बिहारीसिंह को तीन चार दिन से ज्यादे ...में रखने की जरूरत न पड़ेगी और इसके बीच ही में भूतनाथ का पता लग ...गा। उन्हें इस बात की भी खबर लगी थी कि भूतनाथ जमानिया में बिहारी-...ह के पास आया करता है, मगर यहां आने से मुझे उसका कुछ भी पता न ..., अस्तु मैं एक दो दिन में खुद ही लौट जाने वाला था, तुम अपनी बुद्धि-...ी से अगर न भी छूटते तो एक दो दिन में जरूर छोड़ दिये जाते।

"गिरिजाकुमार ने ऐसे ढंग से सूरत बना कर बातें कीं कि दारोगा और ...रीसिंह को उसकी सचाई पर विश्वास हो गया। मैं पहिले ही बयान कर ...हूं कि गिरिजाकुमार बातचीत के समय सूरत बनाना बहुत ही अच्छा ...ता था। अस्तु गिरिजाकुमार और बिहारीसिंह की बातें सुन दारोगा ने ...—"शिवशंकर, मालूम तो होता है कि तुम जो कुछ कहते हो वह सच हो ...रन्तु ऐयारों की बातों पर विश्वास करना जरा मुश्किल है, फिर भी तुम ...े और साफ दिल के मालूम होते हो।"

गिरिजा० । जो आप चाहे खयाल करें मगर मैं तो यही समझता हूँ कि ...लोगों से मुझे झूठ बोलने की जरूरत ही क्या है ? न मेरे गुरुजी को आप ...ों से दुश्मनी है न मुझी को, हां अगर यह मालूम हो जायगा कि हमारे मुका-...में आपलोग भूतनाथ की सहायता करते हैं तो बेशक दुश्मनी हो जायगी, ...में खुले दिल से कहे देता हूं चाहे आप मुझे बेवकूफ समझें चाहे नालायक।

दारोगा० । नहीं नहीं शिवशंकर, हम लोग भूतनाथ की मदद किसी तरह

नहीं कर सकते, हम तो उसे खुद ही ढूढ़ रहे हैं मगर उस कम्बख्त का कहीं पता ही नहीं लगता, ताज्जुब नहीं कि वास्तव में मर ही गया हो।

गिरिजा०। (सिर हिला कर) कदापि नहीं, अभी महीने भर से ज्यादे न हुआ होगा कि मैंने खुद अपनी आंखों से उसे देखा था मगर उस समय मैं ऐसे मण्डस में था कि कुछ न कर सका। खैर कम्बख्त जाता कहां है, मुझे उसके दो चार ठिकाने ऐसे मालूम हैं कि जिसके सबब से एक न एक दिन उसे जल्द गिरफ्तार कर लूंगा।

दारोगा०। (ताज्जुब और खुशी से) क्या तुमने उसे खुद अपनी आंखों से देखा था और उसके दो चार ठिकाने तुम्हें मालूम हैं?

गिरिजा०। बेशक?

दारोगा०। क्या उन ठिकानों का पता मुझे बता सकते हो?

गिरिजा०। नहीं।

दारोगा०। सो क्यों?

गिरिजा०। गुरुजी ने मुझे जो कुछ ऐयारी सिखाना था सिखा चुके। गुरुजी से वादा कर चुका हूं कि अब आपकी इच्छानुसार गुरुदक्षिणा में भूतनाथ को गिरफ्तार करके आपके हवाले करूंगा और जब तक ऐसा न करूंगा अपने घर कदापि न जाऊंगा। ऐसी अवस्था में अगर मैं भूतनाथ का कुछ पता आपको बता दूं तो मानों अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मारूं क्योंकि आप अमीर और शक्तिसम्पन्न हैं, बनिस्बत मुझ गरीब के आप उसे बहुत जल्द गिरफ्तार कर सकते हैं, अस्तु अगर ऐसा हुआ और वह आपके हाथ में पड़ गया तो मैं सूखा ही रह जाऊंगा और गुरुदक्षिणा न दे सकने के कारण अपने घर भी न जा सकूंगा।

दारोगा०। (हंस कर) मगर शिवशंकर, तुम बड़े ही सीधे आदमी हो कि बहुत ही साफ साफ कह देते हो, ऐयारों को ऐसा न करना चाहिये।

गिरिजा०। नहीं साहब, आपसे साफ साफ कह देने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि आप हमारे दुश्मन नहीं हैं, दूसरे यह कि अभी तक मुझे ऐयार की पदवी नहीं मिली, जब गुरुदक्षिणा देकर ऐयार की पदवी पा जाऊंगा तो ऐयारों की सी चाल चलूंगा, अभी तो मैं एक गरीब छोकरा हूं।

दारोगा०। नहीं, तुम बहुत अच्छे आदमी हो। हम तुमसे खुश हैं। (बिहारी सिंह की तरफ देख के) इस बेचारे के हाथ पैर खोल दो! (गिरिजाकुमार से) मगर तुम भूतनाथ का जो कुछ पता ठिकाना जानते हो हमें बता दो, हम

वादा करते हैं कि भूतनाथ को गिरफ्तार करके अपना काम भी निकाल लेंगे और तुम्हारे सिर से गुरुदक्षिणा का बोझ भी उतरवा देंगे।

गिरिजा०। (मुंह बिचका कर और सिर हिला कर) जी नहीं, हां अगर इसके साथ आप और भी दो तीन बातों का वादा करें तो मैं वेशक आपकी मदद कर सकता हूं।

बिहारी०। (गिरिजाकुमार के हाथ पैर खोल कर) तुम जो कुछ चाहोगे बाबाजी देंगे मगर इनकी बातों से इनकार न करो।

गिरिजा०। (अच्छी तरह बैठ कर) ठीक है मगर मैं विशेष धन दौलत नहीं चाहता और न मुझे इसकी जरूरत ही है क्योंकि ईश्वर ने मुझे बिल्कुल ही अकेला कर दिया है, न बाप न मां, न भाई न भौजाई, ऐसी अवस्था में मैं धन दौलत लेकर क्या करूंगा, मगर दो तीन बातों का एकरार लिए बिना मैं दारोगा साहब को कुछ भी न बताऊंगा चाहे मार ही डाला जाऊं!

दारोगा०। (मुस्कुरा कर) अच्छा अच्छा बताओ तुम क्या चाहते हो?

गिरिजा०। एक तो यह कि उसकी खोज में मैं अगुआ रक्खा जाऊं।

दारोगा०। मंजूर है, अच्छा और बताओ।

गिरिजा०। बिहारीसिंह मेरी मदद के लिए दिये जांय क्योंकि मैं इन्हें पसन्द करता हूं।

दारोगा०। यह भी कबूल है, और बोलो!

गिरिजा०। जहां तक जल्द हो सके मैं गुरुदक्षिणा के बोझ से हलका किया जाऊं क्योंकि इसके लिए मैं जोश में आकर बहुत बुरी कसम खा चुका हूं, यद्यपि गुरुजी मना करते थे कि तुम कसम न खाओ तुम्हारे ऐसे जिद्दी आदमी का कसम खाना अच्छा नहीं है!

दारोगा०। वेशक ऐसा ही किया जायगा; तुम जो चाहते हो वही होगा, और कहो?

गिरिजा०। गुरुदक्षिणा से छुट्टी पा कर मैं ऐयार की पदवी पा जाऊं तो मुझे यहां किसी तरह की नौकरी मिल जाय जिसमें मेरा गुजारा चले, और मेरी शादी करा दी जाय। यह मैं इसलिए कहता हूं कि मुझे शादी करने का शौक है और मैं अपनी बिरादरी में ऐसा गरीब हूं कि कोई मुझे लड़की देना कबूल न करेगा।

दारोगा०। यह सब कुछ हो जायगा, तुम कुछ चिन्ता न करो, और फिर तुम गरीब भी न रहोगे। अच्छा बताओ और भी कुछ चाहते हो?

गिरिजा० । एक बात और है ।

दारोगा० । वह भी कह डालो ।

गिरिजा० । (बिहारीसिंह की तरफ इशारा करके) ये हमारे गुरुजी से किसी तरह की दुश्मनी न रक्खें और मेरे साथ वहाँ चलने में कोई परहेज न करें देखिये मैं अपने दिल का हाल बहुत साफ कह रहा हूँ ।

बिहारी० । ठीक है ठीक है, जो कुछ तुम कहते हो मंजूर है ।

गिरिजा० । (दारोगा की तरफ देख कर) तो बस मैं भी आपका हुक्म बजा लाने के लिए दिलोजान से तैयार हूँ ।

दारोगा० । अच्छा तो अब उसके दो तीन ठिकाने जो तुम्हें मालूम हैं उनका पता बताओ ।

गिरिजा० । पता क्या, अब तो मैं खुद इनको (बिहारीसिंह को) अपने साथ ले चल कर सब कुछ दिखाऊंगा और पता लगाऊंगा । मैं उस कम्बख्त को बिना ढूंढ़े छोड़ने वाला नहीं, मुझे आप चाणक्य की तरह जिद्दी समझिये !

दारोगा० । अच्छा यह तो बताओ तुमने भूतनाथ को कहां देखा था जिसका जिक्र अभी तुमने किया है ।

गिरिजा० । बेगम के मकान से बाहर निकलते हुए ।

बिहारी० । (ताज्जुब से) कौन बेगम ?

गिरिजा० । वही जिसे जयपालसिंह अपनी समझते हैं । ताज्जुब क्या है, उसे आप साधारण औरत न समझिये, मैं साबित कर दूंगा कि उसका मकान भी भूतनाथ का एक अड्डा है मगर वहां इत्तिफाक ही से वह कभी जाता है, बेगम उससे मिलने के लिए कभी कभी कहीं जाती है परन्तु उसका ठिकाना मुझे अभी मालूम नहीं हुआ । मैं तो अब तक उसका भी पता लगा लिए होता मगर क्या कहूँ गुरुजी ने कहा कि तुम जमानिया ही आओ वहां भूतनाथ भी मिल जायगा, नहीं तो मैं बेगम का ही पीछा करने वाला था ।

दारोगा० । मुझे तुम्हारी इन बातों पर ताज्जुब मालूम पड़ता है !

गिरिजा० । अभी क्या आगे चल कर और भी ताज्जुब होगा जब बिहारीसिंह वहां की कैफियत आपसे बयान करेंगे ।

दारोगा० । खैर अगर तुम्हारी राय हो तो मैं बेगम को यहां बुलाऊं !

गिरिजा० । बुलवाइए मगर मेरी समझ में उसे होशियार कर देना मुनासिब न होगा, बल्कि मैं तो कहता हूँ कि इसका जिक्र अभी आप जयपाल

न कीजिये, कुछ सबूत इकट्ठा कर लेने दीजिए।

दारोगा०। खैर जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा, बेगम को यहां बुलवा कर भूतनाथ का जिक्र न करूंगा बल्कि उसकी तबीयत और नीयत का अन्दाज करूंगा

गिरिजा०। हां तो बुलवाइये!

दारोगा०। तब तक तुम क्या करोगे!

गिरिजा०। कुछ भी नहीं, अभी तो दो तीन दिन तक मैं यहां से न जाऊंगा, बल्कि मैं चाहता हूं कि दो रोज मुझे आप इन्हीं (बिहारीसिंह) की सूरत में रहने दीजिये और बिहारीसिंह को कहिये कि अपनी सूरत बदल लें। जब बेगम आकर यहां से चली जायगी तब हम दोनों आदमी भूतनाथ की खोज में जायेंगे।

दारोगा०। इसमें क्या फायदा है? असली सूरत में अगर तुम यहां रहो तो क्या कोई हर्ज है?

गिरिजा०। हां जरूर हर्ज है, यहां मैं कई ऐसे आदमियों से मिलजुल रहा हूं जिनसे भूतनाथ की बहुत सी बातें मालूम होने की आशा है, उन्हें अगर मेरा असल भेद मालूम हो जायगा तो बेशक हर्ज होगा। इसके अतिरिक्त जब बेगम यहां आ जाय तो मैं बिहारीसिंह बना हुआ आपके सामने ऐसे ढंग पर बातें करूंगा कि ताज्जुब नहीं आपको भी इस बात का पता लग जाय कि भूतनाथ से और उससे कुछ सम्बन्ध है।

दारोगा०। अगर ऐसी बात है तो तुम्हारा बिहारीसिंह ही बने रहना ठीक है।

गिरिजा०। इसी से तो मैं कहता हूं।

दारोगा०। खैर ऐसा ही होगा और मैं आज ही बेगम को लाने के लिये आदमी भेजता हूं। (बिहारीसिंह की तरफ देख कर) तुम अपनी सूरत बदलने का बन्दोबस्त करो।

बिहारी०। बहुत अच्छा।

यहां तक बयान करके दलीपशाह चुप हो गया और कुछ दम लेकर फिर इस तरह बयान करने लगा :—

"इस समय मेरी बातें सुन सुन कर दारोगा और जयपाल वगैरह के कलेजे पर सांप लोट रहा होगा और उस समय की बातें याद करके ये बेचैन हो रहे होंगे क्योंकि वास्तव में गिरिजाकुमार ने उन्हें ऐसा उल्लू बनाया कि उस बात को ये कभी भूल नहीं सकते। खैर उस समय जब हम दोनों आदमी जंगल में दारोगा के सिपाहियों से जुदा हुए हमें गिरिजाकुमार के मामले की कुछ खबर न

थी, अगर खबर होती तो बेगम को न लूटते और न अर्जुनसिंह ही गिरिजा-कुमार की खोज में जमानिया जाते। खैर फिर भी जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ और अब मैं आगे का हाल बयान करता हूँ।"

दूसरा बयान

दलीपशाह ने फिर इस तरह अपना किस्सा कहना शुरू किया :—

"गिरिजाकुमार ने अपनी बातचीत में दारोगा और बिहारीसिंह को ऐसा उल्लू बनाया कि उन दोनों को गिरिजाकुमार पर पूरा पूरा भरोसा हो गया और वह खुशी के साथ जमानिया में रहकर बेगम का इन्तजार करने लगा बल्कि दारोगा के साथ जाकर उसने खास बाग का रास्ता और मायारानी को भी देख लिया। इधर अर्जुनसिंह गिरिजाकुमार की खोज में जमानिया गये और मैं बेगम को गिरफ्तार करने के फिक्र में पड़ा।

"पहिले तो मैं अपने घर गया और वहां से कई आदमियों का इन्तजाम करके लौटा। ठीक समय पर गंगा के किनारे उस ठिकाने पहुँच गया जहां बेगम की किश्ती किनारे लगा कर लूट लेने की बातचीत कही बदी थी।

"मैं इस घटना का हाल बहुत बढ़ा कर न कहूँगा कि बेगम की किश्ती क्योंकर आई और क्या क्या हुआ तथा मैंने किसको किस तरह गिरफ्तार किया-संक्षेप में केवल इतना ही कहूँगा कि बेगम पर मैंने कब्जा कर लिया और जो चीजें उसके पास थीं सब ले ली गईं। उन्हीं चीजों में ये सब कागज और वह हीरे की अंगूठी भी थी जो भूतनाथ बेगम के यहां से ले आया है और जो इस समय दर्बार में मौजूद है। आगे चल कर मैं इन चीजों का हाल बयान करूंगा और यह भी कहूँगा कि ये सब चीजें मेरे कब्जे में आ कर फिर क्योंकर निकल गईं। इस समय मैं पुनः गिरिजाकुमार का हाल बयान करूंगा जो उसी की जुबानी मुझे मालूम हुआ था।

"गिरिजाकुमार जमानिया में बैठा हुआ दारोगा के साथ बेगम का इन्तजार कर रहा था। जब बेगम को लुटवा कर दोनों सिपाही जिनके साथ बेगम के भी दो आदमी थे और जिन्हें मैंने जानबूझ कर छोड़ दिया था, रोते कलपते जमानिया पहुँचे तो सीधे दारोगा के पास चले गये। उस समय वहां सूरत बदले हुए असली बिहारीसिंह और गिरिजाकुमार भी बिहारीसिंह बना हुआ बैठा था। दारोगा के सिपाहियों और बेगम के आदमियों ने अपनी और बेगम

के लुट जाने का हाल बयान किया जिसे सुनते ही दारोगा को ताज्जुब और रंज

हुआ। उसने गिरिजाकुमार की तरफ देख कर कहा, "यह कारवाई किसने की होगी?"

गिरिजा०। खुद बेगम ने या फिर भूतनाथ ने! (बेगम के आदमियों की तरफ देख के) क्यों जी! मैं समझता हूं कि शायद महीने भर के लगभग हुआ होगा जब एक दिन भूतनाथ मेरे साथ बेगम के यहां गया था। उस समय तुम भी तो वहां थे, क्या तुमने मुझे पहिचाना था।

बेगम का आदमी०। जी नहीं, मैंने आपको नहीं पहिचाना था।

गिरिजा०। (दारोगा की तरफ देख के) आप ही के कहे मुताबिक मैं दो तीन दफे भूतनाथ के साथ बेगम के यहां गया था, पर वास्तव में भूतनाथ अच्छा आदमी है और ये लोग भी बड़ी मुस्तैदी के साथ वहां रहते हैं। (बेगम के आदमियों की तरफ देख के) क्यों जी, है न यही बात?

बेगम का आ०। (हाथ जोड़ के) जी हां सर्कार!

बेगम के आदमियों के जुबान से गिरिजाकुमार ने बड़ी खूबी के साथ 'जी हां सर्कार' कहलवा लिया। इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ बेगम के यहां जाया करता था और गिरिजाकुमार को यह हाल मालूम था मगर ऐसे मौके पर उसके आदमियों की जुबान से 'हां' कहला लेना मामूली बात न थी। उन खुशामदी आदमियों ने यह सोच कर कि जब खुद बिहारीसिंह भूतनाथ के साथ अपना जाना कबूल करते हैं तो हां कहना ही अच्छा है—"जी हां सर्कार" कह दिया और गिरिजाकुमार दारोगा तथा बिहारीसिंह की निगाह में सच्चा बन बैठा। साथ ही इसके गिरिजाकुमार दारोगा से पहिले ही कह चुका था कि बेगम आवेगी तो मैं बात ही बात में किसी तरह साबित करा दूंगा कि भूतनाथ उसके यहां आता जाता है, वह बात भी दारोगा को खूब याद थी, अस्तु दारोगा को गिरिजाकुमार पर और भी विश्वास हो गया। उसने गिरिजाकुमार का इशारा पाकर बेगम के दोनों आदमियों को बिना कुछ कहे थोड़ी देर के लिए बिदा किया और फिर आपुस में इस तरह बातचीत करने लगा :—

दारोगा०। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला है।

गिरिजा०। अजी यह उसी कम्बख्त भूतनाथ की बदमाशी और दोनों की मिली जुली गठन है। बेगम जान बूझ कर यहां नहीं आई। अगर वह आती तो उसके आदमियों की तरह खास उसकी जुबान से भी मैं इस बात को साबित करा देता कि उससे और भूतनाथ से ताल्लुक है और इसीलिए मैं अभी तक बिहारी-

सिंह बना हुआ था, मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं बहुत जल्द इन सब भेदों का पूरा पूरा पता लगा लूंगा और भूतनाथ को भी गिरफ्तार कर लूंगा।

दारोगा०। तो अब देर क्यों करते हो ?

गिरिजा०। कुछ नहीं, कल मेरे साथ चलने के लिये बिहारीसिंह तैयार हो जांय।

बिहारी०। अच्छी बात है, यह बताओ कि किस सूरत शक्ल में सफर किया जायगा।

गिरिजा०। मैं तो एक ज्योतिषी की सूरत बनूंगा, और आप...

बिहारी०। मैं वैद्य बनूंगा।

गिरिजा०। बस बस, यही ठीक है, मगर एक बात मैं अभी से कहे देता हूं कि दो घण्टे के लिए मैं गुरुजी से मिलने जरूर जाऊंगा।

बिहारी०। क्या हर्ज है, अगर कहोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चला चलूंगा या कहीं अटक जाऊंगा।

"मुख्तसर यह कि दूसरे दिन दोनों ऐयार ज्योतिषी और वैद्य बने हुए जमानिया के बाहर निकले।

"मजा तो यह कि गिरिजाकुमार ने चालाकी से उस समय तक किसी को अपनी असली सूरत देखने नहीं दी। जब तक वहां रहा बिहारीसिंह ही बना रहा, जब बाहर निकला तो ज्योतिषी बन कर निकला। खैर दारोगा का तो कहना ही क्या है, खुद बिहारीसिंह और हरनामसिंह व्यर्थ ही ऐयार कहलाते, असल में कोई अच्छा काम इन दोनों के हाथ से होते देखा सुना नहीं गया।

"अब हम थोड़ा सा हाल अर्जुनसिंह का बयान करते हैं, जो गिरिजाकुमार का पता लगाने के लिये हमसे जुदा होकर जमानिया गये थे। जमानिया में राम सरन नामी एक महाजन अर्जुनसिंह का दोस्त था, अस्तु ये सूरत बदले हुए सीधे उसी के मकान पर चले गये और मौका पाकर उससे मुलाकात करने बाद सब हाल बयान किया और उससे मदद चाही। पहिले तो वह दारोगा और मायारानी के खिलाफ कारंवाई करने के नाम से बहुत डरा मगर अर्जुनसिंह ने उसे बहुत भरोसा दिलाया और कहा कि जो कुछ हम करेंगे, वह ऐसे ढंग से करेंगे कि तुम पर किसी को किसी तरह का शक न होगा, इसके अतिरिक्त हम तुमसे और किसी तरह की मदद नहीं चाहते केवल एक ऐसी कोठरी ऐसे ढंग की चाहते हैं जिसमें अगर हम किसी को गिरफ्तार करके लावें तो दो चार दिन के लिये हम

कर रक्खें और यह काम भी ऐसी खूबी के साथ किया जायगा कि कैदी को इस बात का गुमान भी न होगा कि वह कहाँ और किसके मकान में कैद किया गया था।

"खैर, रामसरन ने किसी तरह अर्जुनसिंह की बात मंजूर कर ली और तब अर्जुनसिंह उसके मकान से बाहर निकल कर हरनामसिंह को फंसाने की फिक्र करने लगे, क्योंकि इन्होंने निश्चय कर लिया था कि बिना किसी को फंसाये हुए गिरिजाकुमार का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

"मुख्तसर यह कि दो दिन की कोशिश में अर्जुनसिंह ने भुलावा दे हरनामसिंह को गिरफ्तार कर लिया, उसे रामसरन के मकान की एक अन्धेरी कोठरी में ले जाकर कैद किया तथा खाने पीने का भी प्रबन्ध कर दिया। हरनामसिंह को यह मालूम न हुआ कि उसे किसने कैद किया है और वह किस स्थान पर रक्खा गया है, तथा उसे खाने पीने को कौन देता है। इस काम से छुट्टी पाकर हरनामसिंह की सूरत बन अर्जुनसिंह दारोगा के दर्बार में जा घुसे और इस तरकीब से बहुत जल्द गिरिजाकुमार को पहिचान लिया और उसका पता लगा लिया। गिरिजाकुमार ने जिस चालाकी से अपने को बचा लिया था उसे जान कर उसकी बुद्धिमानी पर अर्जुनसिंह को आश्चर्य हुआ मगर भण्डा फूटने के डर से वे अपने को बहुत ही बचाये हुए थे और दारोगा तथा असली बिहारीसिंह से सिर दर्द का बहाना करके बातचीत कम करते थे।

"जब बिहारीसिंह को साथ लेकर गिरिजाकुमार शहर के बाहर निकला तो अर्जुनसिंह ने भी सूरत बदल कर उसका पीछा किया। जब दोनों मुसाफिर एक मंजिल रास्ता तै कर चुके तो दूसरे दिन सफर में एक जगह मौका पाकर और कुछ देर के लिए गिरिजाकुमार को अकेला देख कर अर्जुनसिंह उसके पास चले गये और उन्होंने अपने को उस पर प्रकट कर दिया। जल्दी जल्दी बातचीत करके इन्होंने उसे यह बता दिया कि उसके जमानिया चले जाने के बाद क्या हुआ तथा अब उसे क्या और किस, किस ढंग पर कारंवाई करनी चाहिये और हमसे तुमसे कहां कहां किस किस मौके पर या कैसी सूरत में मुलाकात होगी।

"अर्जुनसिंह ने गिरिजाकुमार को जो कुछ समझाया उसका हाल आगे चल कर मालूम होगा। इस जगह केवल इतना ही कहना काफी है कि गिरिजाकुमार को समझा कर अर्जुनसिंह फिर जमानिया चले गए और रात के समय हरनामसिंह को बेहोश करके कोठरी में से निकाला, शहर के बाहर बहुत दूर मैदान में ले जाकर छोड़ दिया और अपना रास्ता पकड़ा, जिसमें होश में आकर वह अपने

घर चला जाय और उसे मालूम न हो कि उसके साथ किसने क्या सलूक किया, बल्कि यह बात उसे स्वप्न की तरह याद रहे।

"इसके बाद अर्जुनसिंह बहुत जल्द मेरे पास पहुँचे और जो कुछ हो चुका था उसे बयान किया। गिरिजाकुमार का हाल सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैंने बेगम के साथ जो कुछ सलूक किया था उसका हाल अर्जुनसिंह से बयान किया तथा जो कुछ चीजें उसकी मेरे हाथ लगी थीं दिखा कर यह भी कहा कि बेगम अभी तक मेरे यहाँ कैद है अस्तु सोचना चाहिए कि अब उसके साथ क्या कारंवाई की जाय ?

"उन दिनों असल में मुझे तीन बातों की फिक्र लगी थी। एक तो यह कि यद्यपि भूतनाथ से और मुझसे रंज चला आता था और भूतनाथ ने अपना मरना मशहूर कर दिया था, मगर भूतनाथ की स्त्री मेरे यहां आई हुई थी और उसकी अवस्था पर मुझे दुःख होता था इसलिए मैं चाहता था कि किसी तरह भूतनाथ से मुलाकात हो और मैं उसे समझा बुझा कर ठीक रास्ते पर लाऊं, दूसरे यह कि राजा गोपालसिंह के मरने का असली सबब दरियाप्त करूं और तीसरे बलभद्रसिंह तथा लक्ष्मीदेवी को दारोगा की कैद से छुड़ाऊं, जिनका कुछ कुछ हाल मुझे मालूम हो चुका था। बस इन्हीं कामों के लिए हम लोगों ने इतनी मेहनत अपने सर उठाई थी, नहीं तो जमानिया के बारे में हम लोगों के लिए अब किसी तरह की दिलचस्पी नहीं रह गई थी।

"बेगम की जो चीजें मेरे हाथ लगी थीं उनमें से कई कागज और एक हीरे की अंगूठी ऐसी थी जिस पर ध्यान देने से हम लोगों को मालूम हो गया कि बेगम भी कोई साधारण औरत नहीं थी। उन कागजों में से कई चीठियां ऐसी थीं जो भूतनाथ के विषय में जैपाल ने बेगम को लिखी थीं और कई चीठियां ऐसी थीं जिनके पढ़ने से मालूम होता था कि मायारानी के बाप को इसी जैपाल ने मायारानी और दारोगा की इच्छानुसार मार कर जहन्नुम में पहुँचा दिया है और बलभद्रसिंह अभी तक जीता है, मगर साथ ही इसके उन चीठियों से यह भी जाहिर होता था कि असली लक्ष्मीदेवी निकल कर भाग गई, जिसका पता लगाने के लिए दारोगा बहुत उद्योग कर रहा है मगर पता नहीं लगता। वह जो हीरे की अंगूठी थी वह वास्तव में हेलासिंह(मायारानी के बाप)की थी जो उसके मरने बाद जैपाल के हाथ लगी थी। उस अंगूठी के साथ एक कागज का पुर्जा बंधा हुआ था जिस पर बलभद्रसिंह को कैद में रखने और हेलासिंह को मार डालने

की आज्ञा थी और उस पर मायारानी तथा दारोगा दोनों के हस्ताक्षर थे।

"वे कागज पुर्जे और अंगूठी इस समय महाराज के दर्बार में मौजूद हैं जो भूतनाथ बेगम के यहां से उस समय ले आया था जब वह असली बलभद्रसिंह को छुड़ाने के लिए गया था। आप लोगों को इस बात पर आश्चर्य होगा कि जब ये सब चीजें बेगम के गिरफ्तार करने पर मेरे कब्जे में आ ही चुकी थीं तो पुनः बेगम के कब्जे में कैसे चली गई? इसके जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी है कि जब बेगम मेरे कब्जे से निकल गई तो वे चीजें भी उसी के साथ जाती रहीं और फिर मैं भी बेगम तथा दारोगा के कब्जे में चला गया और इन सब बातों का कर्ता धर्ता भूतनाथ ही है जिसने उस समय बहुत बड़ा धोखा खाया और जिसके सबब से कुछ दिन बाद उसे भी तकलीफ उठानी पड़ी। मैंने यह भी सुना था कि अपनी इस भूल से शर्मिन्दा होकर भूतनाथ ने बेगम और जैपाल को बड़ी तकलीफें दीं मगर उसका नतीजा उस समय कुछ भी न निकला, खैर अब मैं पुनः अपने किस्से की तरफ झुकता हूं।"

दलीपशाह की इस बात को सुन कर महाराज ने पुनः उन हीरे की अंगूठी और उन चीठियों के देखने की इच्छा प्रकट की जो भूतनाथ बेगम के यहां से उठा लाया था। तेजसिंह ने पहिले महाराज को और फिर और लोगों को भी वे चीजें दिखाईं और इसके बाद फिर दलीपशाह ने इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया :—

"अर्जुनसिंह ज्यादे देर तक मेरे पास नहीं ठहरे, उस समय जो कुछ हम लोगों को करना चाहिए था बहुत जल्द निश्चय कर लिया गया और इसके बाद अर्जुनसिंह के साथ मैं घर से बाहर निकला और हम दोनों मित्र गिरिजाकुमार की तरफ रवाना हुए।

"अब गिरिजाकुमार का हाल सुनिये कि अर्जुनसिंह से मिलने के बाद फिर क्या हुआ।

"बिहारीसिंह और गिरिजाकुमार दोनों आदमी सफर करते हुए एक ऐसे स्थान में पहुंचे जहां से बेगम का मकान केवल पांच कोस की दूरी पर था। यहां पर एक छोटा गांव था जहां मुसाफिरों के लिए खाने पीने की मामूली चीजें मिल सकती थीं और जिसमें हलवाई की एक छोटी सी दुकान भी थी। गांव के बाहरी प्रान्त में जमींदारों के देहाती ढंग के बागीचे थे और पास ही में पलास का

छोटा सा जंगल भी था। सन्ध्या होने में घण्टे भर की देर थी और बिहारीसिंह चाहता था हम लोग बराबर चले जांय, दो तीन घण्टे रात जाते बेगम के मकान तक पहुँच ही जायेंगे, मगर गिरिजाकुमार को यह बात मंजूर न थी। उसने कहा कि मैं बहुत थक गया हूँ और अब एक कोस भी आगे नहीं चल सकता, इस लिए यही अच्छा होगा कि आज की रात इसी गांव के बाहर किसी बागीचे अथवा जंगल में बिता दी जाय।

"यद्यपि दोनों की राय दो तरह की थी, मगर बिहारीसिंह को लाचार हो गिरिजाकुमार की बात माननी पड़ी और यह निश्चय करना ही पड़ा कि आज की रात अमुक बागीचे में बिताई जायगी, वस्तु संध्या हो जाने पर दोनों आदमी गांव में हलवाई की दूकान पर गये और वहां पूरी तरकारी बनवा कर पुनः गांव के बाहर चले आए।

चांदनी निकली हुई थी और चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। बिहारीसिंह और गिरिजाकुमार एक पेड़ के नीचे बैठे हुए धीरे धीरे भोजन और निम्नलिखित बातें करते जाते थे :—

गिरिजा०। आज की भूख में ये पूरियां बड़ा ही मजा दे रही हैं।

बिहारी०। यह भूख ही के कारण नहीं बल्कि बनी भी अच्छी हैं, इसके अतिरिक्त तुमने आज बूटी (भांग) भी गहरी पिला दी है।

गिरिजा०। अजी इसी बूटी की बदौलत तो सफर की हरारत मिटेगी।

बिहारी०। मगर नशा तो तेज हो रहा है और अभी तक बढ़ता ही जाता है।

गिरिजा०। तो हम लोगों को करना ही क्या है ?

बिहारी०। और कुछ नहीं तो अपने कपड़े लत्ते और बटुए का खयाल तो है ही।

गिरिजा०। (हंस कर) मजा तो तब हो जो इस समय भूतनाथ से सामना हो जाय।

बिहारी०। हर्ज ही क्या है ? मैं इस समय भी लड़ने को तैयार हूँ मगर वह बड़ा ही ताकतवर और कांइयां ऐयार है।

गिरिजा०। उसकी कदर तो राजा गोपालसिंह जानते थे।

बिहारी०। मेरे खयाल से तो यह बात नहीं है।

गिरिजा०। तुम्हें खबर नहीं है, अगर मौका मिला तो मैं इस बात को साबित कर दूंगा।

बिहारी० । किस ढंग से साबित करोगे ?

गिरिजा० । खुद राजा गोपालसिंह की जुबान से ।

बिहारी० । (हंस कर) क्या भंग के नशे में पागल हो गये हो ? राजा गोपालसिंह अब कहाँ हैं ?

गिरिजा० । असल बात तो यह है कि मुझे राजा गोपालसिंह के मरने का विश्वास ही नहीं है ।

बिहारी० । (चौकन्ना होकर) सो क्या ? तुम्हारे पास उनके जीते रहने का क्या सबूत है ।

गिरिजा० । बहुत कुछ सबूत है मगर इस विषय पर मैं हुज्जत या बहस करना पसन्द नहीं करता, जो कुछ असल बात है तुम स्वयम् जानते हो, अपने दिल से पूछ लो ।

बिहारी० । मैं तो यही जानता हूँ कि राजा साहब मर गये ।

गिरिजा० । खैर यह तो मैं कही चुका हूं कि इस विषय पर बहस न करूंगा ।

बिहारी० । मगर बताओ तो सही कि तुमने क्या समझ के ऐसा कहा ?

गिरिजा० । मैं कुछ भी न बताऊंगा ।

बिहारी० । फिर हमारी तुम्हारी दोस्ती ही क्या ठहरी जो एक जरा सी बात छिपा रहे हो और पूछने पर भी नहीं बताते ।

गिरिजा० । (हंस कर) तुम्हें ऐसा कहने का हक नहीं है । जब तुम खुद दोस्ती का खयाल न करके ये बातें छिपा रहे हो तो मैं क्यों बताऊं ।

बिहारी० । (संकोच के साथ) मैं तो कुछ भी नहीं छिपाता ।

गिरिजा० । अच्छा मेरे सर पर हाथ रख के कह तो दो कि वास्तव में राजा साहब मर गये । मैं अभी साबित कर देता हूं कि तुम छिपाते हो या नहीं । अगर तुम सच कह दोगे तो मैं भी बता दूँगा कि इसमें कौन सी नई बात पैदा हो गई और क्या रंग खिला चाहता है !

बिहारी० । (कुछ सोच कर) पहिले तुम बताओ फिर मैं बताऊंगा ।

गिरिजा० । ऐसा नहीं हो सकता ।

"इस समय बिहारीसिंह नशे में मस्त था, एक तो गिरिजाकुमार ने उसे भंग पिला दी थी, दूसरे उसने जो पूरियां खाई थीं उसमें भी एक प्रकार का तेज नशा मिला हुआ था, क्योंकि वास्तव में उस हलवाई के यहाँ अर्जुनसिंह ने पहिले ही से प्रबंध कर लिया था और ये बातें गिरिजाकुमार से कही बंदी थीं

जैसा कि ऊपर के बयान से आपको मालूम हो चुका है, अस्तु गिरिजाकुमार ने पहिले ही से एक दवा खा ली थी जिससे उन पूरियों का असर उस पर कुछ भी न हुआ, मगर बिहारीसिंह धीरे धीरे अलमस्त हो गया और थोड़ी ही देर में बेहोश होने वाला था। वह ऐसा मस्त और दिल खुश करने वाला नशा था जिसके वश में होकर बिहारीसिंह ने अपने दिल का भेद खोल दिया, मगर अफसोस भूतनाथ ने हमारी कुल मेहनत पर मिट्टी डाल दिया और हम लोगों को बरबाद कर दिया। उस भेद का पता लग जाने पर भी हम लोग कुछ न कर सके जिसका सबब आगे चल कर आपको मालूम होगा। जब गिरिजाकुमार और बिहारीसिंह से बातें हो रही थीं उस समय हम दोनों मित्र भी वहां से थोड़ी ही दूर पर छिपे हुए खड़े थे और इन्तजार कर रहे थे कि बिहारीसिंह बेहोश हो जाय और गिरिजाकुमार बुलाये तो हम दोनों भी वहां जा पहुँचें।

"गिरिजाकुमार ने पुनः जोर देकर कहा, "ऐसा नहीं हो सकता, पहिले तुम्हीं को दिल का परदा खोल के और सच्चा सच्चा हाल कह के दोस्ती का परिचय देना चाहिये और यह बात मुझसे छिपी नहीं रह सकती कि तुमने सच कहा या झूठ क्योंकि जो कुछ भेद है उसे मैं खूब जानता हूं।

बिहारी०। मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है, खैर अब मैं कोई बात तुमसे न छिपाऊंगा, सब भेद साफ कह दूंगा। मगर इस समय केवल इतना ही कहूंगा कि वास्तव में राजा साहब मरे नहीं बल्कि अभी तक जीते हैं।

गिरिजा०। इतना तो मैं खुद कह चुका हूं, इससे ज्यादा कुछ कहो तो मुझे विश्वास हो।

"गिरिजाकुमार की बात का बिहारीसिंह कुछ जवाब दिया ही चाहता था कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जो पास आते ही चांदनी के सबब से बहुत जल्द पहिचान लिया गया कि भूतनाथ है। बिहारीसिंह ने जो भूतनाथ को देख कर घबड़ा गया था गिरिजा कुमार से कहा, "लो सम्हल जाओ, भूतनाथ आ पहुंचा!" दोनों आदमी सम्हल कर खड़े हो गये और भूतनाथ भी वहां पहुँच कर दिलेराना ढंग पर उन दोनों के सामने अकड़ कर खड़ा हो गया और बोला, "तुम दोनों को मैं खूब पहिचानता हूँ और यकीन है कि तुम लोगों ने भी मुझे पहिचान लिया होगा कि यह भूतनाथ है।"

बिहारी०। बेशक मैंने तुमको पहिचान लिया मगर तुमको हमलोगों के बारे में धोखा हुआ है।

भूत०। (हंस कर) मैं तो कभी धोखा खाता ही नहीं। मुझे खूब मालूम है कि तुम दोनों बिहारीसिंह और गिरिजाकुमार हो और साथ ही इसके मुझे यह भी मालूम है कि तुम लोग मुझे गिरफ्तार करने के लिए जमानिया से बाहर निकले हो। मुझे तुम अपने ऐसा बेवकूफ न समझो। (गिरिजाकुमार की तरफ बता कर) जिसे तुम लोगों ने आज तक नहीं पहिचाना और जिसे तुम अभी तक शिवशंकर समझे हुए हो उसे मैं खूब जानता हूँ कि यह दलीपशाह का शागिर्द गिरिजाकुमार है। जरा सोचो तो सही कि तुम्हारे ऐसा बेवकूफ आदमी मुझे क्या गिरफ्तार करेगा जिसे एक लौंडे (गिरिजाकुमार) ने धोखे में डाल कर उल्लू बना दिया और जो इतने दिनों तक साथ रहने पर भी गिरिजाकुमार को पहिचान न सका। खैर इसे जाने दो, पहिले अपनी हिम्मत और बहादुरी का अन्दाज कर लो, देखो मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ, मुझे गिरफ्तार करो तो सही!

"भूतनाथ की बातें सुन कर बिहारीसिंह हैरान बल्कि बदहवास हो गया क्योंकि वह भूतनाथ के जीवट और उसकी ताकत को खूब जानता था और उसे विश्वास था कि इस तरह खुले मैदान भूतनाथ को गिरफ्तार करना दो चार आदमियों का काम नहीं है। साथ ही वह यह सुन कर और भी घबड़ा गया कि हमारा साथी वास्तव में शिवशंकर या हमारा मददगार नहीं है बल्कि हमें धोखे में डाल कर उल्लू बनाने और भेद ले लेने वाला एक चालाक ऐयार है। इससे मैंने जो गोपालसिंह के जीते रहने का भेद बता दिया सो अच्छा नहीं किया।

इसी घबराहट में बिहारीसिंह का नशा पूरे दर्जे पर पहुँच गया और सिर नीचा करके सोचता ही सोचता वह बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया। उस समय गिरिजाकुमार की तरफ देख के भूतनाथ ने कहा, "तुम इस बात का ख्याल छोड़ दो कि मेरे सामने से भाग जाओगे या चिल्ला कर लोगों को इकट्ठा कर लोगे।"

गिरिजा०। मगर मुझसे आपको किसी तरह की दुश्मनी न होनी चाहिए क्योंकि मैंने आपका कुछ नुकसान नहीं किया है।

भूत०। सिवाय इसके कि मुझे गिरफ्तार करने की फिक्र में थे।

गिरिजा०। कदापि नहीं, यह तो एक तरकीब थी जिससे कि मैंने अपने को कैद होने से बचा लिया, यही सबब था कि इस समय मैंने इसे (बिहारीसिंह को) धोखा देकर बेहोशी की दवा दी और इसे बांध कर अपने घर ले जाने वाला था।

भूत०। तुम्हारी बातें मान लेने के योग्य हैं मगर मैं इस बात को भी खूब

जानता हूँ कि तुम बड़े बातूनी हो और बातों के जाल में बड़े बड़े चालाकों को फंसा कर उल्लू बना सकते हो।

"इतना कह कर भूतनाथ ने अपनी जेब में से कपड़े का एक टुकड़ा निकाल कर गिरिजाकुमार के मुंह पर रख दिया और फिर गिरिजाकुमार को दीन दुनिया की कुछ भी खबर न रही। इसके बाद क्या हुआ सो उसे मालूल नहीं और न मैं ही जानता हूँ, क्योंकि इस विषय में मैं वही बयान करूंगा जो गिरिजाकुमार ने मुझसे कहा था।

"हम दोनों मित्र जो उस समय छिपे हुए थे बैठे बैठे घबड़ा गये और ला लाचार होकर उस बाग में गये तो न गिरिजाकुमार को देखा न बिहारीसिंह को पाया। कुछ पता न लगा कि दोनों कहाँ गये क्या हुए या उन पर कैसी बीती। बहुत खोजा, पता लगाया, कई दिन तक उस इलाके में घूमते रहे मगर नतीजा कुछ न निकला। लाचार अफसोस करते हुए अपने घर की तरफ लौट आए।

"अब बहुत विलम्ब हो गया, महाराज भो घबड़ा गये होंगे। (जीतसिंह की तरफ देख कर) यदि आज्ञा हो तो मैं अपनी राम कहानी यहाँ पर रोकूं और जो कुछ बाकी है उसे कल के दर्बार में बयान करूं।"

इतना कह कर दलीपशाह चुप हो गया और महाराज का इशारा पाकर जीतसिंह ने उसकी बात मंजूर कर ली। दर्बार बर्खास्त हुआ और लोग अपने अपने डेरे की तरफ रवाना हुए।

तीसरा बयान

दूसरे दिन मामूली ढंग पर दर्बार लगा और दलीपशाह ने इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया :—

"कई दिन बीत गये मगर मुझे गिरिजाकुमार का कुछ पता न लगा और न इस बात का ही ख्याल हुआ कि वह भूतनाथ के कब्जे में चला गया होगा। हां जब मैं गिरिजाकुमार की खोज में सूरत बदल कर घूम रहा था तब इस बात का पता जरूर लग गया कि भूतनाथ मेरे पीछे पड़ा हुआ है और दारोगा से मिल कर मुझे गिरफ्तार करा देने का बन्दोबस्त कर रहा है।

"उस मामले के कई सप्ताह बाद एक दिन आधी रात के समय भूतनाथ पागलों की सी हालत में मेरे घर आया और उसने मेरा लड़का समझ कर अपने हाथ से खुद अपने लड़के का खून कर दिया जिसका रंज इस जिन्दगी में उसे

दिल से नहीं निकल सकता और जिसका खुलासा हाल वह स्वयं अपनी जीवनी में बयान करेगा। इसी के थोड़े दिन बाद भूतनाथ की बदौलत मैं दारोगा के कब्जे में जा फंसा।

"जब तक मैं स्वतन्त्र रहा मुझे गिरिजाकुमार का हाल कुछ भी मालूम न हुआ, जब मैं पराधीन होकर कैदखाने में गया और वहां गिरिजाकुमार से जिसे भूतनाथ ने दारोगा के सुपुर्द कर दिया था मुलाकात हुई तब गिरिजाकुमार की जुबानी सब हाल मालूम हुआ।

"भूतनाथ के कब्जे में पड़ जाने के बाद जब गिरिजाकुमार होश में आया तो उसने अपने को एक पत्थर के खम्भे के साथ बंधा हुआ पाया जो किसी सुन्दर सजे हुए कमरे के बाहरी दालान में था। वह चौकन्ना होकर चारो तरफ देखने और गौर करने लगा मगर इस बात का निश्चय न कर सका कि यह मकान किसका है, हां शक होता था कि यह दारोगा का मकान होगा क्योंकि अपने सामने भूतनाथ के साथ ही साथ बिहारीसिंह और दारोगा साहब को भी बैठे हुए देखा।

गिरिजाकुमार दारोगा बिहारीसिंह और भूतनाथ में देर तक तरह तरह की बातें होती रहीं और गिरिजाकुमार ने भी बातों की उलझन में उन्हें ऐसा फंसाया कि किसी तरह असल भेद का वे लोग पता न लगा सके मगर फिर भी गिरिजाकुमार को उनके हाथों छुट्टी न मिली और वह तिलिस्म के अन्दर वाले कैदखाने में ठूंस दिया गया, हां उसे इस बात का विश्वास हो गया कि वास्तव में राजा गोपालसिंह मरे नहीं बल्कि कैद कर लिए गए हैं।

"राजा गोपालसिंह के जीते रहने का हाल यद्यपि गिरिजाकुमार को मालूम हो गया मगर इसका नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि इस बात का पता लगाने के साथ ही वह गिरफ्तार हो गया और यह हाल किसी से भी बयान न कर सका। अगर हम लोगों में से किसी को भी मालूम हो जाता कि वास्तव में राजा गोपालसिंह जीते हैं और कैद में हैं तो हम लोग उन्हें किसी न किसी तरह जरूर छुड़ा ही लेते, मगर अफसोस !!

"बहुत दिनों तक खोजने और पता लगाने पर भी जब गिरिजाकुमार का कुछ हाल मालूम न हुआ तब लाचार होकर मैं इन्द्रदेव के पास गया और सब हाल बयान करने के बाद मैंने इनसे सलाह पूछी कि अब क्या करना चाहिए ? बहुत गौर करने के बाद इन्द्रदेव ने कहा कि मेरा दिल यही कहता है कि गिरिजाकुमार गिरफ्तार हो गया और इस समय दारोगा के कब्जे में है।

इसका पता इस तरह लग सकता है कि तुम किसी तरह दारोगा को गिरफ्तार करके ले आओ और उसकी सूरत बन कर दस पांच दिन उसके मकान में रहो, इस बीच में उसके नौकरों की जुबानी कुछ न कुछ हाल गिरिजाकुमार का जरूर मालूम हो जायगा, मगर इसमें कुछ शक नहीं कि दारोगा को गिरफ्तार करना जरा मुश्किल है।

"इन्द्रदेव की राय मुझे बहुत पसन्द आई और मैं दारोगा को गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़ा। इन्द्रदेव से विदा होकर मैं अर्जुनसिंह के घर गया और जो कुछ सलाह हुई थी बयान किया। इन्होंने भी यह राय पसन्द की और इस काम के लिए मेरे साथ जमानिया चलने को तैयार हो गये, अस्तु हम दोनों आदमी भेष बदल कर घर से निकले और जमानिया की तरफ रवाना हुए।

"संध्या हुआ ही चाहती थी जब हम दोनों आदमी जमानिया शहर के पास पहुँचे, उस समय सामने से दारोगा का एक सिपाही आता हुआ दिखाई पड़ा। हम लोग बहुत खुश हुए और अर्जुनसिंह ने कहा—"लो भाई यह तो बहुत अच्छा मिला कि शिकार सामने आ पहुँचा और चारो तरफ सन्नाटा भी छाया हुआ है, इस समय इसे जरूर गिरफ्तार करना चाहिये, इसके बाद इसी की सूरत बन कर दारोगा के पास पहुँचना और उसे धोखा देना चाहिये।

"हम दो आदमी थे और सिपाही अकेला था, ऐसी अवस्था में किसी तरह की चालबाजी की जरूरत न थी, केवल तकरार कर लेना ही काफी था। हुज्जत और तकरार करने के लिए किसी मसाले की जरूरत नहीं पड़ती, बात छेड़ देना ही काफी होता है। पास आने पर अर्जुनसिंह ने जान बूझ कर धक्का दे दिया और वह भी दारोगा के घमंड पर फूला हुआ हम लोगों से उलझ पड़ा। आखिर हम लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और बेहोश करके वहां से दूर एक सन्नाटे जंगल में ले जाकर उसकी तलाशी लेने लगे। उसके पास से भूतनाथ के नाम की एक चीठी निकली जो खास दारोगा के हाथ की लिखी हुई थी और जिसमें यह लिखा हुआ था :—

"प्यारे भूतनाथ,

कई दिनों से हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। ठीक ठीक बताओ कि कब मुलाकात होगी और कब तक काम हो जाने की उम्मीद है।"

"इस चीठी को पढ़ कर हम दोनों ने सलाह की कि इस आदमी को छोड़ देना चाहिये और इसके पीछे चल कर देखना चाहिये कि भूतनाथ कहां रहता है। उसका पता लग जाने से बहुत काम निकलेगा।

"हम दोनों ने वह चीठी फिर उस आदमी की जेब में रख दी और उसे उठा कर पुनः सड़क पर लाकर डाल दिया जहां उसे गिरफ्तार किया था। इसके बाद लखलखा सुंघा कर हम दोनों दूर हट कर आड़ में खड़े हो गये और देखने लगे कि यह होश में आकर क्या करता है। उस समय रात आधी से ज्यादे जा चुकी थी।

'होश में आने के बाद वह आदमी ताज्जुब और तरद्दुद में थोड़ी देर तक इधर उधर घूमता रहा और इसके बाद आगे की तरफ चल पड़ा। हमलोग भी आड़ देते हुए उसके पीछे पीछे चल पड़े।

"आसमान पर सुबह की सुफेदी फैला ही चाहती थी जब हम लोग एक घने और सुहावने जंगल में पहुँचे। थोड़ी देर तक चल कर वह आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया। मालूम होता था कि थक गया है और कुछ देर तक सुस्ताना चाहता है, मगर ऐसा न था। लाचार हम दोनों भी उसके पास ही आड़ देकर बैठ गये और उसी समय पेड़ों की आड़ में से कई आदमियों ने निकल कर हम दोनों को घेर लिया। उन सभों के हाथ में नंगी तलवारें और चेहरे पर नकाबें पड़ी हुई थीं।

"बिना लड़े भिड़े यों ही गिरफ्तार होकर दुःख भोगना हम लोगों को मंजूर न था, अस्तु फुर्ती से तलवार खींच कर उन लोगों के मुकाबले में खड़े हो गये। उस समय एक ने अपने चेहरे पर से नकाब उलट दी और मेरे पास आकर खड़ा हो गया। असल में वह भूतनाथ था जिसका चेहरा सुबह की सुफेदी में बहुत साफ दिखाई दे रहा था और मालूम होता था कि वह हम दोनों को देख कर मुस्कुरा रहा है।

"भूतनाथ की सूरत देखते ही हम दोनों चौंक पड़े और मेरे मुंह से निकल पड़ा "भूतनाथ"। उसी समय मेरी निगाह उस आदमी पर जा पड़ी जिसके पीछे पीछे हम लोग वहां तक पहुँचे थे, देखा कि दो आदमी खड़े खड़े उससे बातें कर रहे और हाथ के इशारे से मेरी तरफ कुछ बता रहे हैं।

"मेरे मुंह से निकली हुई आवाज सुन कर भूतनाथ हंसा और बोला, "हां, मैं वास्तव में भूतनाथ हूं, और आप लोग ?"

मैं०। हम दोनों गरीब मुसाफिर हैं।

भूत०। (हंस कर) यद्यपि आप लोगों की तरह भूतनाथ अपनी सूरत नहीं बदला करता मगर आप लोगों को पहिचानने में किसी तरह की भूल भी नहीं कर सकता।

मैं०। अगर ऐसा है तो आप ही बताइए हम लोग कौन हैं ?

भूत०। आप लोग दलीपशाह और अर्जुनसिंह हैं, जिन्हें मैं कई दिनों से खोज रहा हूँ।

मैं०। (ताज्जुब के साथ) ठीक है, जब आपने पहिचान ही लिया तो मैं अपने को क्यों छिपाऊं मगर यह तो बताइये कि आप मुझे क्यों खोज रहे थे ?

भूत०। इसलिये कि मैं आपसे अपने कसूरों की माफी मांगूं, आरजू मिन्नत और खुशामद के साथ अपने को आपके पैरों पर डाल दूं और कहूँ कि अगर जी में आवे तो अपने हाथ से मेरा सर काट लीजिये मगर एक दफे कह दीजिये कि मैंने तेरा कसूर माफ किया।

मैं०। बड़े ताज्जुब की बात है कि तुम्हारे दिल में यह बात पैदा हुई ! क्या तुम्हारी आंखें खुल गईं और मालूम हो गया कि तुम बहुत बुरे रास्ते पर चल रहे हो ?

भूत०। जी हाँ, मुझे मालूम हो गया और समझ गया कि मैं अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मार रहा हूँ।

मैं०। बड़ी खुशी की बात है अगर तुम सच्चे दिल से कह रहे हो।

भूत०। बेशक मैं सच्चे दिल से कह रहा हूँ और अपने किये पर मुझे बड़ा अफसोस है।

मैं०। भला कह तो जाओ कि तुम्हें किन किन बातों का अफसोस है।

भूत०। सो न पूछिये, सिर से पैर तक मैं कसूरवार हो रहा हूँ, एक दो हों तो कहा जाय, कहां तक गिनाऊं ?

मैं०। खैर न सही, अच्छा यह बताओ कि मुझसे किस कसूर की माफी चाहते हो ? मेरा तो तुमने कुछ भी नहीं बिगाड़ा।

भूत०। यह आपका बड़प्पन है जो आप ऐसा कहते हैं, मगर वास्तव में मैंने आपका बहुत बड़ा कसूर किया है। और बातों के अतिरिक्त मैंने आपके सामने आपके लड़के को मार डाला है यह कहां का...

मैं०। (बात काट कर) नहीं नहीं भूतनाथ ! तुम भूलते हो, अथवा तुम्हें मालूम नहीं है कि तुमने मेरे लड़के का खून नहीं किया बल्कि अपने लड़के का खून किया है।

भूत०। (चौंक कर बेचैनी के साथ) यह आप क्या कह रहे हैं ?

मैं०। बेशक मैं सच कह रहा हूँ। इस काम में तुमने धोखा खाया और

अपने लड़के को अपने हाथ से मार डाला। उन दिनों तुम्हारी स्त्री बीमार होकर मेरे यहां आई हुई थी और अपनी आंखों से तुम्हारी इस कारवाई को देख रही थी।

भूत०। (घबराहट के साथ) तो क्या अब भी मेरी स्त्री आप ही के मकान में है।

मैं०। नहीं वह मर गई क्योंकि बीमारी में वह इस दुःख को बर्दाश्त न कर सकी।

भूत०। (कुछ देर चुप रहने और सोचने के बाद) नहीं नहीं, यह बात नहीं है। मालूम होता है कि तुमने खुद मेरे लड़के को मार कर अपने लड़के का बदला चुकाया!

अर्जुन०। नहीं नहीं भूतनाथ, वास्तव में तुमने खुद अपने लड़के को मारा है और मैं इस बात को खूब जानता हूँ।

भूत०। (भारी आवाज में) खैर अगर मैंने अपने लड़के का खून किया है तब भी दलीपशाह का कसूरवार हूँ। इसके अतिरिक्त और भी कई कसूर मुझसे हुए हैं, अच्छा हुआ कि मेरी स्त्री मर गई नहीं तो उसके सामने....

मैं०। मगर हरनामसिंह और कमला को ईश्वर कुशलपूर्वक रखें।

भूत०। (लम्बी सांस लेकर) बेशक भूतनाथ बड़ा ही बदनसीब है।

मैं०। अब भी सम्हल जाओ तो कोई चिन्ता नहीं।

भूत०। बेशक मैं अपने को सम्हालूंगा और जो कुछ आप कहेंगे वही करूंगा। अच्छा मुझे थोड़ी देर के लिए आज्ञा दीजिये तो मैं उस आदमी से दो दो बातें कर आऊं जिसके पीछे आप यहां तक आए हैं।

"इतना कह कर भूतनाथ उस आदमी के पास चला गया मगर उसके साथी लोग हमें घेरे खड़े ही रहे। इस समय मेरे दिल का विचित्र ही हाल था। मैं निश्चय नहीं कर सकता था कि भूतनाथ की बातें किस ढंग पर जा रही हैं और इसका नतीजा क्या होगा, तथापि मैं इस बात के लिए तैयार था कि जिस तरह हो सकेगा मेहनत करके भूतनाथ को अच्छे ढर्रे पर ले जाऊंगा। मगर मैं वास्तव में ठगा गया और जो कुछ सोचता था वह मेरी नादानी थी।

"उस आदमी से बातचीत करने में भूतनाथ ने बहुत देर नहीं की और उसे झटपट बिदा करके वह पुनः मेरे पास आकर बोला, "कम्बख्त दारोगा मुझसे चालबाजी करता है और मेरे ही हाथों से मेरे दोस्तों को गिरफ्तार कराया चाहता है ?"

मैं० । दारोगा बड़ा ही शैतान है और उसके फेर में पड़ कर तुम बर्बाद हो जाओगे । अच्छा अब हमलोग भी बिदा होना चाहते हैं, यह बताओ कि तुमसे किस तरह की उम्मीद अपने साथ लेते जायं ?

भूत० । मुझसे आप हर तरह की उम्मीद कर सकते हैं, जो आप कहेंगे, मैं वही करूंगा बल्कि आपके साथ ही साथ आपके घर चलूंगा ।

मैं० । अगर ऐसा करो तो मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहे ।

भूत० । बेशक मैं ऐसा ही करूंगा मगर पहिले आप यह बता दें कि आपने मेरा कसूर माफ किया या नहीं ?

मैं० । हां मैंने माफ किया ।

भूत० । अच्छा तो अब मेरे डेरे पर चलिये ।

मैं० । तुम्हारा डेरा कहां पर है ?

भूत० । यहां से थोड़ी ही दूर पर ।

मैं० । खैर चलो मैं तैयार हूँ, मगर इस बात का वादा कर दो कि लौटती समय मेरे साथ चलोगे ।

भूत० । जरूर चलूंगा ।

"इतना कह कर भूतनाथ चल पड़ा और हम दोनों भी उसके पीछे पीछे रवाना हुए ।

"आप लोग खयाल करते होंगे कि भूतनाथ ने हम दोनों को उसी जगह क्यों नहीं गिरफ्तार कर लिया मगर यह बात भूतनाथ के किये नहीं हो सकती थी । यद्यपि उसके साथ कई सिपाही या नौकर भी मौजूद थे मगर फिर भी वह इस बात को खूब समझता था कि इस खुले मैदान में दलीपशाह और अर्जुन सिंह को एक साथ गिरफ्तार कर लेना उसकी सामर्थ्य के बाहर है । साथ ही इसके यह भी कह देना जरूरी है कि उस समय तक भूतनाथ को इस बात की खबर न थी कि उसके बटुए को चुरा लेने वाला यही अर्जुनसिंह है । उस समय तक क्या बल्कि अब तक भूतनाथ को इस बात की खबर न थी । उस दिन जब स्वयं अर्जुनसिंह ने अपनी जुबान से कहा तब मालूम हुआ ।

"कोस भर से ज्यादे हम लोग भूतनाथ के पीछे पीछे चले गये और इसके बाद एक भयानक सूनसान और उजाड़ घाटी में पहुंचे जो दो पहाड़ियों के बीच में थी । वहां से कुछ दूर तक घूमघुमौवे रास्ते पर चलकर भूतनाथ के डेरे पर पहुँचे । वह एक ऐसा स्थान था जहां किसी मुसाफिर का पहुँचना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था । जिस खोह में भूतनाथ का डेरा था वह बहुत बड़ी और बीच

पचीस आदमियों के रहने लायक थी और वास्तव में इतने ही आदमियों के साथ वह वहां रहता भी था।

"वहां भूतनाथ ने हम दोनों की बड़ी खातिर की और वार वार आजिजी करता और माफी माँगता रहा। खाने पीने का सब सामान वहां मौजूद था अस्तु इशारा पाकर भूतनाथ के आदमियों ने तरह तरह का खाना बनाना आरम्भ कर दिया और कई आदमी नहाने धोने का सामान दुरुस्त करने लगे।

"हम दोनों बहुत प्रसन्न थे और समझते थे कि अब भूतनाथ ठीक रास्ते पर आ जायेगा, अस्तु हम लोग जब तक संध्या पूजन से निश्चिन्त हुए तब तक भोजन भी तैयार हुआ और वेफिक्री के साथ हम तीनों आदमियों ने एक साथ भोजन किया। इसके बाद निश्चिन्ती से बैठ कर बातचीत करने लगे।

भूत०। दलीपशाह, मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि मेरी स्त्री का देहान्त हो गया और मेरे हाथ से एक बहुत ही बुरा काम हो गया।

मैं०। वेशक अफसोस की जगह है, मगर खैर जो कुछ होना था हो गया, अब तुम घर पर चलो और नेकनीयती के साथ दुनिया में काम करो।

भूत०। ठीक है, मगर मैं यह सोचता हूँ कि अब घर पर जाने से फायदा ही क्या है? मेरी स्त्री मर गई और अब दूसरी शादी मैं कर ही नहीं सकता, फिर किस सुख के लिए शहर में चल कर बसूं।

मैं०। हरनामसिंह और कमला का भी तो कुछ खयाल करना चाहिये। इसके अतिरिक्त क्या विधुर लोग शहर में रह कर नेकनीयती के साथ रोजगार नहीं करते?

भूत०। कमला और हरनामसिंह होशियार हैं और एक अच्छे रईस के यहां परवरिश पा रहे हैं, इसके अतिरिक्त किशोरी उन दोनों ही की सहायक है, अतएव उनके लिए मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं है। बाकी रही आपकी दूसरी बात, उसका जवाब यह हो सकता है कि शहर में नेकनीयती के साथ अब मैं कर ही क्या सकता हूँ क्योंकि मैं तो किसी को मुंह दिखलाने लायक ही नहीं रहा। एक दयाराम वाली वारदात ने मुझे वेकाम कर ही दिया था, दूसरे इस लड़के के खून ने मुझे और भी बर्बाद और वेकाम कर दिया। अब मैं कौन सा मुंह लेकर भले आदमियों में बैठूंगा?

मैं०। ठीक है, मगर इन दोनों मामलों की खबर हम लोग दो तीन खास खास आदमियों के सिवाय और किसी को नहीं है और हम लोग तुम्हारे साथ कदापि बुराई नहीं कर सकते।

भूत०। तुम्हारी इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं हो सकता क्योंकि मैं इस बात को खूब जानता हूँ कि आज कल तुम मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव कर रहे हो और मुझे दारोगा के हाथ में फंसाया चाहते हो, ऐसी अवस्था में तुमने मेरा भेद जरूर कई आदमियों से कह दिया होगा।

मैं०। नहीं भूतनाथ, यह तुम्हारी भूल है कि तुम ऐसा सोच रहे हो? मैंने तुम्हारा भेद किसी को नहीं कहा और न मैं तुम्हें दारोगा के हवाले किया चाहता हूँ। बेशक दारोगा ने मुझे इस काम के लिए लिखा था मगर मैंने इस बारे में उसे धोखा दिया। दारोगा के हाथ की लिखी चीठियां मेरे पास मौजूद हैं, घर चल कर मैं तुम्हें दिखाऊंगा और उनसे तुम्हें मेरी बातों का पूरा सबूत मिल जायगा।

"इसी समय बात करते करते मुझे कुछ नशा मालूम हुआ और मेरे दिल में एक प्रकार का खुटका हो गया। मैंने घूम कर अर्जुनसिंह की तरफ देखा तो उनकी भी आंखें लाल अंगारे की तरह दिखाई पड़ीं। उसी समय भूतनाथ मेरे पास से उठ कर दूर जा बैठा और बोला—

भूत०। जब मैं तुम्हारे घर जाऊंगा तब मुझे इस बात का सबूत मिलेगा मगर मैं इसी समय तुम्हें इस बात का सबूत दे सकता हूँ कि तुम मेरे साथ दुश्मनी कर रहे हो।

'इतना कह के भूतनाथ ने अपने जेब से निकाल कर मेरे हाथ की लिखी वे चीठियां मेरे सामने फेंक दीं जो मैंने दारोगा को लिखी थीं और जिनमें भूतनाथ के गिरफ्तार करा देने का वादा किया था।

"मैं सरकार में बयान कर चुका हूँ कि उस समय दारोगा से इस ढंग का पत्र व्यवहार करने से मेरा मतलब क्या था, और मैंने भूतनाथ को दिखाने के लिए दारोगा के हाथ की चीठियां बटोर कर किस तरह दारोगा से साफ इनकार कर दिया था, मगर उस मौके पर मेरे पास वे चीठियां मौजूद न थीं कि मैं उन्हें भूतनाथ को दिखाता और भूतनाथ के पास वे चीठियां मौजूद थीं जो दारोगा ने उसे दी थीं और जिनके सबब से दारोगा का मन्त्र चल गया था। अस्तु उन चीठियों को देख कर मैंने भूतनाथ से कहा—

मैं०। हां हां, इन चीठियों को मैं जानता हूँ और बेशक ये मेरे हाथ की लिखी हुई हैं, मगर मेरे इस लिखने का मतलब क्या था और इन चीठियों से मैंने क्या काम निकाला सो तुम्हें नहीं मालूम हो सकता जब तक कि दारोगा के हाथ की लिखी हुई चीठियाँ तुम न पढ़ लो जो मेरे पास मौजूद हैं।

भूत०। (मुस्कुरा कर) बस बस बस, ये सब धोखेबाजी के ढर्रे रहने दीजिए। भूतनाथ से यह चालाकी न चलेगी, सच तो यों है कि मैं खुद कई दिनों से तुम्हारी खोज में हूँ। इत्तिफाक से तुम स्वयम् मेरे पंजे में आकर फंस गये और अब किसी तरह नहीं निकल सकते। उस जंगल में मैं तुम दोनों को काबू में नहीं कर सकता था इसलिए सब्जबाग दिखाता हुआ यहां ले आया और भोजन में बेहोशी की दवा खिला कर बेकाम कर दिया। अब तुम लोग मेरा कुछ भी नहीं कर सकते। समझ लो कि तुम दोनों जहन्नुम में भेजे जाओगे जहां से लौट कर आना मुश्किल है।

"भूतनाथ की ऐसी बातें सुन कर हम दोनों को क्रोध चढ़ आया मगर उठने की कोशिश करने पर भी कुछ न कर सके, क्योंकि नशे का पूरा पूरा असर हो गया था और तमाम बदन में कमजोरी आ गई थी।

"थोड़ी ही देर बाद हम लोग बेहोश हो गये और तनोबदन की सुध न रही। जब आंखें खुलीं तो अपने को दारोगा के मकान में कैद पाया और सामने दारोगा जैपाल हरनामसिंह और बिहारीसिंह को बैठे हुए देखा। रात का समय था और मेरे हाथ पैर एक खम्भे के साथ बंधे हुए थे। अर्जुनसिंह न मालूम कहां थे और उन पर न जाने क्या बीत रही थी।

"दारोगा ने मुझसे कहा, "कहो दलीपशाह, तुमने तो मुझ पर बड़ा जाल फैलाया था मगर नतीजा कुछ नहीं निकला।"

मैं०। मैंने क्या जाल फैलाया था?

दारोगा०। क्या इसके कहने की भी जरूरत है, नहीं बस इस समय हम इतना ही कहेंगे कि तुम्हारा शागिर्द हमारी कैद में है और तुमने मेरे लिए जो कुछ किया है उसका हाल हम उसकी जुबानी सुन चुके हैं। अब अगर वह चीठी मुझे दे दो जो गोपालसिंह के बारे में मनोरमा का नाम लेकर जबर्दस्ती मुझसे लिखवाई गई थी तो मैं तुम्हारा सब कसूर माफ कर दूं।

मैं०। मेरी समझ में नहीं आता कि आप किस चीठी के बारे में मुझसे कह रहे हैं।

दारोगा०। (चिढ़ कर) ठीक है, यह तो मैं पहिले ही समझे हुए था कि तुम बिना लात खाये नाक पर मक्खी नहीं बैठने दोगे, खैर देखो मैं तुम्हारी क्या दुर्दशा करता हूँ।

"इतना कह कर दारोगा ने मुझे सताना शुरू किया। मैं नहीं कह सकता कि इसने मुझे किस किस तरह की तकलीफें दीं और सो भी एक दो दिन तक

नहीं वल्कि महीने भर तक, इसके वाद बेहोश करके मुझे तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिया। जब मैं होश में आया तो अपने सामने अर्जुनसिंह और गिरिजाकुमार को वैठे हुए पाया। बस यही तो मेरा किस्सा है और यही मेरा बयान!"

दलीपशाह का हाल सुन कर सभों को बड़ा ही दुःख हुआ और सभी कोई लाल लाल आंखें करके दारोगा तथा जैपाल वगैरह की तरफ देखने लगे। दर्बार बरखास्त करने का इशारा करके महाराज उठ खड़े हुए, कैदी जेलखाने भेज दिये गये और वाकी सब अपने डेरों की तरफ रवाना हुए

चौथा बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिंह के कमरे में राजा वीरेन्द्रसिंह, राजा गोपालसिंह, कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, तारासिंह, भैरोसिंह, भूतनाथ और इन्द्रदेव वैठे आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। वृद्ध महाराज सुरेन्द्रसिंह मसहरी पर लेटे हुए हैं।

सुरेन्द्र०। दलीपशाह की जीवनी ने दारोगा की शैतानी और भी अच्छी तरह झलका दी।

जीत०। वेशक ऐसा ही है, सच तो यों है कि ईश्वर ही ने इन पांचों कैदियों की रक्षा की, नहीं तो दारोगा ने कोई बात उठा नहीं रक्खी थी।

भूत०। साथ ही इसके यह भी है कि सबसे ज्यादे दलीपशाह के किस्से ने दर्बार में मुझे शर्मिन्दा किया, मगर क्या करूं लाचार था कि चालबाज दारोगा ने दलीपशाह की चीठियों का मुझे ऐसा मतलब समझाया कि मैं अपने आपे से बाहर हो गया, बल्कि यों कहना चाहिए कि अन्धा हो गया!

तेज०। वह जमाना ही चालबाजियों का था और चारो तरफ ऐसी ही बातें हो रही थीं। भूतनाथ, तुम अब उन बातों को एक दम से भूल जाओ और जिस नेक रास्ते पर चल रहे हो उसी का ध्यान रक्खो।

जीत०। अच्छा तो अब कैदियों के बारे में जो कुछ हो फैसला कर ही देना चाहिये जिसमें अगले दर्बार में उन्हें हुक्म सुना दिया जाय।

सुरेन्द्र०। (गोपालसिंह से) कहो साहब तुम्हारी क्या राय है, किस किस कैदी को क्या क्या सजा देनी चाहिए?

गोपाल०। जो दादाजी (महाराज) की इच्छा हो हुक्म दें, मेरी प्रार्थना केवल इतनी ही है कि कम्बख्त दारोगा मेरे हवाले किया जाय और मुझे हुक्म हो जाय

कि जो मैं चाहूँ उसे सजा दूं।

सुरेन्द्र०। केवल दारोगा ही नहीं बल्कि तुम्हारे और कैदी भी तुम्हारे हवाले किये जायेंगे।

गोपाल०। और दलीपशाह, अर्जुनसिंह, भरतसिंह, हरदीन और गिरिजाकुमार भी मुझे दे दिये जाँय क्योंकि ये लोग मेरे सहायक हैं और इनके साथ रह कर मेरा दिन बड़ी खुशी के साथ बीतेगा!

सुरेन्द्र०। (जीतसिंह से) ऐसा ही किया जाय।

जीत०। बहुत अच्छा, मैं नम्बरवार कैदियों के बारे में जो कुछ हुक्म होता है लिखता जाता हूँ।

इतना कह कर जीतसिंह ने कलम दावात और कागज ले लिया और महा० की आज्ञानुसार इस तरह लिखने लगे:—

(१) कम्बख्त दारोगा सजा पाने के लिए राजा गोपालसिंह के हवाले किया जाय, राजा साहब जो मुनासिब समझें उसे सजा दें।

(२) शिखण्डी (दारोगा का चचेरा भाई) मायाप्रसाद, जैपाल, हरनामसिंह, बिहारीसिंह, हरनामसिंह की लड़की, लीला, मनोरमा, नागर, बेगम, नौरतन और जमालो वगैरह भी जिन्हें जमानिया से घना सम्बन्ध है राजा गोपालसिंह के हवाले कर दिये जांय।

(३) बेगम के घर से निकली हुई दौलत जो काशीराज ने यहां भेजवा दी है बलभद्रसिंह को दे दी जाय।

(४) गौहर और गिल्लन शेर अली खां के पास भेज दी जांय।

(५) किशोरी से पूछ कर भीमसेन छोड़ दिया जाय, कैद, उसे पुनः शिवदत्त की गद्दी पर बैठाया जाय।

(६) कुबेरसिंह, बाकरअली, अजायबसिंह, खुदाबक्श, यारअली, धरमसिंह गोविन्दसिंह भगवनिया, ललिता और धन्नूसिंह, तथा वे कैदी जो कमलिनी के तालाब वाले मकान से आये थे सब जन्म भर के लिए कैदखाने में भेज दिए जांय इसके अतिरिक्त और भी जो कोई कैदी हों, (नानक इत्यादि) कैदखाने में भेज दिए जांय।

(७) दलीपशाह अर्जुनसिंह हरदीन भरतसिंह और गिरिजाकुमार को राजा गोपालसिंह ले जायं और इन सबों की बड़ी खातिर और आराम के साथ रक्खें।

कैदियों के विषय में इस तरह का हुक्म देकर महाराज चुप हो गये और

फिर आपुस में दूसरे ढंग की बातें होने लगीं। थोड़ी देर के बाद दरबार बरखास्त हुआ और सब कोई अपने अपने ठिकाने चले गये।

पाँचवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह इस छोटे से दर्बार से उठ कर महल में गये और किशोरी के कमरे में पहुँचे। इस समय कमलिनी भी उसी कमरे में मौजूद किशोरी से हंसी खुशी की बातें कर रही थी। कुमार को देख कर दोनों उठ खड़ी हुईं और जब हंसते हुए कुमार बैठ गये तो किशोरी भी उनके सामने बैठ गई मगर कमलिनी कमरे के बाहर की तरफ चल पड़ी। उस समय कुमार ने उसे रोका और कहा, "तुम कहां चलीं? बैठो बैठो इतनी जल्दी क्या पड़ी है?"

कम०। (बैठती हुई) बहुत अच्छा बैठती हूं, मगर क्या आज रात को सोना नहीं है?

कुमार०। क्या यह बात मेरे आने के पहिले नहीं सूझी थी?

किशोरी०। आपको देख के सोना याद आ गया।

किशोरी की बात ने दोनों को हंसा दिया और फिर कमलिनी ने कहा—

कमलिनी०। दलीपशाह के किस्से ने मेरे दिल पर ऐसा असर किया है कि कह नहीं सकती। देखा चाहिये दुष्टों को महाराज क्या सजा देते हैं सच तो यों है कि उनके लिए कोई सजा है ही नहीं।

कुमार०। तुम ठीक कहती हो, इस समय मैं महाराज के पास ही से चला आता हूँ, वहाँ एक छोटा सा निज का दर्बार लगा हुआ था और कैदियों ही के विषय में बातचीत हो रही थी, बल्कि यों कहना चाहिये कि उन बदमाशों का फैसला लिखा जा रहा था।

कमलिनी०। (उत्कण्ठा से) हां! अच्छा बताइये तो सही दारोगा और जैपाल के लिए क्या सजा तजवीज की गई?

कुमार०। उन्हें क्या सजा दी जायगी इसका निश्चय गोपाल भाई करेंगे, क्योंकि महाराज ने इस समय यही हुक्म लिखाया है कि दारोगा जैपाल शिखंडी हरनाम बिहारी मनोरमा और नागर वगैरह जितने जमानिया और गोपाल भाई से सम्बन्ध रखने वाले कैदी हैं सब उनके हवाले किये जांय और वे जो कुछ मुनासिब समझें उन्हें सजा दें।

कमलिनी०। चलिए यह भी अच्छा ही हुआ, क्योंकि मुझे इस बात का बहुत बड़ा खयाल बना हुआ था कि हमारे रहमदिल महाराज इन कैदियों के

लिए कोई अच्छी सजा नहीं तजवीज कर सकेंगे, अगर वे लोग जीजाजी के सुपुर्द किये गये हैं तो उन्हें सजा भी वाजिब ही मिल जायगी।

कुमार०। (हंस कर, अच्छा तुम ही बताओ कि अगर सजा देने के लिये सब कैदी तुम्हारे सुपुर्द किये जाते तो तुम उन्हें क्या सजा देतीं ?

कमलिनी०। मैं ! (कुछ सोच कर) मैं पहिले तो इन सभों के हाथ पैर कटवा डालती, फिर इनके जख्म आराम करवा कर बड़े बड़े लोहे के पिंजड़ों में इन्हें बन्द करके और सदर चौमुहानी पर लटका कर हुक्म देती कि जितने आदमी इस राह से जायें वे सब इनके मुंह पर थूक कर तब आगे बढ़ें।

कुमार०। (मुस्कुरा कर) सजा तो बहुत अच्छी सोची है, तो बस अपने जीजा साहब को समझा देना कि उन्हें ऐसी ही सजा दें।

कमलिनी०। जरूर कहूँगी बल्कि इस बात पर जोर दूंगी, यह बताइए कि नानक के लिए क्या हुक्म हुआ है ?

कुमार०। केवल इतना ही कि जन्म भर के लिए कैदखाने भेज दिया जाय। बाकी के और कैदियों के लिए भी यही हुक्म हुआ !

किशोरी०। भीमसेन के लिए भी यही हुक्म हुआ होगा ?

कुमार०। नहीं उसके लिये दूसरा ही हुक्म हुआ।

किशोरी०। वह क्या ?

कुमार०। वह तुम्हारा भाई है इसलिये हुक्म हुआ कि तुमसे पूछ कर वह एक दम छोड़ जाय, बल्कि शिवदत्तगढ़ की गद्दी पर बैठा दिया जाय।

किशोरी०। जब उसे छोड़ देने ही का हुक्म हुआ तो मुझसे पूछना कैसा !

कुमार०। यही कि शायद तुम उसे छोड़ना न चाहो तो कैद ही में रक्खा जाय।

किशोरी०। भला मैं इस बात को कब पसन्द करूंगी कि मेरा भाई जन्म भर के लिये कैद रहे ? मगर हां इतना खयाल जरूर है कि कहीं वह छूटने के बाद पुनः आपसे दुश्मनी न करे।

कुमार०। खैर अगर पुनः बदमाशी करेगा तो देखा जायगा।

कमलिनी०। (मुस्कुराती हुई) उसके विषय में तो चपला चाची से पूछना चाहिये, क्योंकि वह असल में उन्हीं का कैदी है। जब सूअर के शिकार में उन्होंने उसे गिरफ्तार किया था* ओ तरह तरह की कसमें खिला कर छोड़ा था कि भविष्य

* देखिए पहिला भाग, आठवां बयान।

में पुनः दुश्मनी पर कमर न बांधेगा।

कुमार०। बात तो ऐसी ही थी मगर नहीं अब वह दुश्मनी का बर्ताव न करेगा। (किशोरी से) अगर कहो तो तुम्हारे पास उसे बुलवाऊं? जो कुछ तुम्हें कहना सुनना हो कह सुन लो।

किशोरी०। नहीं नहीं मैं बाज आई, मैं स्वप्न में भी उससे मिलना नहीं चाहती, जो कुछ उसकी किस्मत में बदा होगा भोगेगा।

कुमार०। आखिर उसे छोड़ने के विषय में तुमसे पूछा जायगा तो क्या जवाब दोगी।

किशोरी०। (कमलिनी की तरफ देखकर और मुस्कुरा कर) बस कह दूंगी कि मेरे बदले चपला चाची से पूछ लिया जाय क्योंकि वह उन्हीं का कैदी है।

कुमार०। खैर इन बातों को जाने दो। (कमलिनी से) जमानिया तिलिस्म के अन्दर मायारानी और माधवी के मरने का सबब मुझे अभी तक मालूम न हुआ। इसका पता न लगा कि वे दोनों खुद मर गईं या गोपाल भाई ने उन्हें मार डाला! और मगर भाई साहब ही ने उन्हें मार डाला तो ऐसा क्यों किया?

कमलिनी०। इसका असल हाल तो मुझे भी मालूम नहीं है, मैंने दो दफे जीजाजी से इस विषय में पूछा था मगर वह बात टाल कर बतोला दे गये।

कुमार०। मैंने भी एक दफे उनसे पूछा था तो यह कह कर रह गये कि फिर कभी बता देंगे।

किशोरी०। बहिन लक्ष्मीदेवी को इसका हाल जरूर मालूम होगा।

कमलिनी०। उन्हें बेशक मालूम होगा, उन्होंने भुलावा देकर जरूर पूछ लिया होगा। इस समय तो वे अपने रंगमहल में होंगी नहीं तो मैं जरूर बुला लाती।

कुमार०। नहीं आज तो अकेली ही अपने कमरे में बैठी होंगी क्योंकि इस समय गोपाल भाई इन्द्रदेव को साथ लेकर कहीं बाहर गये हैं, मुझसे कह गये हैं कि कल पहर दिन तक आवेंगे।

कमलिनी०। तब तो कहिये मैं जाकर बुला लाऊं।

कुमार०। अच्छा जाओ।

कमलिनी उठ कर चली गई और थोड़ी ही देर में लक्ष्मीदेवी को साथ लिये हुए आ पहुँची।

लक्ष्मी०। (मुस्कुराती हुई) कहिये क्या है जो इतनी रात गये मेरी याद हुई?

कुमार०। मैंने सोचा कि आज आप अकेली उदास बैठी होंगी अतएव मैं

बुला कर आपका दिल खुश करूं ।

लक्ष्मी० । (हंस कर) क्या बात है ! बेशक आपकी मेहरबानी मुझ पर बहुत ज्यादे रहती है । (बैठ कर) यह बताइये कि आप लोगों में किसी तरह की हुज्जत तकरार तो नहीं हुई है जो मुझे फैसला करने के लिए बुलाया है ।

कुमार० । ईश्वर न करे ऐसा हो, हां इतना जरूर है कि माधवी और मायारानी की मौत के विषय में तरह तरह की बातें हो रही हैं क्योंकि उन दोनों के मरने का असल हाल तो किसी को मालूम नहीं है और न भाई साहब ने पूछने पर किसी को बताया ही, इसलिये आपको तकलीफ दी है क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि आपने किसी न किसी तरह यह हाल जरूर पूछ लिया होगा ।

लक्ष्मी० । (मुस्कुरा कर) बेशक बात तो ऐसी ही है, मैंने जिद्द करके किसी न किसी तरह उनसे पूछ तो लिया मगर सुनने से घृणा हो गई । इसी-लिए वे भी यह हाल किसी से खुल कर नहीं कहते और समझते हैं कि जो कोई सुनेगा उसी को घृणा होगी । इसी खयाल से आपको भी उन्होंने टाल दिया होगा।

कुमार० । आखिर उसमें क्या बात है कुछ भी तो बताओ ।

लक्ष्मी० । माधवी को तो उन्होंने नहीं मारा मगर मायारानी को जरूर मारा और इस बेइज्जती और तकलीफ से मारा कि सुनने से रोंगटे खड़े होते हैं । यद्यपि माधवी को उन्होंने कुछ भी नहीं कहा मगर मायारानी के मौत की कारंवाई वह देख न सकी जो उसके सामने की जाती थी और उसी डर से वह बेहोश होकर मर गई । इसमें कोई ऐसी अनूठी बात नहीं है जो सुनने लायक हो । मुझे वह हाल बयान करते लज्जा और घृणा होती है अस्तु...

कुमार० । बस बस, मैं समझ गया, इससे ज्यादे सुनने की मुझे कोई जरूरत नहीं है केवल इतना ही जानना था कि उनकी मौत के विषय में कोई अनूठी बात तो नहीं हुई है ।

लक्ष्मी० । जी नहीं । अच्छा यह तो बताइए कि कल कैदी लोगों के विषय में क्या किया जायगा ? दलीपशाह का किस्सा तो समाप्त हो गया और अब कोई ऐसी बात मालूम करने लायक भी नहीं रह गई है ।

कुमार० । कैदियों का मामला तो कब का साफ हो गया, इस समय तो महाराज ने उनके विषय में हुक्म भी लिखा दिया है जो कल या परसों के दरबार में सभी को सुना दिया जायगा ।

लक्ष्मी० । किस किस के लिए क्या हुक्म हुआ है ?

इसके जवाब में कुमार ने फैसले का सब हाल बयान किया जो थोड़ी देर पहिले किशोरी और कमलिनी को सुना चुके थे।

लक्ष्मी०। बहुत अच्छा फैसला हुआ है।

किशोरी०। (हंस कर) क्यों न कहोगी। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे कब्जे में दे दिये गये, अब तो दिल खोल कर बदला लोगी।

लक्ष्मी०। बेशक! (कुमार से) हां यह तो बताइये कि भूतनाथ ने अपनी जीवनी लिख कर दे दी या नहीं?

कुमार०। नहीं, आज देने वाला है?

लक्ष्मी०। और हम लोगों को उस तिलिस्मी मकान का तमाशा कब दिखाया जायगा जिसमें लोग हंसते हंसते कूद पड़ते हैं?

कुमार०। परसों या कल उसका भेद भी सभों पर खुल जायगा।

लक्ष्मी०। अच्छा यह तो बताइये कि आपके भाई साहब कहां गये हैं?

किशोरी०। (हंस कर, ताने के ढंग पर) आखिर रहा न गया! पूछे बिना जी न माना।

इतने में ही बाहर की तरफ से आवाज आई, "इसमें भी क्या किसी का इजारा है? ये अपनी चीज की खबरदारी करती हैं किसी दूसरे की जमा नहीं छीनतीं! बहुत दिनों के बाद जो खोई चीज मिलती है उसके लिए अकारण पुनः खो जाने का खटका बना ही रहता है इस लिए अगर इन्होंने पूछा तो बुरा ही क्या किया!"

इस आवाज के साथ ही साथ कमला पर सभों की निगाह पड़ी जो मुस्कुराती हुई कमरे के अन्दर आ रही थी।

किशोरी०। (हंसती हुई) यह आई लक्ष्मी बहिन की तरफदार बीबी नक्को, तुमको यहां किसने बुलाया था?

कमला०। (मुस्कुराती हुई) बुलावेगा कौन? क्या मेरा रास्ता देखा हुआ नहीं है? यह तो बताओ कि तुम लोग इस आधी रात के समय इतना गुल शोर क्यों मचा रही हो!

किशोरी०। (मसखरेपन के साथ हाथ जोड़ कर) जी हम लोगों को इस बात की खबर न थी कि इस शोर गुल से आपकी नींद उचट जायगी और फिर सादी चारपाई पर पड़े रहना मुश्किल होगा।

कुमार०। यह क्यों नहीं कहतीं कि अकेले जी नहीं लगता, लोगों के

ोजती फिरती हूँ।

कमला०। जी हां, आप ही को खोज रही थी।

कुमार०। अच्छा तो फिर आओ बैठ जाओ और समझ लो कि मैं मिल गया।

कमला०। (बैठ कर किशोरी से) आज तुम्हें कोई आराम न करने देगा। कुमार से) कहिए दलीपशाह का किस्सा तो खतम हो गया, अब कैदियों को ा सजा दी जायगी ?

कुमार०। कैदियों का फैसला हो गया, उसमें किसी को ऐसी सजा नहीं गई जो तुम्हारे पसन्द हो।

इतना कह कर कुमार ने पुनः सब हाल बयान किया।

कमला०। तो मैं बहिन लक्ष्मीदेवी के साथ जरूर जमानिया जाऊंगी और रोगा वगैरह की दुर्दशा अपनी आंखों से देखूंगी।

थोड़ी देर तक इसी तरह की हंसी दिल्लगी होती रही, इसके बाद लक्ष्मीदेवी ौर कमला अपने अपने ठिकाने चली गईं।

छठवां बयान

सुबह की सुफेदी आसमान पर फैला ही चाहती है और इस समय की क्षणी हवा जंगली पेड़ों और पौधों लताओं और पत्तों से हाथापाई करती हुई दान की तरफ दौड़ी जाती है। ऐसे समय में भूतनाथ और देवीसिंह हाथ में थ दिये जंगल के किनारे किनारे मैदान में टहल रहे हैं और धीरे धीरे हंसी ल्लगी की बातें करते जाते हैं।

देवी०। भूतनाथ, लो इस समय एक नई और मजेदार बात तुम्हें सुनाते हैं।

भूत०। वह क्या ?

देवी०। फायदे की बात है, अगर तुम कोशिश करोगे तो लाख दो लाख पया मिल जायगा।

भूत०। ऐसा कौन सा उद्योग है जिसके करने से सहज ही इतनी बड़ी रकम थ लग जायगी ? और अगर इस बात को तुम जानते ही हो तो खुद क्यों नहीं द्योग करते ?

देवी०। मैं भी उद्योग करूंगा मगर यह कोई जरूरी बात नहीं है कि जिसका चाहे उद्योग करके लाख दो लाख पा जाय, हां जिसका जेहन लड़ जायगा और

जिसकी अक्ल काम कर जायगी वह बेशक अमीर हो जायगा। मैं जानता हूँ कि हम लोगों में तुम्हारी तबीयत बड़ी तेज है और तुम्हें बहुत दूर की सूझा करती है इसलिए कहता हूं कि अगर तुम उद्योग करोगे तो लाख दो लाख रुपया पा जाओगे। यद्यपि हम लोग सदा ही अमीर बने रहते हैं और रुपये पैसे की परवाह नहीं करते मगर फिर भी यह रकम थोड़ी नहीं है, और तिस पर बाजी के ढंग पर जीतना ठहरा, इसलिये ऐसी रकम पाने की खुशी होती है।

भूत०। आखिर बात क्या है कुछ कहो भी तो सही ?

देवी०। बात यही है कि वह जो तिलिस्मी मकान बनाया गया है, जिसके अन्दर लोग हंसते हंसते कूद पड़ते हैं, उसके विषय में महाराज ने रात को हुक्म दिया है कि तिलिस्मी मकान के ऊपर सर्वसाधारण लोग तो चढ़ चुके और किसी को कामयाबी नहीं हुई, अब कल हमारे ऐयार लोग उस पर चढ़ कर अपनी अक्ल का नमूना दिखावें और इनके लिए इनाम भी दूना कर दिया जाय, मगर इस काम में चार आदमी शरीक न किये जाय—एक जीतसिंहजी, दूसरे तेजसिंह, तीसरे भैरो, चौथे तारा।

भूत०। बात तो बहुत अच्छी हुई, कई दिनों से मेरे दिल में गुदगुदी हो रही थी कि किसी तरह इस मकान के ऊपर चढ़ना चाहिये मगर महाराज की आज्ञा बिना ऐसा कब कर सकता था। मगर यह तो कहो कि उन चारों के लिए मनाही क्यों कर दी गई।

देवी०। इसलिए कि उन्हें इसका भेद मालूम है।

भूत०। यों तो तुमको भी कुछ न कुछ भेद मालूम ही होगा क्योंकि एक दफे तुम भी ऐसे ही मकान के अन्दर जा चुके हो जब शेरसिंह भी तुम्हारे साथ थे।

देवी०। ठीक है मगर इससे क्या असल भेद का पता लग सकता है ? अगर ऐसा ही हो तो इस जलसे में हजारों आदमी उस मकान के अन्दर गये होंगे, किसी को दोहरा कर जाने की मनाही तो थी नहीं, कोई पुनः जाकर जरूर बाजी जीत ही लेता।

भूत०। आखिर उसमें है क्या ?

देवी०। सो मुझे नहीं मालूम, हां दो दिन के बाद वह भी मालूम हो जायगा।

भूत०। पहिली दफे जब तुम ऐसे ही मकान के अन्दर कूदे थे तो तुमने क्या देखा था और हंसने की क्या जरूरत पड़ी थी ?

देवी०। अच्छा उस समय जो कुछ हुआ था सो मैं तुमसे बयान करता

क्योंकि अब उसका हाल कहने में कोई हर्ज नहीं है। जब मैं कमन्द लगा कर दीवार के ऊपर चढ़ गया तो ऊपर से दीवार बहुत चौड़ी मालूम हुई और इस सबब से बिना दीवार पर गये भीतर की कोई चीज दिखाई नहीं देती थी, अस्तु मैं लाचार होकर दीवार पर चढ़ गया और अंदर झांकने लगा। अन्दर की जमीन पांच या चार हाथ नीची थी जो कि मकान की छत मालूम होती थी, मगर इस समय मैं अन्दाज से कह सकता हूँ कि वह वास्तव में छत न थी बल्कि कपड़े का चन्दवा तना हुआ या किसी शामियाने की छत थी, मगर उसमें से एक प्रकार की ऐसी भाप (वाष्प) निकल रही थी कि जिससे दिमाग में नशे की सी हालत पैदा होती थी और खूब हंसने को जी चाहता था मगर पैरों में कमजोरी मालूम होती थी और वह बढ़ती जाती थी...

भूत०। (बात काट कर) अच्छा यह तो बताओ कि अन्दर झांकने से पहिले ही कुछ नशा सा चढ़ आया था या नहीं ?

देवी०। कब ? दीवार पर चढ़ने के बाद ?

भूत०। हां, दीवार पर चढ़ने के बाद और अन्दर झांकने के पहिले।

देवी०। (कुछ सोच कर) नशा तो नहीं मगर कुछ शिथिलता जरूर मालूम हुई थी।

भूत०। खैर अच्छा तब ?

देवी०। अन्दर की तरफ जो छत थी उस पर मैंने देखा कि किशोरी हाथ में एक चाबुक लिए खड़ी है और उसके सामने की तरफ कुछ दूर हट कर कई मोटे ताजे आदमी खड़े हैं जो किशोरी को पकड़ कर बाँधना चाहते हैं मगर वह किसी के काबू में नहीं आती। ताल ठोंक ठोंक कर लोग उसकी तरफ बढ़ते हैं मगर वह कोड़ा मार मार कर हटा देती है। ऐसी अवस्था में उन आदमियों की मुद्रा (जो किशोरी को पकड़ना चाहते थे ऐसी खराब होती थी कि हंसी रोके नहीं रुकती थी, तथा उस भाप की बदौलत आया हुआ नशा हंसी को और भी बढ़ा देता था। पैरों में पीछे हटने की ताकत न थी मगर भीतर की तरफ कूद पड़ने में किसी तरह का हर्ज भी नहीं मालूम पड़ता था क्योंकि जमीन ज्यादा नीची न थी, और इसके अतिरिक्त किशोरी को बचाना भी बहुत ही जरूरी था, अस्तु मैं अन्दर की तरफ कूद पड़ा बल्कि यों कहो कि ढुलक पड़ा और उसके बाद तनोबदन की सुध न रही। मैं नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ और क्योंकर हुआ, हां जब मैं होश में आया तो अपने को कैदखाने में पाया।

भूत० । अच्छा तो इससे तुमने क्या नतीजा निकाला ?

देवी० । कुछ भी नहीं, मैंने केवल इतना ही ख्याल किया कि किसी दवा के नशे से दिमाग खराब हो जाता है ।

भूत० । केवल इतना ही नहीं है, मैंने इससे कुछ ज्यादे ख्याल किया है, खैर कोई चिन्ता नहीं कल देखा जायगा, सौ में नब्बे दर्जे तो मैं जरूर बाहरी राह ही से लौट आऊंगा । यहां उस तिलिस्मी मकान के अन्दर लोगों ने जो कुछ देखा है वह भी करीब करीब वैसा ही है जैसा तुमने देखा था, तुमने किशोरी को देखा और इन लोगों ने किसी दूसरी औरत को देखा बात एक ही है ।

इसी तरह की बातें करते हुए दोनों ऐयार कुछ देर तक सुबह की हवा खाते रहे और इसके बाद मकान की तरफ लौटे । जब महाराज के पास गये तो पुनः सुनने में आया कि ऐयारों को तिलिस्मी मकान पर चढ़ने की आज्ञा हुई है ।

सातवां बयान

दिन अनुमान दो घंटे के चढ़ चुका है । महाराज सुरेन्द्रसिंह राजा बीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह वगैरह खिड़कियों में बैठे उस तिलिस्मी मकान की तरफ देख रहे हैं जिसके अन्दर लोग हंसते हंसते कूद पड़े हैं । उस मकान के नीचे बहुत सी कुर्सियां रक्खी हुई हैं जिन पर हमारे ऐयार तथा और भी कई प्रतिष्ठित आदमी बैठे हुए हैं और सब लोग इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि इस मकान पर बारी बारी से ऐयार लोग चढ़ें और अपनी अक्ल का नमूना दिखावें ।

और ऐयारों की पोशाक तो मामूली ढंग की है मगर भूतनाथ इस समय कुछ अजब ढंग की पोशाक पहिरे हुए है । सिवाय चेहरे के उसका कोई अंग खुला हुआ नहीं है । ढीला ढीला मोटा पायजामा और गंवारू रूईदार चपकन के अतिरिक्त बहुत बड़ा काला मुंड़ासा बांधे हुए है, जिसका पिछला सिरा पीठ पर से होता हुआ जमीन तक लटक रहा है । हाथ दोनों बल्कि नाखून तक चपकन की आस्तीन में घुसा हुआ है और पैर के जूते की भी विचित्र सूरत हो रही है । भूतनाथ का मतलब चाहे कुछ भी क्यों न हो मगर लोग इसे केवल मसखरापन ही समझ रहे हैं ।

सबके पहिले पन्नालाल उस मकान की दीवार पर चढ़ गये और अन्दर की तरफ झाँक कर देखने लगे, मगर पांच सात पल से ज्यादे अपने को बचा सके और हंसते हुए भीतर की तरफ कूद पड़े ।

इसके बाद पंडित बद्रीनाथ रामनारायण और चुन्नीलाल ने कोशिश की

मगर ये तीनों भी लौट कर न आ सके और पन्नालाल की तरह हंसते हुए अन्दर कूद पड़े।

इसके बाद और ऐयारों ने भी उद्योग किया मगर कोई सफल मनोरथ न हुआ। यहां तक कि जीतसिंह तेजसिंह भैरोसिंह और तारासिंह को छोड़ कर सभी ऐयार बारी बारी से जाकर मकान के अन्दर कूद पड़े, केवल भूतनाथ रह गया जिसने सबके आखीर में चढ़ने का इरादा कर लिया था।

भूतनाथ मस्तानी चाल से चलता हुआ सीढ़ी के पास गया और धीरे धीरे ऊपर चढ़ने लगा। देखते ही देखते वह दीवार के ऊपर जा पहुँचा। उस पर खड़े होकर एक दफे चारों ओर मैदान की तरफ देखा और इसके बाद मकान के अन्दर की तरफ झांका। यहां जो कुछ था उसे देखने के बाद उसने अपना चेहरा उस तरफ किया जिधर खिड़कियों में बैठे हुए महाराज और राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह बड़े शौक से उसकी कैफियत देख रहे थे। भूतनाथ ने हाथ उठा कर तीन दफे महाराज को सलाम किया और जोर से पुकार कर कहा, "मैं इसके अन्दर झांक कर देख चुका और बड़ी देर तक दीवार पर खड़ा भी रहा, अब हुक्म हो तो नीचे उतर जाऊं!"

महाराज ने नीचे उतर आने का इशारा किया और भूतनाथ मुस्कुराता हुआ मकान के नीचे उतर आया, इस बीच में और ऐयार लोग भी जो भूतनाथ के पहिले मकान के अन्दर कूद चुके थे घूमते हुए बड़े तिलिस्मी मकान के अन्दर से आ पहुँचे और भूतनाथ की कैफियत देख सुन कर ताज्जुब करने लगे।

भूतनाथ के उतर आने बाद सब ऐयार मिलजुल कर महाराज के पास गये और महाराज ने प्रसन्न होकर भूतनाथ को दो लाख रुपये इनाम देने का हुक्म दिया। सभी ऐयारों को इस बात का ताज्जुब था कि उस तिलिस्म का असर भूतनाथ पर क्यों नहीं हुआ और वह कैसे सभों को बेवकूफ बना कर आप बुद्धिमान बन बैठा और दो लाख का इनाम भी पा गया।

जीतसिंह०। भूतनाथ, यह तुमने क्या किया? कौन सी तर्कीब निकाली जिससे इस तिलिस्मी हवा का तुम पर कुछ भी असर न हुआ?

भूत०। बात मामूली है, जब तक मैं नहीं कहता तभी तक आश्चर्य मालूम पड़ता है।

तेज०। आखिर कुछ कहो भी तो सही।

भूत०। मेरे दिल में इस बात का निश्चय हो गया था कि इस मकान के अन्दर से किसी तरह की हवा भाफ या धूआं ऊपर की तरफ जरूर उठता है जो

झांक दर देखने वाले के दिमाग में सांस के रास्ते से चढ़ कर उसे बदहोश या पागल बना देता है, और दीवार के ऊपरी हिस्से पर भी कुछ कुछ बिजली का असर जरूर है जो उस पर पैर रखने वाले के शरीर को शिथिल कर देती है या और भी किसी तरह का असर कर जाती है। मैं इस बात को खूब जानता हूं कि लकड़ी पर बिजली का असर कुछ भी नहीं होता, अर्थात् जिस तरह धातु मिट्टी जल चमड़ा और शरीर में बिजली घुस कर पार निकल जाती है उस तरह लकड़ी को छेद कर बिजली पार नहीं हो सकती अतएव मैंने अपने पैर में लकड़ी के बुरादे का थैला चढ़ा लिया, बल्कि जूते के अन्दर भी लकड़ी की तख्ती रख दी, जिसमें दीवार से पैदा होने वाली बिजली का मुझ पर असर न हो, इसके बाद बेहोशी का असर न होने के लिए दवा भी खा ली, इतना करने पर भी जब तक मैं मकान के अन्दर झांकता रहा तब तक अपनी सांस को रोके रहा। मैंने अन्दर की तरफ चलती फिरती और नाट्य करके हंसाने वाली पुतलियों को देखा और उस पीतल की चादर पर भी ध्यान दिया जो दीवार के ऊपर जड़ी थी और जिसके साथ कई तारें भी लगी हुई थीं। यद्यपि उसका असल भेद मुझे मालूम न हुआ मगर मैंने अपने बचाव की सूरत निकाल ली।

इतना कह कर भूतनाथ ने खंजर की नोक से अपने पायजामे में एक छेद कर दिया और उसमें से लकड़ी का बुरादा निकाल कर सभों को दिखाया। भूतनाथ की बातें सुन कर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भूतनाथ तथा और ऐयारों की तरफ देख कर कहा, "वास्तव में भूतनाथ ने बहुत ठीक तर्कीब सोची। उस तिलिस्म के अन्दर जो कुछ भेद है हम बता देते हैं, इसके बाद तुम लोग उसके अन्दर जाकर देख लेना। जमानिया तिलिस्म के अन्दर से इन्द्रजीत सिंह एक कुत्ता लाए हैं जो देखने में बहुत छोटा और संगमर्मर का बना हुआ मालूम होता है और बहुत सी पीतल की बारीक तारें उस पर लिपटी हुई हैं। असल में वह कुत्ता कई तरह के मसालों और दवाइयों से बना हुआ है। वह कुत्ता जब पानी में छोड़ दिया जाता है तो उसमें से मस्त और बदहोश कर देने वाली भाफ निकलती है और उसके साथ जो तारें लिपटी हुई हैं उनमें बिजली पैदा हो जाती है। दीवार के ऊपर जो पीतल की चादर बिछाई गई है उसी के साथ वे तारें लगा दी गई हैं और उससे कुछ नीचे हट कर एक अच्छे तनाव का शमियाना तान दिया गया है जिसमें कूदने वाले को चोट न लगे। इसके अतिरिक्त (भूतनाथ से) जिन्हें तुम पुतलियां कहते हो वे वास्तव में पुतलियां नहीं

हैं बल्कि जीते जागते आदमी हैं जो भेष बदल कर काम करते हैं और एक खास किस्म की पौशाक पहिरने और दवा सूंघने के सबब उन सब पर उस बिजली और बेहोशी का असर नहीं होता। इस खेल के दिखाने की तरकीब भी एक ताम्रपत्र पर लिखी हुई है जो उसी कुत्ते के साथ पाया गया था। इन्द्रजीत का बयान है कि जमानिया तिलिस्म में इस तरह के और और भी कुत्ते मौजूद हैं।

महाराज की बातें सुन कर सभों को बड़ा ताज्जुब हुआ, इसी तरह हमारे पाठक महाशय भी ताज्जुब करते और सोचते होंगे कि यह तमाशा सम्भव है या असम्भव मगर उन्हें समझ रखना चाहिये कि दुनिया में कोई बात असम्भव नहीं है। जो अब असम्भव है वह पहिले जमाने में सम्भव थी और जो पहिले जमाने में असम्भव थी वह आज सम्भव हो रही है। 'दीवार कहकहा' वाली बात आप लोगों ने जरूर सुनी होगी। उसके विषय में भी यही कहा जाता है कि उस दीवार पर चढ़ कर दूसरी तरफ झांकने वाला हंसता हंसता दूसरी तरफ कूद पड़ता है और फिर उस आदमी का पता नहीं लगता कि क्या हुआ और कहां गया। इस मशहूर और ऐतिहासिक बात को कई आदमी झूठ समझते हैं मगर वास्तव में ऐसा नहीं है, इसके विषय में हम नीचे एक लेख की नकल करते हैं जो तारीख १४ मार्च सन् १९०५ ई० के अवध अखबार में छपा था—

"अगले जमाने में फिलासफर (वैज्ञानिक) लोग अपनी बुद्धि से जो चीजें बना गये हैं अब तक यादगार हैं। उनकी छोटी सी तारीफ यह है कि इस समय के लोग उनके कामों को समझ भी नहीं सकते। उनके ऊंचे हौसले और ऊंचे खयाल की निशानी चीन के हाते की दीवार है और हिन्दुस्तान में भी ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनका किस्सा आगे चल कर मैं लिखूंगा। इस समय 'दीवार कहकहा' पर लिखना चाहता हूं।

"मैंने सन् १८९९ ई० में 'अखबार आलम' मेरठ में कुछ लिखा था जिसकी मालिक अखबार ने बड़ी प्रशंसा की थी, अब उसके और विशेष सबब खयाल में आये हैं जो बयान करना चाहता हूं।

"मुसलमानों के प्रथम राज्य में उस समय के हाकिम ने इस दीवार की अवस्था जानने के लिए एक कमीशन भेजा था जिसके सफर का हाल दुनिया के अखबारों से प्रकट हुआ है।

"संक्षेप में यह कि कई आदमी मरे परन्तु ठीक तौर पर नहीं मालूम हो सका कि उस दीवार के उस तरफ क्या हाल चाल है।

"उसकी तारीफ इस तरह पर है कि उस दीवार की ऊंचाई पर कोई आदमी जा नहीं सकता और जो जाता है वह हंसते हंसते दूसरी तरफ गिर जाता है, यदि गिरने से किसी तरह रोक लिया जाय तो जोर से हंसते हंसते मर जाता है।

"यह एक तिलिस्म कहा जाता है या कोई और बात है, पर यदि सोचा जाय तो यह कहा जायगा कि अवश्य किसी बुद्धिमान आदमी ने हकीमी कायदे से इस विचित्र दीवार को बनाया है।

"यह दीवार अवश्य कीमियाई विद्या से मदद लेकर बनाई गई होगी।"

यह बात जो प्रसिद्ध है कि दीवार के उस तरफ जिन्न और परी रहते हैं जिनको देख कर मनुष्य पागल हो जाता है और उसी तरफ को दिल दे देता है, यह बात ठीक हो सकती है परन्तु हंसता क्यों है यह सोचने की बात है। काश्मीर में केशर के खेत की भी यही तारीफ है। तो क्या उसकी सुगन्ध वहां जाकर एकत्र होती है, या वहां भी केशर के खेत हैं जिससे हंसी आती है? परन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि ऐसा होता तो यह भी मशहूर होता कि केशर की महक आती है। नहीं नहीं, कुछ और ही हिकमत है जैसा कि हिन्दुस्तान में किसी शहर के मसजिद की मीनारों में यह तारीफ थी कि ऊपर खड़े होकर पानी का भरा गिलास हाथ में लो तो वह आप ही आप छलकने लगता था। इसकी जांच के लिए एक इन्जीनिअर साहब ने उसे गिरवा दिया और फिर उसी जगह पर बनवाया परन्तु वह बात न रही। या आगरा में ताजबीबी के रौजे के फौवारों के नल जो मिट्टी के खरनैचे की तरह थे जैसे खपरैल या बागीचे के नल होते हैं। संयोग से फौवारों का एक नल टूट गया, उसकी मरम्मत की गई, दूसरी जगह से फट गया यहां तक कि तीस चालीस वर्ष से बड़े बड़े कारीगरों ने अपनी अपनी कारीगरी दिखाई परन्तु सब व्यर्थ हुआ। अब तक तलाश है कि कोई उसे बना कर अपना नाम करे, मतलब यह कि 'दीवार कहकहा' भी ऐसी ही कारीगरी से बनी है जिसकी कीमियाई बनावट मेरी समझ में यों आती है कि सतह जहां जमीन से आसमान तक कई हिस्सों में अलग की गई है, लम्बाई का भाग कई हवाओं से मिला है जैसे ओक्सीजन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, कार्बोलिकएसिड ग्यास, क्लोराइन इत्यादि। फिर इन हवाओं में से और भी कई चीजें बनती हैं जैसा कि नाइट्रोजन का एक मोरक्कब पुट ओक्साइड आफ नाइट्रोजन है (जिसे लाफिंग ग्यास भी कहते हैं)। जैसे दुनिया की सतह पर जहां लाफिंग ग्यास जिसको हिन्दी में हंसाने वाली हवा कहते हैं पाई गई है,

उस जगह पर यह दीवार सतह जमीन से इस ऊंचाई तक बनाई गई है। इस जगह पर बड़ी दलील यह होगी कि फिर वह बनाने वाले आदमी कैसे उस जगह अपने होश में रहेंगे, वह क्यों न हंसते हंसते मर गये ? और यही हल करना पहिले मुझसे रह गया था जिसे अब उस नजीर से जो अमेरिका में कायम हुई है हल करता हूँ, याने जिस तरह एक मकान कल के सहारे एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख दिया जाता है उसी तरह यह दीवार भी किसी नीची जगह में इतनी ऊंची बनाकर कल से उठाकर उस जगह रख दी गई है जहाँ अब है। लाफिंग ग्यास में यह असर है कि मनुष्य उसके सूंघने से हंसते हंसते दम घुट कर मर जाता है।

अब यह बात रही कि आदमी उस तरफ क्यों गिर पड़ता है ? इस खिंचाव को भी हम समझे हुए हैं परन्तु उसकी केमिस्ट्री (कीमियाई) अभी हम न बतावेंगे, इसको फिर किसी समय पर कहेंगे।

"दृष्टान्त के लिये यह नजीर लिख सकते हैं कि ग्वालियर के जमीन की यह तासीर है कि जो मनुष्य वहां जाता है, वहीं का हो जाता है, जैसे यह कहावत है कि एक काँवर वाला जिसके कांवर में उसके माता पिता थे वहाँ पहुँचा और कांवर उतार कर बोला कि तुम्हारा जहां जी चाहे जाओ, मुझसे तुमसे कुछ वास्ता नहीं। उस तपस्वी के माता पिता बुद्धिमान थे, उन्होंने अपने प्यारे लड़के की आरजू मिन्नत करके कहा कि हमको चम्बल दरिया के पार उतार दो फिर हम चले जायंगे। लाचार होकर बड़ी हुज्जत से लड़का उनको दरिया के पार ले गया, ज्योंही उस पार हुआ त्योंही चाहा कि अपनी नादानी से लज्जित होकर माता पिता के चरणों पर गिर कर माफी चाहे परन्तु उसके माता पिता ने कहा कि 'ऐ बेटा, तेरा कुछ कसूर नहीं, यह तासीर उस जमीन की थी'।

"दीवार कहकहा के उस तरफ भी ऐसा ही खिंचाव है, जिसको हम ग्वालियर की हिस्टरी तैयार हो जाने पर यदि जीते रहे तो किसी समय परमेश्वर कृपा से आप लोगों पर जाहिर करेंगे, अभी तो हमको यह विश्वास है कि इतिहास ग्वालियर के बनाने वाले ग्रेटर साहब ही इस खिंचाव के बारे में कुछ बयान करेंगे। इतिहास लेखक महाशय को चाहिए कि ग्वालियर की तारीफ में इस किस्से की हकीकत जरूर बयान करें कि कांवर वाले ने कांवर क्यों रख दी थी और इसकी तवारीख लिखें या इस किस्से को झूठ साबित करें, क्योंकि जो बात मशहूर होती हैं मत्थकर्ता को उसके झूठ सच के बारे में जरूर कुछ लिखना चाहिए। तो भी इतिहास ग्वालियर तैयार हो जाने पर उस खिंचाव

के बारे में जो दीवार के उस तरफ है पूरा पूरा हाल लिखेंगे।"

ग्वालियर की जमीन में तरह तरह की खासियत है जिसको हम उस हिस्ट्री की समालोचना में (यदि वह बातें हिस्टरी से बच रहीं) जाहिर करेंगे। दीवार कहकहा के सम्बन्ध में जहां तक अपना खयाल था आप लोगों पर प्रकट किया, याने दुनिया के उस हिस्से की सतह पर दीवार नहीं बनाई गई है जहां आक्सा-इड आफ नाइट्रोजन है बल्कि पहिले दूसरी जगह बना कर फिर कल के जरिये से वहां उठा कर रख दी गई है। यदि यह कहा जाय कि ग्यास सिर्फ उसी जगह थी और जगह क्यों नहीं है तो उसका सहज जवाब यह है कि जमीन से आस्मान तक तलाश करो किसी न किसी ऊंचाई पर तुमको मिल ही जायगी। दूसरे यह कि कोई हवा सिर्फ खास जगह पर मिलती है मसलन बन्द जगह की हलाक करने वाली बन्द हवा, जैसा कि अक्सर कूएं में आदमी उतरते हैं और घबड़ा कर मर जाते हैं। यदि यह कहा जाय कि वहां हवा नहीं है तो यह नहीं हो सकता।

× × ×

पिछले जमाने के आदमी अपनी कारीगरी का अच्छा अच्छा नमूना छोड़ गये हैं—जैसे मिट्टी की मीनार, या नौशेरवानी बाग या जवाहिरात के पेड़ों पर चिड़ियों का गाना या आगरे क ताज जिसकी तारीफ में तारीख तुराब के बुद्धिमान लेखक ने किसी लेखक का यह फिकरा लिखा है जिसका संक्षेप यह है कि 'इसमें कुछ बुराई नहीं, यदि है तो यही है कि कोई बुराई नहीं'। देखिये आगरा में बहुत सी बादशाही समय की टूटी फूटी इमारतें हैं जिनमें पानी दौड़ाने के नल (पाइप) वैसे ही मिट्टी के हैं जैसे कि आज कल मिट्टी के गोल परनाले होते हैं, उन्हीं नलों से दूर दूर से पानी आता और नीचे से ऊपर कई मरातिम तक जाता था। इसी तरह से ताजगञ्ज के फौवारों के नल भी थे तथा और भी इसी तरह के हैं जिनमें से एक के टूटने पर लोहे के नल लगाये गये, जब उनसे काम न चला तो बड़े बड़े भारी पत्थरों में छेद करके लगाये गये, परन्तु बेफायदा हुआ।

उन फौवारों की यह तारीफ है कि जो जितना ऊंचा जा रहा है उतने ही ऊंचाई पर यहां से वहां तक बराबर धारें गिरती हैं। अब जो कहीं बनते हैं तो धार बराबर करने को ऊंची नीची सतह पर फौवारे लगाने पड़ते हैं।

× × ×

इसी तरह का तिलिस्म के विषय का एक लेख ता० ३० मार्च सन् १९०१ के अवध अखबार में छपा था उसका अनुवाद भी हम नीचे लिखते हैं—

"गुजरे हुए जमाने के काबिल कदर यादगारों! तुमको याद कर करके हम

कहां तक रोएं और कहां तक विलाप करें? जमाने के बेकदर हाथों की बदौलत तुम अब मिट गये और मिटते चले जाते हो, जमीन तुमको खा गई और उनको भी खा गई जो तुम्हारे जानने वाले थे, यहां तक कि तुम्हारा निशान तो निशान तुम्हारा नाम तक भी मिट गया!

"खलीफा बिन उम्मीयां के जमाने में जिन दिनों अब्दुल मलिक बिनमर्दा की तरफ से उसका भाई अब्दुलअज़ीज बिनमर्दा मिश्र देश का गवर्नर था, एक दिन उसके सामने दफीना (जमीन के नीचे छिपा हुआ खजाना) का हाल बतलाने वाला कोई शख्स हाजिर हुआ। अब्दुल अजीज ने बात बात ही में उससे कहा, "किसी दफीना का हाल तो बतलाइये!" जिसके जवाब में उसने एक टीले का नाम लेकर कहा कि उसमें खजाना है और इसकी परख इस तौर से हो सकती है कि वहां की थोड़ी जमीन खोदने पर संगमर्मर और स्याह पत्थर का फर्श मिलेगा जिसके नीचे फिर खोदने से एक खाली दर्वाजा दिखाई देगा, उस दर्वाजे के उखड़ने के बाद सोने का एक खम्भा नजर आवेगा, जिसके ऊपरी हिस्से पर एक मुर्ग बैठा होगा, उसकी आंखों में जो सुर्ख मानिक जड़े हैं वह इस कदर कीमती हैं कि सारी दुनिया उनके बदले और दाम में काफी हो तो हो। उसके दोनों बाज़ू मानिक और पन्ने से सजे हुए हैं और सोने वाले खम्भे से सोने के पत्तरों का कुछ हिस्सा निकल कर उस मुर्ग के सिर पर छाया किये हुए है।

"यह ताज्जुब की बात सुन कर उस गवर्नर का कुछ ऐसा शौक बढ़ा कि आम तौर पर हुक्म दे दिया कि वह जगह खोदी जाय और जो लोग उसको खोदेंगे और उसमें काम करेंगे उनको हजारों रुपये दिये जायगे। वह जगह एक टीले पर थी, इस वजह से बहुत घेरा देकर खुदाई का काम शुरू हुआ। पता देने वाले ने जो संगमर्मर और स्याह पत्थर के फर्श वगैरह बताये थे वे मिलते जाते थे और बताने वाले के कौल की तसदीक होती जाती थी और इसी वजह से अब्दुलअजीज का शौक बढ़ता जाता था तथा खुदाई का काम मुस्तैदी के साथ होता जाता था कि यकायक मुर्ग का सर जाहिर हुआ। सर के जाहिर होते ही एकबारगी आंखों को चकाचौंध करने वाली तेज रोशनी उस खोदी हुई जगह से निकल कर फैल गई, मालूम हुआ कि बिजली तड़प गई।

"यह गैरमामूली रोशनी मुर्ग की आंखों से निकल रही थी। दोनों आंखों में बड़े बड़े मानिक जड़े हुए थे, जिनकी यह बिजली थी, और ज्यादे खोदे जानेपर उसके दोनों जड़ाऊ बाजू भी नजर आये और फिर उसके पांव भी दिखाई दिये।

"उस मुर्ग वाले सोने के खम्भे के अलावा एक और खम्भा भी नजर आया जो एक इमारत की तरह पर था। यह इमारती खम्भा रंग बिरंगे पत्थरों का बना हुआ था, जिसमें कई कमरे थे और उनकी छतें बिलकुल छज्जेदार थीं। उसके दर्वाजों पर बड़े और खूबसूरत आलों (ताकों) की एक कतार थी जिनमें तरह तरह की रक्खी हुई मूरतें और बनी हुई सूरतें खूबी के साथ अपनी शोभा दिखा रही थीं, सोने और जवाहिरात के जगह जगह पर ढेर थे जो छिपे हुए थे, ऊपर से चांदी के पत्तर लगे थे और पत्तरों पर सोने की कीलें जड़ी थीं। अब्दुलअजीज बिनमर्दा यह खबर पाते ही बड़े चाह से उस मौके पर पहुँचा, और जो आश्चर्यजनक तिलिस्म वहां जाहिर था उसको बहुत दिलचस्पी के साथ देर तक देखता रहा और तमाम खलकत की भीड़ भाड़ थी, तमाशबीन अपने बढ़े हुए शौक से एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। एक जगह ढले हुए तांबे की सीढ़ी ऊपर तक लगी हुई थी, उसको देख कर एक शख्स ऊपर जल्दी जल्दी चढ़ने लगा, हर एक तमाशबीन ताज्जुब के साथ वहां की हर चीज को देख रहा था।

"उस जीने की चौथी सीढ़ी पर जब चढ़ने वाले ने कदम रक्खा तो जीने की दाहिनी और बाईं तरफ से दो नंगी तलवारें, अपना काट और तड़प दिखाती हुई निकलीं। यद्यपि इस चढ़ने वाले ने बचने के लिए हर तरह की कोशिश की मगर दोनों निकलने वाली तलवारें प्राणघातक शत्रु थीं, जिन्होंने देखते ही देखते इस चढ़ने वाले आदमी का काम तमाम कर दिया, और फिर यह देखा गया कि इस शख्श के टुकड़े नीचे कट कट कर गिरे। उनके गिरते ही, वह खम्भा झोंके ले ले कर आप से आप हिलने लगा और उस पर से वह बैठा हुआ मुर्ग कुछ अजब शान से उड़ा कि देखने वाले अचम्भे में होकर देखते रह गये।

जिस वक्त उसने उड़ने के लिए अपने बाजू (डैने) फटफटाये तो अद्भुत सुरीली और दिल लुभाने वाली आवाजें उससे निकलीं--लोग सुन कर दंग रह गये और यह आवाजें हवा में गूंज कर दूर दूर तक फैल गईं।

उस मुर्ग के उड़ते ही एक किस्म की गर्म हवा चली जिसकी वजह से जिस कदर तमाशबीन आस पास में खड़े थे सब के सब उसी तिलिस्मी गार (खोह) में गिर पड़े। उस गड़हे के अन्दर उस वक्त खोदने वाले बेलदार, मिट्टी को बाहर फेंकने वाले मजदूर और मेठ वगैरह जिनकी तायदाद १००० कही जाती है मौजूद थे, जो सब के सब बेचारे फौरन मर गये। अब्दुलअजीज ने यह हाल देख कर

एक चीख मारी और कहा, "यह भी अजीब दुखदाई बात हुई ! इससे क्या उम्मीद रखनी चाहिए !"

इसके बाद और मजदूर उसमें लगा दिये गये, जिस कदर मिट्टी वगैरह निकली थी वह सब की सब अन्दर डाल दी गई, वह मर जाने वाले तमाशबीन सब भी उसी के अन्दर तोप दिये गये और आखीर में उस तिलिस्म की जगह अच्छा खासा एक 'कबरिस्तान' बन गया। गये थे दफीना निकालने के लिए और इतनी जानें दफन कर आये, खर्च घाटे में रहा।

आठवां बयान

तीसरे दिन पुनः दर्बार हुआ और कैदी लोग लाकर हाजिर किए गए। महाराज सुरेन्द्रसिंह का लिखाया हुआ फैसला सभों के सामने तेजसिंह ने पढ़ कर सुनाया। सुनते ही कम्बख्त दारोगा जैपाल हरनामसिंह वगैरह रोने कलपने चिल्लाने और महाराज से कहने लगे कि इसी जगह हम लोगों का सर काट लिया जाय या जो चाहें महाराज सजा दें मगर हम लोगों को गोपालसिंह के हवाले न करें।

कैदियों ने बहुत सर पीटा मगर उनकी कुछ न सुनी गई, जो कुछ महाराज ने फैसला लिखाया था उसी मुताबिक कार्रवाई की गई और इस फैसले को सभों ने पसन्द किया।

इन सब कामों से छुट्टी पाने बाद एक बहुत बड़ा जलसा किया गया और कई दिनों तक खुशी मनाने के बाद सब कोई विदा कर दिये गए। राजा गोपालसिंह कैदियों को साथ लेकर जमानिया चले गये, लक्ष्मीदेवी उनके साथ गई, और तेजसिंह तथा और भी बहुत से आदमी महाराज की तरफ से उनको साथ पहुँचने के लिए गए। जब वे लौट आये तब औरतों को साथ लेकर राजा वीरेन्द्रसिंह इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह वगैरह पुनः तिलिस्म में गए और उन्हें तिलिस्म की खूब सैर कराई। कुछ दिन बाद रोहतासगढ़ के तहखाने की भी उन लोगों को सैर कराई और फिर सब कोई हंसी खुशी से दिन बिताने लगे।

× + +

प्रेमी पाठक महाशय, अब इस उपन्यास में मुझे सिवाय इसके और कुछ कहना नहीं है कि भूतनाथ ने प्रतिज्ञानुसार अपनी जीवनी लिख कर दर्बार में पेश की और महाराज ने पढ़ सुन कर उसे खजाने में रख दिया। इस उपन्यास का भूतनाथ की खास जीवनी से कोई सम्बन्ध न था इसलिये इसमें वह जीवनी

नत्थी न की गईं, हां खास खास भेद जो भूतनाथ से सम्बन्ध रखते थे खोल दिए गए, तथापि भूतनाथ की जीवनी जिसे चन्द्रकान्ता सन्तति का उपसंहार भाग भी कह सकेंगे स्वतन्त्र रूप से लिख कर अपने प्रेमी पाठकों की नज़र कहूंगा, मगर इसके बदले में अपने प्रेमी पाठकों से इतना जरूर कहूँगा कि इस उपन्यास में जो कुछ भूल चूक रह गई हो और जो भेद रह गए हों वह मुझे अवश्य बतावें जिसमें "भूतनाथ की जीवनी" लिखती समय उन पर ध्यान रहे, क्योंकि इतने बड़े उपन्यास में मेरे ऐसे अनजान आदमी से किसी तरह की त्रुटि का रह जाना कोई आश्चर्य नहीं है।

प्रिय पाठक महाशय, अब चन्द्रकान्ता सन्तति की लेख प्रणाली के विषय में भी कुछ कहने की इच्छा होती है।

जिस समय मैंने चन्द्रकान्ता लिखनी आरम्भ की थी उस समय कविवर प्रताप नारायण मिश्र और पण्डितवर अम्बिकादत्त व्यास जैसे धुरंधर किन्तु अनुदार सुकवि और सुलेखक विद्यमान थे, तथा राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह जैसे सुप्रतिष्ठित पुरुष हिन्दी की सेवा करने में अपना गौरव समझते थे, परन्तु अब न वैसे मार्मिक कवि हैं और न वैसे सुलेखक। उस समय हिन्दी के लेखक थे परन्तु ग्राहक न थे, इस समय ग्राहक हैं पर वैसे लेखक नहीं हैं। मेरे इस कथन का यह मतलब नहीं है कि वर्तमान समय के साहित्यसेवी प्रतिष्ठा के योग्य नहीं हैं, बल्कि यह मतलब है कि जो स्वर्गीय सज्जन अपनी लेखनी से हिन्दी के आदि युग में हमें ज्ञान दे गए हैं वे हमारी अपेक्षा बहुत बढ़ चढ़ कर थे। उनकी लेख प्रणाली में चाहे भेद रहा हो परन्तु उन सब का लक्ष्य यही था कि इस भारत भूमि में किसी तरह मातृ-भाषा का एकाधिपत्य हो, लेकिन यह कोई नियम की बात नहीं है कि वैसे लोगों से कुछ भूल हो ही नहीं, उनसे भूल हुई तो यही कि प्रचलित शब्दों पर उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया। राजा शिवप्रसादजी के राजनीति के विचार चाहे कैसे ही रहे हों पर सामाजिक विचार उनके बहुत प्राञ्जल थे और वे समयानुकूल काम करना खूब जानते थे, विशेषतः जिस ढंग की हिन्दी वे लिख गए हैं उसी से वर्तमान में हिन्दी का रास्ता कुछ साफ हुआ है।

चाहे कोई हिन्दू हो चाहे जैन वा बौद्ध हो और चाहे आर्य समाजी या ब्रह्म समाजी ही क्यों न हो परन्तु जिन सज्जनों के माननीय अवतारों और पूर्वजनों ने इस पुण्य भूमि का अपने आविर्भाव से गौरव बढ़ाया है उनमें ऐसा अभागा कौन होगा जो पुण्यता और मधुरता युक्त संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रचुर प्रचार

चाहेगा ? मेरे विचार में किसी विवेकी भारत सन्तान के विषय में केवल यह देख कर कि वह विदेशी भाषा के शब्दों का प्रसार कर रहा है यह गढ़न्त कर लेना कि वह देववाणी के पवित्र शब्दों का विरोधी है भ्रम ही नहीं किन्तु अन्याय भी है। देखना यह चाहिये कि ऐसा करने से उसका मतलब क्या है। भारतवर्ष में आठ सौ वर्ष तक विदेशी यवनों का राज्य रहा है इसलिये फारसी अरबी के शब्द हिन्दू समाज में "नपठेत् यावनी भाषा" की दीवार लांघ कर उसी प्रकार आ घुसे जिस प्रकार हिमालय के उन्नत मस्तक को लांघ कर वे स्वयं आ गए, यहां तक कि महात्मा तुलसीदासजी जैसे भगवद्भक्त कवियों को भी "गरीब-निवाज" आदि शब्दों का वर्ताव दिल खोल के करना पड़ा।

आठ सौ वर्ष के कुसंस्कार को जो गिनती के दिनों में दूर करना चाहते हैं उनके उत्साह और साहस की प्रशंसा करने पर भी हम यह कहने के लिए मजबूर हैं कि वे अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग नहीं करते बल्कि जो कुछ वे कर सकते थे उससे भी दूर हटते हैं। यदि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सीधे सादे शब्दों से वंगला में काम न लेते तो उत्तरकाल के लेखकों को संस्कृत शब्द के वाहुल्य प्रचार का अवसर न मिलता और यदि "राजा शिवप्रसादी हिन्दी" प्रकट न होती तो सरकारी पाठशालाओं में हिन्दी के चन्द्रमा की चाँदनी मुश्किल से पहुँचती। मेरे बहुत से मित्र हिन्दुओं की अकृतज्ञता का यों वर्णन करते हैं कि उन्होंने हरिश्चन्द्रजी जैसे देश हितैषी पुरुष की उत्तम उत्तम पुस्तकें नहीं खरीदीं, पर मैं कहता हूं कि यदि बाबू हरिश्चन्द्र अपनी भाषा को थोड़ा सरल करते तो हमारे भाइयों को अपने समाज पर कलंक लगाने की आवश्यकता न पड़ती और स्वाभाविक शब्दों के मेल से हिन्दी की पैंसिजर भी मेल बन जाती। प्रवाह के विरुद्ध चल कर यदि कोई कृतकार्य हो तो निःसन्देह उसकी बहादुरी है परन्तु वड़े वड़े दार्शनिक पण्डितों ने इसको असम्भव ठहराया है। सारसुधानिधि और कविवचनसुधा की भाषा यद्यपि भावुकजनों के लिये आदर की वस्तु थी परन्तु समय के उपयोगी न थी। हमारे 'सुदर्शन' की लेख प्रणाली को हिन्दी के धुरन्धर लेखकों और विद्वानों ने प्रशंसा के योग्य ठहराया है परन्तु साधारणजन उससे कितना लाभ उठा सकते हैं यह सोचने की बात है। यदि महाकवि भवभूति के समान किसी भविष्य पुरुष की आशा ही पर ग्रन्थकारों और लेखकों को यत्न करना चाहिए तब तो मैं सुदर्शन सम्पादक पण्डित माधवप्रसाद मिश्र को भी भविष्य की आशा पर बधाई देता हूं पर यदि ग्रन्थकारों को भविष्य की

अपेक्षा वर्तमान से अधिक सम्बन्ध है तो निःसन्देह इस विषय में मुझे आपत्ति है।

किसी दार्शनिक ग्रंथ या पत्र की भाषा के लिए यदि किसी बड़े कोष को टटोलना पड़े तो कुछ परवाह नहीं, परन्तु साधारण विषयों की भाषा के लिए भी कोष की खोज करनी पड़े तो निःसन्देह दोष की बात है। मेरी हिन्दी किस श्रेणी की हिन्दी है इसका निर्धारण मैं नहीं करता परन्तु मैं यह जानता हूं कि इसके पढ़ने के लिए कोष की तलाश करनी नहीं पड़ती। चन्द्रकान्ता के आरम्भ के समय मुझे यह विश्वास न था कि उसका इतना अधिक प्रचार होगा, यह मनोविनोद के लिए लिखी गई थी, पर पीछे लोगों का अनुराग देखकर मेरा भी अनुराग हो गया और मैंने अपने उन विचारों को जिनको मैं अभी तक प्रकाश नहीं कर सका था फैलाने के लिए इस पुस्तक को द्वार बनाया और सरल भाषा में उन्हीं प्राकृत बातों को लिखा जिससे मैं उस होनहार मण्डली का प्रियपात्र बन जाऊं जिनके हाथ में भारत का भविष्य सौंप कर हमें इस असार संसार से विदा होना है। मुझे इस बात से बड़ा हर्ष है कि मैं इस विषय में सफल हुआ और मुझे ग्राहकों की अच्छी श्रेणी मिल गई। यह बात बहुत से सज्जनों पर प्रकट है कि 'चन्द्रकान्ता' पढ़ने के लिये बहुत से पुरुष नागरी की वर्णमाला सीखते हैं और जिन्हें कभी हिन्दी सीखना न था उन लोगों ने भी इसके लिये सीखी।

हिन्दी के हितैषियों में दो प्रकार के सज्जन हैं। एक तो वे जिनका विचार है कि चाहे अक्षर फारसी क्यों न हों पर भाषा विशुद्ध संस्कृत मिश्रित होनी चाहिये और दूसरे वे जो यह चाहते हैं कि चाहे भाषा में फारसी के शब्द मिलें भी पर अक्षर नागरी होने चाहियें। पहिले में मैं पंजाब के आर्यसमाजियों और सभा वालों को मान लेता हूं जिनके लेखों में वर्णमाला के सिवाय फारसी आदि को कुछ भी सहारा नहीं, सब कुछ संस्कृत का है, और दूसरे पक्ष में मैं अपने को ठहरा लेता हूं जो इसके विपरीत है। मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूं कि जिस प्रकार फारसी वर्णमाला उर्दू का शरीर और अरबी फारसी के उपयुक्त शब्द उसके जीवन हैं, ठीक उसी प्रकार नागरी वर्णमाला हिन्दी का शरीर और संस्कृत के उपयुक्त शब्द उसके प्राण कहे जा सकते हैं। यदि यह देश यवनों के अधिकार में न हुआ होता, और यदि कायस्थादि हिन्दू जातियों में उर्दू का प्रेम अस्थिमज्जागत न हो गया होता तो हिन्दी का शरीर और जीवन दिखलाई देता। उसी प्रकार हमारे ग्रंथों की सजीव उत्पत्ति होती जिस प्रकार द्विज बालकों की होती है। शरीर में यदि आत्मा न हो तो वह बेकार है

यदि आत्मा को उपयुक्त शरीर न मिल कर पशु पक्षी आदि शरीर मिल जाय तो भी वह निष्फल ही है, इसलिए शरीर बना कर फिर उसमें आत्मदेव की स्थापना करना ही न्याययुक्त और लाभप्रद है। 'चन्द्रकान्ता' और 'सन्तति' में यद्यपि इस बात का पता नहीं लगेगा कि कब और कहां भाषा का परिवर्तन हो गया परन्तु उसके आरम्भ और अन्त में आप ठीक वैसा ही परिवर्तन पायेंगे जैसा बालक और वृद्ध में। एक दम से बहुत से शब्दों का प्रचार करते तो कभी सम्भव न था कि उतने संस्कृत शब्द हम उन कुपढ़ ग्रामीण लोगों को याद करा देते जिनके निकट काला अक्षर भैंस के बराबर था। मेरे इस कर्तव्य का आश्चर्यमय फल देख कर वे लोग भी बोधगम्य उर्दू के शब्दों को अपनी विशुद्ध हिन्दी में लाने लगे हैं जो आरम्भ में इसीलिये मुझ पर कटाक्षपात करते थे। इस प्रकार प्राकृतिक प्रवाह के साथ साथ साहित्यसेवियों की सरस्वती का प्रवाह बदलता देख कर समय के बदलने का अनुमान करना कुछ अनुचित नहीं है। जो हो भाषा के विषय में हमारा वक्तव्य यही है कि वह सरल हो और नागरी वाणी में हो, क्योंकि जिस भाषा के अक्षर होते हैं उनका खिचाव उन्हीं मूल भाषाओं की ओर होता है जिससे उनकी उत्पत्ति हुई है।

भाषा के सिवाय दूसरी बात मुझे भाव के विषय में कहनी है। मेरे कई मित्र आक्षेप करते हैं कि मुझे देश-हितपूर्ण और धर्मभावमय कोई ग्रन्थ लिखना उचित था जिससे मेरी प्रसरणशील पुस्तकों के कारण समाज का बहुत कुछ उपकार व सुधार हो जाता। बात बहुत ठीक है, परन्तु एक अप्रसिद्ध ग्रंथकार की पुस्तक को कौन पढ़ता ? यदि मैं चन्द्रकान्ता और सन्तति को न लिख कर अपने मित्रों से भी दो चार बातें हिन्दी के विषय में कहना चाहता तो कदाचित् वे भी सुनना पसन्द नहीं करते। गम्भीर विषय के लिये जैसे एक विशेष भाषा का प्रयोजन होता है वैसे ही विशेष पुरुष का भी। भारतवर्ष में विशेषता की अधिकता न देख कर मैंने साधारण भाषा में साधारण बातें लिखना ही आवश्यक समझा। संसार में ऐसे भी लोग हुए होंगे जिन्होंने सरल और भावमय एक ही पुस्तक लिख कर लोगों का चित्त अपनी ओर खैंच लिया हो पर वैसा कठिन काम मेरे ऐसे के करने के योग्य न था। तथापि पात्रों की चाल चलन दिखाने में जहां तक हो सका ध्यान रक्खा गया है। सब पात्र यथासमय सन्ध्या तर्पण करते हैं और अवसर पड़ने पर पूजा प्रकार भी बीरेन्द्रसिंह आदि के वर्णन में जगह जगह दिखाई देता है।

कुछ दिनों की बात है कि मेरे कई मित्रों ने संवाद-पत्रों में इस विषय का आन्दोलन उठाया था कि इनके कथानक सम्भव हैं या असम्भव। मैं नहीं समझता

कि यह बात क्यों उठाई और बढ़ाई गई ? जिस प्रकार पंचतन्त्र हितोपदेश आदि ग्रन्थ बालकों की शिक्षा के लिए लिखे गये उसी प्रकार यह लोगों के मनोविनोद के लिए, पर यह सम्भव है या असम्भव इस विषय में कोई यह समझे कि 'चन्द्रकान्ता' और 'वीरेन्द्रसिंह' इत्यादि पात्र और उनके विचित्र स्थानादि सब ऐतिहासिक हैं तो भड़ी भारी भूल है। कल्पना का मैदान बहुत विस्तृत है और उसका यह एक छोटा सा नमूना है। अब रही सम्भव की बात अर्थात् कौन सी बात हो सकती है और कौन नहीं हो सकती ! इसका विचार प्रत्येक मनुष्य की योग्यता और देश काल पात्र से सम्बन्ध रखता है। कभी ऐसा समय था कि यहां के आकाश में विमान उड़ते थे, एक एक वीर पुरुष के तीरों में यह सामर्थ्य थी कि क्षणमात्र में सहस्त्रों मनुष्यों का संहार हो जाता था, पर अब वह बातें खाली पौराणिक कथा समझी जाती है। पर दो सौ वर्ष पहले जो बातें असम्भव थीं आजकल विज्ञान के सहारे वे सब सम्भव हो रही हैं। रेल, तार, बिजली आदि के कार्यों को पहिले कौन मान सकता था ? और फिर यह भी है कि साधारण लोगों की दृष्टि में जो असम्भव है कवियों की दृष्टि में भी वह असम्भव ही हो यह कोई नियम की बात नही है। संस्कृत साहित्य के सर्वोत्तम उपन्यास कादम्बरी की नायिका युवती की युवती ही रही पर उसके नायक के तीन जन्म हो गये, तथापि कोई बुद्धिमान पुरुष इसको दोषावह न समझ कर गुणधायक ही समझेगा। चन्द्रकान्ता में जो अद्भुत बातें लिखी गई हैं वे इसलिये नहीं कि लोग उनकी सचाई झुठाई की परीक्षा करें, प्रत्युत इसलिये कि उसका पाठ कौतूहल वर्द्धक हो।

एक समय था कि लोग सिंहासन बत्तीसी वैतालपचीसी आदि कहानियों को विश्राम काल में रुचि से पढ़ते थे, फिर चहारदरवेश और अलिफलैला के किस्सों का समय आया, अब इस ढंग के उपन्यासों का समय है। अब भी वह समय दूर है जब लोग बिना किसी प्रकार की न्यूनाधिकता के ऐतिहासिक पुस्तकों को रुचि से पढ़ेंगे। जब वह समय आवेगा उस समय कथा सरित्सागर के समान 'चन्द्रकान्ता' बतलावेगी कि एक वह भी समय था जब इसी प्रकार के ग्रन्थों से ही वीरप्रसू भारत भूमि की सन्तान का मनोविनोद होता था। भगवान उस समय को शीघ्र लावें।

॥ समाप्त ॥

भूतनाथ का अद्भुत हाल जानने के लिए लहरी बुक डिपो वाराणसी द्वारा प्रकाशित **भूतनाथ** उपन्यास पढ़िये।

२९ वां संस्करण] १९८१ ई० [२२०० प्रति

भारत जीवन प्रेस, वाराणसी।

भूतनाथ

चन्द्रकान्ता सन्तति का एक पात्र भूतनाथ वड़ा ही कातिल और दवंग ऐयार था। बड़े बड़े राजा महाराजा इसके नाम से कांपते थे और इसने वड़ी वड़ी काली करतूतें कीं, पर यकायक ही इसे नेकनाम वनने की इच्छा हुई और तब वड़ी कोशिश करके यह खास राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार बन गया।

(सात खंडों) जिल्ददार तथा अजिल्द दोनों प्रकार के संस्करणों में प्राप्त।

लहरी बुक डिपो,

पोस्ट वाक्स—३९, वाराणसी।

